

# ख़ुत्बा इल्हामिया (दैवीय संभाषण)



लेखक

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी  
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक : खुत्बा इल्हामिया (दैवीय संभाषण)  
लेखक : हज़रत मिर्जा गुलाम अहमद क़ादियानी  
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम  
अनुवादक : डाक्टर अन्सार अहमद तथा फ़रहत अहमद आचार्य  
टाइप, सैटिंग : नईम उल हक़ कुरैशी मुरब्बी सिलसिला  
संस्करण : प्रथम संस्करण (हिन्दी) जून 2020 ई०  
संख्या : 500  
प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत,  
क़ादियान, 143516  
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)  
मुद्रक : फ़ज़ले उमर प्रिंटिंग प्रेस,  
क़ादियान, 143516  
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

Name of book : Khutba Ilhamiya  
Author : Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani  
Masih Mou'ud W Mahdi Mahood Alaihissalam  
Translator : Dr. Ansar Ahmad & Farhat Ahmad Acharya  
Type Setting : Naeem Ul Haque Qureshi Murabbi Silsila  
Edition : 1st Edition (Hindi) June 2020  
Quantity : 500  
Publisher : Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian,  
143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)  
Printed at : Fazl-e-Umar Printing Press,  
Qadian 143516  
Distt. Gurdaspur (Punjab)

هذا هو الكتاب الذي ألهمته حصّة منه من رب العباد - في يوم عيد من الأعياد - فقرأه على الحاضرين - بانطاق الرحم  
 الإيسين - من غير هذه الترتيب والتدوين - فلا تلتك انه أيسة من الآيات - وما كان لبشر ان ينطق كشفاً من غير ان ينطق به  
 العبادات - وكان الناس يراقبون طبيعه رغبة يوم العيد - ويستطلعون بعين المشتاق المريد - فالحمد لله  
 الذي ارادهم مقصودهم بعد الامتظار - ووجدوا مطربهم كستان - مذلة اغصانه من الثمار - وانه صنية  
 احسان الحضرة - ومطية تبليغ الناس الى السعادة وانه غيب من الله بعد ما انحلت البلاد و  
 عمر الفساد - ولن تجده هذه المعارف في الآثار المتبقاة المدونة من الثقات - بل هي حقائير  
 ارحيت الى من رب الكائنات - وانه الظهار تامر وهل بعد المسيح كتم - وهل بعد  
 خاتم الخلفاء على السر ختم - وليس من العجب ان تسمع من خاتمة  
 الائمة - بكما ما سمعت من قبل من علماء الملّة بل العجب العجيب  
 ان ياتي المسيح المرغوب والامام المنتظر وحكم  
 الناس وخاتم الخلفاء - ثم لا ياتي بمعرفة جديدة  
 من حضرة الكبرياء - ويحكم كمنظور العالمين  
 العلماء والفقهاء في بيان العلم  
 والضياء - واني سميت  
 هذه الرسالة

# خُطْبَةُ الْهَامِيَّةِ

وَأَيُّ عِلْمَتِهَا الْهَامَا مِنْ رَبِّي وَكَانَتْ آيَةً

تشرين سنة ١٣١٩  
 مصر

تعداد الاشاعة  
 ٢١٠٠

وانها طبع في مطبع ضياء الاسلام قاديان باهتمام الحكيم فضل الدين  
 البهيروزي في سنة ١٣١٩ من الهجرة المقدسة

## प्रथम संस्करण के टाइटल का अनुवाद

यह वह पुस्तक है जिसका एक भाग अल्लाह तआला की ओर से, एक ईद के दिन मुझे इल्हाम हुआ तो मैंने उसे बिना किसी लिखने या इकट्ठा करने के फरिश्ते की वाक् शक्ति से, उपस्थित जनों के सम्मुख पढ़ा। निस्सन्देह यह ख़ुदा के चमत्कारों में से एक महान चमत्कार है। किसी मनुष्य के लिए संभव नहीं कि वह इस प्रकार के लेख मेरे समान मौखिक प्रस्तुत कर सके। और लोग ईद के दिन की प्रतीक्षा के समान उसके प्रकाशन के प्रतीक्षक थे और इच्छा तथा शौक रखने वाले उसके प्रकाशन के लिए नज़रें बिछाए बैठे थे। अतः प्रशंसा अल्लाह की है जिसने प्रतीक्षा के बाद उनको उनका अभीष्ट दिखा दिया और उन्होंने अपने उद्देश्य को फलों से झुकी हुई टहनियों वाले बाग़ के समान पा लिया। और ख़ुदा तआला के उपकार का करिश्मा है और लोगों को सौभाग्य तक पहुंचाने की सवारी है और देश के अकाल ग्रस्त हो जाने और उपद्रव के फैल जाने के बाद अल्लाह की ओर से रहमत की बारिश है और तुम यह अध्यात्म ज्ञान बड़े-बड़े प्रकांड उलमा द्वारा लिखित चयनित लेखों में भी नहीं पाओगे बल्कि यह वे वास्तविकताएं हैं जो ब्रह्मांड के पालनहार की ओर से मुझे वही की गई हैं। यह पूर्ण इज़हार है। और क्या मसीह के बाद भी कुछ छुपा है और क्या ख़ातमुल ख़ुलफ़ा के बाद भी कोई राज़ रह गया है। और यह बात आश्चर्यचकित करने वाली नहीं कि तू ख़ातमुल अइम्मा से ऐसे नुकात (रहस्यमयी ज्ञान) सुने जो तुमने उससे पूर्व उम्मत के उलमा से नहीं सुने बल्कि आश्चर्य पर आश्चर्य तो यह होता कि मसीह मौऊद और अपेक्षित इमाम और लोगों का हकम (निर्णायक) और ख़ातमुल ख़ुलफ़ा आता और फिर ख़ुदा तआला की ओर से कोई नया ज्ञान न लाता और सामान्य उलमा के समान बात करता और अंधकार तथा प्रकाश के मध्य स्पष्ट अंतर न दिखाता। और मैंने इस पुस्तक का नाम

**ख़ुत्बा इल्हामिया**

(दैवीय संभाषण)

रखा है और यह मुझे मेरे रब ने इल्हाम के द्वारा सिखाया और यह महान चमत्कार है

## प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक "ख़ुत्बा इल्हामिया" का यह हिन्दी अनुवाद आदरणीय डॉ० अन्सार अहमद और आदरणीय फ़रहत अहमद आचार्य ने किया है और तत्पश्चात आदरणीय शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), आदरणीय फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), आदरणीय अली हसन एम.ए. और आदरणीय मुहम्मद नसीरुल हक़ आचार्य, आदरणीय इब्नुल महदी एम.ए., आदरणीय सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद एम.ए. ने इसका रिव्यू आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिंहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

## लेखक परिचय

### हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम का जन्म 1835 ई० में हिन्दुस्तान के एक कस्बे क़ादियान में हुआ। आप अपनी प्रारंभिक आयु से ही ख़ुदा की उपासना, दुआओं, पवित्र कुरआन और अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में व्यस्त रहते थे। इस्लाम जो कि उस समय चारों ओर से आक्रमणों का शिकार हो रहा था, उसकी दयनीय अवस्था को देख कर आप अलैहिस्सलाम को अत्यंत दुख होता था। इस्लाम की प्रतिरक्षा और फिर उसकी शिक्षाओं को अपने रूप में संसार के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए आपने 90 से अधिक पुस्तकें लिखीं और हज़ारों पत्र लिखे और बहुत से धार्मिक शास्त्रार्थ और मुनाज़रात किए। आपने बताया कि इस्लाम ही वह ज़िन्दा धर्म है जो मानवजाति का संबंध अपने वास्तविक सृष्टिकर्ता से पैदा कर सकता है और उसी के अनुसरण से मनुष्य व्यवहारिक तथा आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है।

छोटी आयु से ही आप सच्चे स्वप्न, कश्फ़ और इल्हाम से सुशोभित हुए। 1889 ई० में आपने ख़ुदा तआला के आदेशानुसार बैअत\* लेने का सिलसिला प्रारंभ किया और एक पवित्र जमाअत की नींव रखी। इल्हाम व कलाम का सिलसिला दिन प्रति दिन बढ़ता गया और आपने ख़ुदा के आदेशानुसार यह घोषणा की कि आप अंतिम युग के वही सुधारक हैं जिस की भविष्यवाणियाँ संसार के समस्त धर्मों में भिन्न-भिन्न नामों से उपस्थित हैं।

आपने यह भी दावा किया कि आप वही मसीह मौऊद व महदी माहूद हैं जिसके आने की भविष्यवाणी आंहुज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने की थी। जमाअत अहमदिया अब तक संसार के 200 से अधिक देशों में स्थापित हो चुकी है।

1908 ई० में जब आप का स्वर्गवास हुआ तो उसके पश्चात पवित्र कुरआन

---

\* बैअत- किसी नबी, रसूल, अवतार या पीर के हाथ पर उसका मुरीद होना। (अनुवादक)

तथा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार आपके आध्यात्मिक मिशन की पूर्णता हेतु ख़िलाफ़त का सिलसिला स्थापित हुआ। अतः इस समय हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ आप के पंचम ख़लीफ़ा और विश्वस्तरीय जमाअत अहमदिया के वर्तमान इमाम हैं।





बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम  
नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

## पुस्तक परिचय खुत्बा इल्हामिया (दैवीय संभाषण)

ईदुल अज़हा जो 11, अप्रैल 1900 ई० तदनुसार 10, जुलहज्ज 1317 हिज्री को हुई। उस दिन ईद की नमाज़ अदा करने के पश्चात् हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अत्यन्त सरस एवं सुबोध अरबी भाषा में एक खुत्बा (भाषण) दिया जो 'खुत्बा इल्हामिया' के नाम से प्रसिद्ध है और वह इस पुस्तक का वह हिस्सा है जो 'يَا عِبَادَ اللَّهِ فَكِّرُوا (या इबादल्लाहे फ़क्किरू) से आरम्भ होता है और وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمْ خَبِيرٌ (व सौफा युनब्बिउहुम खबीर) पर समाप्त होता है। यह खुत्बा उर्दू के प्रथम संस्करण के पृष्ठ-1 से लेकर पृष्ठ-38 पर तथा इस संस्करण के पृष्ठ-31 से लेकर पृष्ठ-73 पर समाप्त होता है। इसके पश्चात् द्वितीय अध्याय आरम्भ होता है। असल खुत्बे में जिसके कारण सम्पूर्ण पुस्तक का नाम खुत्बा इल्हामिया रखा गया, कुर्बानी की दार्शनिकता (हिक्मत) और उसकी फ़िलास्फ़ी वर्णन की गई है तथा शेष चार अध्यायों में जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बाद में लिखे, अपने दावे पर प्रकाश डाला है और पवित्र कुर्आन तथा हदीसों से अपने दावे की सच्चाई और समर्थन में तर्क दिए हैं। उस में उर्दू भाषा में एक विज्ञापन 'चन्दा मीनारतुलमसीह' खुत्बा इल्हामिया का परिशिष्ट प्रकाशित किया गया है। जिसमें हज़रत अक्वदस ने मीनारतुलमसीह के उद्देश्यों का वर्णन किया है तथा आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मे'राज (रुहानी सफ़र) के दोनों प्रकारों अर्थात् मे'राज मकानी (स्थान से संबंधित) और मे'राज ज़मानी (समय से संबंधित) का वर्णन करके मे'राज ज़मानी की दृष्टि से "मसीह मौऊद" की मस्जिद को मस्जिद अक्सा ठहराया है और उस विज्ञापन के अन्त में आपने 28, मई 1900 ई० तिथी लिखी है।

इस से पूर्व उर्दू के प्रथम संस्करण के मुखपृष्ठ के पृष्ठ-2 से अ, ब, ज पृष्ठों तथा इस संस्करण के पृष्ठ-3 से पृष्ठ-11 तक अरबी भाषा में जो "अलऐलान" प्रकाशित हो चुका है उसके नीचे 25 अगस्त 1901 ई० तिथि लिखी है और खुत्बा इल्हामिया से संबंधित हाशिया जो शीर्षक

ما الفرق بين آدم والمسيح الموعود

के अन्तर्गत तथा

الحالة الموجودة تدعو المسيح الموعود و المهدى المعهود जो पुस्तक के अन्त में उर्दू प्रथम संस्करण के पृष्ठ अ से श तक और इस संस्करण के पृष्ठ 307 से 334 तक दर्ज है। इसके अन्त में 17, अक्टूबर 1902 ई० तिथि लिखी है। इन तिथियों में स्पष्ट है कि मूल खुत्बे के अतिरिक्त जो आप ने 11, अप्रैल 1900 ई० को दिया था, शेष चार अध्याय और दूसरे विज्ञापन तथा हाशिये आपने मई 1900 ई० से लेकर अक्टूबर 1902 ई० तक के मध्य किसी समय लिखे और उसका वर्तमान प्रकाशन पूर्ण पुस्तक के रूप में उर्दू भाषा में अक्टूबर 1902 ई० के पश्चात् हुआ।

### 'खुत्बा इल्हामिया' खुदा का एक निशान है

ईदुल अज्हा 11 अप्रैल 1900 ई. के आयोजन में सम्मिलित होने के लिए 10 अप्रैल से ही मेहमानों का क्रादियान आना आरंभ हो गया था और बटाला, अमृतसर, सियालकोट, जम्मू, पेशावर, गुजरात, जेहलम, रावलपिण्डी, कपूरथला, पटियाला, सिन्नौर इत्यादि बहुत से स्थानों से मेहमान पहुँच चुके थे। अखबार अलहकम 17, अप्रैल 1900 ई० में वृत्तान्त जलसा ईदुज्जुहा के संबंध में लिखा जिसका सारांश यह है :-

"अरफ़ात के दिन प्रातः काल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक पत्र द्वारा हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहिब को सूचना दी कि "मैं आज का दिन और रात का कुछ भाग अपने और अपने दोस्तों के लिए दुआ में व्यतीत

करना चाहता हूँ। इसलिए सारे दोस्त जो यहाँ मौजूद हैं अपना नाम अपने निवास सहित लिखकर मेरे पास भेज दें, ताकि दुआ करते समय मुझे याद रहे" आदेश का पालन करते हुए दोस्तों की क्रमानुसार एक सूची तैयार करके हुजूर की सेवा में भेज दी गई। मगरिब और इशा में हुजूर तशरीफ़ लाए जो जमा की गई। उससे निवृत्त होने के बाद फ़रमाया-

"चूँकि मैं खुदा तआला से वादा कर चुका हूँ कि आज का दिन और रात का भाग दुआ में व्यतीत करूँ। इसलिए मैं जाता हूँ ताकि वादा ख़िलाफ़ी न हो।"

यह फ़रमा कर हुजूर तशरीफ़ ले गए और दुआ में व्यस्त हो गए। दूसरी सुबह ईद के दिन मौलवी अब्दुल करीम साहिब ने अन्दर जाकर हज़रत अक़्दस से भाषण देने के लिए विशेष रूप से निवेदन किया। इस पर हज़ूर ने फ़रमाया-

"खुदा ने ही आदेश दिया है" और फिर फ़रमाया कि-

"रात इल्हाम हुआ है कि मज्मे (जमावड़े) में कुछ अरबी वाक्य पढ़ो, मैं कोई और जमावड़ा समझता था शायद यही सभा हो।"

.....जब हज़रत अक़्दस खुत्बा पढ़ने के लिए तैयार हुए तो हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब और हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब को आदेश दिया कि वे समीप होकर इस खुत्बे को लिखें। जब ये मौलवी साहिबान तैयार हो गए तो हुजूर ने **يَا عِبَادَ اللَّهِ** (या इबादल्लाहे) के शब्द से अरबी खुत्बा आरम्भ किया... खुत्बे के मध्य हज़रत अक़्दस ने यह भी फ़रमाया -

"अब लिख लो फिर ये शब्द याद न रहेंगे"

जब हज़रत अक़्दस खुत्बा पढ़ कर बैठ गए तो अधिकांश दोस्तों के निवेदन

पर मौलाना मौलवी अब्दुल करीम साहिब उसका अनुवाद सुनाने के लिए खड़े हुए। इस से पूर्व कि मौलाना अनुवाद सुनाते हजरत अक्दस ने फ़रमाया कि-

"इस खुत्बे को कल अरफ़ा के दिन और ईद की रात में जो मैंने दुआएं की हैं उनकी स्वीकारिता के लिए निशान रखा गया था कि यदि मैं यह खुत्बा अरबी भाषा में ज़बानी पढ़ गया तो वे समस्त दुआएं स्वीकार समझी जाएंगी। अल्हम्दुलिल्लाह कि वे सारी दुआएं भी खुदा तआला के वादे के अनुसार स्वीकार हो गईं।"

अभी मौलाना अब्दुल करीम साहिब अनुवाद सुना ही रहे थे कि हुज़ूर भावना के आवेग से कृतज्ञता पूर्वक सज्दे में जा पड़े। हुज़ूर के साथ समस्त उपस्थित लोगों ने सज्दा-ए-शुक्र अदा किया। सज्दे से सिर उठाकर हजरत अक्दस ने फ़रमाया-

"अभी मैंने लाल शब्दों में लिखा देखा है कि 'मुबारक' यह मानो स्वीकारिता का निशान है।"

(मल्फूज़ात जिल्द-1 पृष्ठ- 324-325)

तारीख-ए-अहमदियत में हजरत मुन्शी ज़फ़र अहमद साहिब कपूरथलवी और हजरत भाई अब्दुर्हमान साहिब क़ादियानी की रिवायात संक्षिप्त वर्णन हुई हैं।

हजरत मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब कपूरथलवी फ़रमाते हैं कि:

"हुज़ूर ने खड़े हो कर 'या इबादल्लाह' के शब्दों से ज़बानी (मौखिक) अरबी खुत्बा पढ़ना आरम्भ किया। आप ने अभी कुछ वाक्य ही कहे थे कि उपस्थितगण पर जिनकी संख्या सम्भवतः दो सौ थी, आत्म-विस्मृति (वजद) की एक अवस्था छा गई। मुग्ध होने की ऐसी अवस्था थी कि वर्णन से बाहर है, खुत्बे के प्रभाव का वह चमत्कारी रंग पैदा हो गया कि यद्यपि लोगों के समूह में अरबी भाषा जानने वाले बहुत कम लोग थे परन्तु समस्त श्रोतागण उत्कंठित (हम:तनगोश) थे।"

(तारीख-ए-अहमदियत जिल्द - 2 पृष्ठ - 84 विवरणात्मक रूप के लिए देखिए रिवायात सहाबा जिल्द - 13, पृष्ठ- 385-386)

हज़रत भाई अब्दुर्रहमान क़ादियानी फ़रमाते हैं-

".....हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की हालत यह थी कि आप की शक़ल-व-सूरत, भाषा और वर्णन शैली से मालूम होता था कि यह आकाशीय पुरुष एक अन्य संसार का व्यक्ति है जिसकी ज़बान से आसमान का ख़ुदा बोल रहा है। ख़ुत्बे के समय आपकी हालत और आवाज़ में एक परिवर्तन महसूस होता था। प्रत्येक वाक्य के अन्त में आपकी आवाज़ बहुत धीमी और बारीक हो जाती थी। उस समय आपकी आँखें बन्द थीं, चेहरा लाल और अत्यन्त नूरानी (प्रकाशमान)। ख़ुत्बे के मध्य हुज़ूर ने ख़ुत्बा लिखने वालों को सम्बोधित करके कहा कि यदि कोई शब्द समझ न आए तो उसी समय पूछ लें, संभव है कि बाद में मैं स्वयं भी न बता सकूँ। फिर आप इतनी तेज़ी से वाक्यों को वर्णन करते थे कि ज़बान के साथ क्रलम का चलना कठिन हो जाता था। इन दोनों कारणों से मौलवी अब्दुल करीम साहिब और मौलवी नूरुद्दीन साहिब को, जो ख़ुत्बा लिखने के लिए नियुक्त थे, कई बार शब्द पूछने पड़ते थे।"

(तारीख़-ए-अहमदियत जिल्द-2 पृष्ठ-84, विवरणात्मक रूप के लिए देखिए रिवायात हज़रत भाई अब्दुर्रहमान साहिब क़ादियानी, सीरतुल महदी भाग द्वितीय, परिशिष्ट, पृष्ठ-365-371)

इसी ख़ुत्बे से संबंधित हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पुस्तक "ता'तीरुल अनआम" वर्तमान ख़िलाफ़त लाइब्रेरी रब्बाह के काग़ज़ पर अपने मुबारक कलम से दो स्वप्न लिखे हैं। 19 अप्रैल 1900 ई० की तिथि लिखकर हुज़ूर ने मियां अब्दुल्लाह साहिब सन्नौरी का निम्नलिखित स्वप्न लिखा है कि-

"मियां अब्दुल्लाह सन्नौरी कहते हैं कि स्वर्गीय मुन्शी गुलाम क़ादिर सन्नौर वाले यहाँ आए हैं। उनसे उन्होंने पूछा है कि इस जल्से के बारे में उस तरफ़ की ख़बर दो कि क्या

कहते हैं। तो उसने उत्तर दिया कि ऊपर बड़ी धूम मच रही है।"

यह स्वप्न हू-बहू सय्यद अमीर अली शाह साहिब के स्वप्न के समान है, क्योंकि उन्होंने देखा था कि जिस समय अरबी खुत्बा ईद के दिन पढ़ा जाता था उस समय जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तथा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तथा हज़रत खिज़र अलैहिस्सलाम जल्से में मौजूद हैं और इस खुत्बे को सुन रहे हैं। यह स्वप्न ठीक खुत्बा पढ़ने के समय ही बतौर कश्फ़ उस जगह बैठे हुए उन्हें मालूम हो गया था।"

(तज़िकरह हाशिया, पृष्ठ-290 चतुर्थ संस्करण)

और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इसी खुत्बा इल्हामिया के विषय में अपनी पुस्तक "हक़ीक़तुल वह्यी" में फ़रमाते हैं-

"11 अप्रैल 1900 ई० को ईदुल अज़हा के दिन प्रातः काल मुझे इल्हाम हुआ कि "आज तुम अरबी में तक्ररीर (भाषण) करो तुम्हें कुव्वत (शक्ति) दी गई।" और साथ यह इल्हाम हुआ -

كَلَامٌ أَفْصَحَتْ مِنْ لَدُنْ رَبِّ كَرِيمٍ

अर्थात् इस कलाम में खुदा की ओर से सरसता प्रदान की गई है।

.....तब मैं ईद की नमाज़ के बाद ईद का खुत्बा अरबी भाषा में पढ़ने के लिए खड़ा हो गया और खुदा तआला जानता है कि ग़ैब (परोक्ष) से मुझे एक शक्ति दी गई और वह सरस भाषण अरबी में ज़बानी मेरे मुंह से निकल रहा था जो मेरी शक्ति से सर्वथा बाहर था और मैं नहीं सोच सकता कि ऐसा भाषण जिसकी मोटाई कई भागों तक थी, ऐसी सरसता एवं सुबोधता के साथ बिना इसके कि पहले किसी कागज़ पर लिखा जाए कोई व्यक्ति संसार में खुदा के विशेष इल्हाम के बिना वर्णन कर सके। जिस समय यह अरबी भाषण जिसका नाम 'खुत्बा इल्हामिया' रखा गया, लोगों में सुनाया गया उस समय उपस्थितगण की

संख्या दो सौ के लगभग होगी। सुब्हान-अल्लाह उस समय एक गैबी (अदृश्य) झरना खुल रहा था, मुझे मालूम नहीं कि मैं बोल रहा था या मेरी ज़बान से कोई फ़रिश्ता बोल रहा था। क्योंकि मैं जानता था कि इस कलाम में मेरी पहुँच न थी। अपने आप (स्वतः) बने बनाए वाक्य मेरे मुँह से निकलते जाते थे और प्रत्येक वाक्य मेरे लिए एक निशान था। .....यह एक ज्ञान संबंधी चमत्कार है जो खुदा ने दिखाया और कोई इसका उदाहरण प्रस्तुत नहीं कर सकता।"

(हक्रीक़तुल व्हयी रूहानी खज़ायन जिल्द 22 पृष्ठ-375,376

तथा देखो नुज़ूलुल मसीह पृष्ठ-210, और मुखपृष्ठ खुत्बा इल्हामिया)

अतः यह खुत्बा इल्हामिया खुदा तआला का एक महान निशान है जो कि 11, अप्रैल 1900 ई० को प्रकट हुआ।

## الاعلان

ايها الاخوان من العرب وفارس والشام وغيرها من بلاد  
الاسلام اعلموا رحمكم الله اني كتبت هذا الكتاب لكم ملهمًا  
من ربِّي وأمرت ان ادعوكم الى صراط هُديتُ اليه وأُؤدبكم بادي  
وهذا بعدما انقطع الامل من علماء هذه الديار وتحقق انهم لا  
يبالون عقبي الدار وانقطعت حركتهم الى الصدق من تفالِحٍ لامن  
فالِحٍ وما نفعهم اثر دواء ولا سعى معالج وما بقى لِأَجَارِدِ المعارف  
في ارضهم مرتع ولا في اهلها مطمع فعند ذلك القى في قلبي من

## घोषणा

हे अरब, फ़ारस और सीरिया तथा अन्य इस्लामिक देशों से संबंध रखने वाले भाइयो! अल्लाह तआला तुम पर दया करे। जान लो कि मैंने यह पुस्तक तुम्हारे लिए अपने रब से इल्हाम पाकर लिखी है और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं तुम्हें उस मार्ग की ओर बुलाऊं जिसकी ओर मेरा मार्गदर्शन किया गया है और अपने शिष्टाचार से तुम्हें सुसज्जित करूं। और यह आदेश उसके बाद मिला जब इस देश के उलमा से आशा समाप्त हो गई और सिद्ध हो गया कि वे परलोक के अंजाम की परवाह नहीं करते और सच्चाई की ओर उनका कदम बनावटी लकवे से रुक गया है न कि वास्तविक लकवे से। और न किसी दवा के प्रभाव ने और न किसी चिकित्सक के प्रयत्न ने उन्हें लाभ दिया और न ही अध्यात्मज्ञान के अच्छे घोड़ों के लिए उनकी भूमि में कोई चरागाह शेष रही। और न ही उस धरती के निवासियों से कोई आशा शेष रही। अतः उस समय खुदा तआला की ओर से मेरे दिल में यह डाला गया कि मैं सहायता के लिए तुम्हारी ओर आऊं ताकि तुम



الحضرة ان اوى اليكم لطلب النصرة لتكونوا انصارى كاهل المدينة ومن نصرني وصدقني فقد ارضى ربه وخير البرية وان شر الدواب الصم البكم الذين لا يصغون الى الحق والحكمة ولا يسمعون برهاناً ولو كان من الحجج البالغة واذا قيل لهم امنوا بما اتاكم من ربكم من الحق والبينة بعد ايام كثرت الفرق واختلافهم فيها وتلاطم بحر الضلالة قالوا لانعرف ما الحق وانا وجدنا ابا ناعلى عقيدة وانا عليها الى يوم المنية وما قلت لهم الا ما قال القران فما كان جوابهم الا السب والهديان وان الله قد علمنى ان عيسى ابن مريم قدمات ولحق الاموات واما الذى كان نازلا من السماء فهو هذا القائم بينكم كما اوحى ال من حضرة

मदीना वालों की तरह मेरे अन्सार (सहायक) बन जाओ और जिसने मेरी सहायता की और मेरा सत्यापन किया उसने अपने रब और खैरुल बरिय्या (हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को राजी कर लिया। और निकृष्ट जानवर वह बहरे-गूंगे लोग हैं जो सच्चाई और हिकमत की ओर ध्यान नहीं देते और वह कोई दलील नहीं सुनते चाहे वह प्रभावी दलीलों में से हो। और जब उनसे कहा जाए कि फ़िक्रों की अधिकता और उनके आंतरिक मतभेद और गुमराही के समुद्र के उथल पुथल के ज़माने के बाद सच्चाई और प्रकाशमान दलील के साथ तुम्हारे रब की ओर से जो तुम्हारे पास आया है उस पर ईमान लाओ तो वे कहते हैं कि हम नहीं जानते कि सच्चाई क्या है। और हमने अपने बाप-दादों को एक आस्था पर पाया और हम मौत के दिन तक उसी आस्था पर स्थापित रहेंगे। और मैंने उनसे वही कहा जो कुरआन कहता है तो उनका उत्तर गाली-गलौज और अभद्र बातों के अतिरिक्त कुछ न था। और अल्लाह ने मुझे बताया है कि ईसा पुत्र मरियम मर चुके और मेरे हुए लोगों से जा मिले। रहा वह जिसने आसमान से उतरना था तो वह यह तुम्हारे बीच खड़ा है जैसा कि खुदा तआला की ओर से मेरी ओर वह्यी

الكبرياء و كانت حقيقة النزول ★ ظهور المسيح الموعود عند انقطاع الاسباب وضعف الدولة الاسلامية وغلبة الاحزاب و كان की गई। और नुज़ूल★ (अर्थात उतरने) की असल वास्तविकता संसाधनों के कट जाने, इस्लामी देशों के कमज़ोर हो जाने तथा विरोधी समूहों के प्रभुत्व के समय

★ الحاشية: اعلموا ان لفظ النزول قد اختير للمسيح الموعود للوجهين: احدهما لظهور انقطاع الاسباب الارضية كالحكومة والرياسة والوسائل الحربية في ملك يُبعث فيه من الحضرة الاحدية كانه كانت اشارة الى ان المسيح الموعود لا يأتي الا في ملك لا يبقى فيه للاسلام قوة ولا للمسلمين طاقة ومع ذلك يقومون لانكار ويريدون ان يطفئوا نور الله فضلا من ان يكونوا من الانصار فيؤيد المسيح من لدن رب السماء ولا يكون عليه منة احد من ملوك الارض واهل الدول والامراء ولا يستعمل السيف والسنان فكانه نزل من السماء ونصره الله من لدنه و أعان: ثانيهما لظهور شهرة المسيح الموعود في اسرع الاوقات والزمان في جميع البلدان فان الشيء الذي ينزل من السماء يراه كل احد من قريب وبعيد ومن الاطراف والانحاء ولا يبقى عليه ستر في أعين ذوى الانصاف ويشاهد كبرق يبرق من طرف الى طرف حتى يحيط كدائرة على الاطراف منه

★ **हाशिया** - जान लो कि मसीह मौऊद के लिए नुज़ूल (अर्थात उतरने) का शब्द दो कारणों से अपनाया गया है- **पहला** कारण ज़मीनी माध्यमों अर्थात साम्राज्य, रियासत और जंगी संसाधनों के इस देश में समाप्त हो जाने के इज़हार के लिए जिसमें खुदा तआला की ओर से उस (अर्थात मसीह मौऊद) ने अवतरित होना था। मानो कि संकेत था कि मसीह मौऊद ऐसे देश में ही आएगा जिसमें इस्लाम की शक्ति और मुसलमानों की ताकत शेष नहीं रहेगी उसके बावजूद भी वह इन्कार करने के लिए तैयार हो जाएंगे और अल्लाह के नूर को बुझाने के लिए तत्पर हो जाएंगे बजाय इसके कि वे उसके सहायक बनें। अतः आसमानों के रब की ओर से मसीह का समर्थन किया जाएगा और उस पर धरती के शासकों और हाकिमों और अमीरों में से किसी का उपकार न होगा और न ही वह तलवार और भालों का प्रयोग करेगा। मानो कि वह आसमान से उतरा है और अल्लाह ने अपनी ओर से उसकी सहायता की है। **दूसरा** कारण मसीह मौऊद की समस्त देशों में प्रसिद्धि का अति शीघ्र समय और ज़माने में प्रकट हो जाना है, क्योंकि जो वस्तु आसमान से उतरती है उसे प्रत्येक दूर एवं समीप और विभिन्न दिशाओं में रहने वाले देख लेते हैं। और न्यायप्रिय जनों की दृष्टि में उस पर कोई पर्दा नहीं रहता और उस बिजली की तरह उसको देख लिया जाता है जो एक ओर से दूसरी ओर कूदती है और समस्त दिशाओं पर एक चक्र की भांति छा जाती है। इसी से

هذا اشارة الى ان الامر كله ينزل من السماء من غير ضرب الاعناق وقتل الاعداء ويُرَى كالشمس في الضياء ثم نقل اهل الظاهر هذه الاستعارة الى الحقيقة فهذه اول مصيبة نزلت على هذه الملة وما اراد الله من انزال المسيح الا ليُرَى مقابلة الملتين بالتصريح فان نبينا المصطفى كان مثيل موسى و كانت سلسلة خلافة الاسلام كمثل سلسلة خلافة الكليم من الله العلامة فوجب من ضرورة هذه المماثلة والمقابلة ان يظهر في آخر هذه السلسلة مسيح كمسيح السلسلة الموسوية ويهود كاليهود الذين كفروا عيسى و كذبوه و ارادوا قتله و جروه الى ارباب الحكومة فمن العجب ان علماء الاسلام اعترفوا بان اليهود الموعودون في آخر الزمان ليسوا

मसीह मौऊद का प्रादुर्भाव है। और यह इस ओर संकेत है कि गर्दनें उड़ाए बिना और शत्रुओं का वध किए बिना यह समस्त मामला आसमान से उतरेगा और अपने प्रकाश में सूरज की तरह दिखाई देगा। फिर भौतिक वादियों ने इस रूपक को वास्तविकता पर आधारित समझ लिया। अतः यह सबसे पहली मुसीबत थी जो इस उम्मत पर आई। और मसीह को अवतरित करने से अल्लाह तआला का अभिप्राय केवल यह था कि दोनों उम्मतों के मध्य मुकाबला स्पष्ट रूप से दिखा दे क्योंकि हमारे नबी मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मूसा अलैहिस्सलाम के समरूप हैं और सर्वज्ञानी खुदा की ओर से इस्लाम की खिलाफत का सिलसिला हज़रत मूसा कलीमुल्लाह अलैहिस्सलाम की खिलाफत के सिलसिले के समान है। अतः इस समानता और मुकाबले की अनिवार्य मांग यह थी की मूसवी सिलसिले के मसीह के समान इस सिलसिले के अंत में भी मसीह प्रकट हो और इस सिलसिले में भी उन यहूदियों जैसे यहूदी हों जिन्होंने ईसा अलैहिस्सलाम को काफिर ठहराया, उनको झुठलाया और उनके वध का निर्णय किया और हुकूमत के अधिकारियों की ओर उनको खींच कर ले गए। अतः आश्चर्य की बात है कि इस्लाम के उलमा ने यह तो स्वीकार किया कि अन्तिम युग में होने वाले मौऊद

يهودًا في الحقيقة بل هم مثلهم من المسلمين في الاعمال وَالْعَادَةِ ثُمَّ يَقُولُونَ مَعْ ذَٰلِكَ اَنَّ الْمَسِيحَ يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَهُوَ ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ فِي الْحَقِيقَةِ لَمْ يَمِثِلْهُ مِنَ الْاَصْفِيَاءِ فَكَانَ هُمْ حَسْبُوا هَذِهِ الْاُمَّةِ اَرَدَ الْاُمَّةَ وَاخْبَثَهُمْ فَانْهَمُ زَعَمُوا اَنَّ الْمُسْلِمِينَ قَوْمٌ لَيْسَ فِيهِمْ اَحَدٌ يُقَالُ لَهُ اِنَّهُ مِثْلُ بَعْضِ الْاَخْيَارِ السَّابِقِينَ وَاَمَّا مِثْلُ الْاَشْرَارِ فَكَثِيرٌ فِيهِمْ فَفَكَرُوا فِيهِ يَامَعْشَرَ الْعَاقِلِينَ ثُمَّ اَنَّ مَسْئَلَةَ نَزُولِ عَيْسَى نَبِيِّ اللَّهِ كَانَتْ مِنْ اَخْتِرَاعَاتِ النَّصْرَانِيِّينَ وَاَمَّا الْقُرْآنُ فَتَوْفَاهُ وَالْحَقُّ بِالْمَيْتِينَ وَمَا اضْطَرَّتِ النَّصَارَى اِلَى نَحْتِ هَذِهِ الْعَقِيْدَةِ الْوَاهِيَةِ الْاَفْيَا فِي اَيَّامِ الْيَاسِ وَقَطَعَ الْاَمَلُ مِنَ النَّصْرَةِ الْمَوْعُودَةِ فَانَ الْيَهُودَ كَانُوا يَسْخَرُونَ مِنْهُمْ وَيَضْحَكُونَ عَلَيْهِمْ وَيُؤْذِنُهُمْ بِاَنْوَاعِ الْكَلِمَاتِ عِنْدَمَا رَأَوْا اَخْذَلَانَهُمْ

(अर्थात् कथित) यहूदी वास्तव में यहूदी नहीं बल्कि वे मुसलमानों में से कर्मों और शिष्टाचार में उन (यहूदियों) के समरूप हैं, इसके बावजूद वे कहते हैं कि मसीह आसमान से अवतरित होगा और वास्तव में वह अल्लाह का रसूल इब्ने मरियम होगा न कि नेकों में से उसका कोई समरूप। मानो कि उन्होंने इस उम्मत को समस्त उम्मतों में से रद्दी और निकृष्टतम समझा है क्योंकि वे इस आस्था को अपनाए बैठे हैं कि मुसलमान ऐसी क्रौम हैं जिनमें कोई एक भी ऐसा नहीं कि उसे पिछले नेक लोगों का समरूप कहा जा सके, हां दुष्टों के समरूप उनमें बहुत हैं। अतः हे बुद्धिमानों के समूह! इस पर विचार करो। फिर अल्लाह के नबी ईसा अल्लैहिस्सलाम के अवतरण का विषय नसरानियों (ईसाईयों) का मनगढ़त है और जहां तक क्रूरआन का संबंध है तो उसने उसे मृत्यु प्राप्त घोषित किया है और मुर्दा लोगों से मिलाया है। मसीह को खुदा बनाने की इस दूषित आस्था को तराशने पर ईसाई मायूसी और कथित सहायता से निराशा के समय ही मजबूर हुए। क्योंकि यहूदी जब उन्हें रुसवा होते हुए और कठिनाइयों में गिरफ्तार देखते थे तो उनका मजाक उड़ाते और उन पर हंसते और भिन्न-भिन्न प्रकार के शब्दों से उन्हें कष्ट देते थे। वे कहते थे कि तुम्हारा वह मसीह कहां गया जो यह समझता था कि वह

وتقلبهم في الأفات فكانوا يقولون اين مسيحكم الذي كان يزعم انه يرث سرير داؤد وبنال السلطنة وينجي اليهود فتألم النصارى من سماع هذه المطاعن و الام الصبر باللاعن فنحتوا الجوابين عند هذين الطعنين والخطابين فقالوا ان يسوع ابن مريم وان كان مانال السلطنة في هذه الأوان ولكنه ينزل بصورة الملوك الجبارين القهارين في آخر الزمان فيقطع ايدي اليهود وارجلهم وانوفهم ويهلكهم باشد العذاب والهوان ويجلس احبابه بعد هذا العقاب على سرر مرفوعة موعودة في الكتاب و اما قول المسيح انه من امن به فينجيه من الشدائد التي نزلت على بنى اسرائيل فمعناه انه ينجيه بدمه من الذنوب لا من جور الحكومة الرومية كما ظنّ وقيل

दाऊद के तख्त का वारिस होगा और सल्तनत प्राप्त करेगा और यहूदियों को मुक्ति दिलाएगा। इन व्यंग्यों को सुनकर ईसाई बहुत कष्ट अनुभव करते थे और लान-तान पर सब्र कब तक। अतः उन्होंने इन दो व्यंग्यों और दो उपाधियों पर दो उत्तर गढ़े। उन्होंने कहा कि ईसा इब्ने मरियम ने यद्यपि इस दौर में सल्तनत नहीं पाई लेकिन अंतिम युग में वह अत्याचारी तथा प्रकोपी शासकों के रूप में अवतरित होगा और वह यहूदियों के हाथ-पांव और नाक काटेगा और उन्हें घोर दण्ड और अपमान के साथ नष्ट करेगा और उस दंड के बाद अपने प्यारों को उन बुलंद तख्तों पर बैठाएगा जिनका किताब में वादा है। और जहां तक मसीह के इस कथन का संबंध है कि अपने पर ईमान लाने वालों को उन कष्टों से मुक्ति दिलाएगा जो बनी इस्राईल पर आए तो उससे अभिप्राय यह है कि वह अपने खून के कफ़ारा द्वारा गुनाहों से मुक्ति दिलाएगा न कि रोमी शासन के अत्याचार से, जैसा कि विचार किया जाता है और कहा जाता है। अतः सारांश यह कि जब मुसीबतों में लंबा समय ग्रस्त रहने ने ईसाइयों को कष्ट दिया और यहूदियों ने उनके मामलों में बुरा-भला कहा और उन्हें नाकाम समझा तो इस अपमान ने उन्हें बहुत कष्ट पहुँचाया। तो उन्होंने यह दो कथित आस्थाएं गढ़ लीं ताकि शत्रु चुप हो जाएं। और

فحاصل الكلام ان النصارى لما اذاهم طول مكثهم في المصائب  
 واطال اليهود السنهم في امرهم وحسبوهم كالخاسر الخايب شق  
 عليهم هذا الاستهزاء فنحتوا العقيدتين المذكورتين ليسكت  
 الاعداء وان من عادات الانسان انه يتشبث باماني عندهبوب رياح  
 الحرمان واذا رأى انه ما بقى له مقام رجاء فيسر نفسه بأهوائ  
 فيطلب ما ند عن الازهان وشذ عن الأذان فقد يطلب الكيمياء  
 عند نفاد الاموال وقد يتوجه الى تسخير النجوم والاعمال و كذلك  
 النصارى اذا وقع عليهم قول الاعداء وما كان مفر من هذا البلاء  
 فنحتوا ما نحتوا واتكئوا على الاماني كما هو سيرة الاسير والعاني  
 فاشاعوا الاصولين المذكورين كما تعلم وترى ووقوا حق العمى

यह मानवीय स्वभाव में है कि वह मेहरूमी (वान्चित्य) की हवाओं के चलने के समय इच्छाओं का सहारा लेता है और जब वह देखता है कि उम्मीद की कोई किरण शेष नहीं रही तो वह अपनी अंतरात्मा को इच्छाओं से प्रसन्न करता है और वह उस चीज़ की मांग करता है जो न कभी दिमाग में आई और न कानों ने सुनी। अतः कभी वह धन-संपत्ति के समाप्त होने पर कीमियां की मांग करता है और कभी वह सितारों को वशीभूत करने और जादू-टोने की ओर आकर्षित होता है। और इसी तरह नसारा (अर्थात् ईसाइयों) का हाल है कि जब उनको शत्रुओं के कथन से कष्ट पहुंचा और उस बला से बचने का कोई मार्ग शेष न रहा तो जो उन्होंने गढ़ा सो गढ़ा और उन्होंने इच्छाओं का सहारा लिया जैसा कि क्रैदी की आदत है। अतः उन्होंने यह दो उपरोक्त सिद्धांत फैला दिए जैसा कि तू देखता और जानता है और अंधे होने का पूरा हक अदा किया। और जब मसीह के अवतरण की आस्था उनकी फितरत का हिस्सा बन गई और उनकी सोच और स्वभाव के ऊपर हावी हो गई तो निश्चित रूप से उनका पूरा ध्यान ईसा अलैहिस्सलाम के अवतरण पर केंद्रित हो गया ताकि वह उनके शत्रुओं को नष्ट करे और उन्हें सम्मान और बुलंदी के तख्तों पर विराजमान करे। अतः ईसाइयों के विभिन्न

ولما صار اعتقاد نزول المسيح جزو طبيعتهم واحاط على مجارى الفهم وعادتهم كانت عنايتهم مصروفة لا محالة الى نزول عيسى ليهلك اعداءهم ويجلسهم على سرر العزة والعلى فهذا هو سبب سرى ان هذه العقيدة فى الفرق المسيحية ومثلهم فى الاسلام يوجد فى الشيعة فانه لما طال عليهم امد الحرمان وما قام فيهم ملك الى قرون من الزمان نحتوا من عند انفسهم ان مهديهم مستتر فى مغارة ويخرج فى آخر الزمان ويحيى صحابة رسول الله ليقتلهم باذنية وان حسيناً بن على وان كان مانجاًهم من ظلم يزيد ولكن ينجيهم بدمه فى اليوم الآخر من عذاب شديد وكذلك كل من خسرو وخاب نحت هذا الجواب وسمعت ان فرقة من الوهابيين الهنديين ينتظرون

संप्रदायों में इस आस्था के फैल जाने का यही कारण है। और इस्लाम में उनका उदाहरण शीया फिकों में पाया जाता है। अतः जब उन पर मेहरूमी का ज़माना लंबा हो गया और सदियों तक उनमें कोई बादशाह न हुआ तो उन्होंने अपनी ओर से यह बात बना ली कि उनका महदी गुफा में छुपा हुआ है और वह अंतिम युग में निकलेगा और वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम के सहाबा को जीवित करेगा ताकि उन्हें कष्ट देकर उनका वध करे। और हुसैन पुत्र अली यद्यपि उन्हें यज़ीद के अत्याचार से नहीं बचा सका लेकिन वह परलोक में अपने खून के द्वारा उन्हें कष्टदायक दंड से बचाएगा। तो इसी प्रकार प्रत्येक नाकाम और नामुराद रहने वाले ने यह उत्तर गढ़ लिया है। और मैंने सुना है कि इन फिकों (संप्रदायों) के समान हिंदुस्तानी वहाबियों में से एक फ़िर्का अपने शेख सैयद अहमद बरेलवी की प्रतीक्षा में है और उन्होंने जंगलों में अपनी आयु इसी प्रतीक्षा में गुज़ार दी। अतः यह सब के सब दया योग्य हैं कि उनके बड़ों में से अभी तक कोई वापस नहीं लौटा बल्कि प्रतीक्षा करने वाले उनके पास पहुंच गए और कितनी ही निराशाएँ दिल में लिए वह कब्रों में चले गए। सारांश यह कि उनकी मसीह के लौटने तथा जीवित रहने की आस्था वास्तव में ईसाइयों का ताना-बाना और उनकी

कमल هذه الفرق شيخهم سيد احمد بن اليريلوى وانفدوا اعمارهم في فلووات منتظرين فهؤلاء كلهم محل رحم بما لم يرجع احد من كبراءهم الى هذا الحين. بل رجع المنتظرون اليهم وكم حسرات في قلوب المقبورين. فملخص القول ان عقيدة رجوع المسيح وحياته كانت من نسج النصارى ومفترياتهم ليطمئنوا بالاماني ويذبوا اليهود وهمزاتهم. واما المسلمون فدخلوها من غير ضرورة و أخذوا من غير شبكة. واكلوا السم من غير حلاوة واذا قبلوا ركنًا من ركني الملة النصرانية فماتوا معنى الانكار من الركن الثاني اعنى الكفارة وانا فضلنا هذه الامور كلها في الكتاب وكفاك هذا ان كنت من الطلاب ان الذين ظنوا من المسلمين ان عيسى نازل

गढ़ी हुई बातें हैं ताकि वे इच्छाओं के द्वारा संतुष्टि प्राप्त करें और यहूदियों तथा उनके व्यंग्यों का खंडन करें। रहे मुसलमान तो वे अकारण इसमें सम्मिलित हो गए और बिना जाल के फंस गए और बिना मीठे के जहर खाया (अर्थात् बिना आनन्द के गुनाह किया) और जब उन्होंने ईसाई धर्म के 2 में से एक भाग को स्वीकार कर लिया तो दूसरे भाग अर्थात् कफ़ारा के इन्कार के क्या अर्थ? और हमने यह समस्त बातें विस्तृत तौर पर इस पुस्तक में वर्णन कर दी हैं और यदि तू सत्य का अभिलाषी है तो तेरे लिए यह पर्याप्त हैं। मुसलमानों में से जो यह समझते हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से अवतरित होने वाले हैं उन्होंने सत्य का अनुसरण नहीं किया बल्कि वे गुमराही की घाटियों में भटक रहे हैं। उन्हें इसका कोई ज्ञान नहीं वे तो केवल अनुमान लगा रहे हैं। क्या उन्हें कोई दलील दी गई है या उन्हें कुरआन के द्वारा सिखाया गया है जिससे वे चिपके हुए हैं, कदापि नहीं। बल्कि उन्होंने उन लोगों की इच्छाओं का अनुसरण किया जो उनसे पहले गुमराह हुए और अपने रब के फ़रमान को त्याग दिया और वे कोई परवाह नहीं करते। और कुरआन मजीद ने वर्णन किया है कि ईसा मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं इसके बाद वे किस बात पर ईमान लाएंगे? क्या वे मसीह के आगमन के रहस्य



من السماء ما اتبعوا الحق بل هم في وادي الضلال يتيهون ما لهم  
 بذلك من علم ان هم الا يخرصون أمرًا أو توأما من البرهان أو علموا  
 من القرآن فهم به مستمسكون كلاب اتبعوا اهواء الذين ضلّوا  
 من قبل وتركوا ما قال ربهم ولا يباليون وقد ذكر الفرقان ان عيسى  
 قد توفى فبأى حديث بعد ذلك يؤمنون الا يفكرون في سرّ مجيء  
 المسيح ام على القلوب اقفالها ام هم قوم لا يبصرون ان الله كان قد  
 منّ على بنى اسرائيل بموسى والنبيين الذين جاءوا من بعده منهم  
 فعصوا انبياءهم ففريقًا كذبوا وفريقًا يقتلون فاراد الله ان ينزع  
 منهم نعمته ويؤتيها قومًا اخرين ثم ينظر كيف يعملون فبعث مثل  
 موسى من قوم بنى اسماعيل وجعل علماء امته كانبيا سلسلة

पर विचार नहीं करते या उनके दिलों पर ऐसे ताले लगे हैं जो उनके दिलों ही की  
 पैदावार हैं या वे ऐसी क्रौम हैं जो विवेक नहीं रखते। निस्सन्देह अल्लाह ने मूसा  
 अलैहिस्सलाम और उनके बाद आने वाले नबियों को जो उनमें से थे, अवतरित  
 करके बनी इस्राईल पर उपकार किया। अतः उन्होंने अपने नबियों की अवज्ञा की,  
 एक समूह को झुठलाया और एक समूह का वध करने का प्रयत्न किया। अतः  
 अल्लाह ने इरादा किया कि उनसे अपने उपकार छीन ले और दूसरी क्रौम को दे  
 दे। फिर वह देखे कि वे कैसे कर्म करते हैं। अतः उसने मूसा के समरूप को बनी  
 इस्राईल की क्रौम से अवतरित किया और उसकी उम्मत के उलेमा को मूसा  
 कलीमुल्लाह अलैहिस्सलाम के सिलसिले के नबियों जैसा बनाया और उसके द्वारा  
 यहूदियों का अभिमान तोड़ दिया क्योंकि वे अहंकार किया करते थे। और हमारे  
 नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वह सब कुछ दिया गया जो मूसा को दिया  
 गया बल्कि उससे अधिक। और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उनके  
 समान किताब और खलीफे दिए गए और इस प्रकार उसने अत्याचारियों तथा  
 अहंकारियों के दिलों को जलाया ताकि वे लौट आएँ। अतः जैसे उसने समस्त  
 जोड़े पैदा किए हैं उसी प्रकार उसने इस्राईली सिलसिले को इस्राईली सिलसिले

الكلیم و کسر غرور الیهود بها بما كانوا یتکبرون و ائی نبینا کلما اوتی موسی و زیاده و اتاه من الکتاب و الخلفاء کمثله و احرق به قلوب الذین ظلموا و استکبروا و العلم یرجعون. فکما انه خلق الازواج کلها کذالك جعل السلسلة الاسماعيلية زوجا للسلسلة الاسرائيلية. و ذالك امر نطق به القران و لا ینکره الا العمون. الا ترى قوله تعالی فی سورة الجاثية -

وَلَقَدْ آتَيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنَاهُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿١٤﴾ وَآتَيْنَاهُمْ بَيِّنَاتٍ مِّنَ الْأَمْرِ فَمَا اخْتَلَفُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَعْثًا بَيْنَهُمْ ۗ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ جَعَلْنَاكَ عَلَىٰ

का जोड़ा बनाया और यह वह बात है जिसे पवित्र कुरआन ने वर्णन किया है और सिवाए अंधों के उसका कोई इन्कार नहीं करता। क्या तू अल्लाह का फ़रमान सूर: जासिया में नहीं पाता-

وَلَقَدْ آتَيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنَاهُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿١٤﴾ وَآتَيْنَاهُمْ بَيِّنَاتٍ مِّنَ الْأَمْرِ فَمَا اخْتَلَفُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَعْثًا بَيْنَهُمْ ۗ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ جَعَلْنَاكَ عَلَىٰ شَرِيعَةٍ مِّنَ الْأَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٦﴾ \*

\* अनुवाद- और हमने बनी इस्राईल को किताब और तत्वज्ञान और नबूवत प्रदान की थी और पवित्र चीजों में से जीविका प्रदान की थी और अपने ज़माने के लोगों पर उनको प्रतिष्ठा प्रदान की थी और हमने उनको शरीयत की स्पष्ट शिक्षाएं प्रदान की थीं और बनी इस्राईल ने उसी समय उसके बारे में मतभेद किया जब उनके पास पूर्ण ज्ञान (अर्थात कुरआन) आ गया। (यह मतभेद) उनकी आपस की उद्दंडता के कारण था। तेरा रब उनके मध्य क्रयामत के दिन उनके मतभेदीय बातों के बारे में निर्णय करेगा और हम ने तुझको शरीयत के एक मार्ग पर नियुक्त किया है अतः

شَرِيْعَةً مِّنَ الْأَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٦﴾  
 فانظر كيف ذكر الله تعالى ههنا سلسلتين متقابلتين  
 سلسلة موسى الى عيسى وسلسلة نبينا خير الوري الى  
 المسيح الموعود الذي جاء في زمنكم هذا وانه ماجاء من  
 القريش كما ان عيسى ماجاء من بنى اسرائيل. وانه علم  
 لساعة كافة الناس كما كان عيسى علما لساعة اليهود هذا  
 ما اشير اليه في الفاتحة وما كان حديث يفتري وقد شهدت  
 السماء باياتها وقالت الارض الوقت هذا الوقت فاتق الله  
 ولا تيئس من روح الله والسلام على من التبع الهدى فحاصل  
 الكلام ان القران مملو من ان الله تعالى اختار موسى بعد ما

अतः देखो कैसे अल्लाह तआला ने यहां दो परस्पर सिलसिलों का वर्णन किया है। मूसा के सिलसिले को ईसा अलैहिस्सलाम तक और हमारे नबी सर्वश्रेष्ठ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिलसिले को मसीह मौऊद तक जो तुम्हारे इस ज़माने में आया है, और वह कुरैश में से नहीं आया जिस प्रकार कि ईसा अलैहिस्सलाम 'बनी इस्राईल' में से नहीं आए। और यह समस्त लोगों के लिए क्रयामत की घड़ी का ज्ञान प्रदान करता है जिस प्रकार कि ईसा यहूदियों की घड़ी का ज्ञान थे और यह वही है जिसकी और सूरह फातिहा में संकेत है और यह झूठे तौर पर बनाया हुआ किस्सा नहीं बल्कि आसमान अपने निशानों से गवाही दे चुका और धरती कह रही है कि यही वह समय है। अल्लाह का संयम धारण करो और अल्लाह की कृपा से निराश न हो और सलामती हो उस पर जिसने सन्मार्ग का अनुसरण किया। सारांश यह है कि पवित्र कुरआन इस वर्णन से भरा हुआ है कि अल्लाह तआला ने पहली क्रौमों को नष्ट करने के बाद मूसा को चुना और उसे तौरात प्रदान की और उसके समर्थन के लिए निरंतर नबी अवतरित किए। फिर तू उसका अनुसरण कर और उन लोगों की इच्छाओं का अनुसरण मत कर जो ज्ञान नहीं रखते। (सूर: अल् जासिया- 17 से 19)

اهلك القرون الاولى و آتاه التوراة و ارسل لتأييده النبيين  
تترا ثم قفا على اثارهم بعيسى\* و اختار محمدا صلى الله عليه

उनके पदचिन्हों पर ईसा\* अलैहिस्सलाम को भेजा फिर यहूद को तबाह करने के  
बाद। मुहम्मद रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चुना। इसमें कोई संदेह

★ الحاشية: اعترض علّ جاهل من بلدة اسمها جهلّ يا ذوى الحصات  
وفي آخرها حرف الميم ليدل على مسخ القلب والممات وفرح فرحاً شديداً  
باعتراضه و شتمنى و ذكرنى باقبح الكلمات و قال انّ هذا الرجل يزعم ان  
عيسى كان من مُتبعى موسى و ليس زعمه هذا الا باطلاً وانّ كذبه من أجلى  
البدهيّات بل أوّتى عيسى شريعةً مستقلةً بالذات فاغنى الذين كانوا  
مجتمعين عليه من شريعة الكليم و اقام الانجيل مقام التوراة فاعلم ان  
هذا قول لا يخرج من فم الامن فم الذى نجس بنجاسة الجهل و الجهلات  
و ذاب انف فطنته بجذام التعصبات و زعم هذا الجاهل كانه يستدل على  
دعواه بالفرقان الذى هو الحَكَم عند الخصومات و قرء قوله تعالى  
وَ اتَيْنَهُ الْاِنْجِيلَ فِيهِ هُدًى وَ نُوْرٌ ۝ وَ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ

★ हाशिया - हे बुद्धिमानो! मुझ पर एक मूर्ख ने ऐतराज किया है, एक ऐसे शहर से जिसका नाम मूर्खता है और उसके अंत में 'मीम' है ताकि यह (मीम) उसके दिल के गंदा होने और मौत पर दलालत करे। और वह अपने ऐतराज से बहुत प्रसन्न हुआ और उसने मुझे गालियां दीं और अत्यंत गंदे शब्दों से मेरा वर्णन किया और कहा कि यह व्यक्ति दावा करता है कि ईसा, मूसा के अनुयायियों में से था और उसका यह विचार निपट झूठ है और उसका यह झूठ अत्यंत स्पष्ट है, बल्कि ईसा अलैहिस्सलाम को अपने अस्तित्व में स्थाई शरीयत प्रदान की गई और ईसा अलैहिस्सलाम ने अपनी जमाअत को कलीमुल्लाह की शरीयत से निस्पृह कर दिया था और इंजिल को तौरात का क्रायम मुकाम (स्थानापन्न) बना दिया। याद रख कि यह कथन केवल ऐसे मुंह से निकलता है जो अज्ञानता और मूर्खता की गंदगी से दूषित हो और जिसकी बुद्धि की नाक पक्षपात के कोढ़ से गल गई हो। और यह मूर्ख समझता है कि वह अपने दावे पर इस कुरआन से दलील प्रस्तुत कर रहा है जो झगड़ों के समय निर्णायक है। और उसने अल्लाह का यह कथन प्रस्तुत किया है-

وسلم بعد ما اهلك اليهود واردي ولا شك ولا ريب ان السلسلة الموسوية والمحمدية قد تقابلتا وكذلك اراد الله وقضى واما

नहीं कि मूसवी सिलसिला और मुहम्मदी सिलसिला परस्पर समान हैं और इसी प्रकार अल्लाह ने इरादा किया और निर्णय किया है। और जहां तक ईसा अलैहिस्सलाम का

وَهُدًى وَ مَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٣٨﴾ وَ لِيَحْكُمَ أَهْلُ الْإِنجِيلِ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فِيهِ ط  
(المائدة: ٣٨-٣٧)

يعنى بيشارة خير الكائنات ومافهم سرّ هذه الآية وصال على بصوت هو أنكرا الاصوات ووطن انه اوى الى ركن شديد وسبني كالكاذفات المفحشات وقال انها دليل واضح على ان الانجيل شريعة مستقلة فيا اسقا عليه وعلى غيظه الذى اخرجته من الارض كالحشرات وان من اشقى الناس من لاعقل له ويعد نفسه من ذوى الحصاة ويعلم كل صبي وصبية من المسلمين والمسلمات فضلا من البالغين والبالغات ان القران لا يامر اليهود ولا النصراني ان يتبعوا كتبهم ويثبتوا على شرائعهم بل يدعوهم الى الاسلام واوامره وقد قال الله في كتابه العزيز

وَ اتَيْنَاهُ الْإِنجِيلَ فِيهِ هُدًى وَ نُورٌ ۗ وَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنْ التَّوْرَةِ ۗ وَ هُدًى وَ مَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٧﴾ وَ لِيَحْكُمَ أَهْلُ الْإِنجِيلِ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فِيهِ  
(अलमाइदा 47-48)

अर्थात आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खुशखबरी। और वह इस आयत के रहस्य को नहीं समझा और मुझे पर ऐसी आवाज से आक्रमण किया जो अत्यंत घृणित (अर्थात गधों की सी) है और यह विश्वास किया कि उसने अत्यंत दृढ़ सहारे की शरण ली है और मुझे आरोप लगाने वाली, गालियां देने वाली स्त्री के समान गालियां दीं और कहा कि यह स्पष्ट दलील है इस बात पर कि इंजिल स्थाई शरीयत है। हाय अफसोस! उस पर और उसके उस क्रोध पर जिसने उसे कीड़ों की तरह धरती से निकाला है। और लोगों में से अत्यंत दुर्भाग्यशाली वह व्यक्ति है जिसके पास बुद्धि नाम की कोई चीज न हो और फिर भी वह स्वयं को बुद्धिमानों में से समझता हो। हालांकि मुसलमानों के व्यस्क स्त्री-पुरुष को तो छोड़ो उनका हर बच्चा-बच्ची यह जानता है कि कुरआन न यहूद को आदेश देता है और न नसारा को कि वह अपनी पुस्तकों का

عیسیٰ فہو من خدام الشریعة الاسرائیلیة ومن انبیاء سلسلة  
موسیٰ وما اوتیٰ له شریعة كاملة مستقلة ولا يوجد فی کتابه

संबंध है तो वह इस्राईली शरीयत के सेवकों और मूसा तथा मूसा के सिलसिला के  
नबियों में से है। और उन्हें स्थाई पूर्ण शरीयत नहीं दी गई और न ही उनकी किताब

إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ <sup>ق</sup>  
وَ مَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ <sup>ع</sup> وَ هُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَسِرِينَ  
(آल عمران: २०)

(आल عمران: २०)  
فكيف يُظَنُّ في الله القدوس انه يدعو اليهود والنصارى في هذه الآية  
الى الاسلام يقول انكم لا تفلحون ابداً ولا تدخلون الجنة الا بعد ان تكونوا  
مسلمين ولا ينفعكم توراتكم ولا انجيلكم الا القرآن ثم ينسى قوله الاول  
ويامر كل فرقة من اليهود والنصارى ان يثبتوا على شرائعهم يتمسكوا  
بكتبهم ويكفيهم هذا لنجاتهم وان هذا الاجمع الضدين واختلاف في القرآن

शेष हाशिया - अनुसरण करें और अपनी शरीयतों पर स्थापित रहें बल्कि वह उन्हें इस्लाम और  
उसके आदेशों की ओर बुलाता है और अल्लाह ने अपनी महान किताब में फ़रमाया है-

إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ <sup>ق</sup>  
وَ مَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ <sup>ع</sup> وَ هُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَسِرِينَ  
(आले इमरान- 20)  
(आले इमरान- 86)

पवित्र खुदा के बारे में कैसे यह विचार किया जा सकता है कि वह यहूद और नसारा  
को तो इस आयत में इस्लाम की ओर बुला रहा है और कह रहा है कि तुम कदापि सफल न होगे  
और न तुम जन्नत में प्रवेश करोगे सिवाय इसके कि तुम मुसलमान हो जाओ और तुम्हें न तुम्हारी  
तौरात लाभ पहुंचाएगी और न इंजील बल्कि कुरआन लाभ देगा। फिर वह अपने पहले कथन  
को भूल गया और यहूदी और नसारा के हर फिर्के को आदेश देने लगा कि वह अपनी-अपनी  
शरीयतों (धर्मविधानों) पर स्थापित रहें और अपनी किताबों को दृढ़तापूर्वक थामे रखें और उनके

अनुवाद - अल्लाह के निकट सच्चा और पूर्ण धर्म इस्लाम है (आले इमरान - 20)

अनुवाद - और जो कोई इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म को चाहेगा तो कदापि उससे  
स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह परलोक के दिन घाटा पाने वालों में से होगा।

(आले इमरान - 86)

تفصيل الحرام والحلال والوراثة والنكاح ومسائل اخرى  
والنصارى يُقرُّون به ولذلك ترى التورات في ايديهم كما ترى

में हराम और हलाल, विरासत, निकाह और अन्य विषयों का विवरण पाया जाता है  
और ईसाई इस बात का इकरार करते हैं। इसीलिए तू उनके हाथों में तौरात को वैसे

والله نزه كتابه عن الاختلاف بقوله وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ  
اِخْتِلَافًا كَثِيرًا

وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اِخْتِلَافًا كَثِيرًا (النساء: ٨٣)  
بل الآية التي حَرَفَ الْمُعْتَرِضُ معناها كمثل اليهود تشير الى ان بشارت  
نبينا صلى الله عليه وسلم كانت موجودة في التورات والانجيل فكان الله يقول  
مالهم لا يعملون على وصايا التوراة والانجيل ولا يُسلمون نعم لو كانت عبارة  
القرآن بصيغة الماضي ولم يقل وَلَيَحْكُمَنَّكُمْ بل قال وكان النصارى يحكمون  
بالانجيل فقط مكان ذلك دليلاً على مدعاهُ واما بقية الفاظ هذه الآيات  
اعنى لفظ فيه نور وهدى فليس هذا دليلاً على كون الانجيل شريعة مستقلة

शेष हाशिया - लिए उनकी मुक्ति हेतु यही पर्याप्त है। हालांकि यह तो केवल दो विपरीत बातों  
का इकट्ठा होना है और कुरआन में मतभेद करना है और अल्लाह ने अपने कथन-

وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اِخْتِلَافًا كَثِيرًا (83 - अन्निसा)

में अपनी किताब को मतभेदों से पवित्र करार दिया है बल्कि वे आयतें जिनके अर्थ  
में ऐतराज करने वाले ने यहूदी के समान तहरीफ़ (परिवर्तन) की है वह संकेत करती हैं कि  
हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खुशखबरी तौरात और इंजील में मौजूद थी।  
मानो खुदा तआला यह फ़रमा रहा है कि उन्हें क्या हो गया है कि वे तौरात और इंजील  
के आदेशों का अनुसरण नहीं करते और न आज्ञापालन करते हैं। हां अगर कुरआन की  
इबारत भूतकाल की विभक्ति में होती तो अल्लाह "वलयहकुम" न फ़रमाता बल्कि  
وكان النصارى يحكمون بالانجيل فقط (अर्थात ईसाई इंजील के अनुसार निर्णय करते थे)  
फ़रमाता तो यह उसकी विचारधारा पर दलील होती। और जहां तक इन आयतों के बाकी शब्दों  
का संबंध है अर्थात शब्द فِيهِ نُورٌ وَهُدًى (अर्थात उसमें नूर और हिदायत है) तो यह इंजील  
के स्थाई शरीयत होने पर दलील नहीं। क्या ज़बूर और बनी इस्राईल के अन्य नबियों की पुस्तकें

अनुवाद - यदि वह खुदा के अतिरिक्त किसी अन्य का कलाम होता तो उस में बहुत सा मतभेद पाया  
जाता। (अन्निसा - 83)

الانجيل وقال بعض فرقهم انانجينامن ائثال شريعة التورات  
بكفارة دم عيسى واما بعضهم الآخرون فيحرمون ما حرم  
التوراة ولا ياكلون الخنزير كمثل نصارى أرمينيا وهم اقدم  
من فرق اخرى في المدى واتفق كلهم على ان عيسى ائى بفضل من  
الله وان موسى ائى بالشرية وسموهما عهد الشريعة وعهد الفضل  
وسموا الاول عتيقا والآخر جديدا فاسئلهم ان كنت تشك في هذا

ही देखता है जैसे इंजील को। और उनके कुछ फ़िर्कें यह कहते हैं कि ईसा के खून के कफ़ारा के द्वारा हम तौरात की शरीयत के बोझों से मुक्ति दिए गए हैं। और उनके कुछ दूसरे फ़िर्कें हैं जो उसे हराम करार देते हैं जिसे तौरात ने हराम करार दिया और वे सूअर नहीं खाते। उदाहरण स्वरूप आर्मीनिया के ईसाई, और वे समय के दृष्टिकोण से दूसरे फ़िर्कों की अपेक्षा अधिक प्राचीन हैं और वे सब इस पर सहमत हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह की कृपा लेकर आए और मूसा अलैहिस्सलाम शरीयत लेकर आए और उन्होंने उन दोनों का नाम अहद-ए-शरीयत और अहद-ए-कृपा रखा और पहले का नाम उन्होंने अहद नामा अतीक (पुरातन नियम) और दूसरे का नाम अहद नामा जदीद (नूतन नियम) रखा। यदि तुझे इस विषय में संदेह है तो उनसे पूछ।

اليس الزبور وغيره من كتب انبياء بنى اسرائيل هدى للناس ا يوجد فيها  
ظلمة ولا يوجد نور فتفكر ولا تكن من الجاهلين وان النصارى قد اتفقوا على  
ان عيسى بن مريم ما اتاهم بالشرية واننا نكتب ههنا شهادة جى اليفرا الذى  
هو بيش لاهور اعنى امام قسوس هذه الناحية وكفاك هذا ان كنت تخشى من  
سواد الوجه والذلة وراينا ان نكتب عليحدة هذه الشهادة فى الحاشيه منه

**शेष हाशिया** - लोगों के लिए सन्मार्ग का माध्यम नहीं थी? क्या उन में अंधकार पाया जाता था और नूर नहीं पाया जाता। अतः विचार कर और मूर्खों में से न बन। और ईसाई इस बात पर सहमत हैं कि ईसा इब्ने मरियम उनके पास शरीयत लेकर नहीं आए। और हम यहां जी० ए० लेफ्राय बिशप लाहौर अर्थात उस इलाके के पादरियों के प्रमुख की गवाही दर्ज करते हैं और अगर तू मुंह काला होने तथा अपमान से डरता है तो तेरे लिए यह पर्याप्त है और हम ने उचित समझा कि इस गवाही को अलग से हाशिया में लिखें। इसी से।



فمَلَخَّصْ كَلَامَنَا ان الله توجَّه الى بنى اسرائيل رحمة منه  
 فاقام سلسلة بموسى واتمها بعيسى وهو اخر لبنة لها ثم  
 توجه الى بنى اسماعيل فاقام سلسلة نبينا المصطفى وجعله  
 مثل الكليم ليرى المقابلة في كل ما اتى وختم هذه السلسلة  
 على مثل عيسى ليتم النعمة على هذه السلسلة كما اتمها  
 على السلسلة الاولى وان كانت السلسلة المحمدية خالية من  
 هذا المسيح المحمدى فتلك اذا قسمةً ضيزى ففكروا كل  
 الفكر وليس النهى الا لهذا الامر يا اولى النهى ولا ينجى  
 المرء الا الصدق فاطلبوه بدق باب الحضرة واقبلوا على  
 الله كل الاقبال لهذه الخطة وادعوه في جوف الليالى وخرّوا

हमारे कथन का सारांश यह है कि अल्लाह तआला ने अपनी कृपा से बनी  
 इस्त्राईल की ओर ध्यान दिया और मूसा अलैहिस्सलाम के द्वारा एक सिलसिला  
 स्थापित किया और ईसा अलैहिस्सलाम पर उसे पूर्ण किया और वह उस सिलसिले  
 की अंतिम ईंट थी। फिर अल्लाह ने बनी-इस्त्राईल की ओर ध्यान दिया और हमारे  
 नबी मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सिलसिला स्थापित किया और आप  
 सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मूसा कलीमुल्लाह का समरूप बनाया ताकि  
 वह हर वरदान में मुक्राबला दिखाए और इस सिलसिला को ईसा के समरूप पर  
 समाप्त किया ताकि वह इस सिलसिले पर भी यह नेमत उसी प्रकार पूर्ण करे  
 जिस प्रकार उसने इससे पहले सिलसिले पर पूर्ण की थी। और यदि यह सिलसिला  
 मुहम्मदिया इस मसीह मुहम्मदी से खाली होता तो तब तो यह एक बहुत तुच्छ  
 विभाजन होता। अतः पूर्णतः विचार करो, पुनः विचार करो। और हे बुद्धिमानो!  
 केवल इस बात के लिए ही बुद्धि है और सच्चाई ही इंसान को मुक्ति देती है।  
 अतः अल्लाह तआला के द्वार को खटखटा कर उसी से मांगो और इस उद्देश्य  
 के लिए अल्लाह की ओर पूर्णतः ध्यान दो और रातों को उसे पुकारो और महान  
 प्रतापी खुदा के आगे रोते हुए गिर जाओ और ठठ्ठा और व्यंग्य और ताना करते

باکین لله ذی العزّة والجبروت ولا تمزّوا ضاحکین هامزین  
واستعیدوا بالله من الطاغوت

یا عباد الله تذکروا وتیقظوا فان المسیح الحکم قد أتى  
فاطلبوا العلم السماوی ولا تقوّموا متاعکم فی حضرة المولی ووالله  
أتى من الله اتیت وما افتريت وقد خاب من افتري ان ایام الله قد اتت  
وحسرات على الذی ابی ولا یفلح المعرض حیث أتى والحق والحق  
اقول ان مجیئ المسیح من هذه الامة كان امرا مفعولا من الحضرة  
من مقتضى الغیرة وکان قدر ظهوره من یوم الخلقة والسرفیه  
ان الله اراد ان یجعل آخر الدنیا كأولها فی نفسی الغیر والمحو فی طاعة  
الحضرة الاحدیة واسلاك الناس فی سلك الوحدة الطبعیة بعدما دعوا  
الی الوحدة القهریة وکان الناس مُفترقین الی الفرق المختلفة والأراء

हुए न जाओ और शैतान से बचने के लिए अल्लाह की शरण मांगो।

हे अल्लाह के बंदो! सीख ग्रहण करो और जाग जाओ क्योंकि **निर्णायक** मसीह आ गया है। अतः आसमानी ज्ञान मांगो और खुदा के दरबार में अपनी नेकियों को कीमती न समझो और खुदा की क्रसम में अल्लाह की ओर से आया हूं और मैंने झूठ नहीं कहा है, और नाकाम हुआ वह जिसने झूठ कहा। निस्सन्देह अल्लाह के दिन आ गए और जिसने इन्कार किया उस पर अफसोस है और विमुख होने वाला जिधर से भी आए सफल नहीं होता। यह सच है और मैं सच ही कहता हूं कि मसीह का इसी उम्मत में से आना अल्लाह की ओर से उसके स्वाभिमान के कारण अटल था और अनादि से उसका प्रादुर्भाव निर्धारित था और इसमें यह भेद छुपा हुआ था कि अल्लाह ने इरादा किया कि उसके अतिरिक्त समस्त उपास्यों का इन्कार करने और खुदा तआला के आज्ञापालन में फना होने में संसार के अन्त को आरम्भ के समान बना दे। और **बलपूर्वक** एकत्व की ओर बुलाए जाने के बाद लोगों को एक स्वभाविक एकत्व की लड़ी में पिरोए। लोग विभिन्न संप्रदायों, भिन्न-भिन्न मतों और भिन्न-भिन्न

المتنوعة والاهواء المتخالفة ومطيعين للحكومة الشيطانية الدجالية الظلمانية وما كانوا منفكين حتى تنزل عليهم فوج من السكينة والشيطان الذي هو ثعبان قديم ودجال عظيم ما كان مخلصهم من اسره و كان يريد ان ياكلهم كلهم ويجعلهم وقود النار لانه نظر الى ايامه ورأى انه ما بقى من ايام الانظار الا قليلا فخاف ان يكون من المغلوبين بما لم يكن من المنظرين الا الى هذا الحين فرأى انه هالك باليقين فاراد ان يصلح صولا هو خاتم صولاته واخر حركاته فجمع كلما عنده من مكائده وحيله وسلاحه وسائر الآلات الحربية فتحرك كالجبال السائرة والبحار الزاخرة بجميع افواجه ليدخل حمى الخلافة مع ذرياته فعند ذلك انزل الله مسيحه من السماء بالحربة السماوية ليكون بين الكفر والايمان فيصلة

प्रकार की इच्छाओं में बटे हुए थे और शैतानी, दज्जाली और अत्याचारी हुकूमत के अधीन थे और संतुष्टि की फौज के उन पर उतरने तक वे बाज़ आने वाले न थे और शैतान जो पुराना सांप और बड़ा दज्जाल है अपनी क्रैद से उन्हें छोड़ने वाला नहीं था और वह चाहता था कि उन सबको खा जाए और उन्हें आग का ईंधन बना दे क्योंकि उसने अपनी छूट के शेष बचे दिनों की ओर देखा और उसे ज्ञात हुआ कि छूट के दिन थोड़े रह गए हैं। अतः वह पराजित होने से डर गया क्योंकि उसको उसी समय तक के लिए छूट दी गई थी। अतः उसने जान लिया कि वह निस्सन्देह नष्ट होने वाला है तो उसने इरादा किया कि वह अपने आक्रमणों में से अंतिम आक्रमण और अंतिम षड्यंत्र ज़ोरदार करे। तो उसने अपनी सब चालें, बहाने, हथियार और समस्त जंगी सामग्रियां इकट्ठी कीं। अतः वह चलते-फिरते पहाड़ों और हिलोरे मारते समंदर की तरह अपनी पूरी सेना के साथ आक्रमणकारी हुआ ताकि वह अपनी औलाद और नस्ल समेत खिलाफ़त के विशेष क्षेत्र में प्रवेश कर जाए। तब अल्लाह ने अपने मसीह को आसमान से आसमानी हथियार के साथ उतारा ताकि कुफ़्र तथा

القسمة وانزل معه جنده من آياته وملائكة سماواته فاليوم يوم حرب شديد وقاتل عظيم بين الداعى الى الله وبين الداعى الى غيره انها حرب ماسمع مثلها في اول الزمن ولا يسمع بعده اليوم لا يترك الدجال المفتعل ذرة من مكائده الا يستعملها ولا المسيح المبتهل ذرة من الاقبال على الله والتوجه الى المبدء الا ويستوفىها ويحاربان حرباً شديداً حتى يعجب قوتهما وشدتها كُلاً من في السماء وترى الجبال قدمُ المسيح ارسخ من قدمها والبحار قلبه ارق واجزى من ماءها وتكون محاربة شديدة وتنجر الحرب الى اربعين سنة من يوم ظهور المسيح حتى يُسمع دُعاء المسيح لتقواه وصدقه وتنزل ملائكة النصره ويجعل الله الهزيمة على الثعبان وفوجه منة على عبده

ईमान के बीच भाग्य का निर्णय हो जाए और उसके साथ अपने निशानों और आसमानी फरिश्तों की सेना उतारी। अतः आज अल्लाह की ओर बुलाने वालों और अल्लाह के अतिरिक्त दूसरे उपास्यों की ओर बुलाने वालों के बीच भयानक जंग और बड़ी लड़ाई का दिन है और यह ऐसी जंग है जिसका उदाहरण न पहले ज़माने में सुना गया और न इसके बाद सुना जाएगा। आज झूठा और मक्कार दज्जाल अपने षड्यंत्रों के प्रयोग में कोई कसर नहीं छोड़ेगा और रो-रो कर दुआएँ करने वाला मसीह खुदा की ओर बढ़ने और अपने सृष्टा की ओर ध्यान करने में कोई कमी नहीं छोड़ेगा और दोनों भयानक जंग करेंगे यहां तक कि समस्त आसमानी वजूदों को उनकी शक्ति और तेज़ी आश्चर्य में डाल देगी। पहाड़ मसीह के क्रदमों को स्वयं से अधिक मज़बूत पाएंगे और समुद्र उसके दिल को नर्मि और तेज़ बहाव में अपने पानी से अधिक पाएंगे। घमासान का युद्ध होगा और मसीह के प्रकटन के दिन से 40 वर्ष तक जंग जारी रहेगी यहां तक कि मसीह की दुआ उसके संयम तथा सच्चाई के कारण स्वीकार होगी और सहायता हेतु फ़रिश्ते उतरेंगे और अल्लाह अपने बंदे पर उपकार करते हुए उस सांप अर्थात् शैतान और उसकी फौज के लिए पराजय निर्धारित कर देगा

فترجع قلوب الناس من الشرك الى التوحيد ومن حب الشيطان الى حب الله الوحيد والى المحوية من الغيرية والى ترك النفس من الاهواء النفسانية فان الشيطان يدعو الى الهوى والقطيعة والمسيح يدعو الى الاتحاد والمحوية وبينهما عداوة ذاتية من الازل واذا غلب المسيح فاختم عند ذلك محاربات كلها التي كانت جارية بين العساكر الرحمانية والعساكر الشيطانية فهناك يكون اختتام دور هذه الدنيا ويستدير الزمان وترجع الفطرت الانسانية الى هيئتها الاولى الا الذين احاطتهم الشقوة الازلية فاولئك من المحرومين ومن فضل الله واحسانه انه جعل هذا الفتح على يد المسيح المحمدي ليرى الناس انه اكمل من المسيح الاسرائيلي في بعض شيونه وذلك

और लोगों के दिल शिर्क से एकेश्वरवाद और शैतान की मोहब्बत से 'एक' खुदा की मोहब्बत और अन्य उपास्यों से खुदा में विलीनता की ओर, तामसिक इच्छाओं से संयम की ओर लौटेंगे क्योंकि शैतान तामसिक इच्छाओं और खुदा से संबंध विच्छेद की ओर बुलाता है और मसीह एकेश्वरवाद और फ़ना की ओर बुलाता है और उन दोनों के बीच अनादि से व्यक्तिगत शत्रुता है और जब मसीह विजयी होगा तो उस समय रहमानी और शैतानी सेनाओं के बीच चल रही लड़ाइयाँ समाप्त हो जाएंगी। तब इस संसार के दौर का अंत होगा और ज़माना अपना चक्र पूर्ण कर लेगा और इंसानी फितरत अपनी पहली प्रकृति की ओर लौट आएगी, सिवाय उन लोगों के जिन्हें उनके अनादि दुर्भाग्य ने घेर रखा है तो यही लोग वंचित हैं। और अल्लाह ने अपनी कृपा और उपकार से यह महान विजय मसीह मुहम्मदी के हाथ पर मुकद्दर कर दी ताकि वह लोगों को दिखाए कि वह इस्राईली मसीह से अपने अधिकतर कार्यों में श्रेष्ठतर है और यह अल्लाह का वह स्वाभिमान है जिसे ईसाइयों ने अपने मसीह की बढ़ा-चढ़ा कर प्रशंसा के द्वारा जोश दिलाया। और जब मसीह मुहम्मदी की यह शान है तो उस नबी की शान कितनी बुलन्द होगी जिसका वह उम्मीती है। हे अल्लाह!

من غیرة الله التي هيجهها النصرى باطراء مسيحيهم ولما كان شان  
المسيح المحمدى كذلك فما اكر شان نبى هو من اُمته اللهم صل  
عليه سلامًا لا يغادر بركة من بركاتك وسود وجوه اعداءه بتائيداتك  
واياتك آمين

الراقم ميرزا غلام احمد من مقام القاديان الفنجاب  
لخمس وعشرين من اغسطوس سنه ١٩٠١

उस पर ऐसा दरूद और सलाम भेज जो तेरी बरकतों में से किसी बरकत से  
खाली न हो और अपनी सहायतायों तथा चमत्कारों से उसके शत्रुओं के चेहरे  
काले कर दे। आमीन।

लेखक- मिर्जा गुलाम अहमद

क्रादियान- पंजाब

25 अगस्त 1901 ई०

## खुल्बा इल्हामिया के टाइटल पृष्ठ के हाशिया का परिशिष्ट

Bishops Bournno

Lahore

Aug 15.01

Dear Sir,

The Lord Jesus Christ was certainly not a lawgiver, in the sense in which Moses was, giving a complete descriptive law about such things as clean and unclean food etc. That he did not do this must be evident to any one who reads the New testament with any care or thought whatever. The Mosaic law of meats etc was given in order to develop in the minds of men who were in a very elementary stage of education and religion, the sense of law, and gradually of Holiness and the reverse. It is therefore called in the New testament a "Schoolmaster to bring us to Christ" (gal iii. 24) for it developed a conscience in men which, when awakened, could not find rest in any external or purely ceremonial acts but needed an inner righteousness of heart and life. And it was to bring this that christ came, By His life and death he both deepened in men's minds the sense of what sin really is and how terrible it is and also showed men how they could be reconciled to God, obtaining forgiveness of sins and also power by the gift of the Holy Spirit to live a new life in real holiness, and in love to God and man. What the characteristics of that new life are, you can see by reading the sermon of the mount St. Mathew Chapters V-VII.

(इस का अनुवाद अगले पृष्ठ पर देखो)

## अनुवाद

बिशप्स बोर्न, लाहौर

दिनांक 15 अगस्त, 1901 ई०

श्री मान,

प्रभु यीशु मसीह कदापि शरीयत वाला न था जिन अर्थों में कि हजरत मूसा शरीयत वाला था जिसने एक पूर्ण विस्तृत शरीयत ऐसे मामलों के संबंध में दी कि उदाहरणतया खाने के लिए हलाल क्या है और हराम क्या है इत्यादि। कोई व्यक्ति इंजील को बिना विचार किए सरसरी निगाह से भी देखे तो उस पर अवश्य प्रकट हो जाएगा के यशु मसीह शरीयत वाला न था। मूसा की शरीयत खाने इत्यादि मामलों के बारे में इसलिए अवतरित हुई थी कि इंसान का दिल प्रशिक्षण पाकर शरीयत के उद्देश्य को प्राप्त कर ले और धीरे-धीरे पवित्र और अपवित्र को समझने लगे क्योंकि इंसान उस समय शिक्षा और धर्म की प्रारंभिक अवस्था में था। इसलिए इंजील में कहा गया है कि मूसा की शरीयत एक शिक्षक थी जो हमें मसीह तक लाई क्योंकि इस शरीयत ने इंसान के दिल में एक ऐसी फितरत पैदा कर दी जो की उन्नति प्राप्त करके केवल बाह्य एवं रस्मी कर्मों पर संतुष्ट न हुई अपितु दिल और रूह की अंदरूनी पवित्रता की तलाश करने वाली हुई। इस पवित्रता को लाने के लिए मसीह आया। अपनी जिंदगी और मौत के द्वारा उसने लोगों के दिलों में यह समझ डाल दी कि गुनाह क्या है और वह कैसा भयानक है और गुनाहों की क्षमा प्राप्त करके और रूहुल कुदुस (जिब्रील फ़रिश्ता) की सहायता से हम पवित्रता की नई जिंदगी पाकर और खुदा और इंसान के मध्य मुहब्बत स्थापित करके खुदा को फिर प्रसन्न कर सकते हैं। मती अध्याय 5-7 में पहाड़ी शिक्षा के पढ़ने से ज्ञात हो सकता है कि इस नई जिंदगी का तरीका क्या था।

(हस्ताक्षर जे ए लैफ्राय बिशप लाहौर)





परिशिष्ट खुत्बा इल्हामिया

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

## मीनार-तुल-मसीह के चन्दे का विज्ञापन

بخرام که وقت تو نزدیک رسید

و پائے محمدیان بر منار بلندتر محکم افتاد

(यह वह इल्हाम है जो बराहीन-ए-अहमदिया में वर्णित

है जिसको प्रकाशित हुए बीस वर्ष गुजर गए)

खुदा तआला की कृपा से क्रादियान की मस्जिद जो मेरे स्वर्गीय पिता जी ने दो बाजारों के बीच में एक ऊंची ज़मीन पर, छोटी सी बनाई थी अब इस्लाम के वैभव (शानो-शौकत) के लिए बहुत विशाल की गई और इमारतों के कुछ भाग और भी बनाए गए हैं। इसलिए अब इस मस्जिद ने और रूप ले लिया है। अर्थात् पहले इस मस्जिद की लम्बाई-चौड़ाई केवल इतनी थी कि इसमें मुश्किल से दो सौ आदमी नमाज़ पढ़ सकते थे किन्तु अब इसमें दो हजार के लगभग लोग नमाज़ पढ़ सकते हैं और सम्भवतः यह मस्जिद भविष्य में और भी विशाल हो जाएगी। मेरे दावे की प्रारंभिक अवस्था में इस मस्जिद में जुमे की नमाज़ के लिए अधिक से अधिक पन्द्रह-बीस आदमी एकत्र हुआ करते थे, परन्तु अब खुदा तआला की यह अनुकम्पा है कि तीन सौ या चार सौ नमाज़ी और कभी सात सौ से आठ सौ तक भी नमाज़ी हो जाते हैं, यह एक सामान्य अनुमान है। लोग दूर-दूर से नमाज़ पढ़ने के लिए आते हैं। खुदा तआला की यह अद्भुत कुदरत है कि पंजाब और हिंदुस्तान के मौलवियों ने बहुत जोर लगाया कि हमारा सिलसिला टूट जाए तथा अस्त-व्यस्त हो जाए, किन्तु ज्यों-ज्यों वे समूल विनाश के लिए प्रयास करते गए और भी उन्नति होती गई और विलक्षण तौर पर सिलसिला इस देश में फैल गया। अतः यह ऐसी बातें हैं कि आँखें रखने वालों

के लिए एक निशान है। यदि यह मनुष्य का कारोबार होता तो इन मौलवियों के प्रयास से कब का मिट जाता। परन्तु चूंकि यह खुदा का कारोबार और उसके हाथ से था, इसलिए मानवीय हस्तक्षेप इसको रोक न सका।

अब इस मस्जिद को पूर्ण करने के लिए एक और प्रस्ताव तय पाया है और वह यह है कि मस्जिद के पूरब की ओर जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस का आशय है एक बहुत ऊंचा मीनार बनाया जाए और वह मीनार तीन उद्देश्यों के लिए विशिष्ट हो :-

**प्रथम** यह कि अज्ञान देने वाला उस पर चढ़कर पाँच समय नमाज़ की अज्ञान दिया करे। ताकि खुदा के पवित्र नाम की ऊँची आवाज़ से दिन-रात में पाँच बार तब्लीग हो, ताकि संक्षिप्त शब्दों में हमारी ओर से लोगों को पाँच समय यह आवाज़ दी जाए कि वह अजर-अमर खुदा जिसकी समस्त लोगों को इबादत करनी चाहिए केवल वही खुदा है जिसकी ओर उसका चुना हुआ और पवित्र रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मार्ग-दर्शन करता है। उसके अतिरिक्त पृथ्वी और आकाश में और कोई खुदा नहीं।

**द्वितीय** उद्देश्य इस मीनार से यह होगा कि इस मीनार की दीवार के किसी बहुत ऊंचे भाग पर एक बड़ी लालटेन स्थापित की जाएगी जिसका मूल्य लगभग एक सौ रुपये या कुछ अधिक होगा। यह प्रकाश मनुष्यों की आँखें प्रकाशित करने के लिए दूर-दूर तक जायेगा।

**तृतीय** उद्देश्य इस मीनार से यह होगा कि इस मीनार की दीवार के किसी ऊंचे भाग पर एक बड़ी अलार्म घड़ी जो चार सौ या पाँच सौ रुपये के मूल्य की होगी, लगा दी जाएगी ताकि लोग अपने समय को पहचानें और लोगों को समय पहचानने की ओर ध्यान हो।

ये तीनों कार्य जो इस मीनार द्वारा जारी होंगे इनके अन्दर तीन सच्चाइयां (रहस्य) छुपी हुई हैं। **प्रथम** यह कि बांग (अज्ञान) जो पांच समय ऊंची आवाज़ से लोगों को पहुंचाई जाएगी। इसके अन्तर्गत यह सच्चाई छिपी है कि अब निश्चित तौर पर समय आ गया है कि "ला इलाहा इल्लल्लाह" की आवाज़ प्रत्येक कान

तक पहुँचे। अर्थात् समय अब स्वयं बोलता है कि उस अजर-अमर जीवित खुदा के अतिरिक्त जिसकी ओर पवित्र रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मार्ग दर्शन किया है अन्य सब खुदा जो बनाये गए हैं झूठे हैं? क्यों झूठे हैं? इसलिए कि उनके मानने वाले उनसे कोई बरकत नहीं पा सकते, कोई निशान नहीं दिखा सकते।

**दूसरे** वह लालटेन जो इस मीनार की दीवार में स्थापित की जाएगी उसमें सच्चाई यह है ताकि लोग जान लें कि आकाशीय प्रकाश का समय आ गया और जैसा कि पृथ्वी ने अपने आविष्कारों में क्रम आगे बढ़ाया ऐसा ही आकाश ने भी चाहा कि अपने प्रकाशों को बड़ी सफाई से प्रकट करे ताकि सत्याभिलाषियों के लिए पुनः ताजगी के दिन आएँ और हर आँख जो देख सकती है आकाशीय प्रकाश को देखे तथा उस प्रकाश के द्वारा गलतियों से बच जाए।

**तीसरे** वह अलार्म घड़ी जो इस मीनार की किसी दीवार के भाग में लगाई जायेगी उसमें यह सच्चाई छुपी है कि ताकि लोग अपने समय को पहचान लें अर्थात् समझ लें कि आकाश के द्वारों के खुलने का समय आ गया। अब से ज़मीनी जिहाद बन्द किए गए और लड़ाइयों का अन्त हो गया जैसा कि हदीसों में पहले लिखा गया था कि जब मसीह आएगा तो धर्म के लिए लड़ना हराम (वर्जित) किया जायेगा। **अतः आज से धर्म के लिए लड़ना हराम किया गया।** अब इसके पश्चात् जो धर्म के लिए तलवार उठाता है और गाज़ी (धर्म योद्धा) नाम रखा कर काफ़िरों का वध करता है वह खुदा और उसके रसूल का अवज्ञाकारी है। सही बुखारी को खोलो और उस हदीस को पढ़ो जो मसीह मौऊद के बारे में है अर्थात् **يضع الحرب** जिस के अर्थ ये हैं कि जब मसीह आएगा तो जिहादी लड़ाइयों का अन्त हो जायेगा। अब मसीह आ चुका और **यही है जो तुम से बोल रहा है।**

अतः हदीस-ए-नबवी में जो मसीह मौऊद के बारे में लिखा गया था कि वह मीनार-ए-बैज़ा (सफ़ेद मीनार) के पास उतरेगा। उस से अभिप्राय यही था कि मसीह मौऊद के समय का यह निशान है कि उस समय संसार के परस्पर मेल जोल के कारण तथा मार्गों के खुलने और मुलाक़ात की सुविधा के कारण आदेशों का प्रचार-प्रसार तथा धार्मिक प्रकाश पहचाना और आवाज़ देना इतना सरल होगा कि मानो यह

व्यक्ति मीनार पर खड़ा है। ये रेल, तार, अग्निबोट तथा डाक-व्यवस्था की ओर संकेत था। जिसने समस्त संसार को एक शहर के समान कर दिया। अतः मसीह के युग के लिए मीनार के शब्द में यह संकेत है कि उसका प्रकाश एवं आवाज़ बहुत शीघ्र संसार में फैलेगी और ये बातें किसी और नबी को प्राप्त नहीं हुईं। इंजील में लिखा है कि मसीह का आना ऐसे युग में होगा जैसा कि बिजली आकाश के एक किनारे में चमक कर समस्त किनारों को पल भर में प्रकाशित कर देती है। यह भी इसी बात की ओर संकेत था। यही कारण है कि चूंकि मसीह समस्त संसार को प्रकाश पहुँचाने आया है, इसीलिए उसे पहले से यह सारे सामान दिए गए, वे खून बहाने के लिए नहीं अपितु समस्त संसार के लिए मैत्री (सुलह) का संदेश लाया है। अब मनुष्यों के क्यों खून किए जाएँ। यदि कोई सत्य का अभिलाषी है तो वह खुदा के निशान देखे जो सैंकड़ों प्रकटन में आए और आ रहे हैं और यदि खुदा का अभिलाषी नहीं तो उसे छोड़ दो और उसे मारने की चिंता में मत रहो, क्योंकि मैं सच-सच कहता हूँ कि अब वह अंतिम दिन निकट है जिससे समस्त नबी जो संसार में आए डराते रहे।

अतएव यह अलार्म घड़ी जो समय को पहचानने के लिए लगाई जायेगी मसीह के समय के लिए यादध्यानी है और स्वयं इस मीनार के अन्दर ही एक सच्चाई छिपी है। और वह यह कि आँहज़रत सल्लाहो अलैहि वस्सल्लम की हदीसों में निरन्तर आ चुका है कि आने वाला मसीह मीनार वाला होगा अर्थात् उस के युग में इस्लाम की सच्चाई चरमोत्कर्ष तक पहुँच जाएगी जो उस मीनार के समान है जो बहुत ऊंचा हो और इस्लाम धर्म समस्त धर्मों पर विजयी हो जायेगा, उसी के समान जैसा कि कोई व्यक्ति जब एक बुलंद मीनार पर अज्ञान देता है तो वह आवाज़ समस्त आवाज़ों पर विजयी हो जाती है। अतः निश्चित था कि ऐसा ही मसीह के दिनों में होगा। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है -

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ  
(अस्सफ़ः- 10)

यह आयत मसीह मौऊद के बारे में है और इस्लामी प्रमाण की वह बुलन्द आवाज़ जिसके नीचे समस्त आवाज़ें दब जाएँ वह अनादि काल से मसीह के

लिए विशिष्ट की गई है और हमेशा से मसीह मौऊद का क्रदम उस बुलन्द मीनार पर ठहराया गया है जिससे अधिक ऊंची और कोई इमारत नहीं। इसी की ओर बराहीन अहमदिया के उस इल्हाम में संकेत है जो वर्णित पुस्तक के पृष्ठ 522 में दर्ज है और वह यह है :-

“بخرام که وقت تو نزدیک رسید و پائے محمدیاں بر منار بلندتر محکم افتاد”

इसी प्रकार मसीह मौऊद की मस्जिद भी मस्जिद अक्रसा है। क्योंकि वह इस्लाम के प्रारम्भिक युग से सुदूर अन्तिम युग पर है। और एक रिवायत में खुदा के पवित्र नबी ने यह भविष्यवाणी की थी कि मसीह मौऊद का नुजूल (अवतरण) मस्जिद अक्रसा के पूर्वी मीनार के निकट होगा।★

★**हाशिया :-** कुछ हदीसों में यह पाया जाता है कि दमिशक्र के पूर्वी दिशा में कोई मीनार है जिसके निकट मसीह का नुजूल (अवतरण) होगा। अतः यह हदीस हमारे उद्देश्य के विपरीत नहीं है, क्योंकि हम कई बार वर्णन कर चुके हैं कि हमारा यह गाँव जिसका नाम क्रादियान है और हमारी यह मस्जिद जिसके निकट यह मीनार तैयार होगा दमिशक्र की पूर्वी दिशा में ही है। हदीस में इस बात का विवरण नहीं कि मीनारा दमिशक्र से संलग्न तथा उसका एक भाग होगा अपितु उसकी पूर्वी दिशा में होगा। फिर दूसरी हदीस में इस बात का विवरण है कि मस्जिद अक्रसा के निकट मसीह उतरेगा। इस से सिद्ध होता है कि वह मीनार यही मस्जिद-ए-अक्रसा का मीनार है और दमिशक्र का वर्णन इस उद्देश्य के लिए है जो हम अभी वर्णन कर चुके हैं, और मस्जिद अक्रसा से अभिप्राय इस स्थान पर यारोशलम की मस्जिद नहीं है अपितु मसीह मौऊद की मस्जिद है जो लम्बे समय की दृष्टि से खुदा के नजदीक मस्जिद अक्रसा है। इस से किसको इन्कार हो सकता है कि जिस मस्जिद की नींव मसीह मौऊद रखे वह इस योग्य है कि फिर उसको 'मस्जिद-ए-अक्रसा' कहा जाए। जिसके मायने हैं 'मस्जिद अब्द'। क्योंकि जब कि मसीह मौऊद का अस्तित्व इस्लाम के लिए एक अन्तिम दीवार है और निश्चित है कि वह अन्तिम युग में और दुनिया के दूरस्थ भाग में आकाशीय बरकतों के साथ उतरेगा। इसलिए प्रत्येक मुसलमान को यह मानना पड़ता है कि मसीह मौऊद की मस्जिद, मस्जिद अक्रसा है, क्योंकि इस्लामी युग की लम्बी रेखा के अन्तिम बिन्दु पर मसीह मौऊद का अस्तित्व है इसीलिए मसीह मौऊद की मस्जिद पहले युग से जो इस्लाम का प्रारंभिक युग है बहुत दूर है। अतः इस कारण

अब हे दोस्तो! यह मीनार इसलिए तैयार किया जाता है ताकि हदीस के अनुसार मसीह मौऊद के युग की यादगार हो और महान भविष्यवाणी पूरी हो जाए, जिसका वर्णन पवित्र कुर्आन की इस आयत में है कि

سُبْحَنَ الَّذِيَّ أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ  
إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي بَرَكْنَا حَوْلَهُ (2- इस्त्राईल) (बनी)

और जिसके मीनार का वर्णन हदीस में भी है कि मसीह का उतरना मीनार

**शेष हाशिया** - से मस्जिद अक्रसा कहलाने योग्य है और इस मस्जिद अक्रसा का मीनार इस योग्य है कि सब मीनारों से ऊंचा हो। क्योंकि यह मीनार मसीह मौऊद का सच्चाई को स्थापित करने, साहस व्यय करने, समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने और मिल्लत को बुलन्द करने का भौतिक चित्रण है। जैसा कि इस्लामी सच्चाई मसीह मौऊद के द्वारा उच्चतम श्रेणी की बुलन्दी तक पहुँच गई है और मसीह का साहस खोये हुए ईमान को सुरैया (सितारे) से वापस ला रहा है, इसी के अनुसार यह मीनार भी रूहानी बातों की श्रेष्ठता प्रकट कर रहा है। वह आवाज़ जो संसार के चारों ओर पहुँच जाएगी वह रूहानी तौर पर बहुत ऊंचे मीनार को चाहती है। लगभग बीस वर्ष हुए कि मैंने अपनी पुस्तक बराहीन अहमदिया में खुदा तआला का यह कलाम जो मेरी जीभ पर जारी किया गया लिखा था। अर्थात् यह कि  
انا انزلناه قريياً من القادياتن و با الحق انزلناه و با الحق نزل. صدق الله ورسوله و  
كان امر الله مفعولاً

देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ 498, अर्थात् हमने इस मसीह मौऊद को क्रादियान में उतारा है और वह वास्तविक आवश्यकता के साथ उतारा गया और वास्तविक आवश्यकता के साथ उतरा। खुदा ने कुर्आन में और रसूल ने हदीस में जो कुछ फ़रमाया था वह उसके आने से पूरा हुआ। इस इल्हाम के समय जैसा कि मैं कई बार लिख चुका हूँ, मुझे कश्फ़ी तौर पर यह भी ज्ञात हुआ था कि यह इल्हाम पवित्र कुर्आन में लिखा हुआ है और उस समय कश्फ़ी अवस्था में मेरे दिल में इस बात का विश्वास था कि पवित्र कुर्आन में तीन शहरों का वर्णन है अर्थात् मक्का और मदीना और क्रादियान का। इस बात पर लगभग बीस वर्ष हो गए जबकि मैंने बराहीन अहमदिया में लिखा था। अब इस किताब के लिखने के समय मुझ पर यह प्रकट हुआ कि मैंने जो कुछ बराहीन अहमदिया में क्रादियान के बारे में कश्फ़ी तौर पर लिखा अर्थात् यह कि उसकी चर्चा पवित्र कुर्आन में मौजूद हैं। वास्तव में यह सही बात है, क्योंकि यह निश्चित बात है कि पवित्र कुर्आन की यह आयत कि

के पास होगा। दमिश्क का वर्णन उस हदीस में जो मुस्लिम ने वर्णन की है इस उद्देश्य से है कि तीन खुदा बनाने का बीजारोपण प्रथम दमिश्क से आरंभ हुआ है और मसीह मौऊद का नुज़ूल इस उद्देश्य से है ताकि तीन के विचारों को समाप्त करके पुनः एक खुदा का प्रताप संसार में स्थापित करे। अतः इस संकेत के लिए वर्णन किया गया कि मसीह का मीनार जिसके निकट उसका नुज़ूल होगा दमिश्क से पूरब की ओर है, और यह बात सही भी है। क्योंकि

**शेष हाशिया -**

سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي بَرَكْنَا حَوْلَهُ  
(2- इस्त्राईल - बनी)

मे'राज-ए-मक़ानी व ज़मानी (स्थान तथा समय सम्बन्धी) दोनों पर आधारित है और इसके बिना मे'राज अपूर्ण रहता है। अतः जैसा कि स्थान सम्बन्धी मेराज (यात्रा) की दृष्टि से खुदा तआला ने आंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मस्जिदुल हुराम से बैतुल मुक़द्दस तक पहुंचा दिया था, ऐसा ही समय सम्बन्धी यात्रा की दृष्टि से आंज़रत को इस्लाम के वैभव के युग से जो आंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का युग था, इस्लामी बरकतों के युग तक जो मसीह मौऊद का युग है, पहुंचा दिया। ★ अतः इस पहलु के अनुसार जो इस्लाम के अन्तिम युग तक आंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कश्फ़ी यात्रा है मस्जिद अक़सा से अभिप्राय मसीह मौऊद की मस्जिद है जो क़ादियान में स्थित है, जिसके बारे में बराहीन अहमदिया में खुदा का कलाम यह है -

مُبَارَكٌ وَمُبَارَكٌ وَكُلُّ أَمْرٍ مُّبَارَكٌ يُجْعَلُ فِيهِ

और यह 'मुबारक' का शब्द जो कर्म और कर्ता के तौर पर आया पवित्र कुर्आन की आयत **مُبَارَكٌ وَمُبَارَكٌ وَكُلُّ أَمْرٍ مُّبَارَكٌ يُجْعَلُ فِيهِ** के अनुसार है। अतः इसमें कुछ सन्देह नहीं कि पवित्र कुर्आन में क़ादियान की चर्चा है जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है -

سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي بَرَكْنَا حَوْلَهُ  
(2- इस्त्राईल - बनी)

★**हाशिए का हाशिया -** इस्लाम के वैभव का युग जो आंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का युग था उसका बड़ा प्रभाव यह था कि हज़रत मूसा के समान मोमिनों को काफ़िरों के आक्रमण से मुक्ति दी, इसीलिए बैतुल्लाह का नाम भी बैत-ए-अमन रखा गया किन्तु बरकतों का युग जो मसीह मौऊद का युग है उसका प्रभाव यह है कि हर प्रकार के आराम पृथ्वी पर पैदा हो जाएँ और न केवल अमन अपितु ऐश्वर्यपूर्ण जीवन भी प्राप्त हो। (इसी से।)

क्रादियान जो ज़िला-गुरदासपुर पंजाब में है जो लाहौर से पश्चिम-दक्षिणी कोने में है वह दमिश्क़ से ठीक-ठीक पूर्वी दिशा में है। अतः इस से सिद्ध हुआ कि यह मीनारतुल मसीह भी दमिश्क़ से पूर्वी दिशा में है। प्रत्येक सत्याभिलाषी को चाहिए कि दमिश्क़ के शब्द पर आध्यात्मिक विचार करे कि इसमें दार्शनिकता क्या है जो यह लिखा गया है कि मसीह मौऊद दमिश्क़ के पूर्वी दिशा में उतरेगा। क्योंकि खुदा तआला की निर्धारित बातें केवल सयोगवश नहीं हो सकतीं बल्कि उनके नीचे रहस्य एवं संकेत होते हैं। कारण यह है कि समस्त बातें रहस्यों एवं

### शेष हाशिया -

इस आयत के एक तो वही अर्थ हैं जो उलमा में प्रसिद्ध हैं अर्थात् यह कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्थान सम्बन्धी मे'राज का यह बयान है, परन्तु कुछ सन्देह नहीं कि इसके अतिरिक्त आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक समय से सम्बन्धित मे'राज भी था जिसका उद्देश्य यह था ताकि आप की कश्फ़ी दृष्टि की विशेषता प्रकट हो और सिद्ध हो कि मसीही युग की बरकतें भी वास्तव में आप ही की बरकतें हैं जो आपके ध्यान और हिम्मत से पैदा हुई हैं, इसी कारण मसीह एक प्रकार से आप ही का रूप है और वह मे'राज अर्थात् दृष्टि की प्रौढ़ता, कश्फ़ी जगत की चरम सीमा तक थी जो मसीह के समय से चरितार्थ किया जाता है और उस मे'राज में जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मस्जिद हराम से मस्जिद अक्रसा तक यात्रा की वह मस्जिद अक्रसा यही है जो क्रादियान में पूरब की ओर है जिस का नाम खुदा के कलाम ने मुबारक रखा है। यह मस्जिद भौतिक तौर पर मसीह मौऊद के आदेश से बनाई गई है और रूहानी तौर पर मसीह मौऊद की बरकतों एवं विशेषताओं की तस्वीर है जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से बतौर अनुदान हैं और जैसा कि मस्जिद अल हराम की रूहानियत हज़रत आदम और हज़रत इब्राहीम की विशेषताएं तथा बैतुल मुकद्दस की रूहानियत बनी इस्राईल के नबियों की विशेषताएं हैं। इसी प्रकार मसीह मौऊद की यह मस्जिद अक्रसा जिसका पवित्र कुर्आन में वर्णन है उसकी रूहानी विशेषताओं की तस्वीर है।

अतः इस जांच पड़ताल से ज्ञात हुआ कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मे'राज में गुज़रे हुए युग की ओर चढ़ना है और भविष्यकाल की ओर उतरना है। इस मे'राज का निष्कर्ष यह है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पहलों और बाद में आने वालों में सर्वश्रेष्ठ हैं, मे'राज जो मस्जिदुल हराम से आरम्भ हुआ उस में यह संकेत है कि



भेदों से भरी हुई हैं। अब हमारे विरोधी यद्यपि इस दमिश्की हदीस को बार-बार पढ़ते हैं परन्तु वे इसका उत्तर नहीं दे सकते कि हदीस में जो यह बताया गया है कि मसीह मौऊद दमिश्क के पूरब दिशा के मीनार के निकट उतरेगा, इसमें क्या भेद है, अपितु उन्होंने एक कहानी की तरह इस हदीस को समझ लिया है। परन्तु स्मरण रहे कि यह कहानी नहीं है और खुदा तआला व्यर्थ कार्यों से पवित्र

**शेष हाशिया** - आदम सफियुल्लाह की समस्त विशेषताएं और इब्राहीम खलीलुल्लाह की समस्त विशेषताएं आंहरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में मौजूद थीं। फिर यहाँ से आंहरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क्रदम स्थान सम्बन्धी यात्रा के तौर पर बैतुल मुकद्दस की ओर गया। और उसमें यह संकेत था कि आंहरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में समस्त इस्त्राईली नबियों की विशेषताएं भी मौजूद हैं। और फिर इस स्थान से आंहरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कदम समय संबंधी यात्रा के तौर पर उस मस्जिद अक्सा तक गया जो मसीह मौऊद की मस्जिद है। अर्थात् कश्फ़ी दृष्टि उस अन्तिम युग तक जो मसीह मौऊद का युग कहलाता है, पहुँच गई। यह इस बात की ओर संकेत था कि जो कुछ मसीह मौऊद को दिया गया वह आंहरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हस्ती (अस्तित्व) में मौजूद है। और फिर आंहरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क्रदम आकाशीय यात्रा के तौर पर ऊपर की तरफ़ गया और 'क्राबा कौसैन' का पद पाया। यह इस बात की ओर संकेत था कि आंहरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुदा तआला की विशेषताओं के सर्वांगपूर्ण द्योतक थे। अतः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इस प्रकार का मे'राज अर्थात् मस्जिदुल हराम से मस्जिद अक्सा तक जो समय और स्थान संबंधी दोनों प्रकार की यात्रा थी तथा साथ ही खुदा तआला की ओर एक यात्रा थी जो समय और स्थान दोनों से पवित्र थी। इस नवीन ढंग की मे'राज से आशय यह था कि आंहरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खैरुल अब्वलीन वलआखरीन (पहलों और बाद में आने वालों में सर्वश्रेष्ठ) हैं और उन का खुदा की तरफ़ यात्रा करना उस बुलन्दी के बिन्दु पर है कि उस से अधिक की किसी मनुष्य को गुंजायश नहीं। परन्तु इस हाशिये में हमारा मतलब केवल यह है कि जैसा आज से बीस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में कश्फ़ी तौर पर लिखा गया था कि पवित्र कुर्आन में क्रादियान का वर्णन है। यह कश्फ़ अत्यन्त सही और ठीक था, क्योंकि समय की दृष्टि से आंहरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मे'राज और मस्जिद अक्सा की तरफ़ यात्रा मस्जिदुलहराम से आरम्भ होकर यह किसी प्रकार सही नहीं हो सकता जब तक ऐसी मस्जिद तक आंहरत सल्लल्लाहु अलैहि

है अपितु उस हदीस के शब्दों में जो पहले दमिश्क का वर्णन किया और फिर उसके पूर्वी ओर एक मीनार बताया एक बहुत बड़ा रहस्य है, और वह वही है जो अभी हम वर्णन कर चुके हैं। अर्थात् यह कि तस्लीस एवं तीन खुदाओं की बुनियाद दमिश्क से ही पड़ी थी। क्या ही अशुभ वह दिन था जब पोलूस यहूदी ने एक स्वप्न की योजना बनाकर दमिश्क में प्रवेश किया, तथा कुछ भोले-भाले

**शेष हाशिया** - वसल्लम की यात्रा स्वीकार न की जाए जो समय की दूरी की दृष्टि से मस्जिद अत्रसा हो और स्पष्ट है कि मसीह मौऊद का वह युग है जो इस्लामी समुद्र का आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग के मुक्राबले पर दूसरा किनारा है। यात्रा का आरंभ जो मस्जिदुल हराम से वर्णन किया गया और यात्रा का अंत जो उस बहुत दूर की मस्जिद तक निर्धारित किया गया जिसके चारों ओर को बरकत दी गई है। यह बरकत देना इस बात की ओर संकेत है कि आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में इस्लाम का वैभव प्रकट किया गया और हराम किया गया कि काफ़िरों का अत्याचार इस्लाम को मिटा दे जैसा कि आयत-

(आले इमरान-98)

وَمَنْ دَخَلَهُ كَانَ آمِنًا

से स्पष्ट है परन्तु मसीह मौऊद के युग में जिसका दूसरा नाम महदी भी है, समस्त क्रौमों पर इस्लाम की बरकतें सिद्ध की जाएँगी और दिखाया जायेगा कि एक इस्लाम ही बरकत वाला धर्म है जैसा कि वर्णन किया गया है कि वह ऐसा बरकतों का युग होगा कि संसार में मैत्री अर्थात् सुलह की बरकत फैलेगी और आकाश अपने निशानों के साथ बरकतें दिखायेगा तथा पृथ्वी में नाना प्रकार के फलों के उपलब्ध होने और भिन्न-भिन्न प्रकारों के अरामों से इतनी बरकतें फैल जाएँगी जो इस से पहले कभी नहीं फैली होंगी। इसी कारण से मसीह मौऊद और महदी मा'हूद के युग का नाम हदीसों में बरकतों का युग (जमानुल बरकात) है जैसा कि तुम देखते हो कि हजारों नवीन अविष्कारों ने पृथ्वी पर कैसी बरकतें और आराम फैला दिए हैं। क्योंकि रेल के द्वारा पूरब और पश्चिम के मेवे एक स्थान पर एकत्र हो सकते हैं। तथा तार के द्वारा हजारों कोसों की खबरें पहुँच जाती हैं। सफ़र के समस्त संकट अचानक दूर हो गए जो पूर्व युग में थे।

अतः इस युग का नाम जिसमें हम हैं "बरकतों का युग" है, परन्तु हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का युग "समर्थनों का युग" और "आपदाओं के निवारण का युग" था और इस युग में खुदा तआला का बड़ा उद्देश्य बुराई का निवारण था। इसलिए खुदा तआला ने उस युग में इस्लाम को अपने शक्तिशाली हाथ से शत्रुओं से बचाया और

ईसाइयों के पास यह व्यक्त किया कि खुदावन्द मसीह मुझे दिखाई दिया और उस शिक्षा को प्रकाशित करने के लिए आदेश दिया कि जैसे वह भी एक खुदा है। अतः वही स्वप्न तस्लीस की धारणा का बीजारोपण था। निष्कर्ष यह कि बहुत बड़े शिर्क का खेत पहले दमिश्क में ही बढ़ा और फूला और फिर यह जहर अन्य-अन्य स्थानों में फैलता गया। चूंकि खुदा तआला को मालूम था कि मनुष्य को खुदा बनाने का बुनियादी पत्थर पहले दमिश्क में ही रखा गया, इसलिए खुदा

**शेष हाशिया** - शत्रुओं को यों हांक दिया जैसे कि एक शक्तिशाली पुरुष अपनी लाठी से कुत्तों को हांक देता है।

फिर चूंकि मसीह मौऊद और महदी मौऊद का युग "बरकतों का युग" था इसलिए खुदा तआला ने उसके बारे में फ़रमाया - **بَارَكْنَا حَوْلَهُ** अर्थात् मसीह मौऊद के यात्री के तौर पर थोड़े समय तक ठहरने के स्थान के इर्द-गिर्द जहाँ देखोगे हर ओर बरकतें दिखाई देंगी। अतः हम देखते हैं कि पृथ्वी कैसे आबाद हो गई, बाग कैसे प्रचुर मात्रा में हो गए, नहरें कैसे अधिक संख्या में जारी हो गईं, रहन-सहन के आराम की वस्तुएं कितनी बड़ी संख्या में विद्यमान हो गईं। फिर ज़मीनी बरकतें हैं और जैसे इस युग में ज़मीनी और आकाशीय बरकतें प्रचुरता के साथ प्रकट हो गई हैं, इसी प्रकार आंजूरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में सहायताओं का भी एक दरिया बह रहा था।

निष्कर्ष यह कि युग दो प्रकार के हैं- (i) सहायताओं तथा आपदाओं को दूर करने का युग (ii) बरकतों तथा पवित्र एवं वैध वस्तुओं का युग। खुदा तआला ने अपने इस कथन में इसी की ओर संकेत किया है -

**سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا**  
**الَّذِي بَرَكْنَا حَوْلَهُ**  
 (बनी इस्राईल - 2)

अतः जान ले कि अल्लाह तआला के कथन में मस्जिदुल हराम का शब्द उस युग को बताता है जिसमें खुदा की सहायता से अल्लाह तआला के हुर्मात\* का सम्मान प्रकट होगा उसकी हुदूद (धर्मानुसार दिए जाने वाले दण्ड), उसके आदेशों, कर्तव्यों का सम्मान प्रकट होगा और तू उसके धर्म के वैभव तथा उसकी मिल्लत का रोब-दबदबा देखेगा। वह युग हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का युग है और मस्जिदुल-हराम वह घर जिसे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मक्का में बनाया और वह आज तक मौजूद है, अल्लाह तआला ने प्रत्येक आपदा

\* **हुर्मात** - अल्लाह तआला की प्रतिष्ठित एवं सम्मानित चीज़ें। (अनुवादक)

ने उस युग के वर्णन के समय जब खुदा का स्वाभिमान (गौरत) उस झूठी शिक्षा को समाप्त करेगी फिर दमिश्क का वर्णन किया और कहा कि मसीह का मीनार अर्थात् उसके प्रकाश के प्रकट होने का स्थान दमिश्क के पूरब की ओर है। इस इबारत से यह अभिप्राय नहीं था कि वह मीनार दमिश्क का एक भाग है और दमिश्क में स्थापित है जैसा की दुर्भाग्य से समझा गया अपितु तात्पर्य यह था कि मसीह मौऊद का सूर्य के प्रकाश के समान दमिश्क के पूर्वी ओर से उदय करके पश्चिमी अंधकार को दूर करेगा और यह एक सूक्ष्म संकेत था। क्योंकि मसीह के मीनार को जिस के निकट उस का नुज़ूल (उतरना) है दमिश्क के पूर्वी ओर बताया गया तथा दमिश्क की तस्लीस को उसके पश्चिमी ओर रखा, और इस प्रकार आने वाले युग के बारे में यह भविष्यवाणी की कि जब मसीह मौऊद आयेगा तो सूर्य के समान जो पूरब से निकलता है प्रकट होगा और उसके सामने

**शेष हाशिया** - से उसकी रक्षा की। इस कथन के बाद अल्लाह तआला का यह कथन **الْأَقْصَا الَّذِي بَرَكْنَا حَوْلَهُ الْمَسْجِدِ** अर्थात् उस युग का पता देता है जिसमें पृथ्वी पर हर पहलू से बरकतें प्रकट होंगी, जैसा कि अभी मैंने वर्णन किया है, और वह युग मसीह मौऊद तथा महदी मा'हूद का युग है और मस्जिद अक्सा वह मस्जिद जिसे मसीह मौऊद ने क़ादियान में बनाया, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग से दूरी होने कारण अक्सा नाम रखा था और जबकि इस्लाम के प्रारंभिक युग से दूरी पर स्थापित है। इस पर विचार कर यह अल्लाम (जिसके ज्ञान की सीमा न हो) खुदा के रहस्यों से प्रदान किया गया है।

निष्कर्ष यह है कि आंहरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मे'राज तीन प्रकार पर विभाजित है- सैरे मकानी अर्थात् (स्थान संबंधी यात्रा), सैरे ज़मानी अर्थात् (समय संबंधी यात्रा) तथा न सैरे मकानी न सैरे ज़मानी। सैरे मकानी में संकेत है प्रभुत्व एवं विजयों की ओर अर्थात् यह संकेत कि इस्लामी देश मक्का से बैतुल मुकद्दस तक फैलेगा। और सैरे ज़मानी में संकेत है कि शिक्षाओं तथा प्रभावों की ओर। अर्थात् यह कि मसीह मौऊद का युग भी आंहरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रभावों से प्रशिक्षण प्राप्त होगा। जैसा कि पवित्र कुर्आन में फ़रमाया है - **وَآخِرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ** - (सूरत अल जुमअ:- 4) और स्थान एवं समय से मुक्त यात्रा में खुदा के उच्चतम श्रेणी के सानिध्य और निकटता की ओर संकेत है जिस पर सानिध्य की सम्भावना का दायरा समाप्त है। अतः समझ ले। (इसी से)

तस्लीस का दीपक मुर्दा जो पश्चिम की ओर स्थापित है दिन-प्रतिदिन मलीन होता जाएगा। क्योंकि पूरब से निकलना खुदा की किताबों से वैभव का लक्षण ठहराया गया है और पश्चिम की ओर जाना पतन का लक्षण। और इसी लक्षण की ओर संकेत करने के लिए खुदा तआला ने क्रादियान को जो मसीह मौऊद के उतरने का स्थान है दमिशक्र से पूरब की ओर आबाद किया तथा दमिशक्र को उस से पश्चिम की ओर रखा तथा हमारे विरोधियों को बड़ा धोखा यह लगा है कि उन्होंने हदीस के शब्दों में यह देखकर कि मसीह मौऊद उस मीनार के निकट उतरेगा जो दमिशक्र के पूर्वी ओर है यह समझ लिया कि वह मीनार दमिशक्र में ही स्थापित है। हालांकि दमिशक्र में ऐसे मीनार का अस्तित्व नहीं और यह नहीं सोचा कि यदि कहा जाए कि उदाहरणतया अमुक स्थान, अमुक शहर के पूर्वी ओर है तो क्या हमेशा उस से यह अभिप्राय हुआ करता है कि वह स्थान उस शहर से संलग्न है? और यदि हदीस में ऐसे शब्द भी होते जिन से निश्चित तौर पर यही समझा जाता कि वह मीनार दमिशक्र के साथ संलग्न (सटा हुआ) है और अन्य संभावना की गुंजायश न होती, तथापि ऐसा न होता। परन्तु अब चूंकि हदीस पर विचार करने से स्पष्ट तौर पर समझ आता है कि इस हदीस का केवल यह उद्देश्य है कि वह मीनार दमिशक्र के पूर्वी ओर है न कि वास्तव में उस शहर का भाग। अतः ईमानदारी से दूर और बुद्धिमत्ता से परे है कि खुदा तआला की उन दार्शनिकताओं एवं रहस्यों की उपेक्षा करके जिन को हमने उस विज्ञापन में व्यक्त कर दिया है अकारण इस बात पर बल दिया जाये कि वह मीनार जिसके निकट मसीह का नुजूल (उतरना) है वह दमिशक्र में स्थापित है। बल्कि जनाब रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस मीनारे से मस्जिद अक्सा का मीनारा अभिप्राय लिया है जो दमिशक्र से पूरब की ओर है, अर्थात् मसीह मौऊद की मस्जिद जिसे अभी विस्तार दिया गया है और इमारत भी बढ़ाई गई है। यह मस्जिद वास्तव में दमिशक्र से पूरब की ओर है, और इस मस्जिद को केवल इस उद्देश्य से विस्तार दिया गया और बनाया गया है ताकि दमिशक्र की खराबियों का सुधार करे और यह मीनारा वह मीनारा है जिसकी नबवी हदीसों में आवश्यकता स्वीकार की गयी। इस मीनारतुल मसीह का खर्च दस हजार रुपए से

कम नहीं है। अब जो दोस्त इस मीनार के निर्माण हेतु सहायता करेंगे मैं निस्संदेह समझता हूँ कि वे एक भारी सेवा को सम्पन्न करेंगे और मैं निस्सन्देह जानता हूँ कि ऐसे अवसर पर खर्च करना हरगिज़-हरगिज़ उनकी हानि का कारण नहीं होगा वे खुदा को कर्जा देंगे और ब्याज सहित वापस लेंगे। काश उनके दिल समझें कि खुदा के नज़दीक उस कार्य की कितनी महत्ता है। जिस खुदा ने मीनारे का आदेश दिया है उस ने इस बात की ओर संकेत कर दिया है कि इस्लाम की मुर्दा हालत में इसी स्थान से जीवन रूपी रूह फूँकी जाएगी और यह स्पष्ट विजय का मैदान होगा। किंतु यह विजय उन हथियारों के साथ नहीं होगी जो मनुष्य बनाते हैं बल्कि आकाशीय शस्त्र के साथ है जिस शस्त्र से फ़रिश्ते काम लेते हैं।

आज से मानवीय जिहाद जो तलवार से किया जाता था खुदा के आदेश से बन्द किया गया। अब इस के बाद जो व्यक्ति काफ़िर पर तलवार उठाता है और अपना नाम धर्म योद्धा (गाज़ी) रखता है वह उस रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अवज्ञा करता है जिसने आज से तेरह सौ वर्ष पूर्व फ़रमा दिया है कि मसीह मौऊद के आने पर तलवार के समस्त जिहाद समाप्त हो जायेंगे। अतः अब मेरे प्रादुर्भाव के पश्चात् तलवार का कोई जिहाद नहीं। हमारी ओर से अमन और मैत्री का सफ़ेद झंडा बुलन्द किया गया है। खुदा की ओर बुलाने का एक मार्ग नहीं। अतः जिस मार्ग का मूर्ख लोग ऐतराज़ कर चुके हैं खुदा तआला की हिकमत और युक्ति हित नहीं चाहती कि उसी मार्ग को पुनः अपनाया जाये। इसका उदाहरण ऐसा ही है कि जैसे जिन निशानों को पहले झुठलाया जा चुका है हमारे सरदार खुदा के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नहीं दिए गए। इसलिए मसीह मौऊद अपनी फ़ौज को उस वर्जित क्षेत्र से पीछे हट जाने का आदेश देता है, जो बुराई का मुक्राबला बुराई के साथ करता है वह हम में से नहीं है। स्वयं को उपद्रवी के आक्रमण से बचाओ परन्तु स्वयं उपद्रवपूर्ण मुक्राबला न करो। जो व्यक्ति एक व्यक्ति को इस उद्देश्य से कड़वी दवा देता है ताकि वह ठीक हो जाये वह उस से नेकी करता है। ऐसे व्यक्ति के बारे में हम नहीं कहते कि उस ने बुराई का

बुराई से मुक्काबला किया। प्रत्येक नेकी और बदी नीयत से ही जन्म लेती है। अतः चाहिए कि तुम्हारी नीयत कभी अपवित्र न हो ताकि तुम फ़रिशतों के समान हो जाओ।

यह विज्ञापन मीनार के निर्माण हेतु लिखा गया है परन्तु स्मरण रहे कि मस्जिद के कुछ भाग की इमारतें भी अभी ठीक नहीं हैं। इसलिए यह तय हुआ है कि मीनार के खर्चों में से जो कुछ बचेगा वह मस्जिद की दूसरी इमारत पर लगा दिया जायेगा। यह कार्य बहुत जल्दी का है दिलों को खोलो और खुदा को प्रसन्न करो। यह रुपया बहुत सी बरकतें साथ लेकर पुनः आप लोगों की ओर वापस आयेगा। मैं इस से अधिक कहना नहीं चाहता और समाप्त करता हूँ तथा खुदा के सुपुर्द।

अन्ततः मैं एक आवश्यक बात की ओर अपने दोस्तों को ध्यान दिलाता हूँ कि इस मीनार में हमारा यह भी उद्देश्य है कि मीनार के अन्दर या जैसा उचित हो एक गोल कमरा या किसी ढंग का कमरा बना दिया जाए, जिसमें कम से कम सौ आदमी बैठ सकें यह कमरा उपदेश और धार्मिक वार्तालापों के लिए काम आएगा। क्योंकि हमारा इरादा है कि वर्ष में एक या दो बार क़ादियान में धार्मिक भाषणों का एक जल्सा हुआ करे और उस जल्से में हर एक व्यक्ति मुसलमानों, हिन्दुओं, आर्यों, ईसाइयों और सिखों में से अपने धर्म की विशेषताएं वर्णन करेगा, किन्तु यह शर्त होगी कि अन्य धर्म पर किसी प्रकार का प्रहार न करे। केवल अपने धर्म और उसके समर्थन में जो चाहे सभ्यतापूर्वक कहे। इसलिए लिखा जाता है कि हमारे दोस्त इस विज्ञापन को प्रत्येक कारीगर आर्किटेक्ट को दिखाएँ, और यदि वह कोई उत्तम नमूना इस मीनार का बताए जिसमें दोनों कथित उद्देश्य पूरे हो सकते हों तो अति शीघ्र हमें इस से सूचित करें।

वस्सलाम

खाकसार

मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी

28 मई सन् 1900 ई०







### बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

يَا عِبَادَ اللَّهِ فَكِّرُوا فِي يَوْمِكُمْ هَذَا يَوْمِ الْأَضْحَى - فَإِنَّهُ أَوْدَعَ  
 أَسْرَارًا لِأُولَى النَّهْيِ وَتَعَلَّمُونَ أَنَّ فِي هَذَا الْيَوْمِ يُضْحَى بِكَثِيرٍ  
 مِنَ الْعَجَمَاوَاتِ - وَتُنَحَّرُ أَبَالُ مِنَ الْجِمَالِ وَخَنَاطِيلُ مِنَ  
 الْبَقَرَاتِ - وَتُدْبَحُ أَقَاطِيْعُ مِنَ الْغَنَمِ ابْتِغَاءً مَرْضَاتِ رَبِّ  
 الْكَاءِنَاتِ - وَكَذَلِكَ يُفْعَلُ مِنْ ابْتِدَاءِ زَمَانِ الْإِسْلَامِ - إِلَى هَذِهِ

हे अल्लाह के बन्दो! अपने इस दिन में कि जो कुर्बानी की ईद का दिन है विचार करो और सोचो क्योंकि इन कुर्बानियों में बुद्धिमानों के लिए भेद गुप्त रखे गए हैं और आप लोगों को मालूम है कि इस दिन बहुत से जानवर ज़िबह किए जाते हैं और कई रेवड़ ऊंटों के और कई रेवड़ गायों के ज़िबह किये जाते हैं और कई रेवड़ बकरियों के कुर्बानी करते हैं और यह सब कुछ खुदा तआला की प्रसन्नता के लिए किया जाता है। और इसी प्रकार इस्लामी युग के प्रारंभ से इन दिनों तक किया जाता है और मेरा विचार है कि ये कुर्बानियां जो हमारी

الْيَامِ - وَظَنِّي أَنَّ الْأَضَاحِي فِي شَرِّ يَعْتِنَا الْغَرَاءِ - قَدْ خَرَجَتْ مِنْ  
 حَدِّ الْإِحْصَاءِ - وَفَاقَتْ ضَحَايَا الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ مِنْ أُمَّمِ  
 الْأَنْبِيَاءِ - وَبَلَغَتْ كَثْرَةَ الدَّبَائِحِ إِلَى حَدِّ غُطِّي بِهِ وَجْهَ الْأَرْضِ  
 مِنَ الدِّمَاءِ - حَتَّى لَوْ جُمِعَتْ دِمَاءُهَا وَأُرِيدُ إِجْرَاءُهَا لَجَرَتْ  
 مِنْهَا الْأَنْهَارُ - وَسَالَتْ الْبِحَارُ وَفَاضَتْ الْعُدُرُ وَالْأَوْدِيَةُ  
 الْكِبَارُ - وَقَدَعْدَ هَذَا الْعَمَلُ فِي مِلَّتِنَا مِمَّا يُقَرِّبُ إِلَى اللَّهِ  
 سُبْحَانَهُ - وَحُسِبَ كَمَطِيءَةٍ تُحَاكِي الْمَرْقَ فِي السَّيْرِ وَلُمَعَانَهُ -  
 فَلَا جَلَّ ذَالِكَ سُمِّي الضَّحَايَا قُرْبَانًا - بِمَا وَرَدَ إِنَّهَا تَزِيدُ قُرْبًا  
 وَلُفْيَانًا كُلَّ مَنْ قَرَّبَ إِحْلَاصًا وَتَعَبُّدًا وَإِيمَانًا - وَإِنَّهَا مِنْ

इस उज्ज्वल शरीर में होती हैं गणना की परिधि से बाहर हैं और उनको उन कुर्बानियों पर प्रमुखता है कि जो नबियों की पहली उम्मतों के लोग किया करते थे, और कुर्बानियों की अधिकता इस सीमा तक पहुँच गई है कि उन के खून से पृथ्वी का मुँह छिप गया है। यहाँ तक कि यदि उन के खून एकत्र किए जाएँ और उन को बहाने का इरादा किया जाए तो उन से नहरें जारी हो जाएँ और नदियाँ बह निकलें और पृथ्वी के निचले भागों में तथा घाटियों में खून प्रवाहित होने लगे और यह काम हमारे धर्म में उन कामों में गिने गए हैं कि जो अल्लाह तआला के सानिध्य का कारण होते हैं। और उस सवारी की भाँति ये समझे गए हैं कि जो अपने चलने में बिजली के समान हैं जिसे बिजली की चमक से समरूपता प्राप्त है और इसी कारण से उन जिब्ह होने वाले जानवरों का नाम कुर्बानी रखा गया। क्योंकि हदीसों में आया है कि यह कुर्बानियाँ खुदा तआला के सानिध्य और मुलाक्रात का कारण हैं, उस व्यक्ति के लिए कि जो कुर्बानी को निश्छलता और खुदा की इबादत और इमानदारी से अदा करता है और ये कुर्बानियाँ शरीरत की महान इबादतों में से हैं और इसीलिए कुर्बानी का नाम अरबी में **नसीकः** है और नुसुक का शब्द अरबी भाषा में आज्ञापालन करने तथा इबादत के अर्थों में आता है और ऐसा ही यह शब्द नुसुक उन जानवरों के जिब्ह करने पर भी कथित

أَعْظَمَ نُسُكِ الشَّرِيعَةِ - وَلِذَلِكَ سُمِّيَتْ بِالنُّسُكَةِ - وَالنُّسُكُ  
 الطَّاعَةُ وَالْعِبَادَةُ فِي اللِّسَانِ الْعَرَبِيِّ - وَكَذَلِكَ جَاءَ لَفْظُ النُّسُكِ  
 بِمَعْنَى ذَبْحِ الذَّبِيحَةِ - فَهَذَا الْإِشْتِرَاكُ يَدُلُّ قَطْعًا عَلَى أَنَّ الْعَابِدَ فِي  
 الْحَقِيقَةِ هُوَ الَّذِي ذَبَحَ نَفْسَهُ وَقُوَاهُ - وَكُلَّ مَنْ أَصْبَاهُ لِرِضَى  
 رَبِّ الْحَلِيقَةِ وَذَبَّ الْهَوَى - حَتَّى تَهَافَتَ وَانْمَحَى - وَذَابَ وَغَابَ  
 وَاخْتَفَى - وَهَبَّتْ عَلَيْهِ عَوَاصِفُ الْفَنَاءِ وَسَفَتْ ذَرَائِهِ شِدَاءِ  
 هَذِهِ الْهَوَجَاءِ - وَمَنْ فَكَّرَ فِي هَذَيْنِ الْمَفْهُومَيْنِ الْمُشْتَرَكَيْنِ -  
 وَتَدَبَّرَ الْمَقَامَ بِتَيْقُظِ الْقَلْبِ وَفَتْحِ الْعَيْنَيْنِ - فَلَا يَبْقَى لَهُ  
 خِفَاءٌ وَلَا مِرَاءٌ - فِي أَنَّ هَذَا إِيمَاءٌ - إِلَى أَنَّ الْعِبَادَةَ الْمُنْجِيَةَ مِنْ

भाषा में प्रयोग होता है जिनका ज़िब्ह करना शरीअत के अनुसार है। अतः यह भागीदारी (समानता) कि जो नुसुक के अर्थों में पाई जाती है निश्चित तौर पर इस बात को सिद्ध करती है कि वास्तविक और सच्चा इबादत करने वाला वही व्यक्ति है जिसने अपने अस्तित्व को उसकी सम्पूर्ण शक्तियों सहित और उस के उन प्रियतमों सहित जिनकी ओर उसका दिल खींचा गया है, अपने रब्ब की प्रसन्नता के लिए ज़िब्ह कर डाला है और तामसिक इच्छाओं को दूर किया यहाँ तक कि समस्त इच्छाएं टुकड़े-टुकड़े होकर गिर पड़ीं और नष्ट हो गईं और वह स्वयं भी पिघल गया और उसके अस्तित्व का कुछ भी निशान न रहा और लुप्त हो गया तथा पुनः (नश्वरता) की हवाएं उस पर चलीं और उसके अस्तित्व के कणों को उस हवा के तेज धक्के उड़ा कर ले गए और जिस व्यक्ति ने इन दोनों अर्थों में कि जो परस्पर नुसुक के शब्द में समानता रखते हैं विचार किया होगा और उस स्थान को चिन्तन की दृष्टि से देखा होगा और अपने दिल की जागरूकता और दोनों आँखों के खोलने से आगे पीछे को दृष्टिगत रखा होगा तो उस पर छुपा नहीं रहेगा और इस बात में किसी प्रकार का विवाद उसके दामन को नहीं पकड़ेगा कि यह दो अर्थों की समानता कि जो नुसुक के शब्द में पाई जाती है उस रहस्य की ओर संकेत है कि वह इबादत जो आखिरत (परलोक) की हानि से मुक्ति देती है वह उस तामासिक वृत्ति

الْحَسَارَةَ هِيَ ذَبْحُ النَّفْسِ الْأَمَّارَةِ - وَنَحْرُهَا بِمُدَى الْإِنْقِطَاعِ إِلَى اللَّهِ ذِي الْأَلَاءِ وَالْأَمْرِ وَالْإِمَارَةِ - مَعَ تَحْمِيلِ أَنْوَاعِ الْمَرَارَةِ - لَتَنْجُو النَّفْسُ مِنْ مَوْتِ الْغَرَارَةِ - وَهَذَا هُوَ مَعْنَى الْإِسْلَامِ - وَحَقِيقَةُ الْإِنْقِيَادِ الثَّامِرِ وَالْمُسْلِمُ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ - وَ لَهُ نَحْرَ نَاقَةَ نَفْسِهِ وَتَلَّهَا الْجَبِينِ - وَمَا نَسِيَ الْحَيْنَ فِي الْإِسْلَامِ - هِيَ تَذْكَرَةٌ لِهَذَا الْمَرَامِ - وَ حَتَّى عَلَى تَحْصِيلِ هَذَا الْمَقَامِ - وَإِرْهَاصِ لِحَقِيقَةِ تَحْضُلِ بَعْدِ السُّلُوكِ الثَّامِرِ - فَوَجَبَ عَلَى كُلِّ مُؤْمِنٍ وَ مُؤْمِنَةٍ كَانَ يَبْتَغِي رِضَاءَ اللَّهِ الْوَدُودِ - أَنْ يَفْقَهُ هَذِهِ الْحَقِيقَةَ وَيَجْعَلَهَا عَيْنَ الْمَقْصُودِ وَيُدْخِلَهَا فِي نَفْسِهِ حَتَّى تَسْرِي فِي كُلِّ ذَرَّةِ الْوَجُودِ وَلَا يَهْدَى وَلَا يَسْكُنَ قَبْلَ

का जिब्ह करना है कि जो बुरे कामों के लिए अधिक से अधिक जोश रखता है और ऐसा हाकिम है कि हर समय बुराई का आदेश देता रहता है। अतः मुक्ति इस में है कि इस बुरा आदेश देने वाले को 'अल्लाह तआला का हो जाने' की छुरियों से जिब्ह कर दिया जाए और सृष्टि से संबंध विच्छेद करके खुदा तआला को अपना मित्र और दुल की सकून ठहरा दिया जाए और इस के साथ नाना प्रकार की कटुताओं को सहन भी किया जाए ताकि इन्सान लापरवाही की मृत्यु से मुक्ति पाए और यही इस्लाम के मायने हैं और यही पूर्ण आज्ञापालन की वास्तविकता है। और मुसलमान वह है जिसने अपना मुंह जिब्ह होने के लिए खुदा तआला के आगे रख दिया हो तथा अपने नफ़्स की ऊंटनी को उसके लिए कुर्बान कर दिया हो और जिब्ह के लिए मस्तक के बल उसे गिरा दिया हो तथा मौत से एक पल भी लापरवाह न हो। अतः सारांश यह है कि ज़बीहा और कुर्बानियां जो इस्लाम में प्रचलित हैं वे सब इसी अभीष्ट के लिए जो नफ़्स की दानशीलता है बतौर यादहानी हैं और इस मुक़ाम को प्राप्त करने के लिए एक प्रेरणा है और उस वास्तविकता के लिए जो पूर्ण साधना के बाद प्राप्त होती है एक इर्हास (अग्रिम भाग) है। अतः प्रत्येक मोमिन पुरुष और मोमिन स्त्री पर जो परम प्रिय खुदा की खुशी का अभिलाषी है,

أَدَاءِ هَذِهِ الضَّحِيَّةِ لِلرَّبِّ الْمَعْبُودِ - وَلَا يَقْنَعُ بِنَمُودِجٍ  
 وَقَشْرٍ كَالْجُهَلَاءِ وَالْعُمَيَّانِ - بَلْ يُؤَدِّي حَقِيقَةَ أَضْحَاتِهِ - وَيَقْضِي  
 بِجَمِيعِ حَصَاتِهِ - وَرُوحِ تَقَاتِهِ رُوحَ الْقُرْبَانِ - هَذَا هُوَ مُنْتَهَى  
 سُلُوكِ السَّالِكِينَ وَغَايَةُ مَقْصِدِ الْعَارِفِينَ - وَعَلَيْهِ يَحْتَسِمُ  
 جَمِيعُ مَدَارِجِ الْأَتْقِيَاءِ - وَبِهِ يَكْمُلُ سَاءَرُ مَرَاجِلِ الصِّدِّيقِينَ  
 وَالْأَصْفِيَاءِ - وَالِيَهُ يَنْتَهَى سَيْرُ الْأَوْلِيَاءِ - وَإِذَا بَلَغْتَ إِلَى هَذَا  
 فَقَدْ بَلَغْتَ جُهْدَكَ إِلَى الْإِنْتِهَاءِ - وَفَزْتَ بِمَرْتَبَةِ الْفَنَاءِ - فَحِينَئِذٍ  
 تَصِلُ شَجَرَةَ سُلُوكِكَ إِلَى أْتَمِّ النَّمَاءِ - وَتَبْلُغُ عُنُقَ رُوحِكَ إِلَى  
 لُعَاةِ رَوْضَةِ الْقُدْسِ وَالْكَرِّيَاءِ - كَالنَّاقَةِ الْعَنْقَاءِ - إِذَا أَوْصَلْتَ  
 عُنْقَهَا إِلَى الشَّجَرَةِ الْحَضْرَاءِ - وَبَعْدَ ذَلِكَ جَذَبَاتٌ وَنَفْحَاتٌ

अनिवार्य है कि इस वास्तविकता को समझे और उसको अपना उद्देश्य ही समझे और इस वास्तविकता को अपने नफ़्स के अन्दर दाखिल करे यहाँ तक कि वह वास्तविकता अस्तित्व के प्रत्येक कण में प्रविष्ट हो जाए और चैन से न बैठे जब तक कि उस कुर्बानी को अपने मा'बूद (उपास्य) रब के लिए अदा न करे और अनपढ़ों एवं मूर्खों के समान केवल नमूने और खोखली खाल को ही पर्याप्त न समझ बैठे बल्कि चाहिए कि अपनी कुर्बानी की वास्तविकता को अदा करे, और अपनी पूर्ण बुद्धि के साथ और अपने संयम की रूह से कुर्बानी की रूह को अदा करे। यह वह श्रेणी है जिस पर साधकों की साधना का अन्त होता है। और आरिफ़ों (आध्यात्म ज्ञानियों) का उद्देश्य अपनी चरम सीमा तक पहुँचता है और इस पर संयम की समस्त श्रेणियां समाप्त हो जाती हैं, और सत्यनिष्ठों तथा वली लोगों की सब मंजिलें (पड़ाव) पूरी हो जाती हैं और यहाँ तक पहुँच कर वलियों की यात्रा अपने चरम बिन्दु तक जा पहुँचती है और जब तू उस स्थान तक पहुंच गया तो तूने अपने प्रयास को चरम सीमा तक पहुंचा दिया और फ़ना की श्रेणी तक पहुँच गया। अतः उस समय तेरी साधना (सुलूक) का वृक्ष अपने पूर्ण पोषण एवं विकास को पहुँच जाएगा और तेरी रूह की गर्दन पवित्रता और श्रेष्ठता के चरागाह की हरी

وَتَجَلِّيَاتُ مِنَ الْحَضْرَةِ الْأَحَدِيَّةِ - لِيَقْطَعَ بَعْضَ بَقَايَا عُرُوقِ  
 الْبَشَرِيَّةِ - وَبَعْدَ ذَلِكَ إِحْيَاءٌ وَإِبْقَاءٌ وَإِدْنَاءٌ لِلنَّفْسِ الْمُطْمَئِنَّةِ  
 الرَّاضِيَةِ الْمَرْضِيَّةِ الْفَانِيَةِ - لِيَسْتَعِدَّ الْعَبْدُ لِقَبُولِ الْفَيْضِ بَعْدَ  
 الْحَيَاتِ الثَّانِيَةِ - وَبَعْدَ ذَلِكَ يُكْسَى الْإِنْسَانُ الْكَامِلُ حُلَّةَ  
 الْخِلَافَةِ مِنَ الْحَضْرَةِ - وَ يُصَبَّغُ بِصَبْغِ صِفَاتِ الْأُلُوْهِيَّةِ - عَلَى  
 وَجْهِ الظَّلِيَّةِ - تَحْقِيقًا لِمَقَامِ الْخِلَافَةِ - وَبَعْدَ ذَلِكَ يَنْزِلُ إِلَى  
 الْخَلْقِ لِيَجْذِبَهُمْ إِلَى الرُّوحَانِيَّةِ - وَيُخْرِجَهُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ  
 الْأَرْضِيَّةِ - إِلَى الْأَنْوَارِ السَّمَاوِيَّةِ - وَيُجْعَلُ وَارِثًا لِكُلِّ مَنْ مَضَى  
 مِنْ قَبْلِهِ مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَأَهْلِ الْعِلْمِ وَالذِّرَايَةِ -  
 وَشُمُوسِ الْقُرْبِ وَالْوَلَايَةِ - وَيُعْطَى لَهُ عِلْمُ الْأَوَّلِينَ - وَمَعَارِفُ

घास तक पहुँच जाएगी, उस ऊंटनी के समान जिसकी गर्दन लम्बी हो और उसने अपनी गर्दन को एक हरे भरे वृक्ष तक पहुंचा दिया हो और इसके बाद एक खुदा की भावनाएँ हैं, सुगंधें हैं और प्रकाश की झलकियाँ हैं ताकि वह कुछ उन रंगों को काट दे जो मनुष्यता में से शेष रह गई हों। और उसके बाद जीवित करना है तथा शेष रखना और निकट करना उस नफ़्स (वृत्ति) को जो खुदा के साथ आराम पा चुका है जो खुदा से प्रसन्न और खुदा उस से प्रसन्न तथा वह नफ़्स (वृत्ति) फ़ना हो चुका है। ताकि यह बन्दा दूसरे जीवन के बाद वरदान स्वीकार करने के लिए तैयार हो जाए और इसके पश्चात् कामिल (पूर्ण) इन्सान को खुदा तआला की ओर से ख़िलाफ़त का लिबास पहनाया जाता है और खुदाई विशेषताओं के साथ रंग दिया जाता है, और यह रंग ज़िल्ली (प्रतिबिम्ब) के तौर पर होता है ताकि ख़िलाफ़त का स्थान निश्चित हो जाए और फिर इसके बाद मख़्लूक (सृष्टि) की ओर उतरता है ताकि उनको रूहानियत की ओर खींचे। और पृथ्वी के अंधकारों से बाहर लाकर आसमानी प्रकाशों की ओर ले जाए और यह इन्सान उन सब का वारिस किया जाता है जो नबियों, सत्यनिष्ठों तथा विद्वानों और प्रतिभाशाली लोगों में से तथा सानिध्य और वलायत (वली की श्रेणी) के सूर्यों में से इससे पहले गुज़र चुके हैं

السَّابِقِينَ - مِنْ أُولِي الْأَبْصَارِ وَحُكَمَاءِ الْمِلَّةِ - تَحْقِيقًا لِمَقَامِ  
 الْوَرَاثَةِ - ثُمَّ يَمَكْتُ هَذَا الْعَبْدُ فِي الْأَرْضِ إِلَى مُدَّةٍ شَاءَ رَبُّهُ رَبُّ  
 الْعِزَّةِ - لِيُنِيرَ الْخَلْقَ بِنُورِ الْهَدَايَةِ - وَإِذَا أَنْارَ النَّاسَ بِنُورِ  
 رَبِّهِ أَوْ بَلَغَ الْأَمْرَ بِقَدْرِ الْكِفَايَةِ فَحِينَئِذٍ يَتِمُّ اسْمُهُ وَيَدْعُوهُ  
 رَبُّهُ وَيَرْفَعُ رُوحَهُ إِلَى نُقْطَتِهِ النَّفْسِيَّةِ - وَهَذَا هُوَ مَعْنَى الرَّفْعِ  
 عِنْدَ أَهْلِ الْعِلْمِ وَالْمَعْرِفَةِ - وَالْمَرْفُوعُ مَنْ يُسْقَى كَأْسَ  
 الْوِصَالِ - مِنْ أَيْدِي الْمَحْبُوبِ الَّذِي هُوَ لُجَّةُ الْجَمَالِ - وَيُدْخُلُ  
 تَحْتَ رِذَاءِ الرَّبُّوبِيَّةِ - مَعَ الْعُبُودِيَّةِ الْأَبَدِيَّةِ - وَهَذَا آخِرُ مَقَامٍ  
 يَبْلُغُهُ طَالِبُ الْحَقِّ فِي النَّشْأَةِ الْإِنْسَانِيَّةِ - فَلَا تَغْفُلُوا عَنِ هَذَا  
 الْمَقَامِ يَا كَافَّةَ الْبَرَايَا - وَلَا عَنِ السِّرِّ الَّذِي يُوجَدُ فِي الصَّحَايَا

और उसे ज्ञान दिया जाता है पहले लोगों का और मआरिफ पहले बुद्धिमानों एवं मिल्लत के दार्शनिकों की ताकि उसके लिए विरासत का मुकाम निश्चित हो जाए। फिर यह बन्दा पृथ्वी पर एक अवधि तक जो उसके रब्ब के इरादे में है ठहरा रहता है ताकि सृष्टि को हिदायत के नूर से प्रकाशित करे और जब जनता को अपने रब्ब के नूर के साथ प्रकाशित कर चुका या तब्लीग (प्रचार) को पर्याप्त होने तक पूरा कर दिया तो उस समय उसका नाम पूरा हो जाता है और उसका रब्ब (प्रतिपालक) उसे बुलाता है और उसकी रूह उसके मूल केंद्र की ओर उठाई जाती है, और अहले इल्म (विद्वानों) और आध्यात्म ज्ञानियों के निकट 'रफा' के यही अर्थ हैं। और 'रफा किया हुआ' वह है जिसको उस प्रियतम के हाथ से मिलन का प्याला पिलाया जाता है जो सुन्दरता और सौन्दर्य का दरिया है और प्रतिपालन की चादर के नीचे दाखिल किया जाता है इस बात के बावजूद कि बन्दगी सदैव रहती है। और यह वह अन्तिम स्थान है कि जिस तक एक सत्याभिलाषी मानवीय जीवन में पहुँच सकता है। अतः इस स्थान से लापरवाह मत हो, हे सृष्टि के गिरोह और न उस भेद से लापरवाह हो जो कुर्बानी में पाया जाता है तथा कुर्बानी को इस वास्तविकता को देखने के लिए दर्पणों के समान बना दो और उन वसीयतों को



- وَاجْعَلُوا الضَّحَايَا - لِرُؤْيَا تِلْكَ الْحَقِيقَةِ كَالْمَرَايَا - وَلَا تَذْهَبُوا عَنْ هَذِهِ الْوَصَايَا - وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا رَبَّهُمْ وَالْمَنَائَا - وَقَدْ أُشِيرَ إِلَى هَذَا السِّرِّ الْمَكْتُومِ - فِي كَلَامِ رَبِّنَا الْقَيُّومِ - فَقَالَ وَهُوَ أَصْدَقُ الصَّادِقِينَ - قُلْ إِنْ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ - فَانظُرْ كَيْفَ فَسَّرَ النُّسُكَ بِلَفْظِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ - وَأَشَارَ بِهِ إِلَى حَقِيقَةِ الْأَضْحَاةِ - فَفَكِّرُوا فِيهِ يَا ذَوِي الْحِصَاةِ - وَمَنْ ضَحَّى مَعَ عِلْمِ حَقِيقَةِ ضَحِيَّتِهِ - وَصَدَّقَ طَوِيَّتَهُ - وَخُلُوصَ نِيَّتِهِ - فَقَدْ ضَحَّى بِنَفْسِهِ وَمُهِجَّتِهِ - وَأَبْنَاءَهُ وَحَفَدَتَهُ وَلَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ - كَأَجْرِ أَبْرَاهِيمَ عِنْدَ رَبِّهِ الْكَرِيمِ - وَالِيهِ إِشَارَةُ سَيِّدِنَا الْمُصْطَفَى - وَرَسُولُنَا

मत भुलाओ और उन लोगों की भांति न हो जाओ जिन्होंने अपने खुदा और अपनी मौतों को भुला रखा है और इस भेद की ओर खुदा तआला के कलाम में संकेत किया गया। अतः खुदा जो समस्त सत्यनिष्ठों से अधिक सत्यनिष्ठ है अपने रसूल से कहता है कि उन लोगों को कह दे कि मेरी नमाज़ और मेरी इबादत और मेरी कुर्बानी तथा मेरा जीवन और मेरी मौत सब उस खुदा के लिए है जो समस्त संसारों का पालने वाला है। अतः देख कि नुसुक शब्द की जीवन और मृत्यु के शब्द से कैसे तपस्यीर की है और इस तपस्यीर से कुर्बानी की वास्तविकता की ओर संकेत किया है। अतः हे बुद्धिमानो! इस पर विचार करो और जिसने अपनी कुर्बानी की वास्तविकता को मालूम कर के कुर्बानी अदा की और सच्चे दिल तथा शुद्ध नीयत के साथ अदा की तो निश्चित ही उसने अपनी जान (प्राण) और अपने बेटों और अपने मित्रों की कुर्बानी कर दी और उसके लिए बहुत बड़ा प्रतिफल है जैसा कि इब्राहीम के लिए उसके दयालु रब के पास प्रतिफल था और इसी की ओर हमारे प्रितिष्ठित सरदार और हमारे प्रितिष्ठित रसूल जो संयमियों का इमाम और नबियों का खातम है, संकेत किया और फ़रमाया और वह खुदा के बाद सब सच्चों से अधिक सच्चा है, कि निस्सन्देह कुर्बानियां वही सवारियां हैं जो खुदा तआला तक पहुंचाती



الْمُجْتَبَى - وَإِمَامُ الْمُتَّقِينَ - وَخَاتَمُ النَّبِيِّينَ - وَقَالَ وَهُوَ بَعْدَ اللَّهِ  
 أَصْدَقُ الصَّادِقِينَ إِنَّ الضَّحَايَا هِيَ الْمُطَايَا - تُوصِلُ إِلَى رَبِّ  
 الْبَرَايَا وَتَمَحُّوُ الْخَطَايَا - وَتَدْفَعُ الْبَلَايَا - هَذَا مَا بَلَّغْنَا مِنْ  
 خَيْرِ الْبَرِيَّةِ - عَلَيْهِ صَلَوَاةُ اللَّهِ وَالْبَرَكَاتُ السَّنِيَّةُ - وَإِنَّهُ أَوْمَأَ  
 فِيهِ إِلَى حَكْمِ الضَّحِيَّةِ بِكَلِمَاتٍ كَالذَّرْرِ الْبَهِيَّةِ - فَالْأَسْفُ كُلُّ  
 الْأَسْفُ أَنْ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ هَذِهِ التَّكَاثُفَاتِ الْخَفِيَّةِ وَلَا  
 يَتَّبِعُونَ هَذِهِ الْوَصِيَّةَ - وَلَيْسَ عِنْدَهُمْ مَعْنَى الْعِيدِ - مِنْ دُونَ  
 الْغُسْلِ وَلَبَسِ الْجَدِيدِ وَالْخُضْمِ وَالْقُضْمِ مَعَ الْأَهْلِ وَالْخُدْمِ  
 وَالْعَبِيدِ ثُمَّ الْخُرُوجِ بِالزَّيْنَةِ لِلتَّعْيِيدِ كَالصَّنَادِيدِ - وَتَرَى الْأَ  
 طَائِبَ مِنَ الْأَطْعَمَةِ مُنْتَهَى طَرَبِهِمْ فِيهِذَا الْيَوْمِ - وَالنَّفَائِسِ  
 مِنَ الْأَلْبَسَةِ غَايَةَ أَرْبِهِمْ لِأَرَاةِ الْقَوْمِ - وَلَا يَدْرُونَ مَا الْأَصْحَاةُ

हैं और गलतियों को मिटाती हैं और विपत्तियों को दूर करती हैं। ये वे बातें हैं जो हमें खुदा के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पहुंचीं जो समस्त सृष्टि से उत्तम हैं। उन पर खुदा तआला का सलाम और बरकतें हों और आप ने इन शब्दों में कुर्बानियों की हिक्मतों की ओर सरस वाक्यों के साथ जो मोतियों के समान हैं, संकेत किया है। परन्तु अफ़सोस और बहुत अफ़सोस है कि अधिकतर लोग इन गुप्त रहस्यों को नहीं समझते और इस वसीयत का अनुकरण नहीं करते और उन के नज़दीक ईद के मायने इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कि स्नान करें और नए कपड़े पहनें और भोजन को पूरे मुंह के साथ तथा दांतों के किनारों से चबाएं। वे स्वयं और उनके परिवार तथा नौकर और दास, और फिर सजावट के साथ ईद की नमाज़ के लिए बाहर निकलें जैसे बड़े रईस होते हैं और तू देखेगा कि अच्छे भोजनों में उस दिन उन की सब से अधिक खुशी है और इसी प्रकार अच्छे और उत्तम लिबासों में चरम सीमा उनकी आवश्यकताओं की है ताकि लोगों को दिखाएँ। और नहीं जानते कि कुर्बानी क्या चीज़ है तथा किस उद्देश्य के लिए बकरियां और गायें जिब्ह की जाती हैं। उनके निकट उनकी ईद फ़ज़्र से लेकर इशा के समय

وَلَا يَغْرِضُ يُذَبِّحُ الْغَنَمُ وَالْبَقَرَاتُ - وَعِنْدَهُمْ عَيْدُهُمْ مِنَ  
 الْبُكَرَةِ إِلَى الْعِشِيِّ - لَيْسَ إِلَّا لِلْأَكْلِ وَالشُّرْبِ وَالْعَيْشِ الْهَيْئِ -  
 وَاللَّبَاسِ الْبَهِيِّ وَالْفَرَسِ الشَّرِيِّ - وَاللَّحْمِ الطَّرِيِّ - وَمَا تَرَى  
 عَمَلَهُمْ فِي يَوْمِهِمْ هَذَا إِلَّا اكْتِسَاءَ النَّاعِمَاتِ وَالْمَشْطِ  
 وَالْإِكْتِحَالَ وَتَضْمِيخَ الْمَلْبُوسَاتِ وَتَسْوِيَةَ الطَّرْرِ وَالذَّوَابِ  
 كَالنِّسَاءِ الْمُتَبَرِّجَاتِ نَقَرَاتٍ كَنَقْرَةِ الدَّجَاجَةِ فِيالصَّلْوَةِ -  
 مَعَ عَدَمِ الْحُضُورِ وَهَجُومِ الْوَسَاوِسِ وَالشَّتَاتِ - ثَمَالْتَمَائِلِ  
 إِلَى أَنْوَاعِ الْإِغْذِيَةِ وَالْمَطْعُومَاتِ - وَمَلَأِ الْبَطُونَ بِالْوَانِ النَّعْمِ  
 كَالنِّعْمِ وَالْعَجْمَاوَاتِ وَالْمَيْلِ إِلَى الْمَلَاهِيِ وَالْمَلَاعِبِ

तक केवल इसलिए है कि खूब खाया जाए और पिया जाए और भोग विलास को रुचिकर किया जाए तथा उत्तम लिबास पहना जाए और चतुर घोड़ों पर सवारी की जाए और ताजा गोश्त खाया जाए और उस दिन उनका काम तू इसके अतिरिक्त नहीं देखेगा कि नर्म और मुलायम कपड़े पहनें और बालों को कंघी करें और आँखों को सुरमा लगाएं और लिबासों पर इत्र मलें और अपने तुरें और बाल खूब साफ़ करें जैसा कि श्रंगार करने वाली स्त्रियाँ किया करती हैं और फिर मुर्गी की भांति जो दाने पर चोंच मारती हैं कुछ बार नमाज़ के लिए हरकत करें, ऐसी हरकत कि उसके साथ ध्यान का कोई भी भाग न हो और भ्रमों की बहुतात हो और दिल में उथल-पुथल हो तथा नाना प्रकार के व्यंजनों की ओर झुक जाएँ और भिन्न-भिन्न प्रकार के भोजनों की ओर तथा चौपायों के समान तरह-तरह की नेमतों से पेट भर लें और खेल-कूद की ओर झुकें तथा मूर्खतापूर्ण कार्यों की ओर आकृष्ट हों और कामवासनाओं की चरागाहों में अपने नपसों को छोड़ दें तथा यक्कों पर, ऊंटों पर और ऊंटनी पर और खच्चरों पर तथा लोगों की गर्दनों पर सवारी करें। कई प्रकार की शोभाओं के साथ और सारा दिन व्यर्थ बातों में नष्ट करने में और एक दूसरे को गोश्त का उपहार भेजने तथा परस्पर गर्व करना, गाय के गोश्त और बकरों के गोश्त के साथ और खुशियाँ तथा रंग-बिरंगी शादियाँ और नपस के आकर्षण और

وَالْجَهَلَاتِ وَسَرِّحِ النَّفُوسِ فِي مَرَاتِعِ الشَّهَوَاتِ - وَالرُّكُوبِ  
 عَلَى الْاَفْرَاسِ - وَالْعَجَلِ وَالْعِنَاسِ - وَالْجَمَالِ وَالْبِغَالِ وَرِقَابِ  
 النَّاسِ - مَعَ اَنْوَاعٍ مِنَ التَّزْيِينَاتِ - وَافْنَاءِ الْيَوْمِ كُلِّهِ فِي  
 الْخُزْعِيَّاتِ وَالْهَدَايَا مِنَ الْقَلَايَا - وَالتَّفَاخُرِ بِلُحُومِ  
 الْبَقَرَاتِ وَالْجَدَايَا - وَالْاَفْرَاحِ وَالْمَرَاحِ وَالْجَذَبَاتِ وَالْجَمَاحِ -  
 وَالصِّحْكَ وَالْقَهْقَهَةَ بِاَبْدَاءِ النَّوَاجِدِ وَالثَّنَايَا - وَالتَّشْوِقِ اِلَى  
 رَقْصِ الْبِغَايَا - وَبُوسَهْنَ وَعِنَاقَهْنَ - وَبَعْدَ هَذَا نَطَاقَهْنَ - فَاِنَا  
 لِلّٰهِ عَلَى مَصَائِبِ الْاِسْلَامِ - وَانْقِلَابِ الْاَيَامِ - مَاتَتِ الْقُلُوبُ  
 وَكَثُرَتِ الذَّنُوبُ - وَاشْتَدَّتِ الْكُرُوبُ - فَعِنْدَ هَذِهِ اللَّيْلَةِ  
 اللَّيْلَاءِ - وَظَلَمَاتِ الْهُجُوءِ اِقْتَضَى رَحْمُ اللّٰهِ نُورَ السَّمَاءِ ★ -

उद्दण्डताएँ तथा हंसी और ठहाका मारकर हँसना पिछले दांतों के निकालने से और  
 अगले दांतों के निकालने से और बाजारी स्त्रियों के नाच की ओर रुचि रखना और  
 उनका चुम्बन और गले लगाना। फिर इसके पश्चात् उनके कमरबन्द का स्थान।  
 अतः हम इस्लाम के संकटों पर इन्ना लिल्लाह पढ़ते हैं और काल चक्र पर दिल  
 मर गए और गुनाह बहुत हो गए और बेचेनियाँ बढ़ गईं। अतः इस अन्धकारमय  
 रात के समय और तीव्र वायु के अन्धकार के समय खुदा के रहम (दया) ने चाहा  
 कि आकाश★ से प्रकाश उतरे। अतः मैं वह प्रकाश हूँ और वह मुजद्दिद हूँ कि

★**हाशिया :-** यह जो हदीसों में लिखा है कि मसीह मौऊद उतरेगा यह नुजूल का शब्द इस  
 संकेत के लिए ग्रहण किया गया है कि वह युग ऐसा होगा कि सम्पूर्ण पृथ्वी पर अन्धकार छा जायेगा  
 और सत्यनिष्ठा, ईमानदारी और सच्चाई पृथ्वी से उठ जाएगी तथा पृथ्वी अन्याय एवं अत्याचार  
 से भर जाएगी तब खुदा आकाश से एक प्रकाश उतारेगा और उस से पृथ्वी को दोबारा प्रकाशित  
 कर देगा, वह ऊपर से आयेगा, क्योंकि नूर हमेशा ऊपर की ओर से आता है। और मसीह मौऊद  
 का समय ऐसा समय वर्णन किया गया है कि उस समय इस्लाम के प्रचार के समस्त संसाधन  
 निलंबित हो जाएंगे और मुसलामानों के दोनों हाथ निराश्रय हो जाएंगे क्योंकि खुदा का स्वाभिमान  
 इस बात को चाहेगा कि इस आरोप को समाप्त कर दे और दूर करे जो कहा गया है कि इस्लाम  
 तलवार द्वारा फैलाया गया। अतः मसीह मौऊद के समय के लिए यह आदेश है कि तलवारों को

فَأَنَا ذَالِكُ النُّورِ - وَ الْمَجْدُ الْمَأْمُورِ - وَالْعَبْدُ الْمَنْصُورِ  
وَالْمَهْدِيُّ الْمَعْهُودِ - وَالْمَسِيحُ الْمَوْعُودِ - وَأَنِّي نَزَلْتُ بِمَنْزِلَةٍ  
مِنْ رَبِّي لَا يَعْلَمُهَا أَحَدٌ مِنَ النَّاسِ -

وَإِنَّ سِرِّي أَخْفَى وَأَنْثَى مِنْ أَكْثَرِ أَهْلِ اللَّهِ فَضْلًا عَنْ  
عَامَةِ الْإِنْسَانِ - وَإِنَّ مَقَامِي أَبْعَدُ مِنْ أَيْدِي الْغَوَاصِينِ - وَصُعُودِي  
أَرْفَعُ مِنْ قِيَاسِ الْقَائِسِينَ - وَأَنَّ قَدَمِي هَذِهِ أَسْرَعُ مِنَ الْقِلَاصِ فِي  
مَسَالِكِ رَبِّ النَّاسِ - فَلَا تَقِيسُونِي بِأَحَدٍ وَلَا أَحَدًا بِي وَلَا تَهْلِكُوا

जो खुदा तआला के आदेश से आया है। सहायता प्राप्त बन्दा हूँ। और वह महदी हूँ जिसका आना निश्चित हो चुका है और वह मसीह हूँ जिसके आने का वादा था और अपने मैं रब्ब की ओर से उस मर्तबे पर अवतरित हुआ हूँ जिसे मनुष्यों में से कोई नहीं जानता।

और मेरा भेद अधिकतर वलियों से छिपा हुआ और बहुत दूर है। और कहाँ यह कि जन सामान्य को इसका ज्ञान हो सके और मेरा मुक़ाम गोता लगाने वालों के हाथों से बहुत दूर है और मेरी आध्यात्मिक उन्नति का अनुमान नहीं किया जा सकता और मेरा यह क़दम खुदा तआला के मार्ग में तीव्रगामी ऊंटों

**शेष हाशिया :-** म्यान में करें तथा धर्म के लिए कोई व्यक्ति तलवार न उठाए और यदि उठाएगा तो काफ़िरों से बुरी तरह से पराजित होगा तथा अपमानित होगा। जैसा कि हज़रत मूसा की जमाअत जिन को उन्होंने मिस्र से निकाला था। ऐसी लड़ाइयों में हमेशा पराजित होती रही, जिन लड़ाइयों के लिए मूसा की इच्छा के विरुद्ध वे अग्रसर हुए। अतः अब भी ऐसा ही होगा क्योंकि मसीह मौऊद का आकाश से उतरना इसी संकेत से बताया गया है कि उसका हाथ ज़मीनी संसाधनों को नहीं छुएगा और वह केवल आसमान के पानी से इस्लाम के बाग़ को सींचेगा, क्योंकि अब खुदा तआला इस चमत्कार को दिखाना चाहता है कि इस्लाम अपने प्रसारित होने में तलवार और मानवीय सामानों का मुहताज नहीं। अतः जो व्यक्ति इस स्पष्ट निषेध तथा हदीस की मौजूदगी के बावजूद फिर तलवार उठाता है और धर्म योद्धा बनना चाहता है तो मानो वह चाहता है कि उस चमत्कार को संदिग्ध कर दे जिसको प्रकट करने का खुदा तआला ने इरादा किया है। अर्थात् मानवीय सामानों के बिना इस्लाम को पृथ्वी (संसार) पर विजयी तथा जनता का प्रिय बना देना। (इसी से)

انفسكم بالريب والعماس - واتي لبُّ لا قشر معه وروحٌ لا جسد  
 معه وشمسٌ لا يحجبها دخان الشمس - واطلبوا مثلي ولن  
 تجدوه وان تطلبوه بالنبراس - ولا فخر ولكن تحديث لنعم  
 الله الذي هو غارسٌ لهذا الغراس - واني غسلت بماء النور  
 وطهرت بعين القدس من الاوساخ والادناس - وسماني ربي  
 احمد فاحمدوني ولا تشتموني ولا توصلوا امركم الى الالباس -  
 ومن حمدني وما غادر من نوع حمدٍ فما مان - ومن كذب

से अधिक तीव्रतर है इसलिए मेरी किसी अन्य के साथ तुलना मत करो और न किसी अन्य की मेरे साथ। और स्वयं को सन्देह और लड़ाई के साथ तबाह मत करो और मैं मगज़ हूँ जिसके साथ छिल्ला नहीं और रूह (आत्मा) हूँ जिसके साथ शरीर नहीं और वह सूर्य हूँ जिसे शत्रुता और बैर का धुआं छिपा नहीं सकता। और कोई ऐसा व्यक्ति तलाश करो जो मेरे समान हो और हरगिज़ नहीं पाओगे यद्यपि दीपक लेकर भी ढूँढ़ते रहो और यह कोई गर्व नहीं परन्तु उस ख़ुदा की नेमतों का धन्यवाद है जिसने इस नोनिहाल (नए पौधे) को लगाया है और मैं नूर (प्रकाश) के पानी के साथ नहलाया गया हूँ और ख़ुदाई पवित्रता के चश्मे (झरने) से पवित्र किया गया हूँ और शुद्ध किया गया हूँ समस्त मैलों और मलिनताओं से और मेरे रब्ब ने मेरा नाम अहमद रखा है। अतः मेरी प्रशंसा करो और मुझे गालियाँ न दो और अपनी बात को निराशा के स्तर तक मत पहुँचाओ, और जिस ने मेरी प्रशंसा की और प्रशंसा का कोई प्रकार न छोड़ा तो उसने सच बोला और झूठ बोलने का काम नहीं किया। और जिसने इस बयान को झुठलाया तो उसने झूठ बोला है और अपने ख़ुदा के क्रोध को भड़काया है। अतः अफ़सोस उस व्यक्ति पर जिसने सन्देह किया और वादे को तोड़ा और दिल को शैतान के भ्रमों से लिप्त किया और मैं बहुत ऊंची दरगाह से आया हूँ ताकि मेरा ख़ुदा मेरे द्वारा अपनी कुछ प्रतापी एवं सौन्दर्य संबंधी विशेषताएं दिखाए अर्थात् बुराई का दूर करना और भलाई का पहुँचाना, क्योंकि युग को इस बात की आवश्यकता

هَذَا الْبَيَانِ فَقَدِمَان - وَاغْضَبَ الرَّحْمَنُ - فَوَيْلٌ لِّلَّذِي شَكَ وَ  
 فَسَخَّ الْعَهْدَ وَفَكَ وَ لَوَّثَ بِطَائِفٍ مِنَ الْجِنِّ الْجِنَانَ - وَاِنِّي جِئْتُ  
 مِنَ الْحَضْرَةِ الرَّفِيعَةِ الْعَالِيَةِ - لِئُرِيَّ فِي رَبِّي مِنْ بَعْضِ صِفَاتِهِ  
 الْجَلَالِيَةِ - وَالْجَمَالِيَةِ - اَعْنَى دَفْعِ الضَّرِّ وَافَاضَةِ الْخَيْرِ فَانَ الزَّمَانَ  
 كَانَ مَحْتَاجًا اِلَى دَافِعٍ شَرِّ طَعْنِي - وَاِلَى رَافِعٍ خَيْرٍ اِنْحَطَّ وَ اخْتَفَى -  
 فَاقْتَضَتْ الْعِنَايَةَ الْاِلَهِيَّةَ اَنْ يَعْطِيَ الزَّمَانَ مَا سَأَلَ بِلِسَانِ الْحَالِ -  
 وَيُرْحَمَ طَبَقَاتُ النِّسَاءِ وَالرِّجَالِ - فَجَعَلَنِي مَظْهَرَ الْمَسِيحِ عَيْسَى  
 ابْنِ مَرْيَمَ لِدَفْعِ الضَّرِّ وَابَادَةِ مَوَادِّ الْغَوَايَةِ - وَجَعَلَنِي مَظْهَرَ  
 النَّبِيِّ الْمَهْدِيِّ اَحْمَدَ اَكْرَمَ لَافَاضَةِ الْخَيْرِ وَاعَادَةَ عَهَادِ الدِّرَايَةِ  
 وَالْهُدَايَةِ - وَتَطْهِيرِ النَّاسِ مِنْ دَرَنِ الْغَفْلَةِ وَالْجِنَايَةِ - فَجِئْتُ فِي  
 الْحَلْتَيْنِ الْمَهْزُودَتَيْنِ الْمَصْبَغَتَيْنِ بِصَبْغِ الْجَلَالِ وَصَبْغِ الْجَمَالِ -  
 وَاعْطَيْتُ صِفَةَ الْاِفْنَاءِ وَالْاِحْيَاءِ مِنَ الرَّبِّ الْفَعَالِ - فَاَمَّا الْجَلَالُ

थी कि उस बुराई को दूर किया जाए जो सीमा से अधिक हो गई थी और उस भलाई को ऊंचा किया जाए जो जाती रही थी। इसलिए खुदा की कृपा ने चाहा कि युग को वह वस्तु दी जाए जिसे वह अपनी वर्तमान व्यवहार रूपी ज़बान से मांगता है और पुरुषों एवं स्त्रियों पर दया (रहम) की जाए। अतः मुझे मसीह ईसा बिन मरयम का द्योतक बनाया ताकि हानि और गुमराही के तत्वों को दूर करे और मुझे अति प्रतिष्ठित महदी का द्योतक बनाया ताकि लोगों को लाभ पहुंचाए और दिरायत एवं हिदायत की वर्षा को दोबारा उतारे। और लोगों को लापरवाही और पाप कर्म से पवित्र करे। अतः मैं पीले रंग के दो लिबासों में आया हूँ जो प्रताप एवं सौन्दर्य के रंग से रंगे हुए हैं और मुझ को फ़ना करने और जीवित करने की विशेषता दी गई है और मुझे यह विशेषता खुदा तआला की ओर से मिली है परन्तु वह प्रताप जो मुझे दिया गया है वह मेरे उस बुरूज़ का प्रभाव (असर) है जो ईस्वी बुरूज़ है और जो खुदा की ओर से है★ ताकि मैं उस शिर्क की बुराई

الذى اعطيت فهو اثرٌ لبروزى العيسوى من الله ذى الجلال \* -  
 لا بيد به شر الشرك المواجه الموجود في عقائد اهل الضلال -  
 المشتعل بكمال الاشتعال - الذى هو اكبر من كل شرٍّ في عين الله  
 عالم الاحوال - ولا هدم به عمود الافتراء على الله والافتعال -  
 واما الجمال الذى اعطيت فهو اثرٌ لبروزى الاحمدى من الله ذى  
 اللطف والنوال - لا عيد به صلاح التوحيد المفقود من اللسان  
 والقلوب والاقوال والافعال - واقيم به امر التدين والانتحال -  
 وامرت ان اقتل \* خنازير الفساد والاحاد والاضلال - الذين  
 يدوسون درر الحق تحت النعال - ويُهْلِكُون حرث الناس  
 \* اللفظ لفظ الحديث كما جاء في البخارى والمراد من القتل اتمام الحجة وابطال  
 الباطل بالدلائل القاطعة والآيات السماوية لا القتل حقيقة. منه

को मिटाऊँ जो गुमराहों की आस्थाओं में लहर मार रही है और मौजूद है तथा अपनी  
 पूरी उत्तेजना से भड़क रही है और जो परिस्थितियों को जानने वाले खुदा की दृष्टि  
 में प्रत्येक बुराई से बढ़ कर है और ताकि मैं उसके माध्यम से उस झूठ के स्तंभ को  
 गिरा दूँ जो खुदा पर गढ़ते हैं परन्तु सौन्दर्य जो मुझे मिला है वह मेरे उस बुरूज का  
 प्रभाव है जिसका नाम प्रदान करने वाले खुदा की ओर से बुरूज-ए-अहमदी है ताकि  
 मैं उसके माध्यम से तौहीद (एकेश्वरवाद) की नेकी को जो जुबानों, दिलों और कार्यों  
 से जाती रही है वापस लाऊँ और उसके द्वारा धार्मिकता को स्थापित करूँ। तथा मुझे  
 आदेश दिया गया है कि मैं फ़साद, नास्तिकता और पथभ्रष्ट (गुमराह) करने के उन

★الحاشية. قد قلت غير مرة انى ماتت بالسيف ولا السنان - وانما  
 اتيت بالآيات والقوة القدسية وحسن البيان - فجلالى من السماء لا  
 بالجنود والاعوان - منه

☆हाशिया :- मैंने कई बार बताया है कि मैं तलवारों और भालों के साथ नहीं आया हूँ  
 अपितु मेरे पास निशान हैं और कुव्वत-ए-कुदसिया (पवित्र शक्ति) और अच्छी वर्णन शैली  
 है। अतः मेरा प्रताप आकाशीय है न कि सेनाओं के साथ। (इसी से।)

وَيُخْرِبُونَ زُرُوعَ الْإِيمَانِ وَالتَّوَزُّعَ وَالْأَعْمَالَ - وَقَتْلَى هَذَا بِحَرْبَةٍ  
 سَمَاوِيَّةٍ لَا بِالسِّيُوفِ وَالنَّبَالِ - كَمَا هُوَ زَعْمُ الْمُحْرَمِينَ مِنَ  
 الْحَقِّ وَصَدَقَ الْمَقَالُ - فَانْهَمِ ضَلُّوًا وَأَضَلُّوًا كَثِيرًا مِنَ الْجُهَّالِ  
 - وَإِنَّ الْحَرْبَ حَرَّمَتْ عَلَىَّ وَسَبَقَ لِي أَنْ أُضَعَ الْحَرْبَ وَلَا اتَّوَجَّهَ  
 إِلَى الْقِتَالِ - فَلَا جِهَادَ إِلَّا جِهَادَ اللِّسَانِ وَالْأَيَاتِ وَالِاسْتِدْلَالَ -  
 وَكَذَلِكَ أَمَرْتُ أَنْ أَمْلَأَ بِيُوتَ الْمُؤْمِنِينَ وَجُرُبَهُمْ مِنَ الْمَالِ -  
 وَلَكِنْ لَا بِاللُّجَيْنِ وَالذَّجَالِ - بَلْ بِمَالِ الْعِلْمِ وَالرَّشْدِ وَالْهُدَايَةِ  
 وَالْيَقِينِ عَلَى وَجْهِ الْكَمَالِ - وَجَعَلَ الْإِيمَانَ اثْبَتًا مِنَ الْجِبَالِ -  
 وَتَبَشِيرَ الْمُثْقَلِينَ تَحْتَ الْإِثْقَالِ - فَبَشِّرْ لَكُمْ قَدْ جَاءَ كُمْ  
 الْمَسِيحُ -

सूअरों को मारुं जो सच्चाई के रत्नों को पैरों के नीचे कुचलते हैं, लोगों की खेतियों को उजाड़ते हैं और ईमान एवं संयम तथा कर्मों की खेतियों को खराब करते हैं और यह मारना आकाशीय हथियारों के साथ है तलवारों तथा तीरों (बाणों) के साथ नहीं। जैसा कि यह विचार उन लोगों का है जो सच और सच बोलने से वंचित हैं क्योंकि वे स्वयं गुमराह हुए और मूर्खों में से बहुतों को गुमराह किया है और यह सच बात है कि काफ़िरों के साथ लड़ना मुझ पर हराम (अवैध) किया गया है और मेरे अस्तित्व से पहले मेरे लिए निर्धारित हुआ है कि लड़ाई को छोड़ दूँ और रक्तपात की ओर ध्यान न दूँ। अतः मौखिक जिहाद और निशान तथा तर्कों के अतिरिक्त कोई जिहाद शेष नहीं रहा और इसी प्रकार मुझे यह भी आदेश है कि मुसलमानों के घरों को और उनके तोश: दानों (सफ़र पर खाना ले जाने का बर्तन) को माल से भर दूँ परन्तु चाँदी-सोने के माल से नहीं बल्कि ज्ञान और हिदायत और विश्वास के माल से तथा उस माल से कि ईमान को पर्वतों से अधिक सुदृढ़ किया जाए और जो लोग बोझों के नीचे दबे हुए हैं उनको खुशखबरी दी जाए। अतः तुम को खुशखबरी हो कि तुम्हारे पास मसीह आया।

और सर्वशक्तिमान (क्रादिर) ने उसको स्पर्श किया तथा उसे सरस कलाम



ومسحه القادر واعطى له الكلام الفصيح - وانه يعصمكم من فرقة هي للاضلال تسيخ - والى الله يدعو ويصيح - وكل شبهة يُزيل و يُزيح - وطوبى لكم قد جاءكم المهدي المعهود - ومعه المال الكثير والمتاع المنضود - وانه يسعي ليرد اليكم الغنى المفقود - وَيَسْتَحْرِجُ الاقبال الموءود - ما كان حديث يُفترى - بل نور من الله مع آيات كبرى - ايها الناس اني انا المسيح المحمدي - واتي انا احمدنا المهدي - وان ربي معي الي يوم لحدى من يوم مهدي - واني اعطيت ضراما اگالا - وماء زلالا - وانا كوكب يمانى - ووابل روحانى - ايذاءى سنان مُدزَّب - ودعائى دواء مُجرب - ارى قوما جلالا وقوما آخرين جمالا - وبيدى حرب ابيدبها عادات الظلم والذنوب -

प्रदान किया और वह तुमको उस फ़िक्र से बचाता है जो गुमराह करने के लिए पृथ्वी पर भ्रमण करता है। और खुदा की ओर बुलाता है और हर सन्देह को दूर करता है और तुम्हें मुबारक हो क्योंकि महदी मा'हूद तुम्हारे पास आ पहुंचा और उसके पास बहुत सा धन-दौलत है जो परतें लगाकर रखा है और वह प्रयास करता है कि वह माल जो तुम्हारे पास से जाता रहा है फिर तुम्हारी ओर लौट आए और प्रतिष्ठा जो जीवित रहने की अवस्था क़ब्र में है फिर क़ब्र से निकले। यह वह बात नहीं कि झूठ बना ली जाए, बल्कि खुदा का प्रकाश है जो अपने साथ बड़े-बड़े निशान रखता है। हे लोगो! मैं वह मसीह हूँ कि जो मुहम्मदी सिलसिले में से है और मैं अहमद महदी हूँ तथा वास्तव में मेरा रब मेरे साथ है मेरे बचपन से लेकर मेरी क़ब्र तक और मुझे वह आग मिली है जो खा जाने वाली है और वह पानी जो मीठा है तथा मैं समय का सितारा हूँ और रूहानी वर्षा हूँ मेरा कष्ट देना तीव्र धार वाला भाला है और मेरी दुआ अनुभव प्राप्त दवा है। एक क़ौम को मैं अपना प्रताप दिखाता हूँ और दूसरी क़ौम को सौन्दर्य दिखाता हूँ। और मेरे हाथ में हथियार है उसके द्वारा मैं अन्याय और गुनाह की

وفي الاخرى شربةٌ اعيدبها حياة القلوب - فأسٌ للافناء -  
وانفاسٌ للاحياء -

أما جلالى فيما قُص كابين مريم استيصالى - واما  
جمالى فيما فارت رحمتى كسيدي احمد لاهدى قومًا غفلوا  
عن الربّ المتعالى - أفأنتم تعجبون - والى الزمان وضرورته لا  
تلتفتون - الاترون الى زمان احتاج الى الربّ الفعّال - ليرى لقوم  
صفة جلاله وللآخرين صفة الجمال - وقد ظهرت الآيات - و  
تبينت العلامات - وانقطعت الخصومات - فمالكم لا تنظرون -  
وَانْكَسَفَتِ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ فِي رَمْضَانَ فَلَا تَعْرِفُونَ - مات  
بعض الناس نبياً من الله وَقَتِيلَ الْبَعْضُ فَلَا تُفَكِّرُونَ - ونزلت  
لى آئى - كثيرةٌ فلا تَبَالُونَ - وشهدت لى الارض والسما والماء

आदतों का विनाश करता हूँ और दूसरे हाथ में शरबत है जिस से मैं दिलों को दोबारा जीवित करता हूँ। एक कुल्हाड़ी फ़ना करने के लिए है और फूँक जीवित करने के लिए।

मेरा प्रताप इस कारण है कि लोगों ने हज़रत ईसा की तरह मेरे अन्मूलन का इरादा किया है और सुन्दरता इस कारण कि मेरी रहमत (दया) मेरे सरदार अहमद (मुहम्मद स.अ.व) की भांति जोश में है ताकि मैं उस क्रौम का मार्ग-दर्शन करूँ जो अपने महान प्रतिपालक से लापरवाह है और क्या तुम इस बात से आश्चर्य करते हो तथा युग और उसकी आवश्यकता की ओर ध्यान नहीं देते? क्या तुम नहीं देखते कि युग ख़ुदा की ओर एक आवश्यकता रखता है ताकि एक क्रौम को अपने प्रताप की विशेषता दिखाए और दूसरी क्रौम को अपने सौन्दर्य की विशेषता से परिचित कराए और निस्सन्देह निशान प्रकट हो गए तथा लक्षण स्पष्ट हो गए और समस्त झगड़े समाप्त हो गए। तो क्यों नहीं देखते? और रमज़ान के महीने में सूर्य और चन्द्रमा को ग्रहण लगा, परन्तु तुम नहीं पहचानते और कुछ लोग भविष्यवाणी के अनुसार मरे और कुछ लोग क्रत्ल की भविष्यवाणी के अनुसार मारे

والعفاء فلا تخافون - وتظاهروا لي العقل والنقل والعلامات  
والآيات - وتظاهرت الشهادات والرؤيا والمكاشفات - ثم  
انتم تنكرون - وان لها شاناً عظيماً لقوم يتدبرون - وطل  
ذوالسنين - ومضى من هذه المائة خمسها إلا قليلاً من سنين -  
فاين المجددان كنتم تعلمون - ونزل من السماء الطاعون -  
ومنع الحج وكثر المنون - واختصم الفرق على معدن من  
ذهب وهم يُقاتلون - وعلا الصليب - واضحى الاسلام يسيب  
ويغيب - كانه الغريب - وكثر الفسق والفاسقون - وحُبب الى  
النفوس الخمر - والقمر والزمير - وتراءى الزانون المجالchon  
وقل المتقون - وتجلّى وقت ربنا وتم ما قال النبيون - فباي  
حديث بعده تؤمنون - ايها الناس قوموا لله زرافاتٍ وفرادى

गए परन्तु तुम नहीं सोचते और मेरे समर्थन में बहुत से निशान प्रकट हुए, परन्तु तुम्हें कुछ परवाह नहीं। और मेरे लिए पृथ्वी, आकाश और पानी तथा मिट्टी ने गवाही दी परन्तु तुम बिलकुल नहीं डरते और बुद्धि, नक़ल एवं लक्षण और निशान एक दूसरे के गवाह हुए तथा दूसरी गवाहियों और स्वप्नों एवं कशफ़ों ने आपस में एक दूसरे को शक्ति दी फिर तुम इन्कार करते हो और उन लोगों की दृष्टि में जो सोच-विचार करते हैं उन निशानों की बड़ी शान है और पुच्छल तारा (दुमदार सितारा) उदय हुआ और सदी में से पांचवां भाग गुज़र गया सिवाए कुछ वर्ष के। अतः यदि जानते हो तो बताओ कि मुजद्दिद कहाँ है? आकाश से ताऊन फूटी और हज़ रोक़ा गया और मौतों की बहुतात हुई और सोने की खान पर क्रौमों ने आपस में लड़ाई-झगड़े किए और सलीब (ईसाई धर्म) बुलन्द हुई और इस्लाम ने अपने स्थान से गति की और लुप्त हो गया मानो कि वह मुसाफ़िर है तथा पाप और पापी बहुत हो गए तथा लोगों शराब और जुए तथा नाच-रंग की ओर लौटे और दुष्कर्म तथा एक-दूसरे पर कठोरता करने वाले प्रकट हुए और संयमी कम हो गए तथा हमारे खुदा की झलक (आभा) का समय आ गया और वह सब जो

فِرَادَى - ثُمَّ اتَّقُوا اللَّهَ وَفَكِّرُوا كَالَّذِي مَا بَخِلَ وَمَا عَادَى - الْيَسِ  
هَذَا الْوَقْتِ وَقَتِ رَحِمَ اللَّهُ عَلَى الْعِبَادِ - وَوَقْتِ دَفْعِ الشَّرِّ وَتِدَارِكِ  
عَطَشِ الْإِكْبَا بِالْعِهَادِ - الْيَسِ سَيْلِ الشَّرِّ قَدْ بَلَغَ انْتِهَاءَهُ - وَذَيْلُ  
الْجَهْلِ طَوَّلَ أَرْجَاءَهُ -

وَفَسَدِ الْمُلْكِ كُلِّهِ وَشُكْرِ ابْلِيسِ جُهْلَاءَهُ - فَاشْكُرُوا  
اللَّهِ الَّذِي تَذَكَّرَكُمْ وَتَذَكَّرَ دِينَكُمْ وَمَا أَضَاعَهُ - وَعَصَمَ حَرْثَكُمْ  
وَزَرَعَ كُمْ وَلُغَاءَهُ - وَأَنْزَلَ الْمَطْرَ وَأَكْمَلَ أَبْضَاعَهُ - وَبَعَثَ  
مَسِيحَهُ لِدَفْعِ الضَّرِّ - وَمَهْدِيَهُ لِأَفَاضَةِ الْخَيْرِ - وَادْخَلَ كُمْ فِي زَمَانِ  
أَمَامِكُمْ بَعْدَ زَمَانِ الْغَيْرِ - أَيُّهَا الْإِخْوَانُ إِنَّ زَمَانَنَا هَذَا يُضَاهِي  
شَهْرَنَا هَذَا بِالتَّنَاسُبِ الثَّامِ - فَانَّهُ آخِرُ الْأَزْمِنَةِ وَإِنَّ هَذَا

कुछ नबियों ने कहा था, प्रकट हुआ। तो इसके अतिरिक्त किस बात को मानोगे। हे लोगो! खुदा के लिए तुम सब के सब या अकेले-अकेले खुदा का भय करके उस व्यक्ति की भांति सोचो जो न कंजूसी करता है और न दुश्मनी, यह वह युग नहीं कि खुदा बन्दों पर रहम (दया) करे? और क्या यह वह युग नहीं कि बुराई को दूर किया जाए और जिग्रों (यकृतों) की प्यास का मेंह बरसाने से निवारण किया जाए? क्या बुराई का सैलाब (बाढ़) अपनी चरम सीमा तक नहीं पहुंचा और मूर्खता के दामन ने अपने किनारों को नहीं फैलाया?

और देश खराब हो गया और शैतान ने मूर्खों का आभार प्रकट किया। अतः उस खुदा का धन्यवाद करो जिस ने तुम को याद किया और तुम्हारे धर्म को याद किया और नष्ट होने से सुरक्षित रखा और तुम्हारे बोए हुए को और तुम्हारी खेती को आपदाओं से बचाया और मेंह उतारा और उसकी पूँजी को पूर्ण किया और अपने मसीह को हानि के दूर करने के लिए तथा अपने महदी को भलाई और लाभ पहुँचाने के लिए भेजा और दूसरों के युग के बाद तुम्हें तुम्हारे इमाम के युग में प्रविष्ट किया। हे भाइयो! यह हमारा युग हमारे उस महीने से पूर्ण अनुकूलता रखता है। क्योंकि यह अंतिम युग है और यह महीना भी इस्लाम के महीने में से अन्तिम है और दोनों

الشَّهْرُ آخِرُ الْأَشْهُرِ مِنْ شَهْرٍ الْإِسْلَامِ - وَكِلَاهُمَا قَرِيبٌ مِنَ الْإِخْتِامِ - فِي هَذَا ضَحَايَا وَفِي ذَلِكَ ضَحَايَا - وَالْفَرْقُ فَرْقُ الْأَصْلِ وَعَكْسُ الْمَرَايَا - وَقَدْ سَبَقَ نَمُودَجْهَا فِي زَمَنِ خَيْرِ الْبَرَايَا - وَالْأَصْلُ ضَحِيَّةُ الرُّوحِ يَا أُولَى الْإِبْصَارِ - وَأَنْ ضَحَايَا الْجَدَايَا كَالْأَضْلَالِ وَالْأَثَارِ - فَافْهَمُوا سَرَّ هَذِهِ الْحَقِيقَةِ - وَأَنْتُمْ أَحَقُّ بِهَا وَأَهْلُهَا بَعْدَ الصَّحَابَةِ - وَأَنْكُمْ الْآخَرُونَ مِنْهُمْ أَلْحَقْتُمْ بِهِمْ بِفَضْلِ مِنَ اللَّهِ وَالرَّحْمَةِ - وَأَنْ سَلْسَلَةَ الْأَزْمَنَةِ خُتِمَتْ عَلَى زَمَانِنَا مِنْ حَضْرَةِ الْإِحْدِيَّةِ - كَمَا خُتِمَتْ شَهْرُ الْإِسْلَامِ عَلَى شَهْرِ الضَّحِيَّةِ - وَفِي هَذَا إِشَارَةٌ مَخْفِيَةٌ لِأَهْلِ الرَّأْيِ وَالرُّوْيَةِ - وَأَنْ عَلَى مَقَامِ الْخْتَمِ مِنَ الْوَلَايَةِ - كَمَا كَانَ سَيِّدِي الْمَصْطَفَى عَلَى مَقَامِ

समाप्त होने के निकट हैं। इस अन्तिम महीने में भी कुर्बानियाँ हैं और इस अन्तिम युग में भी कुर्बानियाँ हैं और अन्तर केवल असल (वास्तविक) और प्रतिबिम्ब का है जो दर्पण में पड़ता है और इसका नमूना आंजूरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में गुजर चुका है। और हे बुद्धिमानों वास्तविक कुर्बानी रूह की है तथा बकरोँ की कुर्बानियाँ रूह की कुर्बानी के लिए प्रतिबिम्ब और छावों के समान हैं। अतः इस वास्तविकता को समझ लो। और तुम सहाबा रज़ियल्लाहो अन्हुम के बाद यह अधिकार रखते हो तथा इस बात के योग्य हो कि इस वास्तविकता को समझो और तुम उन में से एक अन्तिम गिरोह हो जो खुदा के फ़ज़ल और रहमत से उसके साथ सम्मिलित किए गए हो और युगों का सिलसिला खुदा के यहाँ से हमारे युग पर समाप्त हो गया है जैसा कि इस्लाम के महीने कुर्बानी के महीने पर समाप्त हो गए हैं और उसमें अहले राय के लिए एक गुप्त संकेत है और मैं विलायत के सिलसिले को ख़त्म करने वाला हूँ जैसा कि हमारे सरदार आंजूरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नुबुव्वत के सिलसिले को समाप्त करने वाले थे और वह ख़ातमुल अंबिया हैं और मैं ख़ातमुल औलिया हूँ, मेरे बाद कोई वली नहीं परन्तु वह जो मुझ से होगा और मेरे अहद पर होगा, और मैं अपने खुदा की ओर

الختم من النبوة - وانه خاتم الانبياء - وانا خاتم الاولياء -  
 لاولى بعدى - الا الذى هو منى وعلى عهدى - وانى اُرسلت من ربى  
 بكل قُوَّةٍ وبركةٍ وعزّةٍ - وان قدمى هذه عل منارةٍ ختم عليها  
 كل رفعة - فاتقوا الله ايها الفتيان - واعرفونى واطيعونى ولا  
 تموتوا بالعصيان - وقد قرب الزمان -

وَحَانَ اتُسَلَّ كُلُّ نَفْسٍ وَتُدَانُ - البلىا كثيرةٌ ولا يُنَجِّيكم  
 الا الايمان - والخطايا كبيرةٌ ولا تذوبها الا الذوبان - اتقوا عذاب  
 الله ايها الاعوان - ولمن خاف مقام ربّه جنتان - فلا تقعدوا مع  
 الغافلين والذين نسوا المنيا - وسارعوا الى الله واركبوا على اعدى  
 المطايا - واتركوا ذوات الضلع والردايا - تَصَلُّوا الى ربِّ البرايا -  
 خُذُوا الْاِنْقِطَاعَ الْاِنْقِطَاعَ لِيُوَهَّبَ لَكُمْ الْوَصْلُ وَالاقْتِرَابُ - وكسروا

से सम्पूर्ण शक्ति, बरकत और सम्मान के साथ भेजा गया हूँ तथा यह मेरा क्रदम  
 एक ऐसे मीनार पर है कि उस पर प्रत्येक ऊँचाई समाप्त की गई है। अतः खुदा  
 से डरो हे बहादुरों मुझे पहचानो और मेरा अनुसरण करो तथा अवज्ञा पर न मरो  
 निस्सन्देह समय निकट आ गया है।

और वह समय निकट है कि प्रत्येक अस्तित्व अपने कार्यों के बारे में पूछा  
 जाए और बदला दिया जाए। विपत्तियाँ बहुत हैं और तुम्हें केवल ईमान मुक्ति  
 देगा और गलतियाँ बड़ी हैं और उनको पिघलाएगा नहीं परन्तु पिघल जाना। हे  
 मेरे सहायक गण! खुदा के अज़ाब से डरो और जो खुदा से डरे उनके लिए  
 दो स्वर्ग हैं। अतः लापरवाहों के साथ मत बैठो उन लोगों के साथ जिन्होंने  
 अपनी मौतों को भुला रखा है। खुदा की ओर दौड़ो और तीव्रगामी घोड़ों पर  
 सवार हो जाओ। ऐसे घोड़ों को छोड़ो जो लंगड़ा कर चलते हैं ताकि अपने  
 खुदा को मिलो, खुदा की ओर लीन हो जाने की आदत डालो ताकि खुदा का  
 मिलन और उसका सानिध्य तुम्हें प्रदान किया जाए तथा संसाधनों को तोड़ दो  
 ताकि तुम्हारे लिए संसाधन पैदा किए जाएँ और मर जाओ ताकि दोबारा तुम्हें

الاسباب لِيُخْلَقَ لَكُمْ الاسبابُ - وموتوا لِيُرد اليكم الحيوة ايها الاحباب - اليوم تَمَّت الحجة على المخالفين - وانقطعت معاذير المعتذرين - ويئس منكم زمر المضلين والموسوسين - الذين اكلوا اعمارهم في ابتغاء الدنيا وليس لهم حَظٌّ من الدين - بل هم كالعَمِين - فاليو انقض الله ظهورهم ورجعوا يائسين - اليوم حصحص الحق للناظرين - واستبان سبيل المجرمين - ولم يبق معرضٌ الا الذي حبسه حرمانٌ ازليٌ - ولا منكرٌ الا الذي منعه عدوانٌ فطريٌ - فنترك هؤلاء بسلايمٍ - وقدم الافحام - وتحقق الاثام - وان لينتهوا فالصبر جديرٌ - وسوف يُنبئهم خبيرٌ -

जीवन दिया जाए। आज विरोधियों पर हुज्जत पूरी हो गई और बहाना करने वालों के समस्त बहाने टूट गए और तुम से वे सब गिरोह निराश हो गए जो गुमराह करने वाले और असमंजस में डालने वाले थे। उन्होंने संसार की चाहत में अपने प्राण गंवाए तथा धर्म में से कोई भाग प्राप्त न किया अपितु वे अन्धों के समान हैं और आज खुदा ने उनकी कमरें तोड़ दीं और वे निराश होकर लौटे। आज देखने वालों के लिए सच प्रकट हो गया और अपराधियों का मार्ग खुल गया और सच से पृथक होने वाला वही व्यक्ति रहा जिस को सदैव के वंचित होने ने रोक दिया और वही इन्कारी रहा जिसको अत्याचार प्रिय होने ने मना कर दिया। अतः हम लोगों को सलाम के साथ विदा करते हैं और उन पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो गया और उन का दण्ड का पात्र होना सिद्ध हो गया। अतः यदि अब भी न रुकें तो धैर्य योग्य हैं तथा शीघ्र ही वह, जो उनकी हालतों से अवगत है उन्हें सतर्क कर देगा।

## الباب الثاني

ثم بعد ذلك اعلموا يا اولى النهى - انّ الله ذكر في القرآن انه بعث موسى بعدما اهلك القرون الاولى - واتاه الله الكتاب والحكم والنبوة - ووهب لقومه الخلافة - واقام فيهم سلسلة الهدى - وجعل خاتم خلفائه رسوله ابن مريم عيسى - فكان عيسى اخر لى هذه العمارة وعلمًا لساعة زوالها وعبرة لمن يخشى - ثم بعث الله نبينا الأُمّ - فى ارض أُمّ القُرَى - وجعله مثيل موسى - وجعل سلسلة خلفاءه كمثل سلسلة خلفاء الكليم لتكون رديءًا لها وانّ فى هذا الآية لمن

## द्वितीय अध्याय

तत्पश्चात् तुम्हें ज्ञात हो हे बुद्धिमानो! कि खुदा तआला ने पवित्र कुर्आन में यह वर्णन किया कि उसने पहली उम्मतों के तबाह कर देने के बाद मूसा को पैदा किया और उसी को किताब, हुक्म और नुबुव्वत प्रदान की और उसकी क्रौम को खिलाफत दी तथा उनमें हिदायत का सिलसिला स्थापित किया, और उस सिलसिले का 'खातमुल खुलाफ़ा' हज़रत ईसा इब्ने मरयम को बनाया। अतः हज़रत ईसा इस इमारत की अन्तिम ईंट थे और एक दलील थे उस इमारत के पतन की घड़ी पर और एक सीख थे उस व्यक्ति के लिए जो डरता हो। फिर खुदा ने हमारे पैग़म्बर उम्मी (अनपढ़) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मक्का की धरती पर अवतरित किया और उनको मूसा अलैहिस्सलाम का मसील (समरूप) बनाया तथा उनके खलीफ़ों का सिलसिला हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के खलीफ़ों के सिलसिले की तरह और उनके समान कर दिया ताकि यह



یرای - وان شیء فاقراء آية

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ (سورة النور-56)

ولا تتبع الهوى - فان فيها وعد الاستخلا لهذه الامة  
 كمثل الذين استخلفوا من قبل والكريم اذا وعد وفا - وانا  
 لا نعلم اسما خلفاء سبقونا من هذه الامة من قبل الا قليلاً  
 ممن مضى - وما قص علينا ربنا قصص كلهم وما انبأنا  
 باسمائهم فلا نؤمن بهم الا اجمالاً ونفوض تفصيلهم الى ربنا  
 الاعلى ولكننا الجئنا بنص القران الى ان نؤمن بخليفة منا هو  
 آخر الخلفاء على قدم عيسى - وما كان لمؤمن ان يكفر به

सिलसिला उस सिलसिले का सहायक हो और इसमें देखने वालों के लिए एक  
 निशान है तथा तू चाहे तो आयत-

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ (अन्नूर -56)

को पढ़ ले और अपने लोभ-लालच का अनुकरण न कर। क्योंकि इस आयत में  
 इस उम्मत के लिए ऐसे खलीफ़ों का स्पष्ट वादा है जो उन खलीफ़ों की तरह  
 हों जो बनी इस्राईल में गुज़र चुके हैं। और करीम (कृपालु) जब वादा करता है  
 तो उसे पूरा करता है और हम उन सब खलीफ़ों के नाम नहीं जानते जो हमसे  
 पहले गुज़र चुके हैं। सिवाए इस उम्मत के तथा पहली उम्मतों के कुछ गुज़रे हुए  
 लोगों के और खुदा ने उन सब के नामों से भी हमें सूचित नहीं किया। अतः हम  
 उन पर सामूहिक रूप से ईमान लाते हैं और उनके नामों के विवरण को अपने  
 खुदा पर छोड़ते हैं। परन्तु हम कुर्आन के स्पष्ट आदेशानुसार इस बात पर विवश  
 हो गए कि इस बात पर ईमान लाएं कि अन्तिम खलीफ़ा इसी उम्मत में से होगा  
 और वह ईसा के क़दम पर आएगा और किसी मोमिन की मजाल (शक्ति) नहीं  
 कि उस का इन्कार करे क्योंकि यह कुर्आन का इन्कार है और जो कोई कुर्आन  
 का इन्कारी है वह जहाँ जाए खुदा के अज़ाब के नीचे है। और तू कुर्आन पर  
 ऐसा विचार कर जैसा कि विचार करने का हक़ है और उस व्यक्ति के समान

فانه كفرٌ بكتا اللّهُط ولا يفلح الكافر حيث ائى - وفكر ف القرآن حق الفكر ولا تكن كالذى استكبر وائى - وانه الحق من ربنا فاقرء سورة النور متدبراً ليتجلّى عليك هذا النور كالضحى واقراء آية -

صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ (سورة الفاتحة-7)

و كفاك هذان الشاهدان ان كنت تسمع و ترى - فحاصل الكلام ان سلسلة الخلفاء المحمدية قد وقعت كسلسلة خلفاء موسى - و كذلك كان الوعد في القرآن من ر السموات العلى - فان الله قد استخلف قومًا من قبل من بنى اسراء ييل واصطفى - و اكرم بنى اسراء ييل وجعل فيهم النبوة ومهله حتى طال عليهم العمر وتركوا التقوى - فلما انقضى عليهم ثلث مائة

न हो जो अभिमान पूर्वक सर फेर लेता है और यही बात खुदा की ओर से सच है अतः सूरह नूर को ध्यानपूर्वक पढ़ ताकि तुझ पर यह प्रकाश दिन के समान प्रकट हो। तथा इसी प्रकार

صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ (अलफ़ातिहा - 7)

की आयत पढ़ और ये दोनों गवाह पर्याप्त हैं यदि तू देखता और सुनता है। अतः सारांश यह है कि मुहम्मदी खलीफ़ों का सिलसिला मूस्वी खलीफ़ों के सिलसिले के समान हुआ है तथा इसी प्रकार ऊंचे आकाश के खुदा की ओर से पवित्र कुर्आन में वादा था, किस लिए कि खुदा तआला ने इस से पहले बनी इस्राईल में खलीफ़ों का सिलसिला क्रायम किया और उनको ख़िलाफ़त के लिए स्वीकार किया तथा बनी इस्राईल को सम्मान दिया और उनमें नुबुव्वत क्रायम की और उन्हें लम्बा अवकाश दिया यहाँ तक कि उन पर बहुत लम्बा समय गुज़रा और उन्होंने सयंम को त्याग दिया। अतः जिस समय कि तेरह सौ वर्ष मूसा अलैहिस्सलाम के अवतरण से उन पर गुज़रे, वही मूसा कि जिस से खुदा ने वार्तालाप किया था और जिसको चुना

بعد الالف من يومٍ بعث فيه الكليم الذي كلمه الله و اجتبى -  
 بعث الله رسوله عيسى ابن مريم فيهم وجعله خاتم انبياء هم  
 وعلماً لساع نقل النبوة مع العذاب ط فانذرهم وخشى ★ -  
 وما كان له أب من بنى اسراء ييل الا امة - و كذلك خلقه الله من  
 غير اب و اوما فيه الى ما اوما - و كان ذلك ايةً و علماً لليهود  
 واخباراً لهم في رمز قد اختفى - و ارهاصً لظهور نبينا خير  
 الورى - و ما جعل الله المسى خاتم السلسلة الموسوية الا غضباً

था खुदा तआला ने हज़रत ईसा इब्ने मरयम को बनी इस्राईल में अवतरित  
 किया और उनको बनी इस्राईल का खातमुल अंबिया बनाया और नुबुवत  
 के स्थानांतरण के समय के लिए उनको सबूत ठहराया और इस प्रकार से  
 यहूदियों को भयभीत किया ★ और ईसा अलैहिस्सलाम का बनी इस्राईल में  
 से माँ के अतिरिक्त कोई बाप न था। इस प्रकार से खुदा ने उनको बिना बाप  
 पैदा किया और उस बिना बाप पैदा करने में एक संकेत किया जो किया  
 और यह एक निशान तथा तर्क था यहूदियों के लिए और इसमें एक गुप्त  
 सूचना थी और वह रहस्य यह था कि बनी इस्राईल में से अब नुबुवत जाती

★ الحاشية - ان مريم ولدت ابناً ما كان من بنى اسرائيل - ثم قيل فيها ما قيل -  
 وعذبوها باقاويل - فكان هذان الامران علماً لساعة نقل النبوة و علماً لتعذيب  
 هذه الفرقة - فاصاب اليهود ذلة باخراجهم من هذا البستان - و نقل النبوة الى بنى  
 اسماعيل غضباً من الله الديان - ثم اصابهم ذلة اخرى وقارعة من ملوك الزمان - بل  
 من كل ملك الى هذا الاوان - وان فيها لايةً لاهل العلم والعرفان - منه

☆ हाशिया :- मरयम ने एक लड़के को जन्म दिया जो बनी इस्राईल में से नहीं था, फिर उसके  
 लिए जो कहा गया और भिन्न-भिन्न प्रकार की बातों से उसे दुःख पहुँचाया गया। अतः ये दोनों बातें  
 नुबुवत के स्थानांतरण की घड़ी पर एक सबूत थे इसके अतिरिक्त इस बात पर कि इस फ्रिक्के को  
 अज्ञात पहुँचाया जाएगा। अतः यहूदियों को दो अपमान पहुँचे। एक यह कि नुबुवत के बाग़ से  
 बाहर कर दिए गए और नुबुवत बनी इस्राईल में स्थानान्तरित हो गई तथा दूसरा अपमान और अज्ञात  
 बादशाहों के द्वारा उन्हें पहुँचा अपितु प्रत्येक बादशाह के द्वारा उस समय तक और इसमें विद्वानों  
 और आरिफों के लिए निशान हैं। (इसी से।)

على اليهود فاهلكهم كما اهلك القرون الاولى - ثم اختار الله قوماً آخرين وُولدَ لهم ولدٌ طيبٌ من أمة القري - وهذا هو محمدٌ رسول الله وحبيبه الذي بُعث عند الفساد في البر والبحر وجُعل مثيل موسى - لينجي الناس من كل فرعونٍ طغى - عليه سلام الله وصلواته الى يومٍ يُعطي له المقام المحمود والدرجات العليا - واقام الله به سلسلةً اخرى كمثل سلسلة موسى - الذي هو مثيلُهُ هذه والعقبى - و كان هذا وعدٌ من الله في التوراة والانجيل والقران ومن اوفى من الله وعدًا و اصدق قيلاً - ولما كان وعد المشابهة في سلسلتى الاستخلاف وعدًا أُكَّد بالنون

रहेगी और हमारे पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए इर्हास था। और खुदा तआला ने हजरत मसीह अलैहिस्सलाम को मूस्वी सिलसिले का खातम इसलिए बनाया ताकि यहूदियों पर अपना प्रकोप प्रकट करे। अतः खुदा तआला ने उनको तबाह किया जैसा कि पहली उम्मतों को तबाह किया था और फिर खुदा तआला ने उन के बदले अन्य क्रौम को चुना और उनके लिए एक पवित्र और नेक सुपुत्र पवित्र मक्का में पैदा किया और वह मुबारक सपूत हजरत मुहम्मद मुस्ताफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुदा के रसूल और उसके प्रिय हैं जो पूर्णतः गुमराही के समय अवतरित हुए और मूसा के मसील समरूप ठहराए गए ताकि लोगों को हर फ़िरऔन से मुक्ति दें। खुदा का सलाम और दरूद हो उन पर उस दिन तक कि जिस दिन तक मुक़ाम-ए-महमूद तथा श्रेणियां बुलन्द की जाएँ। और अल्लाह तआला ने उनके माध्यम से एक दूसरा सिलसिला क्रायम किया जो कि वह सिलसिला उस मूसा के सिलसिले के समान है कि वह उसका मसील है इस दुनिया में और आखिरत में और यह खुदा तआला का वादा था तौरात और इंजील तथा कुर्आन में और वादे को पूरा करने वाला और सत्यवादी खुदा तआला से अधिक कौन है? और जिस समय कि वादा दोनों सिलसिलों में ख़िलाफ़त की समानता का

الثقيلة من الله صادق الوعد الذي هو اَوَّل من وُقِي - اقتضى هذا الامر ان يأتى الله بأخر السلسلة المحمّدية خليفةً هو مثيل عيسى -

فانّ عيسى كان آخر خلفاء ملّة موسى كما مضى -  
 ووجب ان لا يكون هذا الخليفة من القريش وان لا يأتى مع  
 السيف ولا يؤمر للوغى - ليتم امر المشابهة كما لا يخفى -  
 ووجب ان يظهر تحت حكوم قومٍ آخرين الذين هم كمثل  
 قوم بعث المسيح في زمن حكومتهم فانظر الى هذه المضاهاة  
 فانها اوضح واجلى - وانت تعلم انّ عيسى قد جمع هذه الاربعة  
 و كذا ل اراد الله في مسيح هذه الامة وقضى - ليتم امر المماثلة

और खुदा तआला की ओर से नून सक्रीला के साथ दिया गया था इस बात ने मांग की कि सिलसिला-ए-मुहम्मदिया के अन्त में वह खलीफ़ा आए कि जो ईसा अलैहिस्सलाम के समान हो।

क्योंकि ईसा अलैहिस्सलाम मूसा अलैहिस्सलाम के खलीफ़ाओं में से अन्तिम खलीफ़ा थे। जैसा कि वर्णन किया गया और अनिवार्य हुआ कि यह खलीफ़ा जो खातमुल खुलफ़ा है कुरैश में से न हो और तलवार न उठाए और युद्ध का आदेश न दे ताकि समानता पूर्ण हो जाए जैसा कि गुप्त नहीं और यह भी अनिवार्य हुआ कि वह एक अन्य क्रौम के शासन के अन्तर्गत प्रकट हो कि वह क्रौम उस क्रौम के समान हो जो हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम उसके शासन के युग में प्रकट हुए थे। अतः उस समानता को देख कि कैसी स्पष्ट और प्रकाशमान है। तथा तू जनता है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम अपने अस्तित्व में ये चारों विशेषताएं एकत्र रखते थे और इसी प्रकार खुदा तआला ने इरादा किया कि ये चारों विशेषताएं इस उम्मत के मसीह में भी एकत्र हों ताकि समानता की बात पूर्णतया प्राप्त हो जाए और ऐसा व्यर्थ अंतर न हो कि उसमें किसी प्रकार की न्यूनाधिकता

ولا يكون كقسمة ضيبي \* - وكان هذا وعد الله وان وعد الله لا  
يبدل ولا ينسى - الا تقراء ون كتاب الله اليس فيه هذا الوعد  
فاتقوا الله الذي اليه الرجعى - ولا تكونوا كالذين يقراء ون  
القران وما يبالون ما امر القران وما نهى - واذا قيل لهم امنوا

रह जाए★ तथा यह खुदा तआला का वादा था और यह खुदा तआला का  
वादा न परिवर्तन योग्य है, न भूलने योग्य है क्या तुम खुदा की किताब को नहीं पढ़ते?  
क्या उस में यह वादा नहीं है? खुदा तआला से डरो कि खुदा तआला की ओर एक  
दिन जाना है और उन लोगों की भांति न बन जाओ कि पवित्र कुर्आन पढ़ते हैं और  
उसके आदेश और निषेध की कुछ परवाह नहीं करते, जब उनको कहा जाता है कि

★ حاشية :- ان قيل ان المسيح قد خلق من غير اب من يد القدرة.  
وهذا امرٌ فوق العادة فلا يتم هناك شان المماثلة. وقد وجب المضاهاة  
كما لا يخفى على القريحة الوقادة. قلنا ان خلق انسان من غير اب  
داخل في عادة الله القدير الحكيم - ولا نسلم انه خارج من العادة ولا  
هو حرى بالتسليم \* فان الانسان قد يتولد من نطفة الامراة وحدها  
ولو على سبيل الندره - وليس هو بخارج من قانون القدرة. بل له  
نظائر وقصص في كل قوم وقد ذكرها الاطباء من اهل التجربة -

★ हाशिया :- यदि कहा जाए कि हजरत मसीह अलैहिस्सलाम बिना बाप पैदा हुए थे और  
यह एक विलक्षण बात है। अतः समानता की शान पूरी नहीं होती है जबकि परस्पर समानता का होना  
आवश्यक है। जो स्वच्छ स्वभाव रखने वाले लोगों पर गुप्त नहीं है। हम कहते हैं कि मनुष्य का बिना  
बाप पैदा करना खुदा की आदत में शामिल है और हम इसे स्वीकार नहीं करते कि यह आदत से बाहर  
है और न इस योग्य है कि इस बात को स्वीकार किया जाए, क्योंकि मनुष्य कभी केवल स्त्री के नुत्फे  
(रज) से भी पैदा हो जाता है यद्यपि बात दुर्लभ हो और यह बात प्रकृति के नियम से भी बाहर नहीं  
है बल्कि हर क्रौम में इसके उदाहरण पाए जाते हैं और अनुभवी वैद्यों ने ऐसे उदाहरण वर्णन किए हैं।

\* حاشية كا حاشية :- الم تر ان ادم عليه السلام ما كان له ابوان فكون هذا الامر  
من عادة الله ثابت من ابتداء الزمان - منه

\* हाशिए का हाशिया :- क्या तुम ने नहीं देखा कि हजरत आदम अलैहिस्सलाम का न कोई बाप था  
और न माँ। अतः इस बात का खुदा की आदत में शामिल होना युग के प्रारंभ से ही सिद्ध है। (इसी से)।

بما وعد الله ولا تنسوا نصيبكم من رحمة تَرْجَى - قالوا لاندري ما الوعد ط وطبع على قلوبهم فلا يسمع احدٌ منهم ولا يرى - ولا يقبلون الحق وقد اتينا الدلائل كدر ابهى - الا ينظرون الى القران او على الابصار غشاوة فما يرون ما طلع وتجلي ومنهم قومٌ أعطوا علمًا ثم يمرون كالذي اعرض وابى - ولئن

खुदा तआला के वादे पर ईमान लाओ और जिस रहमत के तुम प्रत्याशी हो उसमें से अपना भाग नष्ट न करो, तो कहते हैं कि हम नहीं जानते कि वादा क्या होता है और उन के दिल पर मुहर लगी हुई है उनमें से कोई भी नहीं देखता और नहीं सुनता और सच को स्वीकार नहीं करता हालाँकि हम ने चमकदार मोतियों की तरह उनको तर्क दिए। क्या कुर्आन की ओर नहीं देखते या उन की आँखों पर पर्दा है कि जो उस आभा की ओर नहीं देखते जिसका उदय हुआ है। और उनमें एक क्रौम है जिसे

نعم نقبل ان هذه الواقعة قليلة نسبةً الى ما خالفها من قانون التوليد وكذلك كان خلقى من الله الوحيد\* وكان كمثلہ في الندر وكفى هذا القدر للسعيد فاني ولدت تَوَيْئًا و ما و كانت صبيةً تولدت معى في هذه القرية - فماتت وبقيت حيًا من امر الله ذى العزة - ولا شك ان هذه الواقعة نادرة نسبةً الى الطريق المتعارف المشهود - ويكفى للمضاهاة الاشتراك فيالندرة بهذا القدر عند اهل العقل والشعور - فان المشابهة لاتوجب الا لونًا من المناسبة - ولا تقتضى الا رائحةً من المماثلة -  
हाँ हम यह बात स्वीकार कर सकते हैं कि बिना बाप पैदा होना विरल बात है इस बात की अपेक्षा कि उस की विरोधी है और इस अद्भुत बात के समान मेरी पैदायश है क्योंकि मैं जुड़वाँ पैदा हुआ हूँ और मेरे साथ एक लड़की पैदा हुई थी जो मर गई और मैं जीवित रह गया और इसमें कोई सन्देह नहीं है कि घटना भी अपेक्षाकृत सामान्य पैदायश के नियम से अद्भुत है और समानता के लिए इतनी समरूपता पर्याप्त है क्योंकि समानता और समरूपता एक रंग के अनुकूलता के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहती है और वह यहाँ प्राप्त है।

\*حاشية كاحاشية :- ومع ذلك اتى ارسلت في المهزودتين و اعيش في المرضين  
مرض في الشق الاسفل ومرض في الاعلى - فحياتي اعجب من تولد المسيح و اعجاز  
لمن يرى - منه

سألتهم ما وعد الله ربكم الأعلى - ليقولن انه وعد المؤمنين ان يستخلف منهم كما استخلف من قوم موسى - فقد اقرّوا بتشابه السلسلتين ثم ينكرون كبصيرٍ تعامى - ولما كان نبينا مثيل موسى - وكان سلسلة خلفاءه مثيل السلسلة الموسوية

थोड़ा सा ज्ञान दिया गया है उस पर भी मुंह फेरते और इन्कार करते हैं। यदि उन से पूछा जाए कि तुम्हारे खुदा ने क्या वादा किया है तो उसके उत्तर में कहते हैं कि हाँ खुदा ने मोमिनों से यह वादा अवश्य किया है कि उन में खलीफ़े पैदा किए जाएंगे उन खलीफ़ों के समान जो मूसा अलैहिस्सलाम की क्रौम में पैदा किए गए थे। अतः दोनों सिलसिलों की समानता का वर्णन करते हैं। फिर ऐसे व्यक्ति की तरह इन्कार कर बैठते हैं जो सुजाखा हो और अपने आप को अँधा बना ले, तथा जिस हालत में हमारे

وانا اذا قلنا مثلاً ان هذا الرجل اسدٌ بطريق المجاز والاستعارة - فليس علينا من الواجب ان نثبت له كلما يوجد في الاسد من الذنب والزرر وهيئة الجلد وجميع لوازم السبعية - ثم اعلم ان تولد عيسى ابن مريم من غير اب من بنى اسرائيل بهذا الطريق - تنبيهٌ لليهود وعلمٌ لساعتهم واشارةٌ الى ان النبوة مُنْتَزَعٌ منهم بالتحقيق - واما مسيح هذه الامة فولد توأماً من ذكرٍ وانشى وفُرّق بينه وبين مادة النساء - وفي ذلك اشارةٌ الى ان الله يبيت به كثيراً في هذه الفئة رجال الصدق والصفاء - فالاعراض مختلفة في هذا وفي ذلك فلذلك اختلف طريق التوليد من حضرة الكبرياء - منه उदाहरणतया जब हम लाक्षणिक एवं रूपक के तौर पर यह कहें कि यह व्यक्ति शेर है तो हमेशा यह अनिवार्य नहीं है कि हम यह सिद्ध करें कि उस शेर के समस्त अंग और विशेषताएं उस व्यक्ति में पाई जाती हैं। अतः पूँछ, आवाज़, बाल, खाल और दरिन्दगी के सारे सामान भी उसमें हों। फिर तू जान ले कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का बिन बाप पैदा होना बनी इस्राईल में से यहूदियों के लिए एक चेतावनी है और उन के पतन की घड़ी पर एक तर्क है और इस बात की ओर संकेत है कि उन से नुबुव्वत अवश्य स्थानांतरित हो जाएगी परन्तु इस उम्मत का मसीह नर और मादः से जुड़वां पैदा हुआ है और मादः का तत्व उस से अलग कर दिया गया है। इसमें इस बात की ओर संकेत है कि खुदा तअाला इस गिरोह में बहुत से लोग पैदा करेगा जो श्रद्धावान और निष्ठावान होंगे। अतः इन दोनों पैदायशों में विभिन्न उद्देश्य हैं इस दृष्टि से जन्म पद्धति में मतभेद पाया जाता है। (इसी से।)



بنص اجلى-وجب ان تختتم السلسلة المحمدية على خليفة هو  
 مثيل عيسى - كما اختتم على ابن مريم سلسلة صاحب العصا  
 - ليطابق هذه السلسلة بسلسلة اولى - وليتم وعد مماثلة  
 الاستخلاف كما هو ظاهر من لفظ كما فأروني خليفة من دوني  
 جاء على قدم ابن مريم منكم على اجل يشابه اجلاً مضى - وقد  
 انقضت مدة من نبينا الى يوم بعثنا هذا - كمثل مدة كانت  
 بين موسى وعيسى - وان في ذلك لآية لقوم يطلبون الهدى - فما  
 لكم لم تنتظرون نزول المسيح من السماء - انسيتم ما تقرءون  
 في القرآن او رضيتم بتكذيب كلام ربكم الاعلى -

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मूसा के मसील ठहरे और इसी प्रकार आंहरत  
 सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खलीफ़ाओं का सिलसिला मूसा अलैहिस्सलाम के  
 सिलसिले का मसील ठहरा जैसा कि कुर्आन की स्पष्ट आयत इस का पता देती है।  
 अतः अनिवार्य हुआ की सिलसिला मुहम्मदिया एक ऐसे खलीफ़े पर समाप्त हो कि  
 वह मसीले ईसा अलैहिस्सलाम हो जैसा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का सिलसिला  
 हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर समाप्त हुआ ताकि ये दोनों सिलसिले परस्पर अनुकूल  
 हो जाएँ और ताकि इस सिलसिले के खलीफ़ों का तथा उस सिलसिले के खलीफ़ों  
 का समरूपता का वादा पूरा हो जाए। जैसा कि समरूपता की बात **كما** के शब्द  
 से प्रकट है जो आयत में मौजूद है। अतः मुझे वह खलीफ़ा दिखाओ जो मेरे अतिरिक्त  
 हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के क़दम पर इस उम्मत में से आया हो और उसका युग  
 तथा हज़रत मसीह का युग समान हो और यह निश्चित हो चुका है कि हमारे पैग़म्बर  
 सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग से उस समय तक वही अवधि गुज़री है कि जो  
 अवधि मूसा अलैहिस्सलाम से ईसा अलैहिस्सलाम के युग तक गुज़री थी और इसमें  
 मार्ग-दर्शन के अभिलाषियों के लिए संकेत है। तुम्हें क्या हो गया कि तुम मसीह के  
 आकाश से उतरने की प्रतीक्षा कर रहे हो और तुम ने जो पवित्र कुर्आन में पढ़ा है उसे  
 भूलते हो। क्या इस बात पर सहमत हो गए कि खुदा के कलाम को झुठलाया जाए।

اتكفرون بكتاب الله وهو بحرٌ من المعارف ومائٌ  
 اصْفَى - و كيف اسْتَطَبْتُمْ ان تتركوا الفرقانا الحميد لاقوالِ  
 شئى - استبدلون الذى هو ادنى بالذى هو خيرٌ وان الظن لا يغنى  
 من الحق شيئاً - وقد جمع الشمس والقمر كما ذكر القرآن  
 وكسفا في رمضان كشق القمر في زمن خير الورى - وعطلت  
 العشار لمن يرى - ووهبت لنا مطيةً اخرى - لنقدر على  
 السياحة ازيد من المسيح ونجعل امر التبليغ اكمل منه  
 واوفى - وانظروا الى فضل الله انه اظهر لى شهادة من السماء -  
 وشهادة من الارض وشهادة من بينهما وأرى الامر كضوء  
 الضحى - الاترون الى تشابه في امر استخلاف ائى - واستخلاف  
 خلا - وان في ذلك لآية لمن تيقظ وارق الكرى - الاترون الى

तुम उस खुदा की किताब का इन्कार करते हो जो अध्यात्म ज्ञान का सागर  
 और शुद्ध जल है और तुम्हें यह बात कैसे पसन्द आ गई कि पवित्र कुर्आन को  
 उन कथनों के बदले छोड़ते हो जो निरर्थक और बिखरे हैं और तुच्छ को उच्चतम  
 चीज़ के बदले में छोड़ते हो तथा अनुमान सच के सामने किसी प्रकार का लाभ  
 नहीं देता। और चन्द्र एवं सूर्य इकट्ठे किए गए जैसा कि पवित्र कुर्आन में वर्णन  
 हुआ है और दोनों का रमजान मुबारक में ग्रहण हो गया जैसा कि खुदा के रसूल  
 सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में चन्द्रमा के फटने का निशान प्रकट हुआ,  
 ऊँट बेकार किए गए तथा उनके स्थान पर अन्य सवारी मिली ताकि हम मसीह  
 से अधिक भ्रमण करने पर समर्थ हों और उस से अधिक पूर्ण तब्लीग (प्रचार)  
 को पूरा करें। खुदा तआला के फ़ज़ल की ओर देखो कि उसने मेरे लिए आसमान  
 से एक गवाही और एक गवाही पृथ्वी से और एक उन दोनों में प्रकट की और  
 चाशत (एक पहर दिन चढ़ने) के प्रकाश को दिखा दिया। तुम इस समानता की  
 ओर नहीं देखते जो इस सिलसिले की खिलाफ़त के मामले में है और बनी इस्राईल  
 की खिलाफ़त के सिलसिले में है। इसमें एक निशान है उनके लिए जो गहरी नींद

زمنٍ بعثت فيه وقد جئتكم بعد رسول الله المصطفى - الى امدٍ  
 كان بين موسى وعيسى - وان في ذلك لآيةً لاولى النهى - فانظروا  
 كيف اجتمعت الايات من الله ذى المجد والعلی - فكُسف القمر  
 والشمس في شهر الصيام وترك القلاص فلا يُحمل عليها ولا  
 تُمْتطى - ومعها آياتٌ اخرى -

وهل اجتمعت هذه قط لكذابٍ افترى - فاتقوا جهنم  
 التي تأكل المجرمين وان المجرم لا يموت فيها ولا يحيى - أ  
 تنبذون كتاب الله وراء ظهوركم وتتبعون اقوالاً اخرى - وان  
 هو الا بغى وظلمٌ وخروجٌ من الهدى - والخير كله في القرآن  
 والتمسك به من دأب الثقى - وان الارض والسماء قد شهدتا  
 لي وهل تشهدان الا لصادقٍ اذا ادعى - فاعلموا انى انا المسيح

से जागना चाहते हैं। क्या तुम उस युग को जिस में मैं अवतरित हुआ नहीं देखते कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद उतने ही समय में आया हूँ जो समय मूसा अलैहिस्सलाम और ईसा अलैहिस्सलाम में चौदह सौ वर्ष का था। इस में बुद्धिमानों के लिए एक निशान है देखो कि खुदा ने क्योंकि बहुत से निशान एकत्र कर दिए और क्योंकि चन्द्र और सूर्य का ग्रहण रमजान में हुआ और ऊँट की सवारी बेकार हुई और इनके अतिरिक्त और भी निशान हैं।

क्या कभी यह निशान किसी झूठ गढ़ने वाले के लिए एकत्र हुए हैं? उस नर्क से डरो जो दोषियों को खा जाने वाला है और दोषी उसमें न मरेंगे और न जिएंगे। क्या खुदा की किताब को पीठ के पीछे डालते हो तथा दूसरी बातों का अनुकरण करते हो यह आदत सर्वथा विद्रोह, अन्याय और हिदायत से दूर होने की है सब भलाई पवित्र कुर्आन में है और उसका अनुकरण पवित्रता का मार्ग है पृथ्वी और आकाश ने मेरी गवाही दी क्या सच्चे के अतिरिक्त पृथ्वी और आकाश दूसरे की गवाही इस प्रकार से दे सकते हैं। तहकीक करके देखो मैं निस्सन्देह

الموعود والمهدى المعهود من الله الاحق - وارسلت عند  
 صول الصليب وكون الاسلام كالغريب ليتم بي الوعد الحق  
 وما كان حديثا يفتري - ولو كنت مفترياً غير صادق لما اجتمع  
 لي من الأ - ما اجتمع وان الله لا يؤيد من كذب وافتري على الله  
 واعتدى - وان في زمانى ومكانى وقومى وعدا قومى لآيات على  
 صدقى لمن تدبر وما استكبر وما علا - وجئتكم حكماً عادلاً  
 لابين لكم بعض الذى تختلفون فيه ولاقتل كل حية تسعى -  
 وما جئت فى غير وقت بل جئت على رأس المائة وعندفتن  
 بلغت المنتهى - وما جئت من غير برهان وقد نزلت الأ  
 من السموات العلى - وجدد اللسن واستيقن القلوب وهدى

मसीह और महदी मा'हूद हूँ, दयालु ख़ुदा की ओर से भेजा गया हूँ, सलीबी विजय  
 और इस्लामी पतन के समय ताकि ख़ुदा तआला का वादा पूरा हो और यह ऐसी  
 बात नहीं है कि झूठ बना कर वर्णन की हो। यदि मैं झूठ गढ़ने वाला होता और  
 सच्चा न होता तो ये समस्त निशान जो मेरे लिए एकत्र किए गए हैं हरगिज़ एकत्र  
 न होते और ख़ुदा तआला उसका समर्थन नहीं करता जो ख़ुदा तआला पर झूठ  
 बनाए और सीमा से आगे बढ़ जाए तो निश्चित रूप से मेरे युग में, मेरे मकान  
 में, मेरी क्रौम में मेरे शत्रुओं की क्रौम में सोच-विचार करने वालों के लिए निशान  
 हैं और मैं हकम-व-अदल हो कर आया हूँ ताकि तुम में तुम्हारे विभिन्न मामलों  
 में फैसला कर दूँ और मैं असमय नहीं आया हूँ बल्कि उचित समय और सदी  
 के सर पर आया हूँ और उस समय कि जब उपद्रव चरम सीमा को पहुँच गए हैं  
 और न बिना प्रमाण और तर्क के आया हूँ तथा बहुत से निशान प्रकट हो गए हैं,  
 मुँहों ने इन्कार किया और दिलों ने विश्वास कर लिया है ख़ुदा तआला जिस को  
 चाहे हिदायत दे। क्या तुम मेरे मामले में सन्देह करते हो हालाँकि जितने सबूत के  
 साथ सच प्रकट होना चाहिए था वह प्रकट हो गया और इतने प्रमाण प्रकट हुए  
 कि जो असंख्य हैं। पवित्र कुर्आन को तुम नहीं देखते कि वह स्पष्ट एवं व्यापक

الله من هدى - اتمارون في امرى وقد حصحص الحق وظهرت  
 دلائل لا تُعدُّ وتُحصى - الا تنظرون الى القران وانه يشهد لى  
 ببيان اوضح واجلى - وهل اتاك حديث خير الورى - اذ قال  
 كيف انتم اذ نزل فيكم ابن مريم وامامكم منكم ففكر  
 في قوله منكم وتفكر كمن اتقى - وان هذا الحديث يقص  
 عليكم ما بين لكم الفرقان فلا تُفرِّقوا بين كتاب الله وقول  
 رسوله المجتبى - واتقوا الله الذى ترجع اليه كل نفس فتجرى -  
 الا تعلمون ما قال ربكم اعنى قوله وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ الى قوله  
 لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا (سورة النور- 56) فمالكم تشركون بالله عيسى  
 والدجال من غير علم من الله ولا الهدى - وتنتظرون ينزل

वर्णन द्वारा मेरी गवाही देता है। तुम्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम  
 की हदीस की भी खबर है जब आप ने फ़रमाया कि तुम्हारा क्या हाल होगा जब  
 इब्ने मरयम तुम में अवतरित होगा, वह तुम्हारा इमाम और तुम में से ही होगा  
 अर्थात् तुम्हारी ही क्रौम से न किसी अन्य क्रौम से। इस कथन में जो **منكم**  
 (मिनकुम अर्थात् तुम में से) है विचार कर और संयमियों की तरह विचार कर  
 तथा यह हदीस वही वर्णन करती है जो पवित्र कुर्आन ने कहा है। अतः खुदा  
 की किताब और रसूलुल्लाह के कथन में मतभेद पैदा न करो और उस खुदा से  
 डरो कि जिसकी ओर एक दिन जाना है और अपने कर्मों का प्रतिफल पाना है  
 क्या तुम नहीं देखते कि हमारे खुदा ने क्या कहा अर्थात् यह कि

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ (अन्नूर - 56)

से इस कथन तक

لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا (अन्नूर - 56)

क्या इस कथन में तुम विचार नहीं करते जो स्पष्ट तौर पर बाताता है कि  
 समस्त खलीफ़े इसी उम्मत में से होंगे न कोई एक आकाश से उतरेगा। तुम्हें क्या  
 हो गया है कि हज़रत ईसा और दज्जाल को खुदा का भागीदार ठहराते हो। क्या

من مات وَالْحَقُّ بِالْمَوْتِ- أَعِنْدَكُمْ حِجَّةٌ قَاطِعَةٌ عَلَي دَعْوَاكُمْ  
 فَتَتَّبِعُونَهَا أَوْ أَثَرْتُمْ عَلَي الْيَقِينِ ظَنًّا أَخْفَى - يَا حَسْرَةً عَلَيكُمْ  
 أَنْكُمْ نَسِيتُمْ قَوْلَ اللَّهِ وَقَوْلَ رَسُولِهِ اعْنِي مِنْكُمْ وَظَنَنْتُمْ أَنَّ  
 الْمَسِيحَ يَأْتِي مِنَ السَّمَاوَاتِ الْعُلَى- وَهَلْ هُوَ إِلَّا خُرُوجٌ مِنْ  
 الْقُرْآنِ وَخُرُوجٌ مِنَ الْحَدِيثِ وَمُفْسَدَةٌ عَظْمَى- وَكَيْفَ تَتْرَكُونَ  
 الْقُرْآنَ وَالشَّهَادَةَ الْكَبِيرَةَ مِنْهُ لَمَنْ اهْتَدَى- وَأَنَّ لِلْقُرْآنِ شَأْنًا أَعْظَمَ  
 مِنْ كُلِّ شَأْنٍ وَأَنَّ حَكْمًا وَمُهَيْمِنًا وَأَنَّ جَمْعَ الْبِرَاهِينِ وَبَدَدَ  
 الْعَدَا- وَأَنَّ كِتَابًا فِيهِ تَفْصِيلٌ كُلِّ شَيْءٍ وَفِيهِ أَخْبَارٌ مَا يَأْتِي  
 وَمَا مَضَى- وَلَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ مِ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ وَأَنَّ  
 نَوْرَ رَبِّنَا الْأَعْلَى- فَاتْرِكْ كُلَّ قِصَّةٍ تُخَالِفُ قِصَصَهُ وَلَا تَعْصُ

इस पर कोई तर्क रखते हो बल्कि अकारण प्रतीक्षा करते हो कि मसीह आकाश से आए। और वह आकाश से कैसे आ सकता है जबकि वह मृत्यु पा गया और मृत्यु-प्राप्त लोगों में सम्मिलित हो गया। क्या तुम्हारे दावे पर कोई ठोस प्रमाण है कि उसके अनुसरण में तल्लीन हो या विश्वास को त्याग कर गुप्त अनुमान को अपनाने में निर्भीक हो। तुम पर खेद कि तुम ने खुदा तआला और उसके रसूल के कथन **منكم** (मिन्कुम) को भुला दिया और व्यर्थ विचार रखते हो कि मसीह आकाश से आएगा और यह तुम्हारा विचार पवित्र कुर्आन और हदीस से बाहर होने की निशानी है तथा सच से बाहर होना बहुत उपद्रव है तुम कुर्आन को क्यों छोड़ते हो। क्या कोई बड़ी भारी गवाही कुर्आन से अधिक तुम्हारे पास मौजूद है? और कुर्आन की वह उच्चतम प्रतिष्ठा है जो प्रत्येक प्रतिष्ठा से बुलन्द है और वह हकम है अर्थात् फैसला करने वाला और वह मुहयमिन है अर्थात् समस्त हिदायतों का संग्रहीता, उसने समस्त तर्क एकत्र कर दिए और शत्रुओं के समूह को अस्त-व्यस्त कर दिया और वह ऐसी किताब है कि इसमें हर बात का विवरण है और उसमें भविष्य और भूतकाल की खबरें मौजूद हैं और झूठ उसमें नहीं आ सकता है न आगे से न पीछे से। और वह खुदा तआला का प्रकाश है हर एक ऐसे किस्से

قول ربك فتشقى - وتعلم ان نبينا كان مثيل من نودى بالواد المقدس طوى - وكانت خلفاءه كخلفاءه وكانت السلسلتان متشابهتين في المدى - وكذلك قال ربنا وقد قرأت فيما مضى - وتلك حقيقة لا تُسترو ولا تُخفى - فلا يصدنك عنها من اتبع هواه وترك الصراط وهو يري -

وعلمت اني جئت على اجل من سيدى المصطفى - كمثله اجل جاء عليه من الكلیم ابن الصديقه عيسى - وعلمت ان خاتم خلفاء هذه الامه من الامه لا من فئه اخرى - فكيف تكفر به اتكفر بالقران لاقوال شتى - ومن فكر في آية ليستخلفنهم ملاحقه يقينا وايماننا وترك ما يروى بخلافه ويحكى - وكشفت عليه الحقيقه وكذب من نطق بخلافه و

को छोड़ दो जो क़ुर्आन का विरोधी है और प्रतिपालक के कथन की अवज्ञा न करो ताकि दुर्भाग्य के भंवर में न जा पड़ो। और तुम जानते हो कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मूसा अलैहिस्सलाम के मसील थे तथा आप के समस्त ख़लीफ़े जो आप के बाद आए आंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़लीफ़ों के समान थे और ये दोनों सिलसिले परस्पर समयानुकूल समानता रखते थे और ऐसा ही हमारे ख़ुदा ने फ़रमाया है जैसा कि तुम ने पहले पढ़ लिया है और यह एक वास्तविकता है जिसे गुप्त रखना अच्छा नहीं है तुम्हारा लोभ और लालच उस से तुम्हें न रोक दे। और न वह व्यक्ति जो कि जान बूझ कर सीधे मार्ग को छोड़ता है।

और तुम जानते हो कि मैं आंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद उसी समय पर आया हूँ कि जिसमें ईसा अलैहिस्सलाम मूसा अलैहिस्सलाम के बाद आए थे और तुम ने जान लिया कि उम्मत का ख़ातमुल ख़ुलफ़ा इसी उम्मत में से है न कि दूसरे गिरोह में से। अतः क्यों इसका इन्कार करते हो? क्या निर्मूल बातों के भरोसे पर क़ुर्आन का इन्कार करते हो। और जो कोई विचार करेगा इस आयत में कि **ليستخلفنهم** है उसका, दिल विश्वास और ईमान से भर जाएगा और

रुوى۔ فويلٌ للذى سمع هذه الدلائل ثم كذب وابتلى۔ امر حسب ان الله وعد وعداً ثم اخلفه او نسي وعده كرجل هو كثير الذهول ضعيف القوي۔ سبحان الله تقديس وتعالى۔ فبأى حديثٍ م بعد كتاب الله تؤمنون۔ اتركون اليقين بشكٍ سرى۔ أتؤثرون الظن على ما جاءكم من اليقين ومن أظلم ممن ترك الحق واتبع الهوى۔ أبقى شك في خاتم الخلفاء وفي انه منكم فأتوا بالقرآن ان كان الامر كذا۔ وان الحق قد حصص فلا تحثوا عليه التراب ولا تخفوه في الثرى۔ واتقوا الله الذى اليه ترجعون وحداناً۔ وما ازى معكم احباب الدنيا۔ فقوموا فرادى فرادى ولا تنظروا الى من احب أو عادى۔ ثم فكروا

जो बातें इसके विरुद्ध वर्णन की जाती हैं उन सबको छोड़ देगा तथा उस व्यक्ति पर सच्चाई प्रकट हो जाएगी और वह उसे झुठलाएगा जो उसके विरुद्ध रिवायत करेगा उस व्यक्ति पर अफ़सोस है जो तर्कों को सुने और फिर झुठलाने के पीछे-पीछे हो ले। क्या यह सोचता है कि खुदा तआला ने वादे के विरुद्ध किया या अपने वादे को ऐसे व्यक्ति की भांति भूल गया जिस को भूलने की बीमारी है। इन कुधारणाओं से खुदा तआला का अस्तित्व पवित्र है। कुर्आन को छोड़ कर किस हदीस पर ईमान लाओगे। क्या विश्वास को सन्देह के बदले में जो तुम्हारे दिलों में जम गया है, छोड़ते हो? क्या अनुमान को विश्वास के बदले अपनाते हो। इस से अधिक कौन ज़ालिम (अत्याचारी) होगा जो सच्चाई को छोड़े और लोभ-लालच का अनुसरण करे। क्या अब कोई सन्देह शेष रहा गया ख़ातमु लखुलफ़ा में या इस मामले में कि ख़ातमुल ख़ुलफ़ा तुम में से है। कुर्आन को लाओ यदि सन्देह हो, सच्चाई प्रकट हो गई उस पर मिट्टी न डालो तथा हरगिज़ न छुपाओ और खुदा तआला से जिसकी ओर जाना है, डरो। और मैं नहीं देखता कि तुम्हारे दुनिया के मित्र तुम्हारी सहायता के लिए तुम्हारे साथ जाएंगे। अतः तुम एक-एक होकर खड़े हो जाओ और किसी की मित्रता या शत्रुता की ओर न देखो, फिर संयमी दिल और तीक्ष्ण बुद्धि लेकर



بِقَلْبٍ اتَّقَى - وَعَقْلٍ اجْتَلَى - أَمَا قَالَ رَبِّكُمْ  
 لَيْسَتْ خَلْفَتُهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ  
 وَأَنَّ فِي ذَلِكَ حِجَّةً عَلَى مَنْ طَغَى - فان لفظ كما يوجب  
 ان يكون سلسلة الخلفاء في هذه الامة كمثل سلسلة نبي الله  
 موسى التي ختمت على ابن مريم عيسى - فاين تذهبون من  
 هذه الآية وتبعدون مادني - ووالله ليس في القران الذي هو اهل  
 الفصل والقضاء الا خير ظهور خاتم الخلفاء من امة خير  
 الورى - فلا تَقْفُوا ما ليس لكم به علمٌ وقد اعطيتم فيه من  
 الهدى - ولا تخرجوا من افواهكم كلماتٍ شتى - التي ليست  
 هي الا كسهم في الظلمات يُرْمَى - وان هذا الوعد وعد حق

विचार करो क्या तुम्हारे खुदा ने नहीं फ़रमाया कि -

لَيْسَتْ خَلْفَتُهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ (56 - अनूर)

इसमें एक प्रमाण है उसके लिए कि जो सीमा से बाहर जाता है। क्योंकि शब्द **कमा** (जैसे) जो इस आयत में मौजूद है इस उम्मत के खलीफों के सिलसिले को मूसा अलैहिस्सलाम के खलीफों के समान होने को अनिवार्य करता है और स्पष्ट है कि मूसा अलैहिस्सलाम के खलीफों का सिलसिला ईसा अलैहिस्सलाम पर समाप्त हो गया है। अतः इस आयत से कहाँ मुँह फेरते हो और निकट मार्ग को दूर डालते हो। और खुदा की क्रसम पवित्र कुर्आन में, जो सम्पूर्ण मतभेदों का निर्णायक है, कहीं चर्चा नहीं है कि सिलसिला-ए-मुहम्मदिया का खातमुल खुलफ़ा मूसा के सिलसिले में से आएगा। उसका अनुकरण मत करो कि तुम्हारे पास कोई प्रमाण नहीं है अपितु उसके विरुद्ध तुमको प्रमाण दिया गया तथा विभिन्न वाक्यों को अपने मुँह से न निकालो कि वे वाक्य उस तीर के समान हैं जो अँधेरे में चलाया जाए। और वह वादा जिसका वर्णन हुआ सच्चा वादा है। और तुम्हें कोई धोखा न दे और सूरह फ़ातिहा में दूसरी बार इस वादे की ओर संकेत किया है और यह आयत अर्थात् **صراط الذين انعمت عليهم** अपनी नमाज़ों में पढ़ते

فلا تغرّنكم ما تسمعون من أهْلِ الْهَوَىٰ - وقد اشير اليه في الفاتحة مرةً أخرى - وتقرءون في الصلوة صراط الذين انعمت عليهم ثم تستقرون سُبُل الانكار وتَسْرُونَ النجوى - مالكم تدوسون قول الله تحت الاقدام الا تموتون او تتركون سدى - وتذكروننى كما يُدْكَرُ الكفار وتقولون اقتلوه ان استطعتم وتكتبون الفتوى - وما كان لنفس ان تموت الا باذن الله وان معى حفظةً يحفظوننى من العدا - فاجمعوا كيدكم ثم انظروا هل يسقط الكيد الا على من جفا - وعسى ان تحسبوا رجلاً كاذباً وهو صادقٌ فيما ادعى - فلا تميلوا كل الميل ومن ترك التقوى فقد هوى - أرا ايتم ان كنتُ من عند الله وقد كذبتُم فما بال من اعتدى - وانتم تكرهون ان يموت عبد الله عيسى

हैं फिर बहाना बनाते हैं और खुदा के प्रमाण को दूर करने के लिए मशवरे करते हैं। तुम्हें क्या हो गया खुदा तआला के आदेश को अपने पैरों से रौंदते हो। क्या एक दिन तुम नहीं मरोगे या कोई तुम से नहीं पूछेगा? और मेरा वर्णन काफ़िरों के वर्णन की तरह करते हैं और कहते हैं कि यदि हो सके तो क़त्ल कर दिया जाए और इसी प्रकार फ़तवे लिखते हैं। कोई व्यक्ति खुदा की आज्ञा के बिना नहीं मरता और मेरे साथ तो खुदा तआला के संरक्षक हैं कि वे मेरी मेरी शत्रुओं से रक्षा करते हैं तुम समस्त उपायों को इकट्ठा कर लो औ फिर देखो कि हर एक का उपाय (यत्न) उसी पर लौट कर पड़ेगा जो ज़ालिम है और संभव है कि तुम किसी को झूठ बोलने वाला समझो और वह अपने दावे में सच्चा निकले। अतः सच्चाई से बिलकुल दूर न हो जाओ जिसने संयम को छोड़ा वह गिर गया। तुम देखते नहीं कि यदि मैं खुदा तआला की ओर से हूँ और तुम मुझे झुठलाते हो तो उस व्यक्ति का क्या हाल होगा जो सीमा से बाहर चला गया? तुम्हें अच्छा मालूम नहीं होता कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु पा जाँँ और उनके जीवित रहने में तुम्हारा कुछ फायदा नहीं है परन्तु खुदा के लिए उनकी मृत्यु में बड़े-बड़े उद्देश्य हैं। क्या ईसा

- ولا نفع لكم في حيوتهم والله في موتهم ما رب عظمى - أله شركته  
 في السماء مع ربنا فلا يبرح مقامه ولا يتدلى - فلا تحاربوا الله  
 بجهلكم وصلوا على نبيكم المصطفى - وهو الوصلة بين الله  
 وخلقهم وقاب قوسين او ادنى - اسمعتم مني ما لا اسمعكم القرآن  
 او رأيتم عيسى في السماء فكمبر عليكم ان تكذبوا اعينكم  
 او ظننتم ظنًا وان الظن لا يغني من الحق شيئًا - وقد علمتم ان  
 القرآن اهلكه وتوفى - فبأي حديث تؤمنون بعده وتكفرون  
 بما انزل الله واوحى - اتركون اليقين لظن اهلك قبلكم قومًا  
 وارضى - يا حسرة على الذين يقولون انا نحن العلماء - انهم ما  
 صاروا من انصارى بل صاروا اول من اذى -

अलैहिस्सलाम का आसमान में निवास करना खुदा तआला के साथ भागीदारी है कि जिसकी वजह से वह आकाश को नहीं छोड़ते और उस स्थान से स्थानांतरित नहीं होते? अतः अपनी मूर्खता से खुदा के साथ युद्ध मत करो तथा खुदा के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजो कि वह खुदा और सृष्टि में माध्यम हैं तथा इन दोनों के कौस (धनुष) 'खुदाई' और 'बन्दगी' में आप का अस्तित्व है। क्या मुझ से कभी कोई ऐसी बात सुनी है जो कुर्आन ने नहीं सुनाई या ईसा अलैहिस्सलाम को आकाश में देख लिया है जो तुम्हें बोझिल मालूम होता है कि जो कुछ अपनी आँख से देख लिया है उसका इन्कार करो? या यह केवल अनुमान है और यह स्पष्ट है कि केवल अनुमान विश्वास का स्थानापन्न नहीं होता और निस्सन्देह तुम ने जान लिया कि कुर्आन ने ईसा अलैहिस्सलाम को मृत्यु दे दी है अब कुर्आन के बाद किस हदीस पर ईमान लाओगे। क्या हदीस के लिए कुर्आन का इन्कार करोगे कि जो खुदा तआला की ओर से उतरा है। क्या उस अनुमान के लिए जिस ने तुम से पहली क्रौम यहूदियों को तबाह किया, विश्वास को त्याग दोगे? इस समय के उलमा पर बड़ा अफ़सोस है कि वे मेरे सहायक न हुए बल्कि सब से पहले मुझे कष्ट दिया।

لِيَتَمَّوْا نَبَأَ الرَّسُولِ بِأَلْسِنِهِمْ وَمَا رَوَى عَنْ خَيْرِ الْوَرَى-  
 وَقَالَ أَظْلَمَهُمْ اقْتُلُوا هَذَا الرَّجُلَ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ  
 يَحْطِكُمْ إِذَا عَلَا - يَا أَهْلَ الْحَسَدِ وَالْهَوَى - وَيَلِكُمْ لَمْ تَوْتِرُونَ  
 هَذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا - وَإِنَّ الْقُرْآنَ يَشْهَدُ أَنَّ خَاتَمَ خَلْفَاءِ هَذِهِ الْأُمَّةِ  
 رَجُلٌ مِنَ الْأُمَّةِ وَإِنَّ الْمَسِيحَ مِنَ الْمَوْتَى - وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ الَّذِي  
 عَصَى الْقُرْآنَ وَابَى - وَهُوَ الْحَاكِمُ مِنَ اللَّهِ وَالْحَاكِمُ إِلَّا حَاكِمُهُ  
 الْآجِلِيُّ - أَوْلَمْ تَكْفِكُمْ آيَةَ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي أَوْ عِنْدَكُمْ صَحْفٌ  
 آخَرِي - وَإِنَّ سُورَةَ النَّوْرِ تَكْذِبُكُمْ وَالْفَاتِحَةُ تَفْتَحُ عَلَيْكُمْ  
 بَابَ الْهُدَى - فَإِنَّ اللَّهَ بَدَأَ فِيهَا مِنَ الْمَبْدِءِ وَجَعَلَ آخِرَ الْأَزْمِنَةِ  
 زَمَانَ الضَّالِّينَ وَإِنَّهُمْ هُمُ النَّصَارَى - كَمَا جَاءَ مِنْ نَبِيِّنَا الْمَجْتَبِيِّ -

ताकि उस भविष्यवाणी को अपने मुँह से पूरा करें जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने की थी और एक व्यक्ति जो सब से बड़ा अत्याचारी था उसने मेरे बारे में कहा कि इस व्यक्ति को क्रल करो कि मैं डरता हूँ कि तुम्हारे धर्म में विघ्न डालेगा और इस से तुम्हारी प्रतिष्ठा एवं सम्मान में अन्तर आ जाएगा। हे ईर्ष्यालुओ! तुम पर अफ़सोस है कि तुम इस संसार के छोटे से जीवन को धारण करते हो और कुर्आन ने निश्चित तौर पर गवाही दी है कि इस उम्मत का ख़ातमुल खुलफ़ा इसी उम्मत में से हो और हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम मृत्यु पा गए हैं तथा उस व्यक्ति से अधिक अन्याय करने वाला कौन है जो कुर्आन की अवज़ा करके मुँह फेर ले हालाँकि वह ख़ुदा की ओर से फैसला करने वाला है और उसी का आदेश-आदेश है। क्या आयत **فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي** तुम्हारे लिए पर्याप्त नहीं, या तुम्हारे पास अन्य कुर्आन हैं। और सच यह है कि सू़रह नूर तुम्हें झुठलाती है और सू़रह फ़ातिहा तुम्हारे लिए हिदायत का मार्ग खोलती है। अतः ख़ुदा तआला ने इस में 'संसार के उद्गमे से' प्रारंभ किया है और संसार के इस सिलसिले को गुमराहों के युग पर समाप्त किया है और वह ईसाइयों का गिरोह है। जैसा कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सही हदीसों में आया है। अब बताओ

فاين فيها ذكر دجالكم فأروناه من القرآن وقد هلك من ترك  
والقرآن وعادى اهله وقلى - أنسى الخبير العليم ما حفظتموه  
او افتريتم على كتاب الله ومن اظلم ممن افتري - وانه لقول  
فصل لا غبار عليه وانه لبيان اظهر و اجلى - وان هذا لهو  
الحق و من اصدق من الله قبيلاً - ومن اعلم من ربنا الاعلى - امر  
عندكم حجة تمنعكم من القرآن فأتوا بها ان كنتم تتقون الله  
ولا تتبعون الهوى - وتعلمون ان الفاتحة أم الكتاب وانها تنطق  
بالحق وفيها ذكر اخيار أمة خلت من قبل و ذكر شرهم الذين  
غضب الله عليهم في هذه الدنيا - و ذكر الذين اختتمت عليهم  
هذه السورة اعنى الضالين - وقد اقررتم بانهم النصارى -

तुम्हारे दज्जाल का वर्णन सूरह फ़ातिहा में कहाँ है। यदि है तो तुम कुर्आन में हमें दिखाओ, जिसने कुर्आन को छोड़ा और उनको दुश्मन समझा जो कुर्आन के सेवक हैं वह तबाह हो गए। क्या सर्वज्ञ एवं बहुत खबर रखने वाले ख़ुदा ने भुला दिया जो तुमने याद कर रखा है या ख़ुदा की किताब पर झूठ गढ़ते हो और झूठ गढ़ते वाले से अधिक अन्याय करने वाला कौन है और निस्सन्देह कुर्आन एक निर्णायक कथन है उस पर कोई धूल नहीं और वह रोशन (प्रकाशमान) एवं स्पष्ट बयान है और सच यही है। ख़ुदा से अधिक सच्चा और अधिक जानने वाला कौन है? क्या तुम्हारे पास कोई प्रमाण है जो कुर्आन के अनुकरण से रोकता है वह प्रमाण हम को दिखाओ यदि ख़ुदा से डरते हो और लोभ-लालच का अनुकरण नहीं करते हो। तुम जानते हो कि सूरह फ़ातिहा उम्मुल कुर्आन (कुर्आन की मां) है जो कुछ सच है वही कहती है और इसमें उन नेक लोगों का वर्णन है जो मुसलमानों से पहले गुज़रे हैं और उन बुरे लोगों का भी वर्णन है जो मुसलमानों से पहले हुए हैं और ख़ुदा ने उन को दण्डित किया और उनका भी वर्णन है कि जिन पर इस सूरह को समाप्त किया गया है अर्थात् गुमराहों का फ़िर्का और तुम इक्रार करते हो कि वह गुमराहों का फ़िर्का ईसाई ही हैं।

وَأَخَّرَ اللَّهُ ذَكَرَهُمْ فِي هَذِهِ السُّورَةِ لِيَعْلَمَ أَنْ فَتَنْتَهُمْ آخِرَ  
 الْفِتَنِ فَلَمْ يَبْقَ لِدَجَالِكُمْ مَوْضِعٌ قَدِيمٍ يَا أُولِي النَّهْيِ وَإِنَّ هَذِهِ  
 فِرْقٌ ثَلَاثٌ مِنْ أَهْلِ الْكُتُبِ وَكَذَلِكَ مِنْكُمْ ثَلَاثٌ شَابَهُ بَعْضُكُمْ  
 بَعْضَهُمْ وَضَاهَا - وَحَثَّ اللَّهُ لِلْمُؤْمِنِينَ عَلَى هَذَا الدَّعَاءِ ثُمَّ وَعَدَ  
 فِي سُورَةِ النُّورِ وَعَدًّا أَنَّهُ لَيْسَتْ خَلْفَنَ قَوْمًا مِنْهُمْ كَمِثْلِ الَّذِينَ  
 اسْتُخْلِفُوا مِنْ قَبْلُ لِيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِينَ أَنَّ الدَّعَاءَ اجْتَبَى لِبَعْضِهِمْ  
 مِنَ الْحَضْرَةِ الْعَلِيَا - فَاتَى بَيَانٍ أَظْهَرَ مِنْ هَذَا الْبَيَانِ يَا أُولِي  
 النَّهْيِ - أَفْشَقَّ عَلَيْكُمْ أَنْ يَجِيئَءَ مَسِيحُكُمْ مِنْكُمْ أَوْ آرَدْتُمْ أَنْ  
 تَكْذِبُوا وَعَدَّ الْمَوْلَى - يَأْقُومُ أَنْمَا فَتَنْتُمْ مِنْ رَبِّكُمْ فَلَا تَنْقَلُوا  
 إِلَى الْخَطِيئَاتِ الْخُطَا - وَمَا قَصَّ عَلَيْكُمْ اللَّهُ مِنْ نَبَأِ عِيسَى -  
 إِلَّا لِيُبَشِّرَ أَنْ مَسِيحًا يَأْتِي مِنْكُمْ كَمِثْلِ مَسِيحِ بَنِي إِسْرَائِيلَ

और खुदा ने सब से बाद में इस सूरे के अन्त में उनका वर्णन किया है ताकि जान लो कि ईसाइयों का फ़ितनः समस्त फ़ितनों के पीछे है। अतः तुम्हारे दज्जाल के लिए क्रदम रखने का स्थान नहीं रहा। और ये तीन फ़िरक़ें हैं अहले किताब के तथा इसी प्रकार तुम में भी तीन फ़िरक़ें हैं कि कुछ फ़िरक़ें (अन्य) फ़िरक़ों के समान हो गए और इस दुआ पर खुदा ने मोमिनों को प्रेरणा दिलाई है तथा इसके बाद सूरे नूर में वादा किया गया है कि मुसलमानों में से खलीफ़े बनाएगा उन खलीफ़ों के समान जो उनसे पहले हुए हैं ताकि मोमिनों को खुशख़बरी दे कि उन की दुआ स्वीकार हुई। अब कौन सा बयान उस बयान से अधिक स्पष्ट हो गया। क्या यह बात तुम्हें बुरी मालूम होती है कि तुम्हारा मसीह तुम में से ही हो या चाहते हो कि खुदा के कलाम को झुठलाओ। हे मेरी क्रौम! खुदा की ओर से इसमें तुम्हारी परीक्षा है। अब ग़लती की ओर क्रदम मत उठाओ। खुदा ने कोई ख़बर ईसा अलैहिस्सलाम की तुम को नहीं दी परन्तु इस उद्देश्य से कि तुम में से भी यह मसीह बनी इस्राईल के मसीह के समान अवश्य आएगा। अतः खुदा के वादे पर प्रसन्न हो जाओ उस व्यक्ति के समान

فابشروا بظهور الوعد ولا تختصموا كالذى اعرض وتولى-  
 وقد علمتم ان عيسى قد جاء في آخر زمن اليهود و كذلك قدر  
 الله لمسيحكم اجلاً مُسَمًّى- ليتم المشابهة بينكم وبين الذين  
 خلوا من قبل فمالكم تَسْلُكون غير طريق سلكه الله وتنسون  
 امرًا اراده الله وقضى- وان زماننا هذا هو آخر الازمنة كما  
 كان لبني اسرائيل زمان عيسى- وان عيسى كان علمًا لساعة  
 اليهود وانا علمٌ للساعة التي تحشر الناس فيها وتُحيى كل  
 نفس لتجزى- وقد ظهر اكثر علاماتها و ذكرها القران ذكرًا-  
 و عَطَلت العشار و نُشِرت الصحف و الاسفار و جُمِع القمر  
 و الشمس في رمضان و فُجِّرَت البحار و فتحت الطرق و زُوِّجَت  
 بنفوسكم نفوس بلادِ قِصْوَى- وان الجبال نُسِفَت اكثرها فما

झगड़ा न करो कि जो मुँह फेरता और विमुख होता है। और तुम जानते हो कि ईसा अलैहिस्सलाम यहूदियों के अन्तिम युग में आए थे। इसी प्रकार खुदा तआला ने तुम्हारे मसीह के लिए समय निर्धारित किया जो बनी इस्राईली मसीह के युग के समान था ताकि वह समानता पूर्ण हो जो इस उम्मत को बनी इस्राईली उम्मत से है। तुम्हें क्या हो गया है जो तुम उस मार्ग को अपनाते हो कि जो खुदा के मार्ग का विरोधी है तथा इस बात को भूल जाते हो जिस बात का खुदा तआला ने इरादा किया है। निस्सन्देह यह हमारा युग अन्तिम युग है उस युग के समान जो ईसा अलैहिस्सलाम का बनी इस्राईल के लिए अन्तिम युग था। निस्सन्देह हजरत ईसा अलैहिस्सलाम यहूदियों के विनाश की घड़ी के लिए प्रमाण थे और मैं क्रयामत के लिए प्रमाण हूँ तथा बहुत से इस युग के लक्षण पवित्र कुर्आन में लिखे हैं और ऊँटनियाँ बेकार हो गईं तथा पुस्तकें असंख्य प्रकाशित हुईं और चन्द्र एवं सूर्य को रमजान में ग्रहण लगा तथा नहरें जारी हुईं और मार्ग खुल गए और दूरस्थ देशों के लोग आपस में मिलने लगे, और पर्वत अपने स्थान से हिल गए कि कोई ऊँचाई नीचाई शेष न रही और ऊँट सवारी और सामान ढोने

ترونها ففها عوجًا ولا امئًا - وئرکت القلاص فلا فحمل عليها ولا فُسعى - فثبت ان زماننا هذا هو اخر الازمنة التي ذكرت فف القرآن ط وفعفن ان هذا الوقت هو وقت اخر الخلفاء لاممة نبفنا خفر الورى -

وقد بلغ الثبوت كماله وما غادر الله شكًا ولا ريبًا - وانا ملئنا ففه معرفة وعلمًا تامًا ونورًا مبفنا - حتى لورفع الحجاب لما زدنا فقفنا - آترونها من دونى فف هذا الاوان رجلاً فقول انى انا المسفح الموعود وىأتى كمثلى باىات كبرى - فمالكم لا تقبلون من جاء كم على وقته وارا كم من الاىات ما ازى - وقد جاء على اجل بعد نبفه المصطفى كمثل اجل بعث المسفح ففه بعد موسى - وقد ذكرت غير مرة فف اولى النهى - انى انا المسفح الذى كان نازلًا من الحضرة العلىا - وكنى قدر ظهورى فف اخر السلسلة

से छोड़ दफे गए। इस से सन्दूह हो गया कफ यह युग वही अन्तफम युग है कफ कफसका वर्णन कुर्आन में है और नफर्धारफत हो गया कफ यह समय वही समय है कफ कफसमें ख़ातमुल खुलफ़ा का अवतरफत होना आवश्यक था।

और इस बात का सबूत अपनी पूर्णता को पहुँच गया और खुदा तआला ने इसमें कोई सन्देह शेष नहीं छोड़ा और हम इस मामले में इतनी मारफफ़त दफे गए हैं कफ यदफ मध्य से पर्दा उठ जाए तो हमारे वफ़वासों में वृद्धफ नहीं होती। क्या मेरे अतरफक्त कफसी वयक्त को इस युग में देखते हो जो कहे कफ मैं मसीह मौऊद हूँ और मेरे समान बड़े-बड़े नफ़ान लाया हो। तुम्हें क्या हो गया है जो तुम उसे स्वीकार नहीं करते कफ जो अपने ठीक समय पर आया और बहुत से नफ़ान दफ़खलाए और उस समय आया कफ जो उस युग के समान है कफ कफस युग में हज़रत ईसा अलैहफ्ससलाम मूसा अलैहफ्ससलाम के बाद आए थे और मैंने बार-बार वर्णन कफया है कफ मैं वही मसीह हूँ कफ कफसका प्रदुर्भाव मुहम्मदी सलसले के अन्त में नफ़श्चत था, उस मसीह के समान जो मूसवी



المحمدية كمثل المسيح الذي جاء في آخر السلسلة الموسوية باذن المولى - ليتساوى السلسلتان ويتم الوعد والكريم اذا وعد وفا - فالحمد لله الذي ما بخس هذه الامة حقها وما نقصهم قدرًا - وأرى الامر كتطابق النعل بالنعل فما ترى ظلمًا ولا هضمًا - فلا تكفر بما ثبت من القرآن وقل رب زدني علمًا - ومالك لا تتبع ما قال الله وتتبع اقوالاً اخرى - وان هدى الله هو الهدى - والله صدقكم الوعد فاين تذهبون من وعده وتنحتون قصصًا شتى - وايئ فائدة لكم في حيات المسيح ايها النوكى - من غير انكم تنصرون به النصارى - افلا تنظرون الى الزمان وقد نزلت عليكم بليّة عظمتى - وتنصر فوج من قومكم واحباءكم موهلتك البلاد والعباد - واهتز عرش الرحمن لما نزل ففضى ما قضى - ولو

सिलसिले के अन्त में आया था ताकि दोनों सिलसिले समान हो जाएँ और खुदा का वादा पूर्ण हो जाए। अतः समस्त विशेषताएं खुदा के लिए हैं कि इस उम्मत के अधिकार को कम नहीं किया और समानता के मामले को परस्पर दोनों जूतियों के समान बराबर कर दिया। अतः तू कोई जुल्म और कमी-बेशी को नहीं देखता। अतः उस चीज़ का इन्कार मत कर कि जो पवित्र कुर्आन से सिद्ध है। और दुआ कर कि हे खुदा मेरे ज्ञान में वृद्धि कर। तूझे क्या हो गया है कि तू खुदा के कलाम का अनुकरण नहीं करता तथा दूसरे कथनों के पीछे हो लिया है और हिदायत वही हिदायत है जो खुदा की ओर से है। खुदा ने अपना वादा सच्चा किया अब खुदा के सच्चे वादे से कहाँ भागते हो और झूठे क्रिस्से बनाते हो और मसीह अलैहिस्सलाम के जीवन में तुम्हें इसके अतिरिक्त क्या फ़ायदा है कि पादरियों की सहायता करते हो और युग की ओर दृष्टि नहीं डालते हो। और नहीं देखते हो कि कितने मुसलमान ईसाई हो गए और कितने खुदा के बन्दे हलाक हो गए। खुदा के बन्दों पर बड़ी आपदा आई यदि खुदा का यही इरादा होता कि किसी को आकाश से उतारता जैसा कि तुम्हारा

اراد الله أن ينزل أحدًا من السماء كما زعمتم لكان خيرًا لكم ان  
 ينزل نبيكم المصطفى - اما قرءتم قوله تعالى لو اردنا ان نتخذ  
 لهواً لاتخذناه من لدنا يعني محمداً فانظروا نظرًا - ان السموات  
 والارض كانتا رتقا ففتقنا في هذا الزمان ليبتلوا الصالحون  
 والطالحون وكل بما عمل يجزي - فاخرج الله من الارض ما كان  
 من الارض وانزل من السماء ما كان من السموات العلى - ففريق  
 علموا مكائد الارض وفريق اعطوا ما اعطى الرسل من الهدى -  
 وقدر الفتح للسمويين في هذا الوغى - وان تؤمنوا او لا تؤمنوا  
 لن يترك الله العبد الذي ارسله للورى - ولا تضاع الشمس لانكار  
 الاعمى فريقان يختصمان في الرشد والهوى - وفتحت لفريق

विचार है तो उचित यह था कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आकाश से उतारता। खुदा ने जो कहा तुमने अब तक नहीं पढ़ा कि यदि हम बेटा बनाते तो अपने पास से बेटा बनाते अर्थात् मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को। इस आयत पर विचार करो, पृथ्वी तथा आकाश दोनों बन्द थे। इस युग में दोनों खुल गए ताकि नेकों और बुरों की परीक्षा हो जाए। और प्रत्येक गिरोह अपने कर्मों का प्रतिफल पाए। अतः खुदा तआला ने कुछ वस्तुएं पृथ्वी की पृथ्वी से निकालीं और जो कुछ आकाश से उतारना था उतारा। एक गिरोह ने ज़मीनी छल-कपटों से शिक्षा पाई और दूसरे गिरोह को वे वस्तुएं दीं जो रसूलों को दी थीं। इस युद्ध में आकाश वालों को विजय प्राप्त हुई। तुम चाहो ईमान लाओ या न लाओ खुदा तआला अपने बन्दों को जिसे जनता है सुधार के लिए भेजा गया है हरगिज़ न छोड़ेगा तथा खुदा तआला ऐसा नहीं है कि अंधे के इन्कार से सूर्य को नष्ट कर दे। सदस्य हैं जो आपस में झगड़ते हैं। एक गिरोह के लिए पृथ्वी के दरवाज़े खोले गए और दूसरे गिरोह के लिए आकाशीय दरवाज़े खोले गए, किन्तु जिस गिरोह के लिए ज़मीनी दरवाज़े खोले गए वह शैतान का अनुकरण करते हैं और वह गिरोह जिसके लिए आकाश के

ابواب الارض الى تحت الثرى - وللتانى ابواب السماء الى سدره المنتهى - اما الذين فُتحت عليهم ابواب الارض فهم يتبعون شيطانهم الذى اغوى - والذين فُتحت عليهم ابواب السماء فهم ورثاء النبيين وقومٌ مطهرون من كل شحٍّ وهوى - يدعون قومهم الى ربهم ويمنعونهم مما يُشرك به في الارض والسموات العلى - و انى بعثت فيكم من الله الذى لا توقرونه لانذر قومًا اطراء وا ابن مريم عيسى -

दरवाजे खोले गए वे नबियों के वारिस हैं तथा हर प्रकार से पवित्र और शुद्ध हैं। क्रौम को प्रतिपालक की ओर बुलाते हैं और उनको बुराइयों से बचाते हैं और कहते हैं कि खुदा से साथ पृथ्वी एवं आकाश में किसी वस्तु को भागीदार नहीं बनाना चाहिए। मैं तुम में उस खुदा तआला की ओर से अवतरित हुआ हूँ जिस का तुम सम्मान नहीं करते और मैं क्रौम को इसलिए डराता हूँ कि इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम के पक्ष में अतिशयोक्ति करते हैं।

## الباب الثالث

ياقوم ماهذه التماثيل التي انتم لها عاكفون - اتركون كلام الله لا قَوالٍ لا تعرفونها أُقِّ لكم ولما تنحتون - وما تحققت عندكم تلك الاقوال ولا قائلها وان انتم الا تظنون - أتؤثرون الظنَّ على اليقين والظنَّ لا يغني عن الحق شيئاً ولا انتم به تبرءون - وقد وعد الله انه يستخلف من هذه الامة طَافَانْتُمْ لَهُ منكرون - وما وعده انه ينزل مسيحكم من السماء وإن وعد فاخرجوه لنا من القرآن ان كنتم تصدقون - وقد ثبت من وعده ان خاتم الخلفاء منّا أَفَانْتُمْ فيه تشكون - فأَيِّ

## तृतीय अध्याय

हे क्रौम! ये कैसे बुत हैं कि जिन पर तुम जमे बैठे हो। क्या खुदा के कलाम को छोड़ते हो उन बातों के बदले में कि जिनकी वास्तविकता को तुम नहीं पहचानते। तुम पर और तुम्हारी स्वयं बनाई हुई बातों पर अफ़सोस! वह कथन और उनके कहने वाले तुम्हारे नज़दीक सिद्ध नहीं हैं और तुम भ्रम का अनुसरण करते हो। क्या अनुमान को विश्वास पर अपनाते हो। हालाँकि अनुमान सच से निःस्पृह नहीं करता और तुम इसके कारण बरी नहीं हो सकते तथा खुदा ने निस्सन्देह वादा किया है कि इसी उम्मत में से ख़लीफ़े नियुक्त होंगे क्या तुम इन्कार करते हो। और हरगिज़ वादा नहीं किया है कि तुम्हारा मसीह आकाश से उतरे और यदि वादा किया है तो हमें भी कुर्आन से दिखाओ यदि तुम सच्चे हो और खुदा का वादा सच्चा हो चुका है कि खातमुल खुलफ़ा हम से होगा, क्या तुम इसमें सन्देह रखते हो, फिर कौन सी लड़ाई इसके बाद शेष

نزاعٍ بقى بعدةً مالكم لا تفكرون - لا ترفعوا اصواتكم فوق كتاب الله و ان القرآن قد حكم في الذي كنتم فيه تختلفون - ألا ترضون بما قضى القرآن والله احقُّ أن يقبل قوله ان كنتم تؤمنون - والله جعل اولكم و آخركم كسلسلة موسى فهل انتم تشكرون - انظروا الى مثل موسى سيدكم و نبيكم في اول السلسلة فاين مثل عيسى في آخرها او بقيت السلسلة ناقصةً ايها المتدبرون - الاترون فتن القوم الذين هم من كل حدب ينسلون - وقد جعلتم تحت اقدامهم نكالاً من الله ثم انتم لا ترجعون - عسى ربكم ان يرحمكم فويحكم لم لا تسمعون - أتطمعون ان ينزل عيسى من السماء هيهات هيهات لما تطمعون - أترجون ان يخلف الله وعدةً و يتبع اهواءكم ايها

रह गई। तुम्हें क्या हो गया कि डरते नहीं। अपनी आवाजों को कुर्आन से ऊंचा न करो कुर्आन ने फैसला कर दिया है जिसमें कि तुम मतभेद करते थे। क्या तुम कुर्आन के फैसले पर सहमत नहीं होते तथा खुदा ज़्यादा अधिकार रखता है कि उसका कथन स्वीकार किया जाए यदि तुम मोमिन हो। और खुदा ने तुम्हारे प्रथम और अन्तिम को मूसा अलैहिस्सलाम के सिलसिले के समान बनाया है, क्या तुम धन्यवाद करते हो सिलसिले के प्रारम्भ में तुम अपने सरदार और मूसा के समरूप नबी की ओर दृष्टि डालो। अतः ईसा का समरूप इस सिलसिले के अन्त में कहाँ है या सिलसिला अपूर्ण रह गया है। हे विचार करने वालो! क्या तुम उस क्रौम के उपद्रव को नहीं देखते कि प्रत्येक ऊँचाई से दौड़ते हैं और तुम्हें उनके पैरों के नीचे खुदा ने बतौर दण्ड के डाल दिया है, फिर भी नहीं लौटते। निकट है कि तुम्हारा प्रतिपालक तुम पर दया (रहम) करे। अफ़सोस क्यों नहीं सुनते। क्या आशा रखते हो कि ईसा अलैहिस्सलाम आकाश से उतरें? यह तुम्हारी आशा कभी भी पूरी न होगी। क्या आशा रखते हो कि खुदा तआला अपने वादे के विरुद्ध करे और तुम्हारी इच्छाओं का अनुकरण करे। हे झूठ के

المبطلون - ولو اتبع الله أهواء الناس لضاع التوحيد بأسره  
 وكثر الشرك والمشركون - وان الله لا يبعث مرسلاً على الأرض  
 إلا ليدفع المفسد التي أفسدتها فانظروا الى المفسد ايها  
 العاقلون - يا حسرة عليهم انهم ينظرون ما نزل على الاسلام  
 ثم لا ينظرون - ولئن سألتهم ان رجلاً ادعى انهم الله وانّه  
 هو المسيح وجاء في زمن مفسد الصليب فكسر الصليب  
 كسرًا لا يوجد مثله فيما مضى ولا يتوقع في الازمنة الآتية  
 فبأي اسم سمّاه رسول الله ان كنتم تعلمون ليقولن انه سُمّي  
 مسيحًا وابن مريم على لسان رسول الله وبُيّن انه من هذه الامة  
 قل الحمد لله على ما اظهر الحق ولكن اكثر الناس لا يعلمون -  
 ايها الناس انظروا الى كمال ايام الضلال ولا تكفروا بايام

पुजारियो! यदि खुदा तआला लोगों की इच्छाओं का अनुकरण करता तो तौहीद  
 (एकेश्वरवाद) बिलकुल मिट जाती और शिर्क फैल जाता तथा मुश्रिक बहुत  
 हो जाते और खुदा तआला किसी रसूल को पृथ्वी पर पैदा नहीं करता सिवाए  
 इसके कि खराबी को दूर करे कि जिस ने पृथ्वी को तबाह कर रखा है। अतः  
 खराबियों को ध्यानपूर्वक देखो। हे बुद्धिमानो! अफ़सोस इन पर कि यह लोग  
 देखते हैं कि इस्लाम पर क्या आपदा उतर रही है फिर अनदेखा करते हैं और  
 यदि उनसे प्रश्न किया जाए कि एक व्यक्ति ने दावा किया कि मैं खुदा की  
 ओर से हूँ और मैं ही मसीह मौऊद हूँ फिर उसने सलीब को ऐसा तोड़ा कि  
 उसका उदाहरण पहले युग में नहीं पाया जाता और न भविष्य में आशा है  
 उसका नाम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क्या रखा है? उत्तर  
 देंगे कि उसका नाम मसीह और इब्ने मरयम खुदा और उसके रसूल की जीभ  
 पर निर्धारित हुआ है तथा वर्णन किया गया है कि वह इसी उम्मत में से होगा।  
 कहो कि प्रशंसा खुदा के लिए ही है जिसने सच्चाई को प्रकट किया, परन्तु  
 बहुत से लोग नहीं जानते। हे लोगो! गुमराही के दिनों के कमाल की ओर देखो

الله ذى الجلال ان كنتم تتقون - اما رء يتم كسوف الشمس والقمر فى رمضان فما لكم لا تهتدون - اما رثيتم كيف اشيع الطاعون - و كثر المنون - فذالك و هذا شهادة من السماء و الارض كما اخبر المرسلون - وقد اجتمع كل ما جاء فى القرآن من اثار اخر الزمان فما لكم لا تستيقظون ولما ثبت ان الزمان قد انتهى الى اخره فآين خليفة اخر الزمان ان كنتم تعرفون - ايها المنكرون امنوا اولاً تؤمنوا ان الذين اوتوا علم الكتاب و حظاً من السعادة يقبلوننى و هم لا يستأخرون - و اذا رأوا علامات ذكرت فى القرآن و خليفة ينادى الى الرحمن خروا على الاذقان سُجَّدًا و على ما فرطوا يتندمون - و ترى اعينهم تفيض من الدمع بما عرفوا الحق و تنزل السكينة فى قلوبهم

और खुदा के दिनों का इन्कार न करो यदि संयमी (मुत्तकी) हो। क्या तुम ने चन्द्र और सूर्य का ग्रहण रमज़ान के महीने में नहीं देखा। तुम क्यों हिदायत नहीं पाते। क्या तुम ने नहीं देखा कि प्लेग किस प्रकार फैल गया और मौतों की बढ़ोतरी हुई। फिर वह और यह आकाश तथा पृथ्वी की गवाहियाँ हैं जैसा रसूलों ने खबर दी थी और जो कुछ अन्तिम युग की खबरों के संबंध में क़ुर्आन में उसका वर्णन आया है सब एकत्र हो गए हैं। अब तुम क्यों नहीं जागते और जबकि सिद्ध हो गया है कि युग का अन्त हो गया है। फिर अन्तिम युग का खलीफ़ा कहाँ है यदि पहचानते हो। हे इन्कार करने वालो! ईमान लाओ या न लाओ वह लोग जिन्हें किताब का ज्ञान है और सौभाग्य से हिस्सा रखते हैं मुझे स्वीकार करते हैं और देर नहीं लगाते, जब वे क़ुर्आन के वर्णन किए हुए लक्षणों और खलीफ़ा को देखते हैं जो खुदा की ओर बुलाता है तो सज्दा करते हुए औंधे गिर पड़ते हैं और अपनी ग़लतियों पर शर्मिदा होते हैं। और देखते हो कि उनकी आँखें सच्चाई को पहचानने पर आंसू बहाती हैं और उनके दिल चैन पाते हैं और खुदा के उतारे हुए पर ईमान लाते हैं तथा रोते हैं और कहते

وَيُؤْمِنُونَ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَهُمْ يَبْكُونَ - رَبَّنَا إِنَّا سَمِعْنَا مُنَادِيًا  
وَعَرَفْنَا هَادِيًا فَآغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا إِنَّا تَائِبُونَ-

وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَذَكَّرُونَ الْيَوْمَ سَتُغْفَرُ وَكَيْفَ يَتَمَّ  
وَعَدَ اللَّهُ مَنْ دُونَ أَنْ يَظْهَرَ الْمَسِيحُ مِنْكُمْ مَا لَكُمْ لَا تَتَفَكَّرُونَ  
فِي آيَاتِ اللَّهِ وَلَا تَتَذَكَّرُونَ - أَيَلِيْقُ بِشَانَ اللَّهِ أَنْ يَعِدَ كَمَا أَنَّهْ يَبْعَثُ  
الْخُلَفَاءَ مِنْكُمْ كَمَا مَثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِ ثُمَّ يَنْسَى وَعْدَهُ  
وَيَنْزِلُ عَيْسَى مِنَ السَّمَاءِ سَبْحَانَهُ وَتَعَالَى عَمَّا تَفْتَرُونَ -  
فَمَا لَكُمْ أَنْتُمْ تَجَادِلُونَ فِي الْمَسِيحِ الْمَوْعُودِ وَتَصْرِّحُونَ عَلَى أَنَّهْ  
هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ وَتَقْرَأُونَ كِتَابَ اللَّهِ أَرَادَ لِيُدَافِعَ عَنِ  
الَّذِينَ آمَنُوا وَيُدْفَعُ فِتْنًا بَيْنَنَا وَفَصَّلَ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَتَّقُونَ -

हैं कि हमारे रब! हमने पुकारने वाले को सुना और पथ-प्रदर्शक को पहचान  
लिया अतः हमारे गुनाहों को माफ कर दे हम तौबा करते हैं।

और खुदा कहता है कि आज तुम पर कोई डांट-डपट नहीं। तुम्हारे गुनाह  
क्षमा किए जाएंगे और प्रतिष्ठित लोगों में सम्मिलित होंगे। हे बुद्धिमानो! आशा न  
रखना कि कोई आकाश से उतरेगा। और जान लो कि यह वही दिन है जिसका  
तुम्हें वादा दिया जाता था और खुदा ने मोमिनों से वादा किया था कि उन को  
मूसा की शरीअत के खलीफों के समान खलीफ़ा बनाएगा। यहाँ से अनिवार्य हुआ  
कि अन्तिम खलीफ़ा ईसा अलैहिसलाम के क़दम पर आएगा और इसी उम्मत  
में से होगा और तुम कुआन पढ़ते हो क्या नहीं समझते कि यह खुदा का वादा  
था। अतः खुदा के वादों को झूठों के वादे की भाँति न समझो। और खुदा का  
वादा किस प्रकार पूरा हो बिना इस के कि मसीह तुम में से प्रकट हो। खुदा की  
आयतों में क्यों सोच-विचार नहीं करते। क्या खुदा की शान के यथायोग्य है कि  
तुम से वादा करे कि खलीफ़े तुम में से पैदा करेगा उनके समान जो पहले गुज़रे,  
फिर अपने वादे को भूल जाए और ईसा को आकाश से उतारे। खुदा तआला  
तुम्हारे इन बनाए हुए झूठों से पवित्र और श्रेष्ठतर है। क्यों मसीह मौऊद के पक्ष



وَأِنَّهُ الصَّلِيبُ فَهَلْ أَنْتُمْ تَكْرَهُونَ - وَقَدْ جَرَتْ ثُمَّ تَذْهَبُونَ -  
 وَإِنَّ اللَّهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَكُمْ وَعَادَتُهُ أَنْ يُرْسِلَ عِبَادَهُ عِنْدَ سَيْلِ  
 الْفِتَنِ فَاسْأَلُوا الَّذِينَ يَعْلَمُونَ أَنْ كُنْتُمْ تَرْتَابُونَ - أَفَطَمَعُونَ أَنْ يَأْتِيَ  
 الْمَسِيحُ مِنَ السَّمَاءِ كَمَا ظَنَنْتُمْ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ اللَّهِ مِنْ قَبْلِ أَفْلا  
 تَعْلَمُونَ - وَمَا جَاءَ مَرْسَلُ بَطْرِيْقٍ زَعَمَ الزَّاعِمُونَ - فَكَيْفَ أَنْتُمْ  
 تَتَوَقَّعُونَ - وَقَدْ زَعَمَ الْيَهُودُ مِنْ قَبْلِكُمْ أَنَّ مَسِيحَهُمْ لَا يَأْتِي إِلَّا  
 بَعْدَ أَنْ يَنْزِلَ نَبِيٌّ مِنَ السَّمَاءِ فَمَا صَدَّقَ اللَّهُ زَعْمَهُمْ فَكَفَرُوا بِابْنِ  
 مَرْيَمَ وَهُمْ يَخْتَصِمُونَ - وَكَذَلِكَ زَعَمُوا أَنَّ مَثِيلَ مُوسَى مِنْ بَنِي  
 إِسْرَائِيلَ فَلَمَّا بَعَثَ مِنْ بَنِي إِسْمَاعِيلَ كَفَرُوا بِهِ وَالْيَوْمَ نَا  
 هَذَا لَا يُؤْمِنُونَ فَتِلْكَ سُنَّةٌ مِّنْ سُنَنِ اللَّهِ إِنَّهُ يَرَى بَعْضَ أَجْزَاءِ

में लड़ते हो और इस पर हठ करते हो कि वह वही मसीह इब्ने मरयम होगा।  
 हालाँकि तुम खुदा की किताब पढ़ते हो फिर लापरवाह हो। और खुदा ने हम में  
 और तुम में फैसला कर दिया है और संयमियों के लिए निशानों को स्पष्ट कर  
 दिया है तथा खुदा चाहता है कि मोमिनों की सहायता करे और सलीब के फ़ित्ने  
 (उपद्रवों) को दूर करे, क्या तुम पसन्द नहीं करते। और खुदा की यह आदत  
 है कि अपने बन्दों को उपद्रवों के तूफ़ान के समय भेजता है। यह बात उलेमा  
 से पूछ लो यदि सन्देह है। क्या तुम आशा रखते हो कि मसीह तुम्हारे अनुमान  
 के अनुसार आसमान से उतरे और खुदा की सुन्नत इस से पहले गुज़र चुकी,  
 क्या तुम नहीं जानते। हरगिज़ कोई रसूल इस प्रकार से नहीं आया जिस प्रकार  
 अनुमान लगाने वालों ने समझा, अतः तुम किस प्रकार आशा रखते हो। तथा  
 तुम से पहले यहूदियों का विचार था कि उनका मसीह न आएगा जब तक कोई  
 पैगम्बर आकाश से न उतरे। खुदा ने उनके इस विचार को सच्चा नहीं किया।  
 इसलिए इब्ने मरयम का इन्कार किया और अब भी यही कहते हैं और इसी प्रकार  
 सोचा कि मूसा का मसील बनी इस्राईल में से होगा परन्तु जिस समय वह मौऊद  
 बनी इस्राईल में से पैदा हुआ उसे न माना और अब तक नहीं मानते। खुदा की

نبأه ويخفي البعض فالذين في قلوبهم زيغ يجعلون ما اختفى  
متكافاً لانكارهم وهم عما ظهر يعرضون - ولا يتفكرون لعله  
فتنة لهم وقد كثر الامثال فما يقرءون - لا تسلكوا طريقاً  
غير طريق القرآن يا أهل الدهاء ولا تقولوا ان عيسى نازل من  
السماء انتهوا خير لكم ايها المسلمون - انكم اخترتم عقيدة  
لانظير لها في الانبياء وانا اخترنا عقيدة كشرت نظائرها  
في الرسل والاصفياء فاي الفريقين احق بالامن واقرب الى  
الصدق والصفاء ايها العاقلون - وما نزل نبي من السماء من  
قبل فكيف انتم تترقبون - و كان اليهود يعتقدون كمثلكم ان  
الياس ينزل من السماء قبل المسيح و كانوا عليه يصرون -

आदतों में से एक यह आदत है कि भविष्यवाणी के कुछ भागों को प्रकट कर देता है और कुछ को गुप्त रखता है। अतः जिन लोगों के दिल टेढ़े होते हैं गुप्त भाग को अपने इन्कार के लिए प्रमाण बना लेते हैं और जो भाग प्रकट हुआ उस से मुँह फेरते हैं तथा विचार नहीं करते कि शायद वह उन के लिए परीक्षा हो और इस जैसी बहुत ही घटनाएँ हुई परन्तु नहीं पढ़ते। हे बुद्धिमानो! कुर्आन के मार्ग के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग न अपनाओ और यह न कहो की ईसा आसमान से उतरेगा। रुक जाओ यही तुम्हारे पक्ष में अच्छा है। हे मुसलमानो! तुमने तो वह आस्था अपनाई है जिसका उदाहरण नबियों में नहीं। और हम ने वह आस्था अपनाई है कि रसूलों और चुने हुए लोगों में इसके असंख्य उदाहरण हैं। अतः इन दोनों सदस्यों में से शान्ति का पात्र तथा सच्चाई एवं निष्ठा के निकट कौन सा है तथा इस से पहले कोई नबी आकाश से नाज़िल (उतरा) नहीं हुआ। तुम किस प्रकार प्रतीक्षा करते हो। यहूदी भी तुम्हारे समान आस्था रखते थे कि इल्यास मसीह से पहले आसमान से उतरेगा और इस आस्था पर हठ करते थे तथा जिस समय मसीह आया, उसको झुठलाया और कहा उसको कैसे स्वीकार करें क्योंकि अभी इल्यास नहीं उतरा और अवश्य है कि सच्चा मसीह इल्यास

فلَمَّا جَاءَ الْمَسِيحُ كَذَّبَهُ الْقَوْمُ وَقَالُوا كَيْفَ نَقْبَلُهُ وَمَا نَزَلَ  
 الْيَاسَ وَلَا يَأْتِي الْمَسِيحُ الصَّادِقَ إِلَّا بَعْدَ نَزْوِلِهِ وَإِنَّا مَا زَعَمُوهُ  
 وَقَالَ إِنْ يَح - الَّذِي أَرْسَلَ مِنْ لَهُ مُنْتَظِرُونَ - فَرَدَّ عَيْسَى قَبْلِي  
 هُوَ الْيَاسُ إِنْ كُنْتُمْ تَقْبَلُونَ - فَمَا قَبَلُوا وَكَفَرُوا بِعَيْسَى ابْنِ  
 مَرْيَمَ رَسُولِ اللَّهِ فَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَنْزَلَ عَلَيْهِمْ رِجْزَةً  
 بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ - ثُمَّ اتَّبَعْتُمْ عَقِيدَتَهُمْ بِقَوْلِكُمْ إِنْ الْمَسِيحُ  
 يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ أَوْ صُكُّمُ الْيَهُودِ أَمْ تَشَابَهَتْ الْقُلُوبُ وَالْعَيْونُ -  
 فَصَارَتْ أَهْوَاءُكُمْ كَأَهْوَاءِهِمْ وَقَرَّبَ أَنْ تَجْزُونَ كَجِزَاءِهِمْ  
 فَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تَتَّبِعُوا سُنَنَ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ فَيَمَسَّكُمْ الْعَذَابُ  
 وَأَنْتُمْ تَقْرءُونَ الْفَاتِحَةَ إِلَّا تَعْلَمُونَ - وَقَدْ سَمَّى اللَّهُ تِلْكَ الْيَهُودَ  
 الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَحَذَّرَكُمْ فِي أَمْرِ الْكِتَابِ أَنْ تَكُونُوا كَمِثْلِهِمْ

के उतरने के बाद उतरे और हम उसकी प्रतीक्षा में हैं। अतः ईसा ने उन का अनुमान अस्वीकार किया और कहा कि हज़रत यह्या जो मुझ से पहले भेजा गया है वही इल्यास है यदि स्वीकार करो। अतः स्वीकार न किया और हज़रत ईसा का इन्कार किया। अतः खुदा उन पर प्रकोपित हुआ और उन पर लानत भेजी तथा उन के कुफ़्र पर प्लेग उन पर भेजी। इसके बावजूद फिर तुम ने यहूदियों की आस्था का अनुसरण किया कि मसीह आकाश से उतरेगा। क्या यहूदियों ने तुम्हें वसीयत की या दिल और आँख उन जैसे हो गए तुम्हारी और उनकी समान इच्छा हो गई और निकट है कि तुम्हें भी वही दण्ड मिले जो उनको मिला। अतः खुदा से डरो और मज़बूब अलैहिम क्रौम के मार्ग पर न चलो अन्यथा तुम पर अज़ाब होगा और तुम सूरह फ़ातिहा को पढ़ते हो क्या तुम नहीं जानते कि खुदा ने उन यहूदियों का नाम **المغضوب عليهم** रखा और सूरह फ़ातिहा में तुम्हें इस बात से डराया कि तुम उन के समान हो जाओ और तुम्हें स्मरण कराया कि वे प्लेग से मार दिए गए। तुम्हें क्या हो गया कि तुम खुदा के आदेशों को भूल गए और उस से नहीं डरते। खुदा तआला के कलाम पर विचार नहीं करते कि

وَذَكَرْكُمْ أَنَّهُمْ أَهْلَكُوا بِالطَّاعُونَ فَمَا لَكُمْ تَنْسُونَ وَصَايَا اللَّهِ  
وَلَا تَتَّقُونَ رَبَّكُمْ وَلَا تَحْذَرُونَ - وَلَا تَتَفَكَّرُونَ فِي قَوْلِ اللَّهِ غَيْرِ  
الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَمْ يَظَلُّوا غَيْرَ الْيَهُودِ فَانَّهُ أَوْمَى فِي هَذِهِ إِلَى  
عَذَابٍ أَصَابَهُمْ وَالْيَ عَذَابٍ يَصِيبُكُمْ إِنْ لَمْ تَنْتَهُوا فَهَلْ أَنْتُمْ  
مَنْتَهُونَ - وَإِنَّهُ نَبَأٌ عَظِيمٌ وَقَدْ ظَهَرَتْ آثَارُهُ وَإِنَّ فِي هَذَا آيَةً  
لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ -

وقد غضب الله على اليهود بقولهم ان موعودهم ينزل من  
السماء ثم ياتي المسيح فقال الله على لسان عيسى انهم قوم  
مبطلون- فمالكم ترجون امرا ابطله الله من قبل والمؤمن  
لا يلدغ من جحرٍ واحِدٍ مرّتين ويتعظ بغيره لئلا يلومه اللا  
ئمون- اُتكمّلون هذه المشابهة بالسنكم وغلوكم على عقيدة

غير اليهود कहा (गौरिल मःजूब अलैहिम) غير المغضوب عليهم  
(गौरिल यहूद) नहीं कहा, क्योंकि इसमें संकेत उस अज़ाब की ओर है जो उनको  
पहुंचा और जो तुम्हें पहुंचेगा यदि तुम न रुके। फिर क्या यह संभव है कि तुम  
सुरक्षित रहो और यह बड़ी सूचना है तथा इसके निशान प्रकट हो गए और इसमें  
उनके लिए निशान है जो विचार करते हैं।

और खुदा यहूदियों पर इस बात से क्रोधित हुआ जब उन्होंने कहा कि  
हमारा मौऊद आकाश से उतरेगा फिर इसके बाद मसीह उतरेगा। अतः खुदा ने  
ईसा के मुख से फ़रमाया कि यह झूठी क्रौम है। अब तुम्हें क्या हो गया है कि  
तुम उसी बात के प्रत्याशी हुए हो जिसे खुदा ने इस से पहले ग़लत ठहरा दिया  
और सिद्ध है कि मोमिन एक ही छेद से दो बार नहीं काटा जाता और यह कि  
दूसरों से सीख लेता है करता है ताकि भर्त्सना का लक्ष्य ना बने। क्या तुम इस  
समानता को अपने मुँह से और उतरने की आस्था पर अतिशयोक्ति करके पूर्ण  
करते हो और तुम जानते हो कि मसीह ने इस राय के विरुद्ध किया है। अतः क्या  
कारण है कि उस की दोस्ती का दम भरते हो परन्तु उसका आदेश नहीं मानते।

النَّزُولِ وَتَعْلَمُونَ أَنَّ الْمَسِيحَ قَدْ خَالَفَ هَذَا الرَّأْيَ فَمَا لَكُمْ تَحْبُونَهُ ثُمَّ تَعْصُونَ حِكْمَهُ وَتَخَالِفُونَ - وَإِنَّ الطَّاعُونَ قَرِيبٌ مِّنْ دَارِكُمْ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَّا يَفْعَلُ بِهِ فِي سَنَةِ آتِيَةٍ فَلَا تَكْفُرُوا كُلَّ الْكُفْرِ وَتُوبُوا إِلَى اللَّهِ الَّذِي إِلَيْهِ تَرْجِعُونَ - وَتَعْلَمُونَ أَنَّهُ رَجَزٌ نَزَلَ عَلَى الْيَهُودِ ثُمَّ يَنْزِلُ عَلَى الَّذِينَ يَشَابَهُونَهُمْ غَضَبًا مِّنَ اللَّهِ وَذَلِكَ هُوَ السَّرِّ فِي آيَاتِهَا الْمَتَدَبِّرُونَ - يَا حَسْرَةً عَلَى النَّاسِ أَنَّهُمْ يَرُونَ آيَاتِ اللَّهِ وَآيَاتِهِ ثُمَّ يَعْرُضُونَ - وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا بِمَا وَعَدَ اللَّهُ فِي سُورَةِ النَّورِ وَالْفَاتِحَةِ قَالُوا أَنُؤْمِنُ كَمَا آمَنَ الْجَاهِلُونَ - أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْجُهَلَاءُ وَلَكِنْ لَا يَشْعُرُونَ - وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ اتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُتَّبِعُوا أَهْوَاءَ كَمَا قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُتَّقُونَ - وَقَدْ تَرَكَوا الْقُرْآنَ ظُلْمًا وَعُلُوًّا وَإِذَا دُعُوا إِلَى الْحَقِّ فَهُمْ يَغْضَبُونَ -

और प्लेग तुम्हारे घर के निकट पहुँच गई और कोई नहीं जानता कि अगले वर्ष में उसके सिर पर क्या गुजरेगा। इसलिए कुफ़र को इस सीमा तक न पहुँचाओ और खुदा की ओर आओ कि उसी के पास जाना है। और तुम्हें ज्ञात है कि यह प्लेग वही अज़ाब है जो यहूदियों पर आया फिर उन लोगों पर यह अज़ाब खुदा के प्रकोप से आएगा जो यहूदियों के समान हो जाएंगे **غیر المغضوب** की आयत में यही रहस्य है इन लोगों पर अफ़सोस जो खुदा ने निशानों को और उसके दिनों को देखते हैं फिर मुँह फेरते हैं फिर जब उनसे कहा जाता है कि खुदा के उस वादे पर जो सूरह नूर में और सूरह फ़ातिहा में वर्णित है, ईमान लाओ तो कहते हैं कि क्या हम मूर्खों की भांति ईमान लाएं। सावधान! यही लोग मूर्ख हैं परन्तु समझते नहीं। और जिस समय कहा जाए कि खुदा से डरो और इच्छाओं के पीछे न चलो तो कहते हैं कि हम संयमी हैं हालाँकि कुर्आन को अन्याय एवं अहंकार से त्याग दिया है। और जिस समय उन्हें सच्चाई की ओर बुलाएँ क्रोध से भर जाते हैं। इस से अधिक और क्या मूर्खता है कि अस्त-व्यस्त बातों को माना हुआ है और कुर्आन के वादे को स्वीकार नहीं करते और

وايى جهالة اكر من انهم ذهبوا الى اقوال شتى وبوعد القرآن لا يؤمنون - وانه كتاب لا ياتي به الباطل من بين يديه ولا من خلفه وهل يستوى اليقين والظنون - وان الاحاديث كلها قد جمعت بعد مائة او مأتين وان فلاشبهة فيه وانه هو الذى نزل صدقاً وحقاً على نبينا، وخرج من فيه، أنتم فيه ترتابون؟ فباى حديث بعده تؤمنون - أتؤثرون الظن على الذى قال الله فى شأنه إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَفِظُونَ - وقالوا إِنَّا وجدنا آباءنا على طريق وإننا على آثارهم سالكون - انظر كيف أقروا بترك القرآن، ثم انظر كيف يختصمون - وقالوا إن الاحاديث تفرون من حق حصص، وإلام تجادلون؟ أرايتم إن كنت من عند الله ثم كذبتمنى، فما بالكم أيها المكذبون؟ وإن الله قد

कुर्आन एक ऐसी किताब है कि झूठ की इसमें किसी ओर से गुंजायश नहीं और क्या संभव है कि विश्वास और अनुमान समान हो जाएँ तथा सिद्ध है कि समस्त हदीसों एक सौ या दो सौ वर्ष के बाद एकत्र की गई हैं तथा मुसलमानों के फिर्के (समुदाय) उनमें लड़ते झगड़ते हैं। और वास्तव में कुर्आन में कोई सन्देह नहीं और वही हमारे नबी पर उतरा है और उस के पवित्र मुँह से निकला है। क्या इस में तुम्हें सन्देह है? फिर कुर्आन के बाद किस हदीस पर ईमान लाते हो क्या इस किताब को छोड़ कर अनुमान को अपनाते हो जिस की शान में खुदा तआला ने फ़रमाया कि

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَفِظُونَ (अलहिन्न - 10)

और कहते हैं कि हम ने अपने बुजुर्गों को एक मार्ग पर पाया है और हम उन के पद चिन्हों पर चलेंगे। देख कि किस प्रकार कुर्आन को छोड़ने का करार करते हैं फिर देख कि किस प्रकार लड़ते हैं और कहते हैं कि हदीसों हमारी आस्थाओं के बारे में सर्व सम्मत हैं। और वे इस बात में स्पष्ट तौर पर झूठे हैं और जानते हैं कि रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की

أخبر عن موت المسيح في سورة المائدة، والحديث أخبرنا أن عمره مائة وعشرون، وبشرنا الله في سورة النور بأن الخلفاء من هذه الأمة، فكان خاتم الخلفاء من المسلمين بالضرورة، وهو المسيح الموعود من غير الشك والشبهة، فقد فتح الله بيننا وبينكم إن كنتم تبصرون - وهل بقي بعد ذلك شك لقوم يتقون؟ فقد أوتينا حجة بالغة من الله، وما في أيديكم إلا الذي نحت الخاطئون - وقالوا إن المسيح ينزل بِسْمِ شَرْقِيٍّ من دمشق وهذا هو الحق إن كنتم تتفكرون - وإنَّ المسيح قد ظهر في الأرض الشرقية كما أنَّ الدَّجَالَ قد ظهر فيها، فالمسيح شرقيٌّ والدَّجَالُ شرقيٌّ، وفي الشِّرْكَ كَثْرُ المَشْرُكُونَ - وإنَّ قريتي هذه شرقية من دمشق، فاسألوا من يعلمها إن كنتم لا تعلمون

बहुत सी हदीसों में कुर्आन के अनुकूल होती हैं और जो अनुकूल नहीं होती वह निस्सन्देह बनावटी हैं और मासूम (निर्दोष) होना कुर्आन की ही विशेषता है तथा क्रिस्से निरस्त नहीं जैसा कि तुम्हें स्वयं इक्रार है। अब प्रमाणित और स्पष्ट सच्चाई से कहाँ भागोगे और कब तक लड़ोगे। भला देखो तो कि यदि मैं खुदा की ओर से हुआ और तुम मुझे झुठलाते रहे तो तुम्हारा अंजाम क्या होगा? और खुदा तआला ने मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु के बारे में सूरह माइद: में खबर दी है और हदीस में है कि उन की आयु एक सौ बीस वर्ष की थी और खुदा ने सूरह नूर में हमें खुशखबरी दी है कि खलीफ़े इस उम्मत में से होंगे। इसलिए अवश्य इसी पद्धति पर खातमुल खुलफ़ा मुसलमानों में से पैदा हुआ और वही बिना किसी सन्देह के मसीह मौऊद है फिर यदि तुम्हारी आँखें हैं तो खुदा ने हमारे और तुम्हारे बीच फैसला कर दिया है। क्या अब इस सब के बाद संयमियों के लिए कोई सन्देह शेष रह गया है? हमें खुदा ने ठोस प्रमाण दिया है और तुम्हारे हाथ में ग़लती करने वालों की बनाई हुई बातों के अतिरिक्त और कुछ नहीं। और कहते हैं कि मसीह अलैहिस्सलाम दमिशक़

- وإن هذا المُلْكُ مُلْكُ الهِنْدِ شَرْقِيٌّ مِنْ حِجَازٍ، فَتَمَّ مَا أَوْمَى النَّبِيَّ إِلَى الْمَشْرِقِ لِلدَّجَالِ وَالْمَسِيحِ، وَتَمَّ وَعَدَ اللهُ صِدْقًا وَحَقًّا، فَلَا تَحَارِبُوا اللَّهَ أَيُّهَا الْمُسْتَعْجِلُونَ - وَإِنكُمْ تَرُونَ كَيْفَ تَنْصَرَ النَّاسَ وَارْتَدَّوْا مِنْ دِينِ اللهِ، ثُمَّ تَقُولُونَ مَا جَاءَ مَرْسَلٍ مِنْ عِنْدِ اللهِ، مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ - وَإِنْ هَذِهِ الْأَرْضُ فَاقَتْ كُلَّ أَرْضٍ بِفِتْنَتِهَا أَتَعْلَمُونَ كَمِثْلِهَا أَرْضًا أُخْرَى، فَأَرُونَا تِلْكَ الْأَرْضَ إِنْ كُنْتُمْ تَصْدُقُونَ - وَقَدْ شَهِدَتِ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ وَالزَّمَانُ وَالْمَكَانُ عَلَى صِدْقِي، وَمَضَى مِنْ هَذِهِ، الْمِائَةُ قَرِيبًا مِنْ خُمْسِهَا فَبِأَيِّ شَهَادَةٍ بَعْدَهَا تَسْتَيْقِظُونَ؟ وَقَدْ أَرَى اللهُ آيَاتِهِ قَرِيبًا مِنْ ثَلَاثِ مِائَةٍ، وَرَأَى الشَّهَدَاءَ الَّذِينَ كَانُوا زُهَاءً مِائَةَ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ - وَإِنْ كُنْتُمْ تَظُنُّونَ أَنَّهُمْ كَذَبُوا فَأَتُوا بِشَهَدَاءٍ كَمِثْلِهِمْ كَاذِبِينَ

के पूर्व की ओर उतरेगा और यही ठीक है यदि सोचो। और मसीह पूरब की धरती में प्रकट हुआ है जैसा कि दज्जाल भी उसी पृथ्वी में प्रकट हुआ है। अतः मसीह भी पूरब में हुआ और दज्जाल भी पूरब में और मुश्रिक शिरक में बढ़ गए और हमारा यह गाँव दमिशक के पूरब की ओर है कि भुगोलवेत्ता से पूछ लो यदि तुम स्वयं नहीं जानते। और यह हिंदुस्तान देश हिजाज़ देश से पूरब दिशा में है। अतः सच निकला जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि दज्जाल और मसीह पूरब में प्रकट होंगे और खुदा का वादा सच और सही सिद्ध हुआ। अतः हे जल्दी करने वालो! खुदा के साथ मत लड़ो तुम देखते हो कि लोग ईसाई हो गए और खुदा के धर्म से फिर गए हैं। फिर कहते हो कि खुदा की ओर से कोई रसूल नहीं आया। यह तुम्हारा कैसा फैसला है और यह हिन्दुस्तान की ज़मीन उपद्रव एवं झगड़ों में सब ज़मीनों से बढ़ गई है। क्या इस जैसी ज़मीन तुम्हें और कोई ज्ञात है? यदि सच्चे हो तो उस ज़मीन का पता दो और निस्सन्देह आकाश और पृथ्वी तथा समय और स्थान ने मेरी सच्चाई पर गवाही दी है और इस सदी में से लगभग पांचवां भाग



يشهدوا لكم إن كنتم صادقين فيما تدعون - وإن نصر الله  
 أتاكم في وقته فهل أنتم تردون؟ وإن تعدوا دلائل صدقى لا  
 تحصوها، وإن الكاذبين لا يؤتى لهم آية ولا هم ينصرون -  
 وإن الفاتحة كفت لسعيدٍ يطلب الحق ولا يمر علينا كالذين  
 يستكبرون - فإن الله ذكر فيه فرقا ثلاثا خلوا من قبل وهم  
 المنعم عليهم والمغضوب عليهم والضالون، ثم جعل هذه،  
 الأمة فرقة رابعة وأوماً الفاتحة إلى أنهم ورثوا تلك الثلاثة -  
 إما من المنعم عليهم، أو من المغضوب عليهم، أو من الذين  
 يضلون ويتنصرون، وأمر أن يسأل المسلمون ربهم أن يجعلهم  
 من الفرقة الأولى ولا يجعلهم من الذين غضب عليهم ولا  
 من الضالين الذين يعبدون عيسى وبربهم يشركون - وكان في

गुजर भी गया। अब इसके बाद कौन सी गवाही तुम्हें जगाएगी। और खुदा ने  
 लगभग तीन सौ निशान प्रकट कर दिए और उन निशानों को एक लाख से  
 अधिक लोगों ने अपनी आँखों से देखा है और यदि उनको झूठा समझते हो तो  
 उन जैसे गवाह लाओ जो तुम्हारे पक्ष में गवाही दें। यदि इस दावे में सच पर  
 हो और निस्सन्देह खुदा की सहायता ठीक समय पर तुमको पहुंची। क्या उसे  
 अस्वीकार कर दोगे और मेरी सच्चाई के सबूत इतने हैं कि तुम उनको गिन नहीं  
 सकते और निस्सन्देह झूठों को कोई निशान तथा कोई सहायता नहीं दी जाती।  
 और सूरह फ़ातिहा उस सौभाग्यशाली के लिए जो सच्चाई को तलाश करता है  
 तथा हमारे सामने से अहंकारी के समान नहीं गुजरता, पर्याप्त है। क्योंकि खुदा  
 ने इस सूरह में तीन फ़िक्रों का वर्णन किया है जो पहले युग में गुजरे और  
 ये हैं **منعم عليهم** और **مغضوب عليهم** तथा **ضالين** फिर इस  
 उम्मत को चौथा फ़िक्र ठहराया और फ़ातिहा में संकेत किया कि वह इन तीन  
 फ़िक्रों में से या तो **منعم عليهم** के वारिस होंगे या **مغضوب عليهم**  
 के वारिस होंगे या **ضالين** (गुमराहों) के वारिस होंगे तथा आदेश दिया है



في الارض، وكذلك مُلئت الارض ظلما وجورا وقلّ ومن كل باب يُطرَدون- الصالحون - فنظر الله إلى الارض فوجد أهلها- في ظلمات ثلاث ظلمت الجهل وظلمت الفسق وظلمت الدّاعين إلى التثليث والوسواس الخنّاس، فتذكّر فضلاً ورُحماً وعده الثالث الذي يدعون له الداعون، فأنعم على هذه الائمة بإرسال مثيل عيسى، وهل يُنكر إلا العمون؟ وإن الذين آمنوا بأنباء القرآن ومواعيده وكفروا بما خالفها، أولئك هم المؤمنون حقاً، وأولئك الذين هدى الله قلوبهم، وأولئك هم المهتدون وما نبئنا إلا محمداً، وما كتابنا إلا القرآن، فاطلبوا الرشد منه أيها المسترشدون- وإنا علّمنا دعوةً في الفاتحة، واستجابها الله في سورة النور، فما لكم تتركون لبّ القرآن وعلى القشر تقنعون - ولا غمّة في مواعيد القرآن بل هو بيان واضح لقوم

और विनाश करते हैं तथा अत्याचार और अहंकार करते हैं तथा अकारण खून करने को प्रिय रखते हैं। और उनके दिल लोभ, लालच, कंजूसी और इर्ष्या से भर गए हैं और वे अपमानित हो गए हैं। न आकाश में उनका सम्मान है और न पृथ्वी में। और हर ओर से धिक्कारे जाते हैं तथा इसी प्रकार पृथ्वी अन्याय एवं अत्याचार से भर गई और नेक लोग कम हो गए। ऐसे समय में खुदा ने पृथ्वी को देखा और पृथ्वी वालों को तीन प्रकार के अंधकार में पाया। एक मूर्खता का अंधकार, दूसरे पाप का अंधकार, तीसरे उन लोगों का अंधकार जो तस्लीस और शैतान की ओर लोगों को बुलाते हैं। अतः कृपा एवं दया करके तीसरे वादे को याद किया जिसके लिए दुआ करने वाले दुआ करते थे। अतः ईसा के मसील को भेज कर इस उम्मत पर इनाम किया और उसका अंधों के अतिरिक्त कोई इन्कार नहीं करता और वे लोग जो पवित्र कुर्आन की खबरों तथा उसके वादों पर ईमान लाये और जो उस के विरुद्ध था उस से इन्कार किया। ठीक मोमिन यही हैं और यही वे हैं जिनके दिलों को खुदा ने हिदायत दी और यही हिदायत पाए हुए हैं और

يفهمون- فما لكم ترُدُّون نِعَمَ اللَّهِ بعد نزولها؟ أَيُّ أَنْتُمْ نَعَمٌ أَوْ  
 أَنْاسٌ عَاقِلُونَ؟ وما قَصَّ اللَّهُ عَلَيْنَا الْفِرْقَ الثَّلَاثَ فِي الْفَاتِحَةِ  
 إِلَّا لِيُشِيرَ إِلَى أَنَّ هَذِهِ الْأُمَّةَ وَرَثَتُهُمْ فِي كُلِّ قِسْمٍ مِنَ الْأَقْسَامِ  
 الْمَذْكُورَةِ، فَقَدْ ظَهَرَتْ هَذِهِ الْوَرَاثَةُ فِي مُسْلِمِي زَمَانِنَا الَّذِي هُوَ  
 آخِرُ الزَّمَانِ بِظُهُورِ تَامِ، تَعْرِفُهَا كُلُّ نَفْسٍ مِنْ غَيْرِ الْحَاجَةِ إِلَى  
 الْإِمْعَانِ كَمَا لَا يَخْفَى عَلَى الَّذِينَ يَنْظُرُونَ إِلَى مُسْلِمِي زَمَانِنَا هَذَا  
 وَإِلَى مَا يَعْمَلُونَ - وَلِكُلِّ فِرْقَةٍ مِنْ هَذِهِ الْوَرَثَةِ الثَّلَاثِ دَرَجَاتٌ  
 ثَلَاثٌ - أَمَّا الَّذِينَ وَرَثُوا الْمَنْعَمَ عَلَيْهِمْ فَمِنْهُمْ رِجَالٌ مَا وَجَدُوا  
 حِظَّهُمْ مِنَ الْإِنْعَامِ إِلَّا قَلِيلًا مِنَ الْعَقَائِدِ أَوْ الْأَحْكَامِ وَهُمْ عَلَيْهِ  
 يَقْنَعُونَ، وَمِنْهُمْ مُقْتَصِدُونَ وَإِنْهُمْ وَقَفُوا عَلَى مَرْتَبَةِ الْاِقْتِصَادِ  
 وَمَا يَكْمَلُونَ، وَمِنْهُمْ فَرْدٌ اجْتَبَاهُ رَبُّهُ وَكَمَّلَهُ وَجَعَلَهُ سَابِقًا فِي  
 الْخَيْرَاتِ، وَهُوَ يَجْتَبِي إِلَيْهِ مَنْ يَشَاءُ وَيَخْصُ بِالدرجاتِ، فَذَلِكَ

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बिना हमारा और कोई नबी नहीं तथा  
 कुर्आन के अतिरिक्त हमारी और कोई किताब नहीं। हे सन्मार्ग के अभिलाषियो!  
 उस से सन्मार्ग मांगो। और हमें फ़ातिहा में दुआ सिखाई गई है और उस दुआ  
 को खुदा तआला ने सूरह नूर में स्वीकार किया। अतः क्यों कुर्आन के बीज को  
 छोड़ते हो और छिलके पर संतुष्ट होते हो। कुर्आन के वादों में कोई गोपनीयता  
 नहीं बल्कि खुला बयान है उन लोगों के लिए जो समझते हैं। तुम्हें क्या हुआ कि  
 खुदा की नेमतों को उन के उतरने के बाद अस्वीकार करते हो क्या चौपाये हो  
 या बुद्धि रखने वाले इन्सान। खुदा ने फ़ातिहा में तीन फ़िक्रों का इसलिए वर्णन  
 किया है ताकि इस बात की ओर संकेत हो कि यह उम्मत कथित प्रकारों में से  
 प्रत्येक प्रकार की वारिस होगी। अतः निस्सन्देह ये विरासत (उत्तराधिकार) हमारे  
 युग में जो अन्तिम युग है ऐसे पूर्ण रूप से मुसलमानों में प्रकट हो गई है कि  
 प्रत्येक व्यक्ति चिन्ता करने की आवश्यकता के बिना उसे पहचान रहा है। अतः  
 यह बात उन लोगों पर छिपी नहीं जो हमारे युग के मुसलमानों और उनके कार्यों

المخصوص هو المسيح الموعود الذي ظهر في القوم وهم لا يعرفون- وَأَمَّا الَّذِينَ وَرَثُوا الْمَغْضُوبَ عَلَيْهِمْ مِنَ الْيَهُودِ فَمِنْهُمْ رَجَالٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ شَابَهُوهُمْ فِي، تَرَكَ الْفَرَائِضَ وَالْحُدُودَ، لَا يَصُومُونَ وَلَا، يَصَلُّونَ، وَلَا يَذْكُرُونَ الْمَوْتَ وَلَا يَبَالُونَ وَمِنْهُمْ قَوْمٌ اتَّخَذُوا الدُّنْيَا مَعْبُودَهُمْ وَلَهَا فِي لَيْلِهِمْ وَنَهَارِهِمْ يَعْمَلُونَ، وَمِنْهُمْ سَابِقُونَ فِي الرِّزَائِلِ، وَأَوْلَئِكَ الَّذِينَ يَتَّخِذُونَ أَهْلَ الْحَقِّ سُخْرِيًّا وَعَلَيْهِمْ يَضْحَكُونَ - وَيَعَادُونَهِمْ - وَيَكْفُرُونَ بِهِمْ وَيَشْتَمُونَهِمْ، وَيَعْمَلُونَ رِيَاءً وَبَطْرًا وَلَا يَخْلَصُونَ وَيَصُولُونَ عَلَى مَسِيحِ اللَّهِ وَحِزْبِهِ، وَيَجْرُونَهِمْ إِلَى الْحُكَّامِ وَفِي كُلِّ طَرِيقٍ - يَقْعُدُونَ، وَيَقُولُونَ اقْتُلُوهُمْ فَإِنَّهُمْ كَافِرُونَ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَى كَلَامِ اللَّهِ وَاجْعَلُوهُ حَكْمًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ تَرَى أَعْيُنَهُمْ تَحْمَرُّ مِنَ الْغَيْظِ وَيَمْرُونَ شَاتِمِينَ وَهُمْ مَشْتَعِلُونَ - وَكَأَيِّنْ مِنْ آيِ اللَّهِ

की ओर देखते हैं और इन तीनों प्रकार के वारिसों में से प्रत्येक वारिस होने वाले फ़िरक़ों की तीन श्रेणियां हैं परन्तु जो इनाम प्राप्त लोगों के वारिस हुए उनमें से कुछ ने इनाम से हिस्सा नहीं पाया परन्तु थोड़ा सा भाग आस्थाओं एवं आदेशों में से उन को मिला और उसी पर उन्होंने सन्तोष किया और उनमें से कुछ मध्यम चाल वाले हैं और वे अपनी उसी चाल पर खड़े हो गए और पूर्णता एवं कमाल के स्तर तक नहीं पहुंचे। और उन में एक व्यक्ति है कि खुदा ने उसे चुना और इमाम बनाया और नेकियों में पूर्ण किया और वह चुन लेता है जिसको चाहता है और श्रेणियों से विशिष्ट करता है। अतः वही विशिष्ट वही मसीह मौऊद है जो उस क़ौम में प्रकट हुआ और वे नहीं पहचानते लेकिन जो **مغضوب عليهم** के वारिस हुए उन में से वे मुसलमान हैं जो खुदा के आदेशों तथा कर्तव्यों को छोड़ने में यहूदियों के समान हो गए। न नमाज़ पढ़ते हैं न रोज़ा रखते हैं और मौत को याद नहीं करते तथा निडर हैं और उनमें से ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने दुनिया को अपना उपास्य (मा'बूद) बनाया और रात-दिन उसी के लिए काम करते हैं। और

رأوها بأعينهم ثم - يمرّون مستكبرين كأنهم لا يبصرون  
 ونبذوا كتاب الله وراء ظهورهم ظلماً وعلوّاً، وقالوا لا تسمعوا  
 دلائله والغوّا فيها لعلكم تغلبون - وأمّا الذين ورثوا الضالين  
 فمنهم قوم أحبّوا شعار النصارى وسيرتهم وإليها يميلون  
 - وتجدهم يرغبون في حُللهم وقمصانهم وقلانسهم ونعالهم  
 وطرز معيشتهم وجميع خصالهم، وعلى من خالفها يضحكون  
 ويتزوّجون نساءً من قومهم وعليهن يعشقون - ومنهم قوم  
 مالوا إلى الفلسفة التي أشاعوها وفي، أمر الدين يتساهلون -  
 وكم من كليمٍ تخرج من - أفواههم ويحقّرون دين الله ولا يبالون  
 ومنهم قوم أكملوا أمر الضلالة، وارتدّوا من الإسلام وعادّوه

उनमें से ऐसे लोग भी हैं जो अधम एवं निकृष्ट आदतों में सब से आगे निकल गए यही लोग हैं जो सत्यनिष्ठ लोगों पर ठट्ठे मारते हैं। और उन से शत्रुता करते हैं और गालियाँ देते हैं तथा आंडबर और दिखावे के कार्य करते हैं तथा श्रद्धा नहीं रखते और खुदा के मसीह पर तथा उसके गिरोह पर आक्रमण करते हैं और उनको हाकिमों की ओर खींचते हैं तथा प्रत्येक मार्ग के किनारे कष्ट देने के लिए बैठते हैं और कहते हैं कि इन को मार डालो क्योंकि ये काफ़िर हैं और जिस समय उनसे कहें कि खुदा के कलाम की ओर आओ और उसको हमारे और अपने मध्य हकम बनाओ तो उनकी आँखें क्रोध से लाल हो जाती हैं और गालियाँ देते हुए गुज़र जाते हैं। बहुत से लोगों ने खुदा के निशानों को अपनी आँखों से देखा फिर अहंकार करते हुए गुज़र जाते हैं जैसे अंधे हैं। खुदा की किताब को पीठ के पीछे डाल दिया है तथा कहते हैं कि इसके तर्कों को न सुनो और इसके पढ़ने के समय शोर डाल दो ताकि विजयी हो जाओ, किन्तु जो **ضالين** (गुमराहों) के वारिस हुए उनमें से कुछ ईसाइयों की प्रकृति, आदत एवं व्यवहार को प्रिय रखते हैं और इस ओर झुक गए। लिबास कोट, पेन्ट, बूट और जीवन पद्धति एवं समस्त आदतों में ईसाइयों की नक़ल उतारते हैं और उन आदतों के विरोधियों पर हँसते हैं तथा

من الجهالة، وكتبوا كتبًا في رده، وشتماوا رسول الله وصالوا على عرضه، وتلك أفواج في هذا الملك بعدما كانوا يُسلمون - فتم ما أُشير إليه في الفاتحة، فإنّا لله وإنا إليه راجعون - وأولُ نبأ ظهر من أنبياء أم الكتاب هو تنصّر المسلمين وشتمهم وصولهم كالكلاب كما تشاهدون - ثم ظهر نبأ المغضوب عليهم، فترى حزبًا من العلماء ومن تبعهم من أهل الدنيا والامراء والفقراء كيف يستكبرون ولا يتذلّلون، ويراءون ولا يخلصون، ويقولون ما لا يفعلون وأخذوا إلى الأرض وإلى الله لا يتوجهون - ولا يؤمنون بأيام الله، ويرون آيات الله ثم ينكرون ويريدون أن يدسّوا الحق في تراب، ويمزّقوا أذياله

ईसाइयों की स्त्रियों को अपने निकाह में लाते हैं और उनसे प्रेमालाप करते हैं। और उनमें से कई ईसाइयों के दर्शनशास्त्र की ओर आकृष्ट हुए जिस का इन शहरों में उन्होंने प्रचार किया है तथा धर्म के कार्यों में लापरवाही करते हैं बहुत ही अनुचित बातें बोलते हैं। और खुदा के धर्म का तिरस्कार करते हैं और नहीं डरते और उनमें से कुछ पक्के गुमराह हो गए और मूर्खता से इस्लाम के साथ शत्रुता करते हैं तथा इस्लाम के खण्डन में पुस्तकें लिखीं और खुदा के रसूल को बुरा कहा और उसके सम्मान पर प्रहार किया और इस प्रकार के लोग इस देश में बहुसंख्या में हैं और वे इस से पहले मुसलमान थे अतः जिस बात का सूरह फ़ातिहा में संकेत था वह प्रकट हो गई। इन्नालिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन। और पहली ख़बर जो उम्मुलकिताब (कुर्आन) की ख़बरों से प्रकट हुई वह मुसलमानों का ईसाई हो जाना और उन का कुत्तों की भांति आक्रमण करना है। जैसा कि देखते हो फिर मग़ज़ूब अलैहिम की ख़बर प्रकट हुई जैसा कि तुम उलेमा के गिरोह और उनके अनुयायियों और सांसारिक लोगों, अमीरों, फ़क़ीरों, पीरों और दरवेशों में देखते हो कि कितना अहंकार करते हैं, विनम्रता ग्रहण नहीं करते दिखावा करते हैं निष्कपटता नहीं रखते और वे ऐसी बातें बताते हैं जो स्वयं नहीं करते। दुनिया पर ओंधे पड़े हुए हैं और

كلاب، ولا يفكرون في ليلهم ولا نهارهم أنهم يُسألون-ولو  
 تيسر لهم قتلى لقتلوني ولا غتالوني لو يُسرّون مقتلى، ولكن الله  
 خيبهم فيما يقصدون - يمكرون كل مكرٍ لإعدامي، فينزل  
 أمرٌ من السماء فيجعل مكرهم هباءً وهم لا يعلمون - وإنّ  
 معي قادرٌ لا يبرح رَحْمَتُهُ، لكن المخالفين لا يبصرون، بل  
 يرونني ويعيسون ويسبّون ويشتمون، ويحلفون حلفاً على  
 حلف إنه كاذب ولا يبقى سرٌّ إلا يُبدى، ولا قضية إلا تُقضى،  
 فسيظهر ما في قلبي وما في قلبهم، ولا يُكتم ما  
 يكتُمون-هذان حزبان من المغضوب عليهم وأهل الصلبان  
 ذكّرهما الله في الفاتحة، وأشار إليّ أنهما يكثران في آخر  
 الزمان ويبلغان كمالهما في الطغيان، ثم يقيم ربُّ السماء

खुदा की ओर ध्यान नहीं देते तथा खुदा के दिनों पर ईमान नहीं लाते और खुदा के  
 निशानों को देखते हैं और फिर इन्कार करते हैं और चाहते हैं कि सच को मिट्टी  
 के नीचे छिपा दें और उसके दामन को कुत्तों की तरह टुकड़े-टुकड़े कर दें तथा  
 अपने रात-दिन में विचार नहीं करते कि अन्ततः पूछे जाएंगे। यदि मुझ को क्रत्ल  
 कर सकते तो अवश्य क्रत्ल करते, परन्तु खुदा ने उनको असफल एवं निराश  
 रखा मुझे मिटाने में छल से काम लेते हैं तब आकाश से एक ऐसा आदेश आता  
 है जो उन के छल को बरबाद कर देता है और वे नहीं जानते कि मेरे साथ एक  
 ऐसा शक्तिमान है कि उसके निगरान मेरे घर से दूर नहीं होते और उसकी दया  
 एक पल भी मुझको नहीं छोड़ती परन्तु विरोधी नहीं देखते बल्कि मुझे देखते हैं  
 और अप्रसन्न होते हैं तथा गालियाँ देते हैं और क्रसम पर क्रसम खाते हैं कि  
 मैं झूठा हूँ और ऐसा कोई रहस्य नहीं रहा जो प्रकट न हो तथा न कोई वादा  
 जिसका निर्णय न हुआ हो।

निकट है कि जो मेरे दिल में है और जो कुछ उन के दिल में है प्रकट हो  
 जाए। ये दो गिरोह मग्ज़ूब अलैहिम और सलीब वालों में से हैं, कि खुदा ने सूरह



حزبًا ثالثًا في تلك الاوان لتتم المشابهة بأمة أولى ولتتشابه  
السلسلتان. فالزمانُ هذا الزمانُ، وتمَّ كلُّ ما وعد الرحمنُ،  
ورأيتم المتنصِّرين من المسلمين و كثرتم، موضعُ لِبِنَةِ  
أعني المُنعم عليه من هذه العمارة فأراد الله أن يُتمَّ النبأ  
ويُكَمِّل البناء باللبنة الاخيرة، فأنا تلك اللبنة أيها  
الناظرون - و كان عيسى عَلَمًا لبني إسرائيل وأنا عَلَمٌ لكم  
أيها المفرطون- فسارِعوا إلى التوبة أيها الغافلون-، وإني  
جُعِلْتُ فردًا أكَمَلَ من الذين أنعمَ عليهم في آخر الزمان، ولا  
فخر ولا رياء واللهُ فَعَلَ كيف- أراد و شاء، فهل أنتم تحاربون  
الله وتزاحمون وأنا المسيح الموعود الذي قُدِّرَ مجيئُهُ في آخر  
الزمان من الله الحكيم الديان، وأنا المنعم عليه الذي أُشِيرَ

फ़ातिहा में उन का वर्णन किया है तथा संकेत दिया है कि अन्तिम युग में बहुत  
बढ़ जाएंगे और उपद्रव में चरम सीमा को पहुँच जाएंगे। उस समय आकश का  
रुब तीसरे गिरोह को स्थापित करेगा, इसलिए कि पहली उम्मत से समानता पूर्ण  
हो जाए और इसलिए भी कि दोनों सिलसिले एक-दूसरे से समान हो जाएँ। अतः  
वह समय यही समय है और जो कुछ रहमान (खुदा) ने वादा किया था वही  
प्रकट हुआ और तुम ने मुसलमानों में से ईसाई होने की प्रचुरता को देखा और  
इस उम्मत के यहूदी और उनके जीवन चरित्र को भी देखा तथा उस इमारत में  
एक ईंट का स्थान खाली था अर्थात् जिन पर इनाम हुआ अतः खुदा ने इरादा  
किया कि इस भविष्यवाणी को पूरा करे और अन्तिम ईंट के साथ नींव की पूर्णता  
तक पहुँचा दे। अतः मैं वही ईंट हूँ और जैसा कि ईसा बनी इस्राईल के लिए  
निशान था उसी प्रकार मैं तुम्हारे लिए हे तौबा करने वालो! एक निशान हूँ। अतः  
हे लापरवाहो! तौबा की ओर जल्दी करो और मैं **منعم عليهم** (इनाम प्राप्त)  
गिरोह में से सर्वांगपूर्ण सदस्य बनाया गया हूँ और यह गर्व और आडंबर नहीं है।  
खुदा ने जैसा चाहा किया। फिर क्या तुम खुदा के साथ लड़ते हो और मैं वही

إليه في الفاتحة عند ظهور الحزبين المذكورين وشيوع البدعات والفتن فهل أنتم تقبلون؟ وإن إنكارى حسراتُ على الذين كفروا بي، وإن إقرارى بركاتُ للذين يتركون الحسد ويؤمنون - ولو كان هذا الامر والشأن من عند غير الله لمزَّق كلَّ ممزَّق ولجمَع علينا لعنة الأرض ولعنة السماء ولائِفاز الله أعدائى بكلِّ ما يريدون - كلاً بل إنه وعدُّ من الله وقد تمَّ صدقا وحقًا، وإنه بُشِّرَى للذين كانوا ينتظرون - وقد رُفِعَ قضيتنا إلى الله - يطلبون الحق وإليه يحفدون، وقد ثبت منه أنه ستكون المغضوب عليهم منكم وسيكون الضالون منكم بتنصُّرهم، فكيف يمكن أن لا يكون الذى

मसीह मौऊद हूँ जिसका आना अन्तिम युग में खुदा की ओर से मुकद्दर था और मैं वह इनाम प्राप्त हूँ कि उसकी ओर फ़ातिहा में उन दो गिरोहों के प्रकट होने के समय संकेत था और बिदअतों तथा उपद्रवों के फैल जाने की ओर संकेत किया गया है। क्या तुम स्वीकार नहीं करोगे। और मेरा इन्कार करने वालों पर मानसिक खेद का कारण है और उनके लिए मेरा इक्रार पछताने का कारण है। और मेरा इक्रार उन के लिए जो ईर्ष्या को छोड़ते हैं तथा ईमान लाते हैं बरकतों का कारण है और यदि यह बात खुदा की ओर से न होती तो यद्यपि यह कारखाना तबाह हो जाता और हम पर पृथ्वी तथा आकाश की लानत एकत्र हो जाती और शत्रु अपने हर इरादे में सफल हो जाते। हरगिज़ ऐसा नहीं बल्कि इस सिलसिले का खुदा की ओर से वादा दिया गया था जो सच्चे तौर पर पूरा हो गया और खुशाखबरी उन के लिए है जो प्रतीक्षा करते थे। अब हमारा यह मुकद्दमा खुदा की अदालत में पहुँच गया है और निकट है कि तुम्हारी विजय हो या तुम्हें पराजय हो। इसलिए सूरह फ़ातिहा स्पष्ट करती है कि यह उम्मत मध्यस्त की उम्मत है और उन्नति के लिए ऐसी योग्यता रखती है कि संभव है कि उनमें से कुछ अंबिया (नबी) हो जाएँ और उनमें से यह भी योग्यता है कि यहाँ तक तुच्छ हो जाएँ कि कुछ उनमें से यहूदी और जंगलों के बन्दरों की भाँति लानती

أَشِيرَ إِلَيْهِ وَإِلَى جَمَاعَتِهِ فِي قَوْلِهِ- أَنْعَمْتَ الْمَسِيحَ الْمَوْعُودَ مِنْكُمْ عَلَيْهِمْ- فَلَا تَفَرَّقُوا فِي الْفِرْقِ الثَّلَاثِ الَّذِينَ أَنْتُمْ لَهُمْ وَارثُونَ- لَا يَأْتِيكُمْ يَهُودِيٌّ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ، وَلَا نَبِيٌّ مِنَ السَّمَاءِ، إِنَّ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءُ هَذِهِ الْأُمَّةِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْرِفُونَ- أَتَعْجَبُونَ أَنْ يَسْمِيَ اللَّهُ بَعْضَكُمْ يَهُودِيًّا وَبَعْضَكُمْ نَصْرَانِيًّا وَبَعْضَكُمْ عَيْسِيًّا؟ فَلَا تَكْذِبُوا كَلَامَ اللَّهِ وَفَكِّرُوا فِيمَا- أَوْمِئْتُ، وَانظُرُوا حَقَّ النَّظَرِ أَيُّهَا الْمَخْطُؤُونَ أَمْ يَقُولُونَ إِنَّا لَا نَرَى ضَرُورَةَ مَسِيحٍ وَلَا مَهْدِيٍّ وَكَفَانَا الْقُرْآنَ وَإِنَّا مَهْتَدُونَ- وَيَعْلَمُونَ أَنَّ الْقُرْآنَ كِتَابٌ لَا يَمْسُهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ فَاشْتَدَّتْ الْحَاجَةُ إِلَى مَفْسِرٍ زُكِّيٍّ مِنْ أَيْدِي اللَّهِ وَأُدْخِلَ فِي الَّذِينَ يُبْصِرُونَ-

हो जाएँ या गुमराह हो जाएँ और ईसाई हो जाएँ तथा तेरे लिए यह दुआ जो तू पांच समय नमाज़ में पढ़ता है पर्याप्त है यदि सच्चाई की अभिलाषा तेरे दिल में है और इस से प्रकट हुआ कि निकट है कि तुम्हारे बीच में से पैदा मग़सुब عليهم हों और उनके ईसाई होने के कारण (गुमराह) हो जाएँ। इस स्थिति में कैसे संभव है कि वह मसीह मौऊद तुम्हारे बीच में से न हो जिस की तथा और जिसकी जमाअत की ओर أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ में संकेत है। अतः अनिवार्य है कि तीन फ़िक्रों में जिसके तुम वारिस हो पृथकता न करो संभव नहीं कि कोई और यहूदी बनी इस्राईल में से या कोई नबी आकाश से तुम्हारे पास आए बल्कि यह सब इसी उम्मत के नाम हैं क्या तुम को इस बात से आश्चर्य है कि खुदा तुम में से कुछ का नाम यहूदी रखे और कुछ का नाम ईसाई तथा कुछ लोगों को ईसा के नाम से याद करे। अतः खुदा के कलाम को न झुठलाओ और जिस बात का संकेत किया उस पर विचार करो तथा भली-भांति सोचो। कहते हैं कि हम को मसीह और महदी की कोई आवश्यकता नहीं बल्कि कुर्आन हमारे लिए पर्याप्त है और हम सीधे मार्ग पर हैं, हालाँकि जानते हैं कि कुर्आन ऐसी किताब है कि-

(अल वाकिअ: - 80) لَا يَمْسُهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ

وَيَحْكُم - كيف تكذبون كتاب الله وتكفرون بنبأه؟ أي أمركم إيمانكم أن تكفروا بآباء الله إن كنتم تؤمنون؟ وقد خلت قوم من قبلكم ظنوا كظنكم في رسلكم، فبلغوا التكذيب والإهانة منتهاها و كانوا يعتدون، فأقبل المأمورون على ربهم واستفتحوا، فخاب الذين - كانوا يصدون عن سبيل الله ولا ينتهون فاتقوا سنن الله وغضبه أيها المجترءون - إنكم تركتم الله فترككم، وفعلتم فعل اليهود واتبعتهم آراءهم، وقد أذاق الله اليهود جزاءهم، فتوبوا إلى بارئكم وتعالوا إلى ما أقول لكم كما بدأكم تعودون، وبلغوا الأمر إلى ملوككم إن استطعتم وكونوا أنصار الله لعلكم تُرحمون - وما من

पवित्र लोगों के अतिरिक्त अन्य किसी की समझ उस तक नहीं पहुँचती। इस कारण से एक ऐसे मुफ़स्सिर (व्याख्याकार) की आवश्यकता पड़ी कि खुदा के हाथ ने उसे पवित्र किया हो और देखने वाला बनाया हो। अफ़सोस तुम पर, किस प्रकार खुदा की किताब को झुठलाते हो और उसकी भविष्यवाणी पर ईमान नहीं लाते। क्या तुम्हारा ईमान तुम्हें आदेश देता है कि खुदा की भविष्यवाणियों के साथ कुफ़्र करो। तुम जानते हो कि तुम से पहले ऐसी क्रौम थी जो यही कुधारणा जो तुम करते हो अपने रसूलों के बारे में की और झुठलाया तथा अपमान को सीमा से अधिक कर दिया अन्ततः मामूर लोग खुदा की चौखट पर गिर पड़े और उसके आगे विनय और निष्ठा से सर रख दिया तथा उससे फैसला चाहा। अतः वे लोग जो खुदा के मार्ग से लोगों को रोकते थे और नहीं रुकते थे असफल और निराश हो गए। अतः हे साहस करने वालो! खुदा के नियमों और उसके प्रकोप से डरो तुम ने खुदा को छोड़ दिया और उसने इसके बदले में तुम्हें छोड़ दिया तथा तुम ने यहूदियों का काम किया और खुदा ने उन को उनकी कर्तूत का स्वाद चखाया अब खुदा की ओर लौटो। जो कुछ मैं कहता हूँ उसे स्वीकार करो। और याद रखो कि जिस प्रकार आरम्भ में खुदा ने तुम्हें

قضية أصرّ عليها، أهل الأرض إلا قُضيت في آخر الأمر في السماء وتلك سنة لا تبديل لها أيها، الظالمون - وما كان الله ليترك الحق وأهله حتى يميز الخبيث من الطيب فما لكم لا تبصرون؟ وإن أك كاذبا فعلى كذبي، وإن أك صادقًا فأخاف أن يمسمكم نَصَبٌ من الله، وإنه لا، يفلح المعتدون - توبوا توبوا فإن البلاء على، بابكم وسارِعوا إلى تَوَابِكُمْ، وأمهلوا بعض هذا، التذلل واحضروا الله من التذلل، أليس الموت بقريب ونكال الآخرة أمر مهيب، ولا إصلاح بعد الموت ولا ترجعون - وقد أوحى إلى من ربي قبل أن ينزل الطاعون أن - اصنع الفلك بأعيننا ووحينا، ولا تخاطبني في الذين

पैदा किया उसी प्रकार उसकी ओर लौटोगे और जो कुछ तुम को धर्म की बात सिखाई गई है यदि सम्भव हो सके तो अपने बादशाहों को भी इस की सूचना दो और खुदा के धर्म के सहायक बन जाओ ताकि तुम पर दया की जाए और ऐसा प्रत्येक झगड़ा जिस में पृथ्वी वाले हठ करें अन्ततः आकाश में उसका फ़ैसला किया जाता है। हे अत्याचारियो! यह खुदा की सुन्नत (नियम) है जो कभी नहीं बदलती। हरगिज़ संभव नहीं की खुदा सच को और सच्चों को छोड़ दे जब तक अपवित्र को पवित्र से अलग न करे यदि मैं झूठा हूँ तो मेरे झूठ की विपदा मेरे सर पर पड़ेगी और यदि मैं सच्चा हूँ तो मैं डरता हूँ कि तुम पर खुदा की ओर से अज़ाब उतरे और यह अटल बात है कि सीमा से निकल जाने वाला हरगिज़ सफलता नहीं पाता। रुक जाओ रुक जाओ। देखो आपदा तुम्हारे दरवाज़े पर खड़ी है, खुदा की ओर जल्दी करो और इस घमण्ड में से कुछ तो कम करो और खुदा के सामने विनयपूर्वक उपस्थित हो जाओ मौत निकट है और आखिरत का अज़ाब बड़ी भयानक बात है और मरने के बाद सुधार का समय नहीं है और न फिर दुनिया में लौट कर आना है। प्लेग के उतरने से पहले खुदा तआला ने मुझे वह्यी की कि हमारी आँखों के सामने और हमारे

ظَلَمُوا إِنَّهُمْ مُغْرَقُونَ - إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللَّهَ يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ، وقد أشعتُ هذا الوحي من سنين، ويعلمه المحبّون والمعادون - والله يأتي الأرض ينقُصها من أطرافها، فتوبوا إلى الله أيها الغافلون- ولا تفرّطوا في حقوق الله وعباده، ولا تكونوا من الذين يظلمون، وتوبوا توبةً نصوحًا لعلكم تُرحَمون- وقال ربّي - إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّى يُغَيِّرُوا مَا بِأَنْفُسِهِمْ - إِنَّهُ أَوَى الْقُرْيَةَ، يعنى من دخلها كان آمنًا، وأخاف على الذين لا يخافون الله ولا ينتهون- فقوموا من مواضعكم خاشعين، واسجدوا توابين وكونوا لنفوسكم ناصحين وفكّروا مرتعدين، - ولا تكونوا كالذين يفسقون وهم يضحكون إن إنكار المأمورين شيء عظيم، ومن حاربهم فقد

आदेश से एक नौका तैयार कर तथा ऐसे लोगों के लिए सिफ़ारिश प्रस्तुत न कर जिन्होंने सम्पूर्ण जीवन के लिए अन्याय करना अपना सिद्धान्त बना लिया है क्योंकि वे तो डूबने से पहले ही गुनाहों में डूबे हुए हैं। और जो लोग तेरे हाथ में अपना हाथ देते हैं खुदा का हाथ उनके हाथ के ऊपर है। वर्षों हुए कि मैंने इस वह्यी को प्रकाशित किया है जैसा कि मित्र और शत्रु सब उसे जानते हैं और खुदा प्रतिदिन पृथ्वी को उसके किनारे से इस प्रकार से कम करता चला जाता है कि लोगों के समूह के समूह हर ओर से आ रहे हैं। अतः हे लापरवाहो खुदा की ओर लौटो और खुदा एवं उसके बन्दों पर अन्याय एवं अत्याचार न करो और शुद्ध तौबा करो ताकि तुम पर दया की जाए और खुदा ने मुझ से फ़रमाया कि खुदा कभी किसी क्रौम की हालत को नहीं बदलता जब तक कि स्वयं वे लोग अपनी आन्तरिक हालत को न बदलें और वास्तव में खुदा ने इस गाँव को अपनी शरण में ले लिया है अर्थात् जो कोई इस में दाखिल हुआ वह सलामत (सुरक्षित) रहा। हाँ मुझे उनकी चिन्ता है जो खुदा से नहीं डरते और दुराचारों से नहीं रुकते। अतः चाहिए कि अपने स्थानों से विनयपूर्वक उठो

ألقى نفسه في الجحيم، فلا خير في هذه بالمسيح عيسى ابن مريم وكفروه واذوهو حقره وأسرده وأرادوا أن يصلبوه ليحسب الناس أنه أشقى الناس والملعون ففكروا في أمر الكتاب حق الفكر - لِمَ حذركم الله أن تكونوا المغضوب عليهم، ما لكم لا تفكرون؟ فاعلموا أن السر فيه أن الله كان يعلم أنه سوف يبعث فيكم المسيح الثاني كأنه هو، وكان يعلم أن حزباً منكم يكفرونه ويكذبونه ويحقرونه ويشتمونه ويريدون أن يقتلوه ويلعنونه، فعلمكم هذا الدعاء رُحماً عليكم وإشارةً إلى نبأ قدره، فقد جاءكم مسيحكم فإن لم تنتهوا فسوف تُسألون -

और तौबा के साथ सज्दे करो तथा अपने प्राणों की चिन्ता करो और सोच एवं भय के साथ चिन्तन करो और उनके समान न हो जाओ जो पापी हैं और ठट्ठे करते हैं। भली भांति जान लो कि मामूरी का इन्कार बड़ी भारी बात है। जो उन से लड़ा निस्सन्देह स्वयं को नर्क का ईधन बनाया हे लड़ने वालो! उस लड़ाई में तुम्हारे लिए कोई अच्छाई नहीं तुम सूरह फ़ातिहा में उस क्रौम का वर्णन पढ़ते हो जिस पर खुदा का प्रकोप इसलिए उतरा कि उन्होंने मसीह इब्ने मरयम का इन्कार किया और उसे तुच्छ समझा तथा कष्ट दिया और पकड़वाया और चाहा कि सूली दें। इसलिए कि लोग उसे लानती और दुर्भाग्यशाली समझें। चाहिए कि उम्मुल किताब में भली भांति विचार करो कि तुम्हें खुदा ने उससे क्यों डराया कि तुम **مغضوب عليهم** हो जाओ जान लो कि इस में यह रहस्य था कि खुदा जानता था कि दूसरा मसीह तुम में पैदा होगा और जैसे वह वही होगा और खुदा जानता था कि तुम में से एक गिरोह उसे काफ़िर और झूठा कहेगा उसे गालियाँ देंगे और तुच्छ समझेंगे और उसके क्रत्ल का इरादा करेंगे और उस पर लानत डालेंगे। अतः उसने दया करके तथा उस ख़बर की ओर जो प्रारब्ध थी संकेत के लिए तुम्हें यह दुआ सिखाई फिर तुम्हारा मसीह तुम्हारे पास आ गया

وثبت من هذا المقام أن المراد من المغضوب عليهم عند الله العلام★ هم اليهود الذين فرطوا في أمر عيسى رسول الله الرحمن، وكفروه وآذوه ولعنوا على لسانه في القرآن، وكذلك من شابههم منكم بتكفير مسيح آخر الزمان وتكذيبه وإيذائه باللسان، والتمنى لقتله ولو بالبهتان، كما أنتم تفعلون - والمراد من قوله الضالين النصارى الذين أفرطوا في أمر عيسى وأطرءوه وقالوا إن الله هو المسيح وهو ثالث ثلاثة يعنى الثالث الذى

अब यदि तुम अन्याय से न रुके तो अवश्य पकड़े जाओगे।

और इस स्थान से सिद्ध हुआ कि खुदा के नज़दीक **مغضوب عليهم** से वे यहूदी★ अभिप्राय हैं जिन्होंने ईसा के मामले में अन्याय किया और उसे काफ़िर कहा तथा उसे कष्ट पहुंचाया और कुर्आन में उसकी जीभ पर लानत किए गए और इसी प्रकार तुम में से बहुत अन्तिम युग के मसीह को काफ़िर ठहराया और जीभ से उसे झुठलाया, कष्ट पहुँचाने तथा उसे क्रतल करने की इच्छा के कारण उन यहूदियों के समान हो गए और **ضالين** से अभिप्राय ईसाई हैं जो ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में सीमा से बढ़ गए और कहा कि मसीह ही खुदा है और वह तीन में से एक है ऐसा कि दोनों उसके अस्तित्व में मौजूद हैं और **أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ** से वे अंबिया (नबी) और बनी इस्राईल

★ **حاشية :-** ان لفظ المغضوب عليهم قد حذى لفظ الضالين اعنى وقع ذلك بحذاء هذا كما لا يخفى على المبصرين - فثبت بالقطع واليقين ان مغضوب عليهم هم الذين فرطوا في امر عيسى - بالتكفير والايذاء والتوهين - كما ان الضالين هم الذين أفرطوا في امره باتخاذهم رب العالمين - منه

☆ **हाशिया :-** शब्द 'मगज़ूब अलैहिम' 'ज़ाल्लीन' के मुक़ाबले पर है अर्थात् वह शब्द इस शब्द के सामने है जैसा कि देखने वालों पर छिपा नहीं। अतः निश्चित रूप से सिद्ध हो गया कि 'मगज़ूब अलैहिम' वे लोग हैं जिन्होंने हज़रत ईसा को कम आंका, काफ़िर करार दिया, कष्ट दिया तथा अनादर किया। और 'ज़ाल्लीन' से अभिप्राय वे लोग हैं जिन्होंने हज़रत ईसा के बारे में अतिशयोक्ति की और उनको खुदा करार दे दिया। (इसी से)



يوجد فيه الثلاثة كما هم يعتقدون - والمراد من قوله- أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ هم النبيون والاخيار الآخرون من بنى إسرائيل الذين صدّقوا المسيح وما فرطوا في أمره وما أفرطوا بأقاويل، وكذلك المراد عيسى المسيح الذي خُتِمَتْ عليه تلك السلسلة وانتقلت النبوة، وسُدَّ به مجرى الفيض كأنه العرمة، وكأنه لهذا الانتقال العلم والعلامة أو الحشر والقيامة، كما أنتم تعلمون- وكذلك المراد من أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ في هذه الآية هو سلسلة أبدال هذه الأمة الذين صدّقوا مسيح آخر الزمان، وآمنوا به وقبلوه بصدق الطوية والجنان- أعنى المسيح الذي خُتِمَتْ عليه هذه السلسلة، وهو المقصود الأعظم من قوله أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ كما تقتضى المقابلة ولا ينكره المتدبرون- فإنه إذا عَلِمَ بالقطع

के अन्तिम चुने हुए (लोग) अभिप्राय हैं जिन्होंने मसीह का सत्यपान किया और उसके बारे में कोई कमी कभी नहीं की तथा बातों से उस मसीह के बारे में अन्याय नहीं किया। और इसी प्रकार शब्द أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ से अभिप्राय ईसा मसीह है जिस पर वह सिलसिला समाप्त हुआ और उसके अस्तित्व से वरदान का झरना बन्द हो गया जैसा कि उसका अस्तित्व उस स्थानांतरण के लिए एक निशानी या हथ्र और क्रयामत तथा इसी प्रकार أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ से इस उम्मत के अब्दालों का सिलसिला अभिप्राय है जिन्होंने अन्तिम युग के मसीह का सत्यापन किया और सच्चे दिल से उसको स्वीकार किया अर्थात् उस मसीह को जिस पर यह सिलसिला समाप्त हुआ और أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ से वही महान उद्देश्य है। क्योंकि मुकाबला उसी को चाहता है और विचार करने वाले उसका इन्कार नहीं कर सकते और مغضوب عليهم वही यहूदी हैं जिन्होंने मसीह को काफ़िर कहा और उस को लानती समझा जैसा कि الضَّالِّين का शब्द इस की ओर मार्ग-दर्शन करता है। इसलिए क्रम ठीक नहीं बैठता और कुर्आन के कलाम की व्यवस्था ठीक नहीं होती सिवाए इसके

واليقين والتصريح والتعيين أن المغضوب عليهم هم اليهود الذين كفروا المسيح وحسبوه من الملعونين كما يدل عليه قرينة قوله الضالين فلا يستقيم الترتيب ولا يحسن نظام كلام الرحمن إلا بأن يُعنى من أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ مَسِيحٌ آخِرَ الزمان، فإن رعاية المقابلة من سُنن القرآن ومن أهم أمور البلاغة وحسن البيان، ولا ينكره البين التام أنه من قرأ هذا الدعاء في صلاته أو خارج الصلاة فقد سأل ربه أن يُدخله في جماعة المسيح الذي يكفره قومه ويكذبونه ويفسقونه ويحسبونه شر المخلوقات ويسمونه دجالاً وملحدًا ضالاً كما سَمَى عيسى اليهود الملعون. وإذا تقررَ هذا فبينوا مَنْ قام فيكم من دُونِي يدعى أنه هو المسيح الموعود وأنتم كفرتموه وخاطبتموه

कि أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ से अन्तिम युग का मसीह अभिप्राय लिया जाए, क्योंकि पवित्र कुर्आन का नियम है कि मुकाबले का ध्यान रखता है और मुकाबले का ध्यान रखना उच्च श्रेणी की सरसता और प्रभावी ढंग से बात कहने में सम्मिलित है और मूर्ख के अतिरिक्त कोई इस अर्थ से इन्कार नहीं करता। इस स्थान से भली-भांति ज्ञात हुआ कि जो कोई नमाज़ में या नमाज़ से बाहर इस दुआ को पढ़ता है वह अपने प्रतिपालक (रब्ब) से प्रश्न करता है कि उसे उस मसीह की जमाअत में सम्मिलित करे जिसको उसकी क्रौम काफ़िर कहेगी और उसे झुठलाएगी तथा उसको सब सृष्टियों से अधिक बुरा समझेगी और उसका नाम दज्जाल और नास्तिक एवं गुमराह रखेगी जैसा कि लानती यहूदियों ने ईसा का नाम रखा था। अब बताओ कि वह कौन है जो मसीह मौऊद होने का दावा करता है और तुमने उसको काफ़िर कहा तथा उन नामों से पुकारा और फ़त्वे लगाने के तीरों से उसे घायल किया। क्या तुम उस भविष्यवाणी को जिसे तुम ने स्वयं अपनी जीभ से पूरा किया, झुठलाते हो। क्या तुम को शर्म नहीं आती कि फ़ातिहा में अपने खुदा से चाहते हो कि तुम को मेरी जमाअत में सम्मिलित करे।

بهذه الاسماء وجر حتموه بسهام الإفتاء؟ أتكذبون النبأ الذي أتمتموه بالسنكم أيها السالقون؟ ألا تأخذكم الحياء أنكم تدعون ربكم في الفاتحة أن يدخلكم في جماعتي ثم تعرضون؟ وكنتم تقولون لا صلاة إلا بالفاتحة فلا تكونوا أول كافر بها أيها الموحّدون-والعجب منكم كل العجب أنكم هذا الدعاء في السبع المثاني مع فهم المعاني في تقرأ ون أوقاتكم الخمسة ثم تنسونه وتعرضون- وما هذا إلا شقاوة توجب غضب الرب لما هي أعراض عما تؤمرون- وما أسألكم على ما جئتكم به من أجر ولا أقول أن انبذوا مالاً من أيديكم فأخذه، بل أوتيكم مالاً فهل أنتم تأخذون؟ أيها الفقراء ما بقي في أيديكم شيئاً من الدنيا والآخرة، فلا تظلموا أنفسكم وأنتم تعلمون- وإن كنتم

फिर मुँह फेरते हो और तुम कहते थे कि बिना फ़ातिहा के कोई नमाज़ सही नहीं। अब हे एक खुदा को मानने वालो! तुम स्वयं सर्वप्रथम इस का इन्कार मत करो। बड़ा आश्चर्य है कि पांच समय इस दुआ को फ़ातिहा में पढ़ते हो और उस के मायने भी समझते हो और भूलते हो और मुँह फेरते हो। इस दुर्भाग्य से खुदा का प्रकोप भड़कता है क्योंकि यह खुदा के आदेश से विमुख होना है। मैं उस चीज़ की जो तुम्हारे पास लाया हूँ कोई मज़दूरी नहीं मांगता और न यह कहता हूँ कि माल अपने हाथ से पृथ्वी पर फेंको और मैं उसे उठा लूँ बल्कि स्वयं तुम्हें माल देता हूँ क्या लेते हो? हे फ़कीरो! दुनिया और आखिरत (लोक-परलोक) में से तुम्हारे पास कुछ नहीं रखा। अतः अपनी जान पर जान-बूझ कर जुल्म (अन्याय) न करो और यदि मेरे बारे में तुम्हें कुछ सन्देह है तो मुझे जिस प्रकार चाहो परख लो और खुदा के उस क़ानून को जो रसूलों के बारे में जारी है मत भुलाओ। भली भाँति जान लो कि तुम ने बनी इस्राईल के क़दम पर क़दम मारा है (पद चिन्हों पर चलते हो) इसलिए यदि बुद्धिमान हो तो उस अज़ाब और दण्ड को मत भुलाओ जो उनको पहुंचा जैसा कि जानते हो कि खुदा तआला यहूदियों

في شكّ من أمرى فامتحنوني كيف شئتم ولا تنسوا سنن الله في قوم يُرسلون - واعلموا أنكم خرجتم على قدم بنى إسرائيل، فلا تنسوا ما مَسَّهم إن كنتم تعقلون - فإن الله قد غضب على اليهود مرّتين ما غضب كمثلها من قبل ولا من بعد، وسماهم المغضوب عليهم ولعنهم مرّة على لسان داؤد و ثانية على لسان عيسى، فتلك الغضب الإشد انحصرت في المرّتين كما لا يخفى على الذين يتدبّرون، وقال الله -

وَقَضَيْنَا إِلَى بَنِي إِسْرَائِيلَ فِي الْكِتَابِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيرًا

فهل أنتم تتذكّرون؟ و كان المفسدة الآخرة الموجبة لغضب الربّ تكفير المسيح وإرادة صلبه كما أشير في اللعنيتين المذكورتين واتفق عليه صحفُ الله والمؤرّخون - فالذين سماهم الله المغضوب عليهم في الفاتحة هم اليهود الذين كذبوا المسيح وأرادوا أن يصلبوه ويعلمه العالمون - وإنّ لفظ الضّالّين

पर दो बार ऐसा क्रोधित हुआ कि कभी आगे-पीछे ऐसा क्रोधित नहीं हुआ और उनका नाम **مغضوب عليهم** रखा और एक बार दाऊद की जीभ से और दूसरी बार ईसा की जीभ से उन पर लानत की और वह कठोर प्रकोप दो बार पर आधारित हुआ जैसा कि विचार करने वालों पर गुप्त नहीं खुदा तआला फ़रमाता है-

وَقَضَيْنَا إِلَى بَنِي إِسْرَائِيلَ فِي الْكِتَابِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ

(5 - इस्त्राईल बनी)

وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيرًا

कि हम ने किताब में बनी इस्त्राईल से कहा कि तुम दो बार पृथ्वी में उपद्रव करोगे और सीमा का अतिक्रमण करोगे क्या तुम्हें यह याद है? और वह दूसरों का उपद्रव जो खुदा के प्रकोप का कारण हुआ, मसीह को काफ़िर कहना और उसे सूली देने का इरादा था जैसा कि उन दो कथित लानतों में संकेत है। और खुदा एवं इतिहासकारों की किताबों की इस पर सहमति है। इसलिए वे लोग जिन को खुदा ने फ़ातिहा में **मغضوب عليهم** कहा है वही यहूदी हैं जिन्होंने मसीह

الذی وقع بعد - الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ - قرينة قطعية على هذا المعنى ولا يرتاب فيه إلا الجاهلون - فإن الضالين قومٌ أفرطوا في أمر عيسى، فثبت من هذا أن المغضوب عليهم قوم فرطوا في أمره، وهذان اسمان متقابلان أيها الناظرون - ثم خوفكم الله أن تكونوا كمثلهم فيحلّ الغضب عليكم كما حلّ على أعداء المسيح ومثّهم لعنته المذكورة في القرآن، وفي هذه تنبيه لكم أيها المنكرون - وما ألزمكم الله قراءة الفاتحة في كل ركعة إلا لهذا الغرض أيها العاقلون - فلا تُلَقُوا معاذيركم، وقد تمت حُجّة الله عليكم فأين تفرّون؟ وما كَفَرِ اليهود بالمسيح إلا لزعيمهم أنه خالف عقيدتهم وما جاء كما كانوا يترقبون، ولزعيمهم أنه ليس من بنى إسرائيل وخانت أمّه فغضب الله عليهم فهلك القوم المفسدون - فاذكروا الفاتحة التي تقرءونها في كل ركعة وليست الصلاة إلا بالفاتحة، فاحملوا ما حُمِلْتُمْ

को झुठलाया और चाहा कि उसे सूली दें और जाल्लीन (ضالين) का शब्द जो के बाद आया है उन अर्थों पर निश्चित प्रतीक है। इस पर मूर्ख के अतिरिक्त कोई सन्देह नहीं करता। क्योंकि **ضالين** वे लोग हैं जिन्होंने ईसा के बारे में अतिशयोक्ति की। यहाँ से सिद्ध हुआ कि **मغضوب عليهم** वे लोग हैं जिन्होंने उस के बारे में कमी की और यह दो नाम एक-दूसरे के सामने आए हैं फिर खुदा ने तुम्हें इस बात से डराया कि तुम उनके समान हो जाओ और अन्ततः वैसा ही प्रकोप तुम पर उतरे जैसा कि मसीह के शत्रुओं पर उतरा और वह लानत उन के साथ संलग्न हुई जिसका कुर्आन में वर्णन है और हे इन्कार करने वालो! इस बयान में तुम्हारे लिए चेतावनी है और हर रकअत में फ़ातिहा के अनिवार्य करने से खुदा तआला का उद्देश्य यही है। अब बहाना बनाते हो और खुदा के समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हुआ और भागने का मार्ग तुम पर बन्द हुआ। यहूदियों ने मसीह के साथ कुफ़्र इस विचार से किया कि उसने उनकी

فيها ولا تكونوا كالذين يقولون ولا يفعلون - ولا تقرّبوا الفاتحة وأنتم لا تعرفونها، ولا تقرّبوها وأنتم لا تعتقدون - أحسبتم قراءة الفاتحة وفي كل ركعة تلاوتها كعملكم بها، ساء ما تزعمون - ولستم على شيء منها وما آمنتم بحرف من حروفها حتى تؤمنوا بالمسيح الذي بُعث بينكم منكم، و شهدت سورة النور عليه فهل أنتم تؤمنون - وإن لم تؤمنوا بها ولم تعملوا فيحلّ عليكم غضب الله كما حلّ من قبلكم على اليهود - واتّقوا الله الذي إن عصيتم ينزع الدين والدولة منكم ويؤتيهما قوما يطيعون - وتعرفون ما فعل باليهود بعد المسيح ولا تُعجزه المجرمون - والله غنيّ عن العالمين إن كانوا

आस्थाओं के विरुद्ध किया तथा उस प्रकार से नहीं आया जैसा कि उनको आशा एवं प्रतीक्षा थी तथा इस विचार से कि वह बनी इस्राईल में से नहीं और उसकी माँ ने बेईमानी की है। खुदा उन पर प्रकोपित हुआ। अतः यह उपद्रवी क्रौम तबाह हो गई। अब इस फ़ातिहा को जिसे हर रकअत में पढ़ते हो याद करो और कोई नमाज़ फ़ातिहा के बिना सही नहीं होती। अतः अब अपनी पीठ पर उठाओ जो खुदा ने तुम पर फ़ातिहा में डाला। और उनके समान न हो जाओ जो कहते हैं और नहीं करते और फ़ातिहा के निकट मत जाओ जब तुम उसे नहीं पहचानते और उसके निकट हरगिज़ न जाओ जब तुम्हें उस पर विश्वास नहीं। क्या तुम फ़ातिहा का पढ़ना और हर रकअत में उसकी क़िरअत करने को ऐसा ही समझते हो जैसा कि उस पर अमल करते हो। यह तुम्हारा विचार बहुत बुरा है। वास्तव में तुम्हारा फ़ातिहा से कुछ संबंध नहीं और उसके एक अक्षर पर भी ईमान नहीं लाते जब तक तुम उस मसीह पर ईमान न लाओ जो तुम में से और तुम्हारे बीच में से पैदा हुआ और सूरह नूर ने उसकी सच्चाई पर गवाही दी। क्या ईमान लाओगे और यदि फ़ातिहा पर ईमान नहीं लाओगे और न उस पर अमल करोगे तो खुदा का प्रकोप तुम्हें उसी प्रकार पकड़ेगा जैसा कि यहूदियों को पकड़ा और उस खुदा से डरो

لا ينتهون - وما قلته من عند نفسي بل قاله \*الله ربكم، أما قرأتهم - فَيَنْظُرْ كَيْفَ تَعْمَلُونَ و"إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ" \* - "إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّى يُغَيِّرُوا مَا بِأَنْفُسِهِمْ" \* - فقد غيرتم فسوف تعلمون وتقولون إننا نحن المسلمون، والله يعلم ما تعملون أيها المتصلفون - ألم يأن أن تخشع قلوبكم وتخافوا وعيد الله وقدر أيتم أياما كأيام اليهود أفلا تبصرون؟ توبوا توبوا قبل أن تهلكوا ولا تغضبوا على داعي الله ولا تحاربوا ربكم أتقدرون أن تردوا ما أراد الله؟ ونعلم أنكم لا تقدرُونَ - فاتقوا الله ولا تنسوا المنون - وإن وعد الله حق، فاخشوا عواصف أيها المتقون - وإنه مالك يؤتي الملك من يشاء، وينزع الملك ممن

जो तुम्हारी अवज्ञा पर दीन (धर्म) और दौलत दोनों तुम्हारे हाथ से छीन ले और आज्ञाकारियों को दे दे और तुम जानते हो जो कुछ खुदा ने मसीह के बाद यहूदियों से किया और अपराधी किसी समय उसे असमर्थ नहीं कर सकते और खुदा लोगों से निःस्पृह है यदि न रुके। मैंने यह सब अपनी ओर से नहीं कहा है अपितु तुम्हारे रब्ब ने कहा है। क्या तुम ने नहीं पढ़ा? अब खुदा देखता है जो तुम किया करते हो। और जब खुदा किसी बात को चाहता है कि हो जाए तो उसे केहता है कि हो जा तो वह हो जाती है। खुदा किसी क्रौम की हालत को नहीं बदलता जब तक वह स्वयं अपनी हालत को न बदले। अब सावधान हो जाओ कि तुम ने अपनी हालत को बदल दिया है। निकट है कि तुम उसका परिणाम देखो। और कहते हो कि हम मुसलमान हैं। खुदा जानता है तुम जो कुछ करते हो। हे पाखंडियो! क्या अभी वह समय नहीं आया कि तुम्हारे दिल विनम्र हो जाएँ और खुदा के दण्ड के वादे से डरो हालाँकि तुम ने वे दिन देखे जो यहूदियों ने देखे थे। अतः तुम अन्धे हो? तौबा करो, तौबा करो इस से पहले कि तबाह हो जाओ। और खुदा की ओर बुलाने वाले पर क्रोधित मत हो तथा अपने रब्ब से मत लड़ो। क्या तुम खुदा के इरादे को रद्द कर सकते हो? हम भली-भांति जानते हैं कि तुम नहीं कर सकते।

يشاء، ألا تنظرون إلى قول الله - "فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ\*" - فقد قيل لكم ما قيل لليهود وأنتم تعلمون مآل أمرهم ولا تجهلون. اتقوا اتقوا، واتركوا التكبر واخشعوا، وادفعوا الرُّجْزَ وتطهروا، وارحموا ذراريكم ولا تظلموا، واتقوا الله الذي إليه تُصْرَفُونَ- لا اسمَ على السماء إلا اسم المنقطعين، فجاهدوا أن تُكْتَبَ أسماءكم في السماء، ولا تفرحوا بقشر الإسلام أيها المسلمون- قد اقتربت أيام الله، وإنه يذهب بالفاسقين منكم، ويأتي بقوم يحبهم ويحبونه- يذكرون الله ويذكرهم، ويُتَمَّ عليهم كل ما وعدكم من النعم، ولا تضرّونه شيئاً، فما لكم لا تتقون؟ إن مثل نبينا عند الله كمثل موسى، وإن موسى

अतः उस से डरो और मौत को याद करो। खुदा का वादा निस्सन्देह सच्चा है। अतः तबाही की आँधियों से डरो वह मालिक है जिसको चाहे देश दे और जिस से चाहे छीन ले। क्या खुदा तआला के कथन को नहीं देखते। वह तुम्हारे कामों को खूब देखता है। और तुम्हें वही कहा गया जो यहूदियों को कहा गया था और तुम उनका अंजाम भली भाँति जानते हो कि क्या हुआ। डरो, डरो और अभिमान को छोड़ दो और विनम्रता धारण करो तथा गन्दगी और अपवित्रता को स्वयं से दूर करो तथा पवित्र हो जाओ और अपनी सन्तान पर दया करो, अत्याचार न करो और खुदा से डरो क्योंकि अन्ततः उसके पास जाना है। आकाश के दफ्तर में उस का नाम लिखा जाता है जो शुद्ध रूप से खुदा के हो गए हैं। अतः प्रयास करो कि तुम्हारा नाम आकाश के पटल पर लिखा जाए और हे मुसलमानो! इस्लाम के छिलके पर गर्व मत करो खुदा के दिन निकट आ गए हैं तथा निकट है कि वह उन पापियों के बाज़ार की शोभा समाप्त कर दे जो तुम में से हैं और ऐसी क्रौम पैदा करे कि जो उससे प्रेम करे और वे उनसे प्रेम करें। वे उसे याद करें और वह उनको याद करे तथा नेमत के समस्त वादे जो उसने तुम से किए हैं उनके पक्ष में पूर्ण करे। और तुम उसे कुछ हानि नहीं पहुंचा सकते। फिर क्यों नहीं डरते खुदा के



وعد قومًا، وأتممه لقوم آخرين، وأهلك الله آباءهم في القلابة  
 لما كانوا قومًا عاصين. وكذلك يفعل بكم أيها المعتدون،  
 ويرحمكم أيها الصالحون. فاصلحوا ذات بينكم وأصلحوا  
 ما أفسدتم، ولا تقعدوا مع الذين يستكبرون. أتُعجزون ربَّ  
 السماء ببطشكم أو تخذعونه بخديعتكم؟ كل بل إنكم على  
 أنفسكم تظلمون. ولا أقول لكم عندي علم أو قوة. سبحان  
 الله. ما أنا إلا عبدٌ ضعيف، وأنطقني الذي يُنطق رسله، فما لكم  
 لا تفهمون؟ اتركوا الفاتحة، أو اعملوا بها حيائاً من الله إن كنتم  
 قومًا تتقون أتقرء ونها وهي لا تُجاوز حناجركم أيها المرء  
 ون؟ وإن المغضوب عليهم هم اليهود الذين حدركم الله من

नजदीक हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मूसा अलैहिस्सलाम के समान  
 हैं और तुम जानते हो कि मूसा ने एक क्रौम के साथ वादा किया परन्तु उस वादे  
 को दूसरी क्रौम के पक्ष में पूर्ण किया और खुदा ने उनके बापों को मैदान में तबाह  
 किया क्योंकि अवज्ञाकारी क्रौम थी। और खुदा यही मामला तुम्हारे साथ करेगा हे  
 सीमा का अतिक्रमण करने वालो! और हे संयम धारण करने वालो! तुम पर दया  
 करेगा। अब चाहिए कि सच्चाई और सुलह (मैत्री) अपनाओ और उस चीज को  
 ठीक करो। जिसे तुम ने तबाह कर दिया है तथा घमंड करने वालों के साथ मत  
 बैठो क्या संभव है कि अपने बल और शक्ति के साथ आकाश के रब्ब को थका  
 दो बल्कि अपने प्राण पर जुल्म करते हो मैं नहीं कहता कि मेरे हाथ में ज्ञान और  
 शक्ति है। सुब्हान अल्लाह! बल्कि मैं एक असहाय व्यक्ति हूँ और मुझे उसी खुदा  
 ने वाक् शक्ति दी जिसने रसूलों को वाक् शक्ति प्रदान की। फिर क्यों नहीं समझते  
 अब या तो फ़ातिहा को छोड़ो या खुदा से शर्म कर के उस पर अमल करो। यदि  
 तुम खुदा से डरने वाली क्रौम हो। क्या बात है कि फ़ातिहा को पढ़ते हो और वह  
 तुम्हारे गले से नीचे नहीं उतरती हे पाखंडियो! और सिद्ध हुआ कि **مغضوب**  
**عليهم** वही यहूदी हैं जिन के समान होने से खुदा ने तुम्हें डराया और जिन्होंने

مضاهاتهم، الذين فرطوا في أمر عيسى، فاسألوا أهل الذكر إن كنتم لا تعلمون. أنتظرون من دوني مسيحاً الذي يؤذى كمثلي، فتكفرونه وتكذبونه وتشتمونني كمثلي، وكذتم تقتلونني، وكفاكم هذا الوزر الذي احتملتكم بتكفيري، فلا تجسسوا مسيحاً آخر لتكفروه، أستطيعون أن نحملوا الوزرَيْن أيها المعتدون؟ ولا بُدَّ لكم أن تُكفروا المسيح الصادق لیتّم نبأ الله وقد كفرتموني وتم ما قُدّر لكم، فلا تطلبوا تكفيراً آخر إن كنتم تعقلون. وتفصيل المقام أن الله قد أخبر عن بعض اليهود في السورة الفاتحة إنهم كانوا محلّ غضب الله في زمن عيسى ابن الصديقة، فإنهم كفروه وآذوه وأثاروا له كل نوع الفتنة، ثم أشار إلى أن طائفة منكم كمثلهم يكفرون مسيحهم.

ईसा के बारे में कमी की। अतः यदि ज्ञान नहीं रखते तो ज्ञान रखने वालों से पूछो। क्या मेरे अतिरिक्त ऐसे मसीह की प्रतीक्षा करते हो जो मेरे समान कष्ट दिया जाए। फिर तुम उसको झुठलाओ और उसे काफ़िर कहो तथा मेरी तरह उस को गालियाँ दो और चाहो कि उसे मार डालो तथा यही गुनाह जो मुझे काफ़िर कहने के कारण तुम्हारे गले का हार हो गया है तुम्हारे लिए पर्याप्त है अब दूसरों को न ढूँढ़ो क्या तुम से हो सकता है कि दोहरा भार उठाओ और इस से चारा नहीं कि सच्चे मसीह को काफ़िर कहो ताकि खुदा की भविष्यवाणी पूरी हो। और तुम ने मुझे काफ़िर कहा और जो तुम्हारे लिए प्रारब्ध था प्रकट हो गया। अब यदि बुद्धिमान हो तो दूसरे व्यक्ति के लिए कुफ़्र न मांगो। उस स्थान का विवरण इस प्रकार से है कि खुदा तआला सूरह फ़ातिहा में उन कुछ यहूदियों के बारे में सूचना देता है जिन पर ईसा बिन सिद्दीका के युग में खुदा का प्रकोप उन पर आया। क्योंकि उन्होंने उसे काफ़िर कहा और सताया तथा हर प्रकार का उपद्रव किया। फिर खुदा तआला संकेत करता है कि तुम में से एक गिरोह यहूदियों के समान अपने मसीह को काफ़िर कहेगा।

ويكْمَلون جميع أنحاء المشابهة، ويفعلون به ما كانوا يفعلون. وأنتم تقرأون آية المَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ، ثم لا تلتفتون. أَعَلَمَّكُمْ اللهُ هذه عبثًا كوضع الشيء في غير محله أو كتبها لتذكير السورة جريمة ترتكبونها ما لكم لا تُمَعِنون؟ وما غَضِبَ اللهُ على تلك اليهود إلا لما كَفَرُوا برسوله عيسى وكذَّبوه وشتموه وكادوا أن يقتلوه من الحسد والهوى، وقد كتب عليكم قدرُ اللهِ أنكم تفعلون بمسيحكم كما فعل اليهود بمسيحهم، وقد فعلتم بي كمثله، فهل بقى هوى لكم يا حزب العدا أن تُكْفَرُوا وتكذَّبُوا وتؤذوا كمثلي نفسًا أخرى؟ وقد شهدت ألسنكم وأقلامكم ومكائدكم أنكم أتممت على ما أُشير إليه في سورة الفاتحة، فارحموا مسيحًا آخر وأقيلوه من

तथा हर प्रकार की समानता उन से पैदा कर लेंगे और उनके हाथों से वे सब काम होंगे जो यहूदियों ने किए और तुम **مغضوب عليهم** की आयत पढ़ते हो फिर उसकी ओर ध्यान नहीं देते। क्या खुदा ने यों ही यह सूरह तुम को सिखाई जैसा कि कोई किसी वस्तु को गलत स्थान पर रख दे या इस सूरह को इसलिए उतारा कि तुम को वह गुनाह स्मरण कराए जो तुम्हारे हाथ से होगा, क्यों ध्यानपूर्वक नहीं देखते। और खुदा उन यहूदियों पर ईसा को काफिर कहने के कारण और उसे झुठलाने तथा गालियाँ देने के कारण प्रकोपित हुआ और इसलिए भी कि वे लोभ और इर्ष्या के कारण चाहते थे कि उसे क्रत्ल कर दें। खुदा तआला का प्रारब्ध (तक्दीर) तुम्हारे हक में इसी प्रकार जारी हुआ है कि तुम अपने मसीह से वही करो जो यहूदियों ने अपने मसीह से किया। अब तुमने उसी प्रकार मेरे साथ व्यवहार किया। हे दुश्मनों के गिरोह! क्या कुछ इच्छा तुम्हारे दिल में शेष है जो चाहते हो कि फिर दूसरी बार मुझ जैसे दूसरे व्यक्ति को काफिर और पापी कहो और उसे कष्ट दो हालाँकि तुम्हारी जीभों, तुम्हारी लेखनियों और तुम्हारे छल-प्रपंचों ने इस बात पर गवाही दे दी कि तुम ने मेरे हक में वह सब कुछ पूरा कर लिया

هذه العزّة أيها المنتظرون- أما شعبتم بهذا القدر؟ أتريدون أن ينزل عيسى ابن مريم من السماء ثم تفعلوا به ما فعل اليهود به من قبل، ويجتمع عليه القارعتان والتكفيران والذلتان ويذوق اللعنة مرّتين، بل ثلاث مرّات★ ولن يجمع الله عليه اللعان الثلاث كما أنتم تزعمون- وقد لعنتم مسيحًا جاءكم منكم، وأتممت عليه ما كُتب في كتاب الله، فهو

है जिसका सूरह फ़ातिहा में संकेत है। अतः हे प्रतीक्षा करने वालो! दूसरे मसीह पर दया करो और इस मान-समान से उसे अलग रखो। क्या इतने से तुम्हारा पेट नहीं भरा। क्या चाहते हो कि मसीह इब्ने मरयम आकाश से उतरे और उस से वही करो जो इस से पूर्व यहूदियों ने उसके साथ किया और इस प्रकार उस पर दो संकट, दो झूठलाने और दो अपमान इकट्ठे हो जाएँ तथा दो लानतें★ बल्कि तीन लानतों का स्वाद चखे और खुदा उस पर तीन लानतें हरगिज़ जमा नहीं करेगा जैसा कि तुम अनुमान करते हो तथा एक मसीह तो तुम्हीं में से तुम्हारे पास आ चुका और

★ حاشية :- قد ثبت من مفهوم قوله تعالى غير المغضوب عليهم ان المسيح الموعود قد قدر له ان يلعنه الذين يقولون انا نحن المسلمون الذين غضب الله عليهم كما غضب على اليهود وهم لا يعلمون فان فرضنا ان المسيح الموعود هو المسيح الذي أنزل عليه الانجيل فعند ذلك تجتمع عليه لعنات ثلاث. لعنة من اليهود و لعنة من النصارى و لعنة من المسلمين الذين يكفرونه عند نزوله و يُكذّبون- فكان السرّ في انزال عيسى هو تكميل امر اللعان و ادخال المسلمين في الذين يلعنون- منه

☆ हाशिया :- खुदा तआला के इस कथन के मायने से सिद्ध हुआ कि मसीह मौऊद के लिए यह निश्चित था कि उस पर वे लोग लानत करेंगे जो अज्ञानतावश यह कहते हैं कि हम वे मुसलमान हैं जिन पर खुदा तआला का प्रकोप हुआ जैसा कि यहूदियों पर हुआ था। अतः यदि हम यह मान लें कि मसीह मौऊद वही मसीह है जिस पर इंजील उतरी तो ऐसी स्थिति में उस पर तीन लानतें जमा हो जाएँगी। यहूदियों की लानत, ईसाइयों की लानत और मुसलमानों की लानत जो मसीह के नुज़ूल के समय उसे काफ़िर कहेंगे और झूठलायेंगे। मानो कि ईसा अलैहिस्सलाम के उतरने में रहस्य यह था कि लानत की पूर्णता और मुसलमानों का उनमें सम्मिलित करना है जो लानत करते हैं। (इसी से।)

المسيح الموعود إن كنتم تتفكرون- سيقولون إننا لا نحضره  
 إلا تذلاً وطاعةً فكيف نكفره ونؤذيه وإنا به مؤمنون- قُلْ  
 هذا قدرٌ من الله كُتِبَ على حزبٍ منكم في الفاتحة، وإن قدر الله  
 لا يبدل أيها الجاهلون- ألا تقرءون الفاتحة وقد كنتم تصرون  
 عليها أيها المحذثون؟ اليوم عادا كم الفاتحة وأنتم عاديتموها  
 وصار التزامها عذاب أنفسكم كأنها جرعةٌ غير سائغٍ تبلعونها  
 ولا تستطيعون- ولا تتلون بعد ذلك هذه السورة إلا وأنتم تتألمون  
 ولا تتلون- غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ إِلَّا وَتَغْضِبُونَ على أنفسكم  
 وتندمون- وترونها عذاباً شديداً في كل حين تقرءون- فحينئذ  
 تحترق قلوبكم بلظى الحسرة وربما تودون لو كنتم تتركون-

तुम ने उस पर भविष्यवाणी पूरी कर दी जो सूरह फ़ातिहा में थी। अतः वही मसीह मौऊद है जिस पर वह भविष्यवाणी पूरी हो गई, कहेंगे कि हम पूर्ण विनीतता एवं विनम्रतापूर्वक उसके पास उपस्थित होंगे। फिर क्योंकर हो सकता है कि हम उसे काफ़िर कहें और कष्ट दें जबकि हम उस पर ईमान लायें। कह दे कि यह खुदा का प्रारब्ध है जो तुम में से एक गिरोह के बारे में सूरह फ़ातिहा में लिखा गया है और खुदा का प्रारब्ध कभी नहीं बदलता हे हदीस का अनुकरण करने वालो! क्या अब सूरह फ़ातिहा को नहीं पढ़ते और तुम तो उस पर बहुत आग्रह किया करते थे। आज फ़ातिहा तुम से दुश्मनी करती है और तुम उस से करते हो और उसको अपने ऊपर अनिवार्य कर लेना तुम्हारी जान पर कठोर अज़ाब हो गया है जैसे कि वह एक अप्रिय घूँट हो जिसे निगलना चाहते हो परन्तु निगल नहीं सकते तथा आशा है कि अब इसके बाद तुम उस सूरह को पीड़ा और कष्ट के बिना न पढ़ोगे और जब **غَيْرِ الْمَغْضُوبِ** का शब्द पढ़ोगे तो तुमको अपने ऊपर बहुत क्रोध आएगा और पछताओगे तथा जिस समय उसे पढ़ोगे तुम्हारे प्राण उस से कठोर अज़ाब महसूस करेंगे उस समय तुम्हारे दिल पाश्चाताप की आग से भुन रहे होंगे और बहुत चाहोगे कि काश कि हम सूरह फ़ातिहा का पढ़ना छोड़ देते।

## الْبَابُ الرَّابِعُ

إن الذين يزعمون أن عيسى صعد إلى السماء ليس عندهم سلطان وإن هم إلا يكذبون. أكتبه الله في القرآن فيتبعونه، أو قاله الرسول فيقولونه كلاً بل هم يفترون. ولن تجد آية في هذا الباب، ولا حديثاً من نبينا المستطاب، ولا يقبله العقل السليم أيها العاقلون. وقالوا إن المسيح رُفِعَ إلى السماء الثانية وُصِّلَ مقامه رجل آخر، فانظر إلى كذبٍ ينحتون. أكانوا حاضرين عند هذه الواقعة لنا إن كانوا يصدّقون. كلاً بل إنهم يفترون أو وجدوها في الكتاب والسنة، فليخرجوها على الله ورسوله ولا يتّقون. ولا يفكّرون في أنفسهم أن العقل

## चतुर्थ अध्याय

जिन का यह गुमान है कि ईसा अलैहिस्सलाम आकाश पर गए उनके हाथ में कोई प्रमाण नहीं बल्कि वे झूठ बोलते हैं। क्या यह बात खुदा ने कुर्आन में लिख दी है इसलिए उसका अनुकरण करते हो या यह बात रसूल ने कही है इसलिए वे भी कहते हैं, हरगिज़ ऐसा नहीं बल्कि वे स्वयं बात बनाते हैं। इस बारे में कोई आयत और हदीस नहीं पाई जाती और इस बात को न सद्बुद्धि स्वीकार करती है। और कहते हैं कि मसीह दूसरे आसमान पर उठा लिया गया और उसके स्थान पर एक दूसरा व्यक्ति सूली दिया गया। इस झूठ को देखो जो उन्होंने बनाया है। क्या वे इस घटना के घटित होने के समय उपस्थित थे या उसको कुर्आन और हदीस में देखा है? चाहिए कि वह स्थान हमें भी दिखाएँ यदि सच कहते हैं। ऐसा हरगिज़ नहीं अपितु खुदा और उसके रसूल पर झूठ बाँधते हैं तथा नहीं डरते और अपने दिल में नहीं सोचते। बुद्धि इस किस्से की विरोधी है और बुद्धिमान उसका हरगिज़ सत्यापन

يخالف هذه القصّة ولا يصدّقها المتفرّسون- فإنّ الذي صُلب في مصلب عيسى إنّ كان من المؤمنين فكيف صلبه الله وقد قال في التوراة إنه من صُلب فهو ملعون- ألَعَنَ عَبْدًا وَيَعْلَمُ أَنَّهُ مَوْمن، سبحانه وتعالى عمّا يصفون- وقد لعن الله في التوراة كلّ مَنْ صُلب فاسأل أهل التوراة إن كنت من الذين لا يعلمون- وإن كان المصلوب من أعداء عيسى ومن الكفار فكيف سكت المصلوب عند صلبه وما برّأ نفسه، وكيف بقى أمره كالمكنون؟ وكان المصلوبون لا يموتون إلا إلى ثلاثة أيام أو يزيدون- فكانت المهلة كافية، فاسأل الذين يصلبون عدوًّا من أعداء عيسى كيف سكت المصلوب إلى هذا الأمد أيقبله العاقلون؟ ألم يبق له شهداء من أمّه وزوجه وإخوانه وجيرانه وأحاببه وأصحابه ومن الذين كان أودعهم أسرارَه وكانوا

नहीं करते क्योंकि वह सलीब पर मारा गया व्यक्ति जो ईसा के स्थान पर सूली दिया गया यदि वह मोमिन था तो खुदा ने उसे किस प्रकार छोड़ दिया कि वह सूली दिया जाए। हालाँकि तौरात में खुदा ने फ़रमाया है कि जो सूली देकर मार दिया जाए वह लानती है। क्या खुदा ने ऐसे व्यक्ति को लानती किया जिस के बारे में जानता था कि वह मोमिन है उसका अस्तित्व इन बातों से पवित्र है जिसे वे उस की ओर सम्बद्ध करते हैं। और खुदा तौरात में प्रत्येक सलीब पर मरने वाले को लानती ठहराता है यदि तुम नहीं जानते तो तौरात वालों से पूछो। और यदि वह सलीब पर मारा गया व्यक्ति ईसा के दुश्मनों में से था और काफ़िर था तो सलीब के समय क्यों चुप रहा तथा अपने आप को बरी सिद्ध क्यों न किया और उस की बात क्यों गुप्त रही? सलीब दिए जाने वाला सलीब पर तीन दिन तक बल्कि तीन दिन से अधिक तक जीवित रह सकता था। अतः इतनी मोहलत इस जांच-पड़ताल के लिए पर्याप्त थी। अब उन लोगों से जिन्होंने ईसा के एक शत्रु को फाँसी दी पूछो कि वह सलीब दिया जाने वाला इतने दिनों तक क्योंकर

يعرفونه - هيهات هيهات لما تزعمون - وشتان بين الحق وبين هذه المفتريات، أما بقى عندكم مثقال ذرة من عقل به تعقلون؟ بل هذه القصص خرافات لا أصل لها، ولا تقبلها الفطرة الصحيحة، ولا توجد إليها الإشارة الجليّة أو الخفيّة في كتاب الله ولا في أثر رسوله، فالذين يتبعونها لا يتبعون إلا سَمْرًا وإنّ هم إلا يعمهون - وأما نزول عيسى فاعلم أن لفظ النزول عربٌ يُستعمل في محل الإكرام والإجلال، وتعلمون معنى النزول أيها المتفقّهون وما رأينا في كتب الحديث خبرًا من رسول الله مرفوعًا متّصلًا يُفهم منه أن عيسى ينزل من السماء، وما وجدنا لفظ السماء في أحد من الأحاديث

चुप रहा क्या बुद्धिमान इसे स्वीकार करते हैं? क्या इसके लिए उसकी माँ और पत्नी तथा भाई और पड़ोसी एवं दोस्त गवाह न बने? और क्या उन्होंने भी गवाही न दी जो उसके राजदार और उसके पहचानने वाले थे? इस गुमान पर जो तुम करते हो अफ़सोस है। सच्चाई में और इन झूठों में बड़ा अन्तर है। क्या तुम्हारे अन्दर थोड़ी सी बुद्धि शेष नहीं रही कि जिस से बात की तह तक पहुँच जाओ यह सब बेकार किस्से हैं उन की कुछ वास्तविकता नहीं और सही स्वभाव इसे स्वीकार नहीं करता तथा उनके बारे में और कुर्आन करीम में कोई गुप्त और स्पष्ट संकेत तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस में नहीं पाया जाता। अतः जो लोग उन का अनुसरण करते हैं वे वास्तव में झूठ का अनुसरण करते हैं और भटकते फिरते हैं, लेकिन जहां तक ईसा के उतरने का सम्बन्ध है तो तू जान ले कि नुज़ूल का शब्द अरबी शब्द है जो किसी के सम्मान और आदर के लिए प्रयोग किया जाता है और नज़ील के अर्थ विद्वान जानते हैं और हम ने हदीस की पुस्तकों में ऐसी कोई मफ़ूर् मुत्तसिल हदीस नहीं देखी जिस से यह प्रकट हो कि ईसा आकाश से उतरेगा और न हमने 'समा' (आकाश) का शब्द किसी हदीस सही सद्दृ में पाया और यह बात हदीस के विद्वान भली भाँति



الصحيحة القوية، وهذا أمر بديهى يعلمه المحدثون، ولا ينكره إلا الذى جهل أو تجاهل، ولا ينكره إلا العمون- ومع ذلك فإنه أمرٌ خالف القرآن وعارضه، فبأى حديث بعد القرآن تؤمنون؟ وقد قال الله سبحانه ما مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ فَصَّرَحَ بِأَنَّ الْأَنْبِيَاءَ الَّذِينَ كَانُوا مِنْ قَبْلِ مَا تَوَ كَلَّمُ وَالْمُرْسَلُونَ- وهذه آية تلاها أبو بكر الصديق رضى الله عنه- إذ كان الإصحاب يختلفون- أعنى إذا اختلف بعض الناس من الصحابة في موت رسول الله صلى الله عليه وسلم، وقال عمر

جानते हैं और इस बात का इन्कार उसके अतिरिक्त कोई नहीं करता जो मूर्ख हो या स्वयं को मूर्ख प्रकट करे या जो अन्धा हो तथा इसके अतिरिक्त यह बात कुर्आन के विरुद्ध तथा उसके विपरीत है। अतः कुर्आन के अतिरिक्त कौन सी हदीस है जिस पर ईमान लाते हो। और खुदा फरमाता है कि

مَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ (145 - इमरान - आले)

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) रसूल हैं और उन से पहले रसूल गुजर चुके हैं। यह आयत बताती है कि पहले समस्त नबी मृत्यु पा चुके हैं। इसी आयत को हज़रत अबू बकर सिद्दीक ने समस्त सहाबा को सुनाया। जब उन्होंने मतभेद किया अर्थात् जब कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु में मतभेद किया और हज़रत उमर ने कहा कि आंहज़रत

★ حاشية :- قد جرت سنة اهل اللسان في لفظ خلا- انهم اذا قالوا مثلاً خلا زيد من هذه الدار او من هذه الدنيا فيريدون من هذا القول انه لا يرجع اليها ابدا- وما اختار الله هذا اللفظ الا اشارة الى هذه المحاوره كما لا يخفى- منه

☆ हाशिया :- अरब लोगों का 'खला' शब्द के बारे में यह नियम प्रचलित है कि उदाहरणतया जब वे यह कहें कि जैद इस घर या इस दुनिया से गुजर गया तो इस कथन से उन का अभिप्राय यही होता है कि वह इस दुनिया की ओर कभी भी नहीं लौटेगा और यह बात स्पष्ट है कि खुदा तआला ने भी इस शब्द को इसी मुहावरा की ओर संकेत करने के लिए ग्रहण किया है। (इसी से।)

إنه سيرجع كما يرجع عيسى، وكذلك قال بعضهم الذين كانوا يخطئون- فسمع أبو بكر كلامهم وما كانوا يزعمون، فقام على المنبر واجتمع الصحابة حوله وتلا الآية المذكورة وقال اسمعون- وكانوا مجتمعين كلهم لموت رسول الله صلى الله عليه وسلم فسمعوا وتأثروا بأثر عجيب كأن الآية نزلت في ذلك اليوم وكانوا يبكون ويصدقون- وما بقى أحد منهم في ذلك اليوم إلا أنه آمن بصميم القلب أن الأنبياء كلهم قد ماتوا وقد أدركهم المنون- فما بقى لهم أسف على موت رسولهم ولا محل غبطة لحبيبهم، وتنبهوا على موته، وفاضت عيونهم وقالوا إنا لله وإنا إليه راجعون- وكانوا يتلون هذه الآية في السكك والأسواق والبيوت ويبكون- وقال حسان بن

उसी प्रकार वापस आएंगे जैसा कि ईसा वापस आएगा और इसी प्रकार कुछ अन्य ग़लती करने वालों ने कहा तो उस समय हज़रत अबू बकर ने उनकी बात सुनी और उनके विचार से परिचित हुए। तब मिम्बर पर खड़े हुए और सहाबा उन के चारों ओर एकत्र हो गए फिर कथित आयत पढ़ी और फ़रमाया – सुनो! और सब लोग रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु पर इकट्ठे थे जब (उन्होंने) यह आयत सुनी तो अपने दिलों में अद्भुत प्रभाव पाया और समझे कि जैसे यह आयत आज ही उतरी है। उसको सुन कर उन्होंने रोना आरम्भ किया और सत्यापन किया। उस दिन ऐसा कोई व्यक्ति न रहा जो उस पर ईमान न लाया हो कि समस्त नबी मृत्यु पा चुके हैं अब उनको अपने रसूल की मौत पर कोई शोक-संताप और अपने प्यारे के लिए कोई पछताने और अफ़सोस करने का स्थान न रहा और उसकी मौत पर सावधान और अवगत हो गए तथा आंसुओं के दरिया आँखों से बहाए और इन्ना लिल्लाह कहा तथा इस आयत को गली-कूचों और घरों में पढ़ते थे तथा रोते थे। अतः हस्सान बिन साबित ने हज़रत अबू बकर के खुत्बे के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

ثابت وهو يرثى لرسول الله صلى الله عليه وسلم بعد خطبة  
 أبي بكر كُنْتَ السَّوَادَ لِنَاظِرِي فَعَمِي عَلَيْكَ النَّاطِرُ مَنْ شَاءَ  
 بَعْدَكَ فَلَيْمَتْ فَعَلَيْكَ كُنْتُ أَحَادِرُ فَلَا أَبَالِي أَنْ يَمُوتَ مُوسَى أَوْ  
 عِيسَى فَانظُرُوا إِلَيْهِمْ كَيْفَ أَحَبُّوا نَبِيِّهِمْ وَكَيْفَ كَانَ تَصَدَّرَ  
 مِنْهُمْ آدَابُ الْمَحَبَّةِ وَأَثَارُهَا أَيُّهَا الْمَجَادِلُونَ- يريد أن خوفي كله  
 كان عليك، وانظروا كيف اقتضت غيرتهم أنهم ما رضوا فإذا  
 مات بحياة نبي بعد موت رسول الله، فهُدُوا إِلَى الصِّرَاطِ كَمَا  
 يُهْدَى الْعَاشِقُونَ- واجتمعت قلوبهم على مفهوم آية قَدْ خَلَتْ  
 مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ وَأَمَنُوا بِهِ وَكَانُوا بِهِ يَسْتَبْشِرُونَ- ثم أتيتم  
 ما تقولون- أتأمركم محبتكم بنبيكم أن يبقى بعدهم- ما  
 قدرتم نبيكم حق قدره وتقولون عيسى على السماء حيًّا

के शोक-गीत में-कहा तू मेरी आंख की पुतली था अब तेरे चले जाने से मैं  
 अंधा हो गया। तेरे मरने के बाद जो चाहे मेरे मुझे तो तेरे ही मरने का डर था  
 अर्थात् मुझे तो समस्त डर यही था कि कहीं तू न मर जाए परन्तु अब जबकि  
 तू ही मर गया तो अब मुझे कुछ परवाह नहीं कि मूसा मरे या ईसा मरे। अतः  
 विचार करो कि वे अपने नबी को कितना प्यार करते थे और किस प्रकार प्रेम  
 के नियम और निशान उन से प्रकट होते थे। और यह भी विचार करो कि उनके  
 स्वाभिमान ने हरगिज़ न चाहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम  
 की मृत्यु के पश्चात् किसी नबी के जीवित रहने पर राजी हो जाएँ। अतः खुदा  
 ने उनको इस प्रकार से सच्चाई का मार्ग-दर्शन किया जिस प्रकार प्रेमियों का  
 मार्ग-दर्शन करता है और उन के दिलों ने **قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ** की  
 आयत के अर्थ पर सहमति की। और उस पर ईमान लाए तथा उस पर प्रसन्न  
 हुए। फिर सहाबा के बाद तुम्हारी बारी आई। तुम ने अपने नबी को वह महत्ता  
 नहीं दी जो कि महत्ता देनी चाहिए थी और ऐसी बातें करते हो। क्या तुम्हारा  
 प्रेम वैध रखता है कि ईसा आकाश पर जीवित हो और हमारे नबी चौदह सौ

وقد مضى ألفٌ وقريبٌ من ثلثه على موت رسول الله؟ ساء ما تحكمون- أَرْضِيتُمْ بأن يكون نبيكم مدفونًا في التراب في المدينة، وأما عيسى فهو حيٌّ إلى هذا الوقت؟ اتقوا الله أيها المجترءون- قد كان إجماع الصحابة على موت عيسى أولَ إجماعٍ انعقد في الإسلام باتفاق جميعهم، وما كان فردًا خارجًا منه كما أنتم تعلمون- وهذا منّة من الصديق رضى الله عنه على رقاب المسلمين كلهم أنه أثبت بنص القرآن موت الأنبياء كلهم وموت عيسى، فهل أنتم شاكرون؟ ثم خلف من بعدهم خلفٌ يتركون القرآن ويخالفون الرحمن وعلى الله يفترون- وقد علموا أن القرآن توفى المسيح، وكرّر البيان الصريح، ومنعه من الصعود إلى السماء، وبشّر ينتظرون؟ وقالوا ما نرى ضرورة

वर्ष से मृत्यु प्राप्त हों? क्या तुम इस बात पर प्रसन्न हो कि तुम्हारे नबी मदीना में धरती के नीचे दफन किए हुए हों किन्तु ईसा इस समय तक जीवित हो? हे उद्दण्डो! खुदा से डरो। यह पहला इज्मा था जो समस्त सहाबा की सहमति से इस्लाम में आयोजित हुआ और कोई व्यक्ति भी इस इज्मा (सर्व सहमति) से बाहर न रहा और यह हज़रत सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हो का सम्पूर्ण मुसलमानों की गर्दन पर उपकार है कि उन्होंने समस्त नबियों की मौत को और ईसा की मौत को कुर्आन से सिद्ध किया। क्या तुम कृतज्ञ हो? फिर उन के स्थान पर वे लोग बैठे जो कुर्आन को छोड़ते हैं और रहमान (कृपालु) के विरुद्ध करते हैं और खुदा पर झूठ बांधते हैं तथा भली-भांति जानते हैं कि कुर्आन मसीह को मृत्यु देता है और उसे दोबारा स्पष्ट तौर पर वर्णन करता है और आकाश पर चढ़ने से उसे रोकता है और मुसलमानों को खुशखबरी देता है कि खातमुल खुलफ़ा और इस उम्मत का मसीह इसी उम्मत में से होगा। अब इसके बाद कौन से मसीह की प्रतीक्षा करते हो और कहते हैं कि हम को मसीह की आवश्यकता नहीं और कुर्आन हमारे लिए पर्याप्त है। ये जान बूझ कर खुदा की किताब को

مسيح و كفانا القرآن، وقد كذبوا كتاب الله وهم يعلمون- ولو كانوا يتبعون القرآن لما كذبوني، لأن القرآن يشهد لي ولكنهم كذبوا، فثبت أنهم يتصلفون وبالقرآن لا يؤمنون- وتكذب ألسنتهم، وليس في قلوبهم إلا الدنيا، وإليها يتميلون- ويرون أن الملك قد زلزل و حلَّ السَّامُ وهَدَّرَ الجِمامُ ثم لا يرجعون- أفلم ينظروا إلى مفاصد الأرض فتكون لهم قلوب يعقلون بها، ولكنهم قوم يستكبرون- أيكفرون بآدم هذا الزمان وقد خُلِقَ على الأرض مِن كل نوع دابة أفلا ينظرون؟ وتراءى بعض الناس كالكلاب، وبعضهم كالذئاب، وبعضهم كالخنازير، وبعضهم كالحمير، وبعضهم كالإفاعى يلدغون- وما من حيوان إلا وظهر كمثل حزبٍ من النَّاسِ وهم حقٌّ فَتَقَّها، ألم يأن أن

झुठला रहे हैं और यदि कुर्आन का अनुकरण करते तो मुझे न झुठलाते क्योंकि कुर्आन मेरी गवाही देता है। परन्तु वे झुठलाते हैं यहाँ से सिद्ध हुआ कि वे व्यर्थ डींगे मारते हैं और कुर्आन पर उन का ईमान नहीं और उनकी जीभ झूठ बोलती है तथा उनके दिल में संसार के प्रेम के अतिरिक्त और कुछ नहीं और उसकी ओर झुके हुए हैं तथा देखते हैं कि देश में भूकम्प आ गया है और सार्वजनिक मौत पड़ रही है तथा मौत कबूतर की तरह आवाजें कर रही हैं फिर लौटते नहीं। काश! पृथ्वी के उपद्रवों को देखते तब उनकी आंखें खुलतीं और बुद्धि आती परन्तु यह एक घमंडी क्रौम है क्या इस युग के आदम का कुफ्र करते हैं हालाँकि पृथ्वी की पीठ पर हर एक प्रकार का कीट पैदा हो गया है क्या नहीं देखते? बहुत लोग कुत्तों की तरह हो गए हैं और कुछ भेड़ियों की तरह, कुछ सूअरों की तरह और कुछ गधों की तरह तथा कुछ साँपों की तरह डंक मारते हैं और ऐसा कोई जानवर नहीं जो लोगों में से एक गिरोह उस जैसा न हो गया हो और कार्यों में उसके समान न हो तथा ऐसा ही पृथ्वी भी ऐसी फटी जैसा कि फटनी चाहिए थी। क्या अब तक समय नहीं आया कि उन प्राणियों के बाद

يخلق الله آدم بعدها كمثلها يعملون- وكذلك فَتَقَتِ الارض  
وينفخ فيه روحه، ولا تبديلَ لِسُنَّةِ الله أيها العاقلون- وإذا قيل  
لهم سارِعوا إلى خليفة الله، واتَّبِعُوا ما كشف الله عليه، لعلكم  
تُرْحَمُونَ، رأيتهم تحمّر أعينهم من الغيظ، وقالوا ما كان لنا  
أن نتَّبِعَ جاهلاً ونحن أعلم منه، فعليه أن يبايعنا، أنبايع الذي  
لا يعلم شيئاً وإنا لعالمون- فليصبروا حتى يرجعوا إلى ربهم  
ويظلموا على صورهم، وذَرَّهم وما يكيدون- وقد وسم الله على  
خراطيمهم، وأظهر حقيقة علومهم، ثم لا يتندّمون- وإذا دُعوا  
إلى الحق تعرف في وجوههم المنكّر، ويمرّون علينا وهم  
يسبّون-

أولئك الذين طبع الله على قلوبهم، وأعمى أبصارهم،

आदम को पैदा करे। और अपनी रूह उसमें फूँके। हे बुद्धिमानो! भली भाँति जान लो कि अल्लाह की सुन्नत हरगिज़ नहीं बदलती और जिस समय उनसे कहा जाए कि बहुत शीघ्र खुदा के खलीफ़ा की सेवा में उपस्थित हो जाओ और उसके इल्हामों का अनुकरण करो ताकि तुम पर रहम (दया) किया जाए। उन की आँखें क्रोध से लाल हो जाती है। और कहते हैं कि हमें क्या हुआ कि हम एक मूर्ख का अनुकरण करें हालाँकि हम उससे अधिक विद्वान हैं बल्कि उन्हें हमारी बैअत करनी चाहिए। क्या हम ऐसे व्यक्ति की बैअत करें कि उसे ज्ञान से कुछ हिस्सा नहीं और हम विद्वान हैं। अतः सब्र करना चाहिए यहाँ तक कि अपने प्रतिपालक के पास जाएँ और अपनी सूतों से परिचित हों। और उनको तथा उनकी दुर्भावनाओं को जाने दे। और प्रकट हो गया है कि खुदा ने उन की नाकों पर दाग दिया है और उनके ज्ञान की वास्तविकता को सब में फैला दिया है तथा इस सब के बावजूद शर्मिन्दा एवं लज्जित नहीं होते। और जिस समय उनको सच्चाई की ओर बुलाया जाए त्यौरी चढ़ाते हैं और गलियाँ देते हुए गुज़र जाते हैं।

ये सब लोग हैं जिनके दिलों पर खुदा ने मुहर लगाई और उनकी आँखों

وطمس وجوههم، فهم لا يؤانسون- وإنهم ينتظرون المسيح من السماء، ويفرحون بكلمات مدسوسة أدخلت في الإسلام بسبب النصارى عندما كانوا يُسلمون- وكيف ينزل الذى أنزلَ عليه الإنجيل وقد قال القرآن- مِنْكُمْ ★، فهل يُهلك إلا الكاذبون- أنزلَ عليهم قرآن آخر، أو شابها اليهود فحرّفوا كما كانوا يحرفون؟ وإن القرآن قد توفى المسيح، والمسيح أقرّ به فى القرآن، ألا يتدبّرون قوله فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي، أم على القلوب أقفالها أم هم عمون؟ وإن القرآن أشار فى أعداد سورة العصر إلى وقت مضى من آدم إلى نبينا بحساب القمر، فعُدّوا إن كنتم تشكّون- وإذا تقرّر هذا فاعلموا أنّي خلقت فى الألف

को अँधा किया और उनके मुँहों को औँधा कर दिया। वे प्रेम को नहीं अपनाते और वे आकाश से एक मसीह के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं तथा उन बातों पर प्रसन्न होते हैं और गर्व करते हैं जो बातें ईसाइयों ने इस्लाम लाने के बाद इस्लाम में सम्मिलित कीं। और कैसे संभव है कि वह मसीह आए जिस पर इन्जील उतरी थी हालाँकि कुर्आन 'मिनकुम' कहता है ★ अतः झूठा ही तबाह होता है। क्या उन पर दूसरा कुर्आन उतरा है या यहूदियों के समान हो कर अक्षरांतरण (अक्षरों में परिवर्तन करना) का पेशा अपनाया है तथा सिद्ध है कि कुर्आन मसीह को मृत्यु देता है तथा मसीह कुर्आन में अपनी मृत्यु का इक्रार करता है क्या उसके कथन पर कुछ विचार नहीं करते। उन के दिलों पर ताले लग गए हैं या अन्धे हैं और कुर्आन सूरह अस्त्र की संख्या में चन्द्रमा के अनुसार उस समय

★हाशिया :- मैंने सुना है कि कुछ मूर्ख कहते हैं कि महदी बनी फ़ातिमा में से होगा, यह व्यक्ति कैसे कहता है कि मैं महदी मा'हूद हूँ जबकि वह बनी फ़ातिमा में से नहीं है। इसका उत्तर यह है कि वंश और नस्ल की वास्तविकता खुदा जानता है, इसके बावजूद मैं ही महदी और मसीह मौऊद हूँ जिसकी प्रतीक्षा थी। यह कहीं नहीं आया कि वह बनी फ़ातिमा में से होगा। इसलिए खुदा और क्रयामत से डरो। (इसी से।)

السادس في آخر أوقاته كما خُلِق آدم في اليوم السادس في آخر ساعاته، فليس لمسيحٍ من دوني موضعٌ قدم بعد زماني إن كنتم تفكرون ولا تظلمون. فأنا صاحب الزمان لا زمان بعدى، فبأي زمان تُنزلون مسيحكم المفروض أيها الكاذبون؟ وقد اتَّفَق على هذه العِدَّة التوراة والإنجيل والقرآن، فاسألوا أهل الكتاب إن كنتم ترتابون. وقد مضى آخر الألف السادس، وما بقى وقتُ نزول المسيح بعده، وإن في هذا الآية لقوم يطلبون - وكان هذا من معالم الموعود في القرآن ويعلمها المتدبرون - وإن الألف السادس كالיום السادس الذي خُلِق فيه آدم، وإنَّ يوماً عند ربك كآلف سنةٍ ممَّا تُعدّون.

की ओर संकेत करता है जो आदम से हमारे नबी तक गुज़रा है। फिर यदि संकेत है तो गिन लो और यह निश्चित हो गया है तो जान लो कि मैं छठे हज़ार के अन्तिम समय में पैदा किया गया हूँ जैसा कि आदम छठे दिन में उसकी अन्तिम घड़ी में पैदा किया गया। अतः मेरे अतिरिक्त दूसरे मसीह के लिए मेरे युग के बाद क्रम रखने का स्थान नहीं यदि विचार करो और अन्याय को न अपनाओ। अतः मैं समय पर आने वाला मौऊद हूँ और मेरे बाद कोई युग नहीं। और हे झूठे! वह कौन सा युग होगा जिसमें तुम अपने काल्पनिक और अवास्तविक मसीह को उतारोगे और उस युग पर तौरात, इन्जील तथा कुर्आन सब सहमत हैं। यदि सन्देह है तो अहले किताब से पूछ लो निस्सन्देह छठे हज़ार का अन्त गुज़र गया और इसके बाद मसीह के उतरने के लिए कोई समय और अवसर न रहा, यद्यपि इसमें अभिलाषियों के लिए एक निशान है। और यह बात कुर्आन में उस मौऊद की निशानियों में से थी और उसको विचार करने वाले जानते हैं तथा यद्यपि छठा हज़ार उस छठे दिन की भांति है जिस में आदम पैदा किया गया था जैसा कि खुदा तआला का कथन है कि एक दिन तेरे प्रतिपालक के नज़दीक हज़ार वर्ष के समान है तुम्हारे हिसाब से।



## الْبَابُ الْخَامِسُ

يا أهل الدهاء والاتقاء من الناظرين - اعلموا أن زماننا هذا هو آخر الزمان ★ وأن من الآخرين - وإن يومنا هذا يوم الجمعة حقيقةً، وقد جُمعت فيه أناسٌ ديارٍ وأرضين، وجمعت كل ما تحتاج إليه نفوس الناس من سعادة الدنيا والدين ومن أنواع العلوم والمعارف وأسرار الشرع المتين، وزُوجت النفوس، فترى كلَّ بابورة تأتي عند إصباحها وإمسائها بأفواج

## पंचम अध्याय

हे खुदा से डरने वाले बुद्धिमान पाठको! अवगत रहो कि यह युग वही अन्तिम युग है ★ और मैं बाद में आने वालों (आखिरीन) में से हूँ। और हमारा यह दिन वास्तव में जुमे (शुक्रवार) का दिन है क्योंकि इसमें हर देश और हर पृथ्वी के लोग एकत्र किए गए हैं तथा इस दिन में संसार और धर्म के सौभाग्य में प्रत्येक चीज़ एकत्र की गई है जिसकी लोगों को आवश्यकता होती है और हर प्रकार की विद्याएँ, अध्यात्मज्ञान और ठोस तर्क वाली शरीअत के रहस्य एकत्र हो गए हैं और आपस में लोगों के संबंध बढ़ गए हैं जैसा कि देखते हो

★ لا يقال ان ساعة القيامة مخفية فلا يجوز ان يقال لزمان انه هو اخر الازمنة فاننا لا نعيّن الساعة بل نقول انها غير معين في هذه الساعات المعينة ولا شك ان القرآن شبه الوف الدنيا بايام الخلقة فيستنبط من هذا كل ما قلنا كما لا يخفى على ذوى الفطنة منه

अनुवाद- यह नहीं कहा जा सकता कि क्रयामत की घड़ी छुपी हुई है और न ही यह वैध है कि किसी ज़माने को कहा जाए कि वह अंतिम ज़माना है। अतः हम क्रयामत का निर्धारण नहीं करते अपितु हम यह कहते हैं कि वह उन निर्धारित घड़ियों में अनिर्धारित है। और निसंदेह पवित्र कुरान ने संसार के हजारों वर्षों की सृष्टि निर्माण के दिनों से समानता वर्णन की है। अतः हमारा हर कथन इसी से उद्धृत होता है जैसा कि बुद्धिमानों पर स्पष्ट है।

من المشرّقين والمغربّين، وجمعتُ بها ثمار المشرق والمغرب بإذن الله أرحم الراحمين، وفي آخر الأمر يجمع الله فيه شملَ ديننا رحمةً على هذه الأمة وعلى العالمين، ويُنجي الخلق من شفا حُفرة كانوا عليها. وعدُّ من الله وهو أصدق الصادقين، ويظهر الإسلام على الأديان كلها، وترى جمعاً من كل قوم يدخلون فيه توابين - فلا شك أن زمننا هذا جُمعةٌ، تشهد الأرض والسماء عليه، وقد جُمع فيه كل ما تفرّق في الأولين - وإني خلقتُ في هذه الجمعة في ساعة العصر والعسر للإسلام والمسلمين، كما خلق آدم صفى الله في آخر ساعة الجمعة - وإن

कि प्रत्येक रेलगाड़ी सुबह-शाम पूरब और पश्चिम से समूह के समूह लोग लाती है तथा इसके कारण पूरब और पश्चिम के मेवे खुदा की आज्ञा से एकत्र हो गए हैं। और आशा है कि अन्ततः दयालु खुदा हमारे धर्म की उथल-पुथल को दूर कर देगा और सृष्टि को उस गढ़े के किनारे से हटा लेगा जिसके किनारे पर वे खड़े हैं। यह खुदा का वादा है और वह समस्त सच बोलने वालों से अधिक सच बोलने वाला है। और इस्लाम समस्त धर्मों पर विजयी होगा। और प्रत्येक क्रौम के गिरोह तौबा और निष्कपट दिल के साथ उसमें सम्मिलित होंगे। अतः निस्सन्देह यह हमारा ज़माना जुम्अः है और आसमान तथा पृथ्वी इस पर गवाही देते हैं और इसमें हर एक चीज़ एकत्र हो गई है जो पहले लोगों में अस्त-व्यस्त थी। और मैं इस जुम्अः (शुक्रवार) में असर के समय तथा ऐसे समय में जबकि इस्लाम और मुसलमानों को तंगी ने घेर लिया था पैदा किया गया हूँ। जैसा कि आदम सफ़ीयुल्लाह जुम्अः के अन्तिम समय में पैदा किया गया और आदम का युग इस समय के लिए नमूने के तौर पर था तथा उसके अस्त्र का समय इस अस्त्र के लिए साए (प्रतिबिम्ब) के तौर पर था और इसमें इस्लाम का गला घोंटा गया तथा हमारे धर्म पर संकट आए और निकट है कि धर्म का सूर्य अस्त हो जाए और स्पष्ट है कि इन दिनों इस्लाम का प्रकाश

زمانه كان نموذجاً لهذا الحين، وكان وقت عصره ظللاً لهذا العصر الذي عُصِرَ الإسلام فيه وصُيِّتَ مصائب على ديننا، وكادت أن تغرب شمس الدين - وترون في هذه الأيام أن نور الإسلام قد عُصِرَ من كثرة الظلام واللائم ووصول المخالفين بالإنقلام والمكذِّبين وكاد أن لا يبقى أثر منه لو لم يتداركه فضلُ الله الكريم المُعين - فاقتضتْ غيرُةُ الله أن يبعث فيه مجدداً يشابه آدم، فخلقتني في هذا اليوم في وقت العصر أعني ساعة العسر وعلمني من لدنه وأكرم، وأدخلني في عباده المكرمين، وجعلني حَكَمًا للأقوام الذين يختلفون وهو أحكم الحاكمين.

अंधकार की अधिकता और कमीन लोगों के बाहुल्य और शत्रुओं के आक्रमणों से जो क्रलम (लेखनी) के साथ है और झुठलाने वालों के कारण कम हो गया है तथा निकट था कि उसका कुछ निशान भी शेष न रहता यदि कृपाल खुदा का फ़ज़ल (कृपा) उसका निवारण न करता। अतः इसी कारण जब खुदा के स्वाभिमान (गौरत) ने चाहा कि इसमें एक मुजद्दिद को पैदा करे जो आदम के समान हो। अतः उस दिन अस्र के समय अर्थात् तंगी के समय मुझे पैदा किया और मुझे अपने पास से सिखाया तथा सम्मान दिया और अपने महान लोगों के सिलसिलों में मुझे सम्मिलित किया और मुझे उनके लिए जो मतभेद करते हैं हकम बनाया और वह हाकिमों का सब से बड़ा हाकिम है और लोगों ने खुले तौर पर देख लिया है कि खुदा तआला मेरी सहायता करता है और हर बात में मेरा समर्थन करता है तथा लोगों ने मुझे निकाल दिया, परन्तु उसने मुझे अपने पास जगह दी और वे मुझ पर टूट पड़े परन्तु उसने मुझे सुरक्षित रखा और मेरी जमाअत में वृद्धि की और मेरे सिलसिले को शक्ति दी। अतः कुधारणा और खुदा के फ़ज़ल ने जो मुझ पर था उनको आश्चर्य में डाला और कहा कि क्या खुदा ऐसे व्यक्ति को खलीफ़ा बनाता है जो पृथ्वी में खराबियाँ करे और खून करे तो खुदा ने उनको मेरे माध्यम से उत्तर दिया कि मैं वह जानता हूँ जो तुम

ورأى القومُ أن الله نصرني، وفي كل أمرٍ أيّدي، وطردوا فأواني،  
 وصالوا فحمانى، وزاد جماعتي وقوى سلسلتى، فألقاهم فى التحير  
 فضلُ الله علىّ، وزاده سوىّ ظنّهم، وقالوا أيجعل الله رجلاً خليفة  
 فى الأرض وهو يفسد فيها ويسفك الدماء، فأجابهم الله بواسطتى  
 فقال إنى أعلم ما لا تعلمون- وقالوا قُتِل فلان مظلوماً، وأريد  
 قتلُ فلان من المتنصّرين، ونسبوا القتلَ إلىّ ليدخلونى فى الذين  
 يفسدون فى الأرض ويقتلون الناس ظلماً وفساداً، والله يعلم أنى  
 برىء منها، وإنّ كلماتهم هذه ليست إلا بهتان علىّ، والله عليم  
 بالظالمين، وهناك أوحى الله إلىّ حكايةً عن قولهم "أتجعل فيها" إلى  
 قوله "إنى أعلم ما لا تعلمون"، عبرةً للمجرّئين- وما جرت  
 هذه الأقوال على ألسنهم إلا ليتمّوا نبأ الله الذى سبق من قبل

नहीं जानते और कहा कि अमुक पीड़ित मारा गया और अमुक ईसाई के क्रल्ल  
 का इरादा किया गया है तथा क्रल्ल को मेरी ओर सम्बद्ध किया ताकि मुझे उन  
 लोगों में सम्मिलित करे जो पृथ्वी में दंगा करते हैं तथा अत्याचार और दंगा-  
 फ़साद से लोगों को मार डालते हैं। तथा खुदा जानता है कि मैं उन से बरी  
 हूँ और उनकी ये बातें जो मेरे बारे में हैं बिल्कुल झूठी और झूठा आरोप है।  
 और खुदा अत्याचारियों को भली भांति जानता है और इसीलिए खुदा ने मेरी  
 ओर उन्हीं के कथन की वह्यी की कि "क्या तू ज़मीन में खलीफ़ा बनाता है  
 इस आयत तक कि **إنى أعلم ما لا تعلمون** (अलबक्रर: - 31) और यह  
 इसलिए कहा कि साहस करने वालों को सीख मिले। और ये बातें उन की जीभ  
 से इसलिए निकलीं ताकि खुदा तआला की इस ख़बर को पूरा करें जो पहले  
 वर्णन हो चुकी और इसलिए कि मेरी समानता आदम से उपद्रव और रक्तपात  
 के झूठे आरोप में सिद्ध करें। अतः खुदा ने उनको अपनी वह्यी के द्वारा उत्तर  
 दिया और यह वह्यी उस मुश्रिक (खुदा का भागीदार बनाने वाला) के क्रल्ल  
 से पहले जिसके बारे में उनका विचार है कि मैंने उसे क्रल्ल किया है और उस

وَلِيُثَبِّتُوا مِضَاهَاتِي بِأَدَمٍ فِي تَهْمَةِ الْفَسَادِ وَسَفْكَ الدَّمَاءِ، فَأَجَابَهُمُ اللَّهُ بِوَحْيِهِ وَقَدْ طُبِعَ وَأُشِيَخَ هَذَا الْوَحْيِ قَبْلَ قَتْلِ الْمُشْرِكِ الَّذِي يَزْعُمُونَ فِيهِ كَأَنِّي قَتَلْتُهُ وَقَبْلَ مَوْتِ نَصْرَانِيٍّ يَزْعُمُونَ فِيهِ كَأَنَّ أَصْحَابِي صَالُوا لِقَتْلِهِ، فَالْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي دَافَعَ عَنِّي بِكَلِمَاتٍ قِيلَتْ فِي آدَمَ وَهُوَ خَيْرُ الْمُدَافِعِينَ- هُوَ الَّذِي رَدَّ بِي شِمْسَ الْإِسْلَامِ بَعْدَمَا دَنَتْ لِلْغُرُوبِ، فَكَأَنَّهَا طَلَعَتْ مِنْ مَغْرِبِهَا وَتَجَلَّتْ لِلطَّالِبِينَ- وَإِنْ مَثَلِي عِنْدَ رَبِّي كَمِثْلِ آدَمَ، وَمَا خُلِقْتُ إِلَّا بَعْدَمَا كَثُرَتْ عَلَى الْأَرْضِ النَّعْمُ وَالسَّبَاعُ وَالذُّودُ وَالضَّبَاعُ وَكَثُرَ كُلُّ نَوْعِ الدُّوَابِّ عَلَى ظَهْرِهَا، وَخَالَفَ بَعْضُهَا بَعْضًا، وَمَا كَانَ آدَمَ لِيَمْلِكَهُمْ وَيَكُونَ حَكَمًا عَلَيْهِمْ وَفَاتِحًا بَيْنَهُمْ،

فَجَعَلَنِي اللَّهُ آدَمَ وَأَعْطَانِي كُلَّ مَا أَعْطَى لِأَبِي الْبَشَرِ، وَجَعَلَنِي

ईसाई की मौत से पहले, जिसके बारे में उनका विचार है कि मेरे दोस्तों ने उसके क्रतल के लिए उस पर आक्रमण किया, छपकर प्रकाशित हो चुकी थी। अतः प्रशंसा हो उस खुदा की जिस ने मेरी ओर से इन बातों के साथ बचाव किया जो आदम के बारे में कही गई थीं और खुदा सब प्रतिरक्षा करने वालों से उत्तम है वही खुदा जिसने मेरे माध्यम से इस्लाम के सूर्य को जिस समय वह अस्त हो रहा था फिर लौटाया जैसे फिर अपने पश्चिम से उदय किया और अभिलाषियों के लिए झलक दिखलाई (आभा प्रकट की) और निस्सन्देह मेरे प्रतिपालक के नज़दीक मेरा उदाहरण आदम का उदाहरण है और मैं पैदा नहीं किया गया परन्तु इसके बाद की पृथ्वी पर चौपाए और दरिन्दे तथा चींटियाँ और बूढ़े भेड़िए बड़ी संख्या में फैल गए तथा हर प्रकार के अशिष्ट लोगों ने, जहाँ तक उन से हो सका एक-दूसरे के साथ लड़ाई-झगड़े की बुनियाद डाली और कोई आदम न था कि उन के अधिकार की लगाम को हाथ में लाये। और उन पर हक़म है तथा उन के झगड़ों में फैसले का मार्ग निकाले।

निस्सन्देह खुदा ने मुझे आदम बनाया और मुझे वे सब चीजें दीं तथा मुझे

بُرُوزًا لخاتم النبيين وسيد المرسلين- والسرّ فيه أن الله كان قضى من الإزل أن يخلق آدم الذي هو خاتم الخلفاء في آخر الزمان كما خلق آدم الذي هو خليفته الأول في شرخ بالفاثحة، وليكون هذا التشابه للتوحيد الاوان، لتستدير دائرة الفطرة، وليشابه الخاتمة كسلطان مبین، وليدُلّ المصنوع على صانعه بالدلالة الصوريّة، فإن الهيئة المستديرة تُضاهي الوحدة، بل تشتمل على معنى الوحدة، ولذلك يوجد استدارة في كل ما خلق من البسائط، ولا يوجد بسيط خارجًا من الكروية ذلك ليعلم الناس أن الله هو الاحد الفرد الذي صبغ كل ما خلقه بصبغ الاحدية، وليعرفوا أنه هو رب العالمين- وحاصل الكلام أن الله وترٌ يحبّ الوتر، فاقتضتْ وَحْدَتُهُ أن يكون

खातमुन्नबिय्यीन और नबियों के सरदार का बुरूज बनाया और भेद इसमें यह है कि खुदा ने आरंभ से इरादा किया था कि उस आदम को पैदा करेगा जो अन्तिम युग में खातमुल खुलफ़ा होगा जैसा कि युग के प्रारंभ में उस आदम को पैदा किया जो उसका प्रथम खलीफ़ा था और यह सब कुछ इसलिए किया ताकि प्रकृति का दायरा गोल हो जाए और इसलिए की यह समानता तौहीद (एकेश्वरवाद) के लिए एक स्पष्ट सबूत बन जाए और इसलिए की उत्पाद बाह्य मार्ग-दर्शन के साथ अपने रचयिता का पता दे क्योंकि गोल वस्तु की आकृति वहदत (एकत्व) के समान हो जाती है बल्कि वहदत के अर्थों पर आधारित होती है। इसीलिए अमिश्रित प्रकार के पदार्थों की पैदायश में गोलाई पाई जाती है। और कोई अमिश्रित पदार्थ गोलाई से बाहर नहीं है। और यह इसलिए है कि लोग जान लें कि खुदा एक अद्वितीय है जिसने सम्पूर्ण सृष्टि को अद्वितीयता के रंग में रंग दिया है और इसलिए ताकि पहचान लें कि समस्त संसारों का प्रतिपालक वही है और निष्कर्ष यह कि खुदा अकेला है और एक होने को पसंद करता है। इसलिए उसके अद्वितीय होने ने चाहा कि वह इन्सान जो खलीफ़ों का खातम (अन्तिम)

الإِنسان الذى هو خاتم الخلفاء مشابهاً بآدم الذى هو أوّل مَنْ أُعطيَ خلافةً عَظْمىَ و أوّل مَنْ نُفخَ فيه الروح من رَبِّ الورى، ليكون زمان نوع البشر كدائرة يتصل النقطة الآخرة بنقطتها الأولى، وليدل على التوحيد الذى دُعِيَ إليه الإنسان - والتوحيد أحبُّ الأشياء إلى ربِّنا الأعلى، فاخترَ وَضَعًا دورياً فى خلق الإنسان، فلذلك ختم على آدم كما كان بدأ من آدم فى أوّل الأوان، وإن فى ذلك لآية للمتفكرين - وإنَّ آدم آخر الزمان حقيقه هو نبينا صلى الله عليه وسلم، والنسبة بينى وبينه كنسبة مَنْ علّم وتعلّم، وإليه أشار "سبحانه فى قوله "وَأَخْرَيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ ففَكَرَّ فى قوله "أَخْرَيْنَ" وأنزل الله على فيض هذا الرسول فاتمه وأكمّله، وجذب إلى لطفه وجوده، حتى صار

हो उस आदम के समान हो जो सब खलीफों का प्रथम था और सृष्टि में प्रथम व्यक्ति था जिस में खुदा ने रूह फूँकी थी और यह इसलिए किया ताकि मानव जाति का युग उस दायरे के समान हो जाए जिसका अन्तिम बिन्दु उसके पहले बिन्दु से मिल जाता है और तौहीद (एकेश्वरवाद) का मार्गदर्शन करे कि जिसकी ओर इन्सान को बुलाया गया है। और तौहीद हमारे प्रतिपालक को सब चीजों से अधिक प्यारी है। इसलिए इन्सान की पैदायश में दौरी बनावट (चक्र लगाने वाली बनावट) को ग्रहण किया और इसी कारण से आदम पर खत्म किया जैसा कि प्रारंभ में आदम से आरम्भ किया और विचार करने वालों के लिए इसमें बहुत बड़ा निशान है, और अन्तिम युग का आदम वास्तव में हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं और मेरा संबंध उसके साथ गुरू और शिष्य का संबंध है और खुदा तआला का यह कथन कि

وَأَخْرَيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ (अलजुमअ: - 4)

में इसी बात की ओर संकेत है। अतः **وَأَخْرَيْنَ** के शब्द पर विचार करो। और खुदा ने मुझ पर उस रसूल करीम का वरदान उतारा और उसे पूर्ण बनाया

وجودی وجودہ، فَمَنْ دَخَلَ فِي جَمَاعَتِي دَخَلَ فِي صَحَابَةِ سَيِّدِي خَيْرِ الْمُرْسَلِينَ- وهذا هو معني وَأَخْرَيْنَ مِنْهُمْ كَمَا لَا يَخْفَى عَلَى الْمُتَدَبِّرِينَ- وَمَنْ فَرَّقَ بَيْنِي وَبَيْنَ الْمُصْطَفَى، فَمَا عَرَفَنِي وَمَا رَأَى- وَإِنْ نَبَّيْنَا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ آدَمَ خَاتِمَةَ الدُّنْيَا وَمُنْتَهَى الْإِيَّامِ، وَخُلِقَ كَأَدَمَ بَعْدَ مَا خُلِقَ عَلَى الْإَرْضِ كُلِّ نَوْعٍ مِنَ الدُّوَابِّ وَكُلِّ صِنْفٍ مِنَ السَّبَاعِ وَالْإِنْعَامِ، وَلَمَّا خَلَقَ اللَّهُ هَذِهِ الْخَلِيقَةَ مِنْ أَنْوَاعِ النَّعَمِ وَالسَّبَاعِ وَالذُّوْدِ عَلَى الْإَرْضِيِّينَ؛ أَعْنَى كُلِّ حِزْبٍ مِنَ الْفَاجِرِينَ وَالْكَافِرِينَ، وَالَّذِينَ آثَرُوا الدُّنْيَا عَلَى الدِّينِ، وَخَلَقَ فِي السَّمَاءِ نَجْمَهَا وَأَقْمَارَهَا وَشَمُوسَهَا أَعْنَى النُّفُوسِ الْمُسْتَعِدَّةِ مِنَ الطَّاهِرِينَ الْمُنَوَّرِينَ، خَلَقَ بَعْدَ هَذَا آدَمَ الَّذِي اسْمُهُ مُحَمَّدٌ وَأَحْمَدٌ، وَهُوَ سَيِّدُ وُلْدِ آدَمَ وَأَتَقَى وَأَسْعَدُ،

और उस नबी करीम की दया एवं दानशीलता को मेरी ओर खींचा, यहाँ तक कि मेरा अस्तित्व उसका अस्तित्व हो गया अतः जो व्यक्ति मेरी जमाअत में सम्मिलित हुआ वह वास्तव में मेरे सरदार खैरुलमुर्सलीन के सहाबा में सम्मिलित हुआ और यही अर्थ مِنْهُمْ के शब्द के भी हैं जैसा कि विचार करने वालों पर छिपा नहीं और जो व्यक्ति मुझ में और मुस्तफ़ा में पृथक करता है उस ने मुझे नहीं देखा और नहीं पहचाना है और निस्सन्देह हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम संसार के अन्त के आदम और युग के दिनों के अन्तिम थे और आहंज़रत स.अ.व आदम के समान पैदा किए गए इसके पश्चात् कि पृथ्वी पर हर प्रकार के कीड़े-मकोड़े, चौपाए और दरिन्दे पैदा हो गए। जिस समय खुदा ने उस सृष्टि (मख्लूक) को अर्थात् जानवरों, दरिन्दों और चींटियों को पृथ्वी पर पैदा किया। अर्थात् दुष्टों, काफ़िरों, दुनियादारों के प्रत्येक समूह को पैदा किया और आकाश में सितारे, चन्द्रमा और सूर्यो अर्थात् पवित्र लोगों को प्रकटन में लाया तो इसके बाद उस आदम को अस्तित्व रूपी लिबास पहनाया जिसका नाम मुहम्मद और अहमद है (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और वह आदम की सन्तान का सरदार



وإمام الخليفة . وإليه أشار الله في قوله **وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً** وبعزة الله وجلاله أن لفظ **إِذْ** يدلّ بدلالة قطعية على هذا المقصود، ويدل عليه سياق الآية وسباقها إن كنت لست كاليهود . فلا شك أنه آدمُ آخر الزمان، والإمّة كالذرية لهذا النبي المحمود، وإليه أشار في قوله **إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ** . فأمعن فيه وتفكّر، ولا تكن من الغافلين . وإن زمان روحانية نبينا عليه السلام قد بدأ من الالف الخامس و كمل إلى آخر الالف السادس، وإليه أشار في قوله **لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ** وتفصيل المقام أن نبينا صلى الله عليه وسلم قد جاء على قدمِ آدم، وأن روحانية آدم قد طلعت في اليوم الخامس لِمَا خُلِقَ إِلَى هَذَا الْيَوْمِ كُلِّ

और जनता का इमाम, सर्वाधिक संयमी और नेक (सौभाग्यशाली) है और उसकी ओर खुदा तआला का यह कथन संकेत करता है-

**وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً**

खुदा के सम्मान और प्रताप की कसम कि **إِذْ** अर्थात जब का शब्द ठोस मार्ग-दर्शन के साथ इस उद्देश्य का मार्ग-दर्शन करता है और यदि तू यहूदियों के समान नहीं तो आयत का अगला-पिछला प्रसंग तुझ पर इस रहस्य को खोल देगा अतः सन्देह नहीं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अन्तिम युग के आदम हैं और उम्मत उस प्रशंसनीय नबी की सन्तान के स्थान पर है और उसकी ओर खुदा तआला के इस कथन का संकेत है- **إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ** अतः इन अर्थों पर सोच-विचार कर और लापरवाहों में से मत हो तथा हमारे नबी की रूहानियत का युग पांचवें हज़ार से आरम्भ और छठे हज़ार के अन्त तक पूर्ण हुआ और उसकी ओर खुदा तआला का कथन संकेत करता है कि **لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ** और उस मुकाम का विवरण यह है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आदम के क़दम पर आए और आदम की रूहानियत ने पांचवें दिन उदय किया

ما كان من أجزاء هويته وحقيقة ماهيته، فإن الأرض بجميع مخلوقاتها و السماء بجميع مصنوعاتها كانت حقيقة هوية آدم، كأن مادته قد انتقلت من الحقيقة الجمادية إلى الحقيقة النباتية، ثم من الحقيقة النباتية إلى الهوية الحيوانية، ثم بعد ذلك انتقلت من حيث الروحانية من الكمالات الكوكبية إلى الكمالات القمرية، ومن الأنوار القمرية إلى الإشعة الشمسية، وكانت هذه الانتقالات كلها مظاهر ترقيات العالم إلى معارج الحقيقة الإنسانية - كأن الإنسان كان في وقت جمادًا، وفي وقت آخر نباتًا، وبعد ذلك حيوانًا، وبعد ذلك كوكبًا وقمرًا وشمسًا حتى جمع في من القوى الأرضية والسموية بفضل الله أحسن اليوم الخامس كل ما اقتضت فطرته الخالقين -

क्योंकि उस दिन तक सब कुछ जो उसकी आकृति के अंगों से और उसकी बनावट की वास्तविकता से था से पैदा हो गया, क्योंकि पृथ्वी अपनी सम्पूर्ण सृष्टि के साथ तथा आकाश अपने सम्पूर्ण उत्पादों के साथ आदम की वास्तविकता थे मानो आदम का तत्व जमादी (जड़ संबंधी) वास्तविकता से वनस्पति वास्तविकता की ओर गया और जड़ संबंधी वास्तविकताओं से वनस्पति वास्तविकताओं की ओर तथा वनस्पति वास्तविकता से हैवानियत की ओर गया फिर रूहानियत (आध्यात्मिकता) के तौर पर नक्षत्रीय उत्कृष्टता से चन्द्रमा संबंधी उत्कृष्टताओं की ओर तथा चन्द्र प्रकाशों से सूर्य संबंधी किरणों की ओर गया और ये सब एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर जाना संसार के विकास-कर्मों के द्योतक की मानवीय वास्तविकता के सोपानों की ओर थे और इस रहस्य को दूसरे शब्दों में इस प्रकार समझना चाहिए कि मनुष्य एक समय जमाद (जड़ पदार्थ) था और दूसरे समय नबात (वनस्पति) और उसके बाद प्राणी (जीवधारी) और उसके बाद नक्षत्र, चन्द्रमा और सूर्य था यहाँ तक कि पांचवे दिन वह सब कुछ जो उसकी पार्थिव प्रकृति एवं आकाशीय शक्तियों से मांग करती थी अत्युत्तम स्रष्टा (खुदा) की कृपा से एकत्र हो गया।

فكان الخلق كله فردًا كاملاً لآدم، أو امرأة لوجوده الذي أعزّه الله وأكرم - ثم أراد الله أن يُرى هذه الخفايا على وجه الكمال في شخص واحدٍ هو مظهر جميع هذه الخصال فتجلت روحانية آدم بالتجلى الجامع الكامل في الساعة الآخرة من الجمعة، أعنى اليوم الذى هو السادس من الستة - فكذلك طلعت روحانية نبينا صلى الله عليه وسلم في الالف الخامس بإجمال صفاتها، وما كان ذلك الزمان منتهى ترقياتها، بل كانت قدماً أولى لمعارج كمالاتها، ثم كملت وتجلت تلك الروحانية في آخر الالف السادس، أعنى في هذا الحين كما خلق آدم في آخر اليوم السادس بإذن الله أحسن الخالقين - واتخذت روحانية نبينا خير الرسل مظهراً من أمته لتبلغ كمالاً

अतः समस्त पैदायश आदम के लिए एक पूर्ण पुरुष था या उसके अस्तित्व का दर्पण था जिसे खुदा ने प्रतिष्ठित एवं आदरणीय बनाया फिर इरादा किया कि गोपनीयताओं को पूर्ण रूप से एक ही व्यक्ति में प्रकट करे जो उन आदतों का द्योतक हो। अतः आदम की रूहानियत ने सर्वांगपूर्ण आभा के साथ जुमअः के दिन अन्तिम क्षण में चमकार दिखाई अर्थात् उस दिन जो छः का छठा है। इसी प्रकार हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रूहानियत ने पांचवें हज़ार में इज्माली विशेषताओं के साथ प्रकटन किया और वह युग उस रूहानियत की उन्नति का अन्त न था बल्कि उसने कौशलों के चरमोत्कर्ष (मेराज) के लिए पहला क्रदम था फिर उस रूहानियत ने छठे हज़ार के अन्त में अर्थात् उस समय पूर्ण रूप से आभा प्रकट की जैसा कि आदम छठे दिन के अन्त में अत्युत्तम स्रष्टा (खुदा) की आज्ञा से पैदा हुआ और खैरुर्सुल की रूहानियत अपने प्रादुर्भाव के कौशल के लिए और अपने नूर (प्रकाश) की विजय के प्रभुत्व के लिए एक द्योतक बनाया जैसा कि खुदा तआला ने किताबे मुबीन (क़ुर्आन) में वादा किया था। अतः मैं वही द्योतक हूँ इसलिए ईमान ला और काफ़िरों में से न हो और यदि चाहता है तो उस खुदा के

ظهورها وغلبة نورها كما كان وعد الله في الكتاب المبين-  
 فأنا ذلك المظهر الموعود والنور المعهود، فأمن ولا تكن من  
 الكافرين - وإن شئت فاقراء قوله تعالى هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ  
 الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَفَكَرُّ كالمهتدين- فهذا وقت الإظهار، ووقت  
 كمال ظهور الروحانية من الجبار، يا معشر المسلمين ولاجل  
 ذلك جاء في الآثار أنه عليه السلام بُعث في الالف السادس مع  
 أن بعثه كان في الالف الخامس بالقطع واليقين- فلا شك أن هذه  
 إشارة إلى وقت التجلي التام واستيفاء المرام وكمال ظهور  
 الروحانية و أيام تمؤج الفيوض المحمّدية في العالمين، وهو  
 آخر الالف السادس الذي هو الزمان المعهود وإن هذا الزمان  
 هو موطأ قدمه عليه السلام من الحضرة الإحدية، كما يُفهم

और هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَفَكَرُّ  
 कथन को पढ़ विचार कर अतः हे मुसलमानों की जमाअत यह अभिव्यक्त करने का समय और  
 रूहानियत के प्रकटन की खूबी का समय है। और इसीलिए 'आसार' में आया है  
 कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम छठे हज़ार में अवतरित हुए, हालाँकि  
 आंजनाब का अवतरण अटल एवं निश्चित तौर पर पांचवें हज़ार में था अतः सन्देह  
 नहीं कि यह संकेत है पूर्ण आभा के समय की ओर और उद्देश्य की पूर्ण रूपेण पूर्ति  
 की ओर रूहानियत (आध्यात्मिकता) के पूर्ण प्रकटन की ओर और संसार में मुहम्मदी  
 वरदानों के मौज मारने के दिनों की ओर और यह छठे हज़ार का अन्त है जो समय  
 मसीह मौऊद के उतरने के लिए निर्धारित है जैसा कि नबियों की किताबों से समझा  
 जाता है और यह युग निस्सन्देह ख़ुदा तआला की ओर से आंहज़रत सल्लल्लाहु  
 अलैहि व सल्लम के क्रदम रखने का स्थान है जैसा कि आयत **وَآخِرِينَ مِنْهُمْ** और  
 पवित्र पुस्तकों की दूसरी आयतों से समझा जाता है। अतः यदि तू बुद्धिमान है तो  
 विचार कर और जान ले कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जैसा  
 कि पांचवें हज़ार में अवतरित हुए, इसी प्रकार मसीह मौऊद छठे हज़ार के अन्त

من آية ”وَآخِرِينَ مِنْهُمْ“ وآيات أخرى من الصحف المطهرة، ففكر إن كنت من العاقلين - واعلم أن نبينا صلى الله عليه وسلم كما بُعث في الالف الخامس كذلك بُعث في آخر الالف السادس باتخاذ بروز المسيح الموعود، وذلك ثابت بنص القرآن فلا سبيل إلى الجحود، ولا ينكره إلا الذي كان من العمين - ألا تفكرون في آية ”وَآخِرِينَ مِنْهُمْ“، وكيف يتحقق مفهوم لفظ ”مِنْهُمْ“ من غير أن يكون الرسول موجوداً في الآخرين كما كان في الأولين - فلا بد من تسليم ما ذكرناه ولا مفرّ للمنكرين - و من أنكر من أن بُعث النبي عليه السلام يتعلّق بالالف السادس كتعلّقه بالالف الخامس، فقد أنكر الحق ونصّ الفرقان، وصار من الظالمين - بل الحق أن روحانيته عليه السلام كان في آخر

में बुरूजी रूप धारण कर के अवतरित हुए और यह कुर्आन से सिद्ध है कि इसमें इन्कार की गुंजायश नहीं और अंधों के अतिरिक्त कोई इस अर्थ से मुँह नहीं फेरता। क्या **مِنْهُمْ** की आयत पर विचार नहीं करते और किस प्रकार **مِنْهُمْ** के शब्द का अर्थ निश्चित हो यदि रसूले करीम **آخِرِينَ** में मौजूद न हों जैसा कि पहलों में मौजूद थे। अतः जो कुछ हमने वर्णन किया है स्वीकार करने से चारा नहीं और इन्कार करने वालों के लिए भागने का मार्ग बन्द है और जिसने इस बात से इन्कार किया कि नबी अलैहिस्सलाम का अवतरण छठे हजार से संबंध रखता है जैसा कि पांचवें हजार से संबंध रखता था तो उसने सच्चाई और कुर्आन के स्पष्ट आदेश का इन्कार किया अपितु सच यह है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रूहानियत छठे हजार के अन्त में अर्थात् इन दिनों में उन वर्षों की अपेक्षा सुदृढ़ सर्वांगपूर्ण और अधिक है बल्कि चौदहवीं रात के चन्द्रमा के समान है और इसलिए हम तलवार और लड़ने वाले गिरोह के मुहताज नहीं और इसलिए खुदा तआला ने मसीह मौऊद के अवतरण के लिए सदियों की गणना को रसूले करीम की हिजरत (प्रवास) के बद्र (चौदहवीं के चन्द्रमा) की रातों की गणना के समान अपनाया ताकि वह गणना इस

الإلف السادس أعنى في هذه الأيام أشدّ وأقوى وأكمل من تلك الأعوام، بل كالبدر التامة، ولذلك لا نحتاج إلى الحسام، ولا إلى حزبٍ من محاربين، ولا لاجل ذلك اختار الله سبحانه لبعث المسيح الموعودِ عدّةً من المئات كعدّة ليلة البدر من هجرة سيدنا خير الكائنات لتدلّ تلك العدّة على مرتبة كمال تام من مراتب الترقّيات وهى المائة الرابع بعد الإلف من خاتم النبیین، ليتم وعد إظهار الدين الذى سبق فى الكتاب المبين، أعنى قوله ”وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرِ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ“، فانظر إلى هذه الآية كالمُبصرين فإنها تدل على البدرين باليقين - بدرٌ مضى لنصر الأوّلين، وبدرٌ كانت آيةً للآخرين-

فلا شك أن فى هذه الآية إشارة لطيفة إلى الزمان الآتى الذى يُشابه ليلة البدرِ عدّةً. أعنى سنة أربع مائة بعد الإلف وهى ليلة

पद पर जो उन्नति की समस्त श्रेणियों से सर्वांगपूर्ण सम्पन्न है, सिद्ध करे वह चार सौ की गणना खातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिजरत के बाद है ताकि धर्म की विजय का वादा जो किताब-ए-मुबीन (क़ुर्आन) में पहले हो चुका था पूर्ण हो जाए अर्थात् खुदा तआला का यह कथन कि-

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرِ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ (आले इमरान - 124)

अतः देखने वालों की तरह इस आयत को देख क्योंकि यह आयत निस्सन्देह दो चौदहवीं के चन्द्रमाओं का पता देती है। प्रथम वह बद्र (चौदहवीं के चन्द्रमा) जो पहलों की सहायता के लिए गुज़रा और दूसरा वह बद्र बाद में आने वालों के लिए एक निशान है।

अतः निस्सन्देह यह आयत भावी युग की ओर एक बारीक संकेत करती है जो गणना की दृष्टि से चन्द्रमा की चौदहवीं रात के समान हो और वे चार सौ (400) वर्ष हजार वर्ष के बाद है और यही रूपक के तौर पर खुदा तआला के नज़दीक चौदहवीं चाँद रात है और इन सबके बावजूद हमें यह भी इक्रार है कि इस आयत

البدر استعارةً عند رب العالمين، وإن كان للآية معنى آخر يتعلق بالزمان الماضي مع هذا المعنى كما لا يخفى على العالمين. فإن للآية وجهين، والنصر نصران، والبدر بدران، بدرٌ يتعلق بالماضي، وبدرٌ يتعلق بالاستقبال من الزمان عند ذلة تصيب المسلمين كما ترون في هذا الاوان، وكان الإسلام بدأ كالهلال وكان قُدر أنه سيكون بدرًا في آخر الزمان والمآل بإذن الله ذي الجلال، فاقترضت حكمة الله أن يكون الإسلام بدرًا في مائة تشابه البدرِ عِدَّة. فإليه أشار في قوله ”لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرِ“، ففكر فكرة كاملة ولا تكن من الغافلين. وإن لفظ ”لَقَدْ نَصَرَكُمُ“ قد أتى هنا على وجهٍ آخر أعنى بمعنى ينصركم كما لا يخفى على العارفين. فحاصل الكلام أن الله كان قد قدر للإسلام العزتين بعد الذلتين على رغم اليهود الذين كان قدر لهم الذلتين بعد العزتين

के अन्य अर्थ भी हैं जो गुजरे हुए युग से संबंध रखते हैं। जैसा की उलेमा को मालूम है क्योंकि इस आयत के दो मुख हैं (अर्थात् दो मुखी हैं) और सहायता, दो सहायताएं और बद्र दो बद्र हैं। एक बद्र गुजरे युग से संबंध रखता है और दूसरा बद्र भविष्य-युग से उस समय जब मुसलमानों को अपमान पहुंचे जैसा कि इस युग में देखते हो। और इस्लाम हिलाल (नव चन्द्र) की भांति आरम्भ हुआ और प्रारब्ध था कि अन्ततः बद्र हो जाए अन्तिम युग में वैभवशाली खुदा की आज्ञा से अतः खुदा तआला की दूरदर्शिता ने चाहा कि इस्लाम उस सदी में बद्र का रूप धारण कर ले जो गणना की दृष्टि से बद्र के समान हो। अतः इन्हीं अर्थों की ओर संकेत है खुदा तआला के इस कथन में कि ”لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرِ“ (आले इमरान-124) अतः इस बात पर बारीक दृष्टि से विचार कर और लापरवाह लोगों में से न हो और निस्सन्देह ”لَقَدْ نَصَرَكُمُ“ का शब्द यहाँ अन्य कारण की दृष्टि से ”ينصركم“ के अर्थों में आया है जैसा कि अध्यात्म ज्ञानियों पर प्रकट है। कलाम का सारांश यह है कि खुदा तआला ने इस्लाम के लिए दो अपमानों के बाद दो सम्मान रखे थे यहूदियों के विपरीत कि उनके लिए



नकाला من عنده كما تقراءون في سورة بني إسرائيل قصة الفاسقين منهم والظالمين - فلما أصاب المسلمين الذلّة الأولى في مكة وعدهم الله بقوله "أُذِنَ لِلَّذِينَ يُقْتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظَلَمُوا وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ"، وأشار في قوله "عَلَىٰ نَصْرِهِمْ" أن العذاب يصيب الكفار بأيدي المؤمنين، فأنجز الله هذا الوعد يوم بدر وقتل الكافرين بسيف المسلمين. ثم أخبر عن الذلّة الثانية بقوله "حَتَّىٰ إِذَا فُتِحَتْ يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ (يعني يكون لهم الغلبة والفتح لا يدان بهم لاحد) وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلُونَ" ... وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ" ★ والمراد من

दण्ड के तौर पर दो सम्मानों के बाद दो अपमान निर्धारित किए थे जैसा कि सूरह बनी इस्राईल में उनके पापियों और अत्याचारियों का क्रिस्सा पढ़ते हो। जिस समय मुसलमानों को पहला अपमान मक्का में पहुंचा, खुदा ने उन से अपने कथन में वादा किया था (आयत के अंतिम तक) और **عَلَىٰ نَصْرِهِمْ** के कथन से संकेत किया कि मोमिनों के हाथ से काफ़िरों पर अज़ाब उतरेगा। अतः खुदा तआला का यह वादा बद्र के दिन प्रकट हुआ और काफ़िर मोमिनों की तेज़ तलवार से क़त्ल किए गए। फिर दूसरे अपमान की सूचना दी अपने उस कथन से **حَتَّىٰ إِذَا فُتِحَتْ يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ** (अलअंबिया - 97) (अर्थात् उनको ऐसा प्रभुत्व और ऐसी विजय प्राप्त होगी कि उनके साथ कोई मुकाबला न कर सकेगा) और इस कथन से

और **وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلُونَ** ... (अलअंबिया - 97)

**وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ** (अल कहफ़ - 100)

★ الحاشية - قد اشار الله في آيات بعد هذه الآية من غير فصل الى ان يا جوج وما جوج هم النصاري. الا ترى قوله افحسب الذين كفروا ان يتخذوا عبادي من دوني اولياء. وكذلك قوله قل هل ننبئكم بالاخسرين اعمالا. الذين ضلّ سعيهم في الحيوّة الدنيا وهم يحسبون انهم يحسنون صنعا. وكذلك قوله قل لو كان البحر ممدادا لّكلمات ربّي. ولا شك ان النصاري قوم اتخذوا المسيح معبودا من دون الله وتمايلوا على الدنيا وسبقوا غيرهم في ايجاد صنایعها وقالوا ان المسيح هو كلمة الله والمخلوق كله من هذه الكلمة فهذه الآيات ردّ عليهم منه



”كُلَّ حَدَبٍ“ ظفرُهم وفوزهم بكل مرادوعروجهم إلى كل مقام وكونهم فوق كل رياسة قاهرين۔ والمراد من قوله ”بَعْضُهُمْ يَوْمَئِذٍ يُمُوجُّ فِي بَعْضٍ“ أن نار الخصومات تستوقد في ذلك الزمان في كل فرقة من فرق أهل الأديان، وينفقون الذهب والفضة كالجبال لتكذيب الإسلام والإبطال وارتداد المسلمين، ويؤلفون كتبًا مملوءة من التوهين۔ وقد أشار الله في كثير من المقام أن تلك الأيام أيام الغربة للإسلام، وهناك يكون المسلمون كالمحصورين، وتهب عليهم عواصف التفرقة فيكونون كعُضِينَ۔ فأما قوله ”بَعْضُهُمْ يَوْمَئِذٍ يُمُوجُّ فِي بَعْضٍ“ فيريد منه أن فرقة تأكل فرقة أخرى، وتعلو أجور ومأجور وتسمعون أخبار خروجهم في الأرضين۔

और हर एक बुलन्दी से दौड़ने से अभिप्राय यह है कि हर एक कामना और उद्देश्य में सफलता और प्रसन्नता उनको प्राप्त होगी और हर एक सत्ता और रियासत उनके कब्जे में आ जाएगी और **بَعْضُهُمْ يَوْمَئِذٍ يُمُوجُّ فِي بَعْضٍ** से अभिप्राय यह है कि उस ज़माने में समस्त फ़िर्कों में युद्ध की आग भड़क उठेगी और पर्वतों के बराबर सोना-चांदी इस्लाम को मिटाने के लिए तथा मुसलमानों को इस्लाम के दायरे से निकालने के लिए खर्च करेंगे और इस्लाम के अपमान से भरी हुई पुस्तकें लिखी जाएंगी और बहुत से स्थानों में खुदा तआला ने संकेत किया है कि वे दिन इस्लाम की गरीबी के दिन होंगे और मुसलमान उस युग में क़ैदियों की भांति जीवन व्यतीत करेंगे और फूट एवं अस्त-व्यस्त होने की हवाएं उनके सर पर चलेंगी। अतः वे बिखर जाएंगे और अस्त-व्यस्त हो जाएंगे और **بَعْضُهُمْ يَوْمَئِذٍ يُمُوجُّ فِي بَعْضٍ** से अभिप्राय यह है कि एक फ़िर्का दूसरे फ़िर्के को खा जाएगा तथा याजूज माजूज गौरवान्वित होंगे और समस्त पृथ्वी पर उनके निकलने की खबरें सुनने में आएंगी और उन दिनों में इस्लाम बूढ़ी स्त्री की भांति होगा और उसमें किसी प्रकार की शक्ति एवं सम्मान नहीं रहेगा और उसे अपमान पर अपमान पहुंचेगा और निकट होगा कि मुर्दे को कपड़े और नहलाने के बिना पृथ्वी में गाड़ दिया जाएगा। और उसके ऊपर

وفي تلك الأيام لا يكون الإسلام إلا كعجوزة، ولا يبقى له من قوة ولا من عزّة، و تصيبه ذلّة على ذلّة، و كاد أن يُقْبَرَ من غير التجهيز والتكفين، و تُصَبَّ عليه مصائب ما سمعتُ أذنُ مثلها من قبل، و يخرج من الدين أفواج من الجاهلين، لا عنين و محقّرين و مكذّبين، و تُقلّب الأمور كلها، و تنزل المصائب على الشريعة و أهلها، و يُرَدّ قمرها كعرجونٍ قديم في أعين الناظرين، و هذه ذلّة ما أصابت الملة من قبل و لن تصيب إلى يوم الدين - فعند ذلك تنزل النصرّة من السماء و معالمُ العزّة ذلك تنزل النصرّة من السماء و معالمُ العزّة من حضرة الكبرياء، من غير سيف و سنان و محاربين ★ -

ऐसे संकट आएँगे कि उस युग में किसी कान ने उस जैसा न सुना होगा और मूर्खों के समूह के समूह धर्म के दायरे से बाहर निकल जाएँगे और धर्म में से मूर्ख लोगों के समूह के समूह लानत करते हुए तथा झूठा कहते हुए निकल जाएँगे और समस्त मामले तहस-नहस किए जाएँगे तथा शरीअत और शरीअत वालों पर शोक और कष्ट उतरेंगे और उसका चन्द्रमा देखने वालों की दृष्टि में पुरानी टहनी की तरह दिखाई देगा। और यह वह अपमान है कि इससे पहले उम्मत को नहीं पहुँचा और न क्रयामत तक पहुँचेगा। जब इस सीमा तक मामला पहुँच जाएगा तब आकाश से सहायता तथा खुदा तआला की ओर से बिना तलवार तथा बिना भाले और लड़ने वालों के, ★ सम्मान के

★ الحاشية :- انّ عيسى بن مريم ماقاتل و ما امر بالقتال فكذلك المسيح الموعود فاته على نموذجه من الله ذى الجلال والسرفيه ان الله اراد ان يُرسل خاتم خلفاي بني اسرائيل وخاتم خلفاء الاسلام من غير السنان  
★ हाशिया- हज़रत ईसा इब्ने मरियम ने न तो स्वयं जंग की और न जिहाद का आदेश दिया। अतः इसी प्रकार मसीह मौऊद, महा प्रतापी खुदा की ओर से उसी (मसीह) के आदर्श पर होगा। और इसमें भेद यह है कि अल्लाह तआला ने इरादा किया है कि बनी इस्राईल के खातमुल खुलफा और इस्लाम के खातमुल खुलफा को बिना तलवार और भालों के अवतरित करे ताकि

وإليه إشارة في قوله تعالى ”وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَاهُمْ جَمْعًا“، وهو مراد من بعث المسيح الموعود ديامعشر العاقلين ★. وفي لفظ النزول الذي جاء في الأحاديث إيماءً إلى أن الأمر والنصر

निशान उतरेंगे और इसी की ओर खुदा तआला के इस कथन में संकेत है-

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَاهُمْ جَمْعًا (अल कहफ़- 100)

हे बुद्धिमानों के गिरोह! ★ मसीह मौऊद के अवतरित होने से यह अभिप्राय है और हदीसों में जो नुजूल का शब्द आया है उसमें यह संकेत है कि मसीह मौऊद के

والحسام ليزيل شبهات نشتت من قبل في طبائع العوام. وليعلم الناس ان اشاعة الدين بامر من الله لا يضرب الاعناق وقتل الاقوام. ثم لما كان اليهود في وقت عيسى والمسلمون في وقت المسيح الموعود قد خرج اكثرهم من التقوى وعصوا احكام الرب الودود. فكان بعيداً من الحكمة الالهية ان يقتل الكافرين لهذه الفاسقين. فتدبر حق التدبر ولا تكن من الغافلين منه

उन सन्देशों का निवारण किया जाए जो पहले से लोगों के मन में पैदा हो चुके थे और ताकि लोग जान लें कि धर्म का प्रचार खुदा के आदेश से हुआ है न कि गर्दन काटने और क्रौमों का क्रत्ल करने से। फिर ईसा के समय में यहूदियों और मसीह मौऊद के समय में मुसलमानों की अधिकता संयम से वंचित हो गई और वदूद (अर्थात् सबसे अधिक प्रेम करने वाले) खुदा के आदेशों की अवज्ञा करने लगी तो खुदा तआला की हिकमत से यह बात दूर थी कि इन अवज्ञाकारियों के बदले काफिरों को क्रत्ल किया जाए। अतः अच्छी तरह विचार कर और लापरवाहों में से न बन।

★الحاشية :- و كذلك اشير الى المسيح الموعود في الكتاب الكريم اعني في سورة التحريم وهو قوله تعالى، وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهِ مِنْ رُوحِنَا. ولا شك ان المراد من الروح ههنا عيسى ابن مريم.

★हाशिया :- और इसी प्रकार मसीह मौऊद की ओर पवित्र कुरआन में भी संकेत किया गया है अर्थात् सूरा तहरीम में और वह इलाही फरमान यह है-

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهِ مِنْ رُوحِنَا (सूर: तहरीम - 12)

(अर्थात् - और इमरान कि बेटी मरयम का उदाहरण दिया है जिस ने अपनी सच्चरित्रता को बचाए रखा तो अपने उस (बच्चे) में अपनी रूह में से कुछ फूँका-अनुवादक) निःसंदेह रूह से यहां अभिप्राय ईसा इब्ने मरियम हैं।

ينزل كله من السماء في أيام المسيح من غير توَّسُّل أيدي  
 الإنسان ومن غير جهاد المجاهدين، وينزل الأمر من الفوق  
 من غير تدبير المدبِّرين - كأن المسيح ينزل كالمطر من  
 السماء واضعاً يديه على أجنحة الملائكة لا على أجنحة حيَلِ  
 الدنيا والتدابير الإنسانية، وتبْلُغُ دعوته وحجته إلى أقطار  
 الأرض بأسرع أوقاتٍ كبرق يبدو من جهة فإذا هي مشرقة في  
 جهات - فكذلك يكون في هذا الزمان، فليسمع من يكن له  
 أُذنان، ويُنفخ في الصُّور لإشاعة النور وينادي الطبايعُ السليمة

युग में आदेश और सहायता मानवीय हस्तक्षेप के बिना और मुजाहिदों के जिहाद  
 के बिना आकाश से उतरेगी और विचारकों के यत्न के बिना समस्त वस्तुएं ऊपर  
 से नीचे आएंगी मानो मसीह वर्षा की भांति फ़रिश्तों के कन्धों पर हाथ रख कर  
 आकाश से उतरेगा, मानवीय उपायों एवं सांसारिक बहानों के कन्धों पर उस का  
 हाथ न होगा और उस का निमंत्रण तथा हुज्जत पृथ्वी पर चारों ओर बहुत शीघ्र  
 फैल जाएगी उस बिजली की तरह जो एक दिशा में प्रकट होकर एक क्षण में  
 समस्त दिशाओं में चमक जाती है। यही हाल इस युग में होगा। अतः सुन ले  
 (वह) जिसको दो कान दिए गए हैं। और प्रकाश के प्रसारण के लिए बिगुल  
 फूँका जाएगा और स्वस्थ स्वभाव हिदायत पाने के लिए पुकारेंगे उस समय पूरब

فحاصلاً لآية ان الله وعداته يجعل اخشى الناس من هذه الامة مسيح ابن مريم  
 وينفخ فيه روحه بطريق البروز فهذه وعد من الله في صورة المثل لاتقى  
 الناس من المسلمين فانظر كيف سمى الله بعض افراد هذه الامة عيسى بن  
 مريم ولا تكن من الجاهلين منه

अतः आयत का निष्कर्ष यह है कि अल्लाह तआला ने वादा किया है कि इस उम्मत में मसीह  
 इब्ने मरियम को लोगों में से सबसे अधिक खुदा का भय रखने वाला बनाए और उसमें प्रतिरूप के  
 तौर पर अपनी रूह डालेगा और यह उदाहरण के तौर पर मुसलमानों में सबसे अधिक संयमी के  
 लिए अल्लाह ताला का वादा है। अतः विचार कर कि किस प्रकार अल्लाह तआला ने इस उम्मत  
 के कुछ लोगों को ईसा इब्ने मरियम के नाम से नामित किया है और मूर्खों में से न बन।

للاهداء، فيجتمع فرق الشرق والغرب والشمال والجنوب بأمرٍ من حضرة الكبرياء، فهناك تستيقظ القلوب وتنبت الحبوب بهذا الماء، لا بنار الحرب وسفك الدماء، ويُجذب الناس بجذبة سماوية مطهرة من شوائب الأرض لما هو نموذج ليوم القضاء من مالك يوم الدين- وقد وعد الله عند الفتنة العظمى في آخر الزمان، والبليّة الكبرى قبل يوم الديان، أنه ينصر دينه من عنده في تلك الايام، وهناك يكون الإسلام كالبدر التام، وإليه أشار الله سبحانه في قوله ”وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعًا“ وقد أخبر في آية هي قبل هذه الآية من تفرقة عظيمة ”تَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ“ ثم بشر بقوله ”وَنُفِخَ فِي الصُّورِ“ بجمع بعد التفرقة، فلا يكون هذا الجمع إلا في مائة البدر ليدلّ الصورة على معناها كما كانت النصرّة الأولى ببدر- فهاتان بشارتان للمؤمنين، و

और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण के फ़िरक़े खुदा के आदेश से एकत्र हो जाएंगे। अतः उस समय दिल जाग जाएंगे और दाने उस पानी से उगेंगे न कि युद्ध की आग और रक्त-पात से तथा लोग आकाशीय आकर्षण से खींचे जाएंगे जो पृथ्वी की मिलावट से पवित्र होगा। यह खुदा की ओर से प्रतिफल के दिन का नमूना होगा। और खुदा ने वादा किया है कि जब अन्तिम युग में बहुत बड़ा उपद्रव और आपदा क्रयामत से पहले प्रकट होगी उन दिनों में अपनी ओर से अपने धर्म की सहायता एवं समर्थन करेगा और उस युग में इस्लाम पूर्णिमा के चन्द्र के समान हो जाएगा और इस कथन में अर्थात् **فَجَمَعْنَهُمْ جَمْعًا** इसी की ओर संकेत है और इस आयत के द्वारा एक बड़ी फूट की सूचना दी **فَنُفِخَ فِي الصُّورِ** फिर **فَنُفِخَ فِي الصُّورِ** फ़िरमाया है कि **وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ** के कथन से खुशखबरी दी कि इस उथल-पुथल के बाद एकता प्राप्त होगी। यह एकता बदर की सदी (अर्थात् चौदहवीं सदी-अनुवादक) में प्राप्त होगी ताकि सूरत अपने मायने को सिद्ध करे जैसा कि पहली सहायता बदर में

تَبْرُقَان كُدْرَةٍ فِي الْكِتَابِ الْمَبِينِ - وَقَدْ مَضَى وَقْتُ فَتْحِ مَبِينٍ  
 فِي زَمَنِ نَبِيِّنَا الْمُصْطَفَى، وَبَقِيَ فَتْحُ آخِرٍ وَهُوَ أَعْظَمُ وَأَكْبَرُ  
 وَأَظْهَرُ مِنْ غَلْبَةِ أَوْلَى، وَقُدِّرَ أَنْ وَقْتَهُ وَقْتُ الْمَسِيحِ الْمَوْعُودِ  
 مِنْ اللَّهِ الرَّءُوفِ الْوَدُودِ وَأَرْحَمِ الرَّاحِمِينَ، وَإِلَيْهِ أَشَارَ فِي قَوْلِهِ  
 تَعَالَى "سُبْحٰنَ الَّذِي أَسْرٰى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي  
 بَرَكْنَا حَوْلَهُ" فَفَكَّرَ فِي هَذِهِ الْآيَةِ وَلَا تَمَرَّ كَالْغَافِلِينَ وَإِنْ فِي لَفْظِ  
 الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَلَفْظِ "الْمَسْجِدِ الْأَقْصَى" الَّذِي جُعِلَ مِنْ  
 وَصْفِهِ جُمْلَةٌ "بَارَكْنَا حَوْلَهُ" إِشَارَةٌ لَطِيفَةٌ لِلْمُتَفَكِّرِينَ، وَهُوَ  
 أَنْ لَفْظَ "الْحَرَامِ" يَدُلُّ عَلَى أَنَّ الْكَافِرِينَ قَدْ حُرِّمَ عَلَيْهِمْ فِي  
 زَمَنِ النَّبِيِّ عَلَيْهِ السَّلَامُ أَنْ يَضُرُّوا الدِّينَ بِالْمَكَائِدِ أَوْ يَأْتُوهُ  
 كَالصَّائِدِ، وَعَصَمَ اللَّهُ نَبِيَّهَ وَدِينَهُ وَبَيْتَهُ مِنْ صَوْلِ الصَّائِلِينَ

पहुंची। अतः ये दो खुशखबरियां मोमिनों के लिए हैं और मोती की तरह कुर्आन में चमकती हैं और ज़ाहिर है कि स्पष्ट विजय का समय हमारे नबी करीम के युग में गुज़र गया और दूसरी विजय शेष रही जो पहली विजय से बहुत बड़ी तथा अधिक स्पष्ट है और मुकद्दर था कि उस का समय मसीह मौऊद का समय हो और इसी की ओर खुदा तआला के इस कथन में संकेत है-

سُبْحٰنَ الَّذِي أَسْرٰى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى  
 الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي بَرَكْنَا حَوْلَهُ (2 - इस्राईल - बनी)

अतः इस आयत पर विचार कर और लापरवाहों की भांति उसके आगे से न गुज़र और मस्जिद हराम के शब्द में और मस्जिद अक्सा के शब्द में जिस की विशेषता में "بَارَكْنَا حَوْلَهُ" (हमने उसके इर्द-गिर्द को बरकत दी है) का वर्णन हुआ है, सूक्ष्म संकेत है और उनके लिए जो विचार करते हैं। और वह यह है कि हराम शब्द प्रकट करता है कि काफ़िरों पर यह बात अवैध की गई थी कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में धर्म को छल और प्रपंचों से हानि पहुंचाएं या उस पर शिकारियों की भांति टूट पड़ें। और खुदा ने अपनी

وجور الجائرين - وما استأصل الله في ذلك الزمن أعداء الدين حق الاستيصال، ولكن حفظ الدين من صولهم وحرّم عليهم أن يغلبوا عند القتال - فُبْدِيَّ أَمْرُ تَأْيِيدِ الدِّينِ مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ أَعْنَى مِنْ ذَبِّ اللَّئَامِ، ثُمَّ يَتِمُّ هَذَا الْأَمْرُ عَلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَى الَّذِي يَبْلُغُ فِيهِ نُورُ الدِّينِ إِلَى أَقْصَى الْمَقَامِ كَالْبَدْرِ التَّامِ، وَيَلْزَمُهُ كُلُّ بَرَكَةٍ يُتَوَقَّعُ وَيُتَصَوَّرُ عِنْدَ كَمَالٍ لَيْسَ فَوْقَهُ كَمَالٌ، وَهَذَا وَعْدٌ مِنَ اللَّهِ الْعَلَّامِ -

فكان المسجد الحرام يُبَشِّرُ بدفع الشر والحفظ من المكروهات، وأما المسجد الأقصى فيشير مفهومه إلى تحصيل الخيرات وأنواع البركات والوصول إلى أعلى الترقّيات، فُبْدِيَّ أَمْرُ دِينِنَا مِنْ دَفْعِ الضَّرِّ، وَيَتِمُّ عَلَى اسْتِكْمَالِ الْخَيْرِ، وَإِنَّ

नबी को तथा अपने धर्म और अपने घर को आक्रमणकारियों के आक्रमणों और अन्याय करने वालों के अन्याय से सुरक्षित रखा तथा उस युग में धर्म के शत्रुओं को जैसा कि चाहिए था जड़ से नहीं उखाड़ा परन्तु धर्म को उनके आक्रमण से सुरक्षित रखा और हराम कर दिया कि वे लड़ाई में विजयी रहें। इसलिए धर्म के समर्थन का मामला मस्जिद-ए-हराम से अर्थात् कमीनों को हटाने से आरंभ हुआ। फिर यह मामला मस्जिद अक्रसा पर पूर्ण होगा। यह वह मस्जिद है जिसमें धर्म का प्रकाश अक्रसा के स्थान तक पूर्ण चन्द्रमा की भांति पहुंचेगा। तथा प्रत्येक बरकत जो ऐसी विशेषता के समय में कि जिस से बढ़कर कोई विशेषता न हो, कल्पना में आए उस के साथ संलग्न होती है और यह सर्वज्ञ खुदा का वादा है।

अतः मस्जिद-ए-हराम बुराई के दूर होने और घृणित बातों से सुरक्षित रहने का उपहार देती है परन्तु मस्जिद अक्रसा का अर्थ इस बात की ओर संकेत करता है कि भिन्न-भिन्न प्रकार की बरकतें और खैरात (दान) तथा उच्चतम उन्नति प्राप्त हों। अतः हमारे धर्म का मामला हानि दूर करने से आरंभ हुआ और भलाई को पूर्ण करने पर समाप्त होगा और इस बयान में विचार करने वालों के लिए



فيه آيات للمتدبرين- ثم إن آية الإسراء تدلّ على نُكْتة وجب ذكرها للإصدقاء ليزدادوا عِلْمًا وِيقِينًا، وإن خير الأموال العلم واليقين، وهو أن الإسراء من حيث الزمان كان واجبًا كوجوب الإسراء من حيث المكان، لِيَتَمَّ سَيْرُ نَبِينَا زَمَانًا وَمَكَانًا، وَلِيَكْمُلَ أَمْرُ مَعْرَاجِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ - وَلَا شَكَّ أَنْ أَقْصَى الزَّمَانِ لِلْمَعْرَاجِ الزَّمَانِي هُوَ زَمَانُ الْمَسِيحِ الْمَوْعُودِ، وَهُوَ زَمَانُ كَمَالِ الْبِرَكَاتِ وَيَقْبَلُهُ كُلُّ مُؤْمِنٍ مِنْ غَيْرِ الْجُحُودِ، وَلَا شَكَّ أَنَّ مَسْجِدَ الْمَسِيحِ الْمَوْعُودِ هُوَ أَقْصَى الْمَسَاجِدِ مِنْ حَيْثُ الزَّمَانِ مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ، وَقَدْ مُلِّئَ مِنْ كُلِّ جَنْبٍ بَرَكَةً وَنُورًا كَالْبَدْرِ التَّامِ، لِيَكْمُلَ بِهِ دَائِرَةُ الدِّينِ، فَإِنَّ الْإِسْلَامَ بُدِئَ كَالْهَلَالِ مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ، ثُمَّ صَارَ قَمَرًا تَامًا عِنْدَ بُلُوغِهِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْإِقْطَاصِيِّ، وَلِذَلِكَ ظَهَرَ الْمَسِيحُ فِي عِدَّةِ الْبَدْرِ إِشَارَةً إِلَى هَذَا

निशान है। फिर 'अस्त्रा' की आयत एक अद्भुत रहस्य रखती है इसलिए उसका वर्णन करना दोस्तों के लिए आवश्यक है ताकि ज्ञान और विश्वास में वृद्धि हो और यह भली-भांति प्रकट है कि सब से उत्तम धन-दौलत ज्ञान और विश्वास है और वह यह कि 'अस्त्रा' समय एवं स्थान की दृष्टि से दोनों प्रकार से उचित और अनिवार्य था। इस पहलू से कि हमारे नबी का यात्रा करना समय और स्थान की दृष्टि से पूर्ण हो और मे'राज का मामला पूर्ण हो तथा इसमें सन्देह नहीं कि नबी करीम के सामयिक मे'राज के लिए अन्तिम युग मसीह मौऊद का युग है। और वह बरकतों के पूर्ण होने का युग है तथा उसे प्रत्येक मोमिन इन्कार किए बिना स्वीकार कर सकता है और इसमें सन्देह नहीं कि मसीह मौऊद की मस्जिद मस्जिद हराम की अपेक्षा युग की दृष्टि से अक्रसा मस्जिद है। और निस्सन्देह इस मस्जिद का प्रत्येक पहलू बरकत और नूर से पूर्ण चन्द्रमा की भांति भर गया है ताकि उसके माध्यम से धर्म का दायरा पूर्ण हो जाए। क्योंकि इस्लाम पहली रात के चाँद के समान मस्जिद-ए-हराम से प्रकट हुआ



المقام- ثم هنا دليل آخر على وجوب الإسراء الزماني من الامر الرباني وهو أن الله تعالى قد أشار في قوله ”وَأَخْرَيْنَ مِنْهُمْ لَبَنًا يَلْحَقُوا بِهِمْ“ إلى أن جماعة المسيح الموعود عند الله من الصحابة من غير فرق في التسمية، ولا يتحقق هذه المرتبة لهم من غير أن يكون النبي صلى الله عليه وسلم بينهم بقوته القدسية والإفاضة الروحانية كما كان في الصحابة، أعني بواسطة المسيح الموعود الذي هو مظهر له أو كالحلّة- فقد ثبت من هذا النص الصريح من الصحف المطهرة أن معراج نبينا كما كان مكانيا كذلك كان زمانيا، ولا يُنكره إلا الذي فقد بصره وصار من العمين- ولا شك ولا ريب أن المعراج الزماني كان واجبا تحقيقا لمفهوم هذه الآية، ولو لم يكن لبطل مفهومها كما لا يخفى على أهل الفكر والدراية، فثبت من هذا أن المسيح الموعود

फिर जब मस्जिद अक्रसा तक पहुंचा तो पूर्ण 'बदर' (चौदहवीं का चाँद) हो गया इसीलिए मसीह मौऊद पूर्णिमा की गणना (अर्थात चौदहवीं सदी) में प्रकट हुआ।

फिर दूसरा तर्क युग का 'अस्ता' के अनिवार्य होने पर यह है कि खुदा तआला

(अल जुम्अ: - 4) وَأَخْرَيْنَ مِنْهُمْ لَبَنًا يَلْحَقُوا بِهِمْ

के कथन में संकेत करता है कि मसीह मौऊद की जमाअत खुदा के नज़दीक सहाबा की एक जमाअत है और इस नाम रखने में कुछ अन्तर नहीं और यह श्रेणी मसीह की जमाअत को कदापि प्राप्त नहीं होती जब तक कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन के मध्य कुव्वत-ए-कुद्सी और अपने रूहानी लाभ के साथ मौजूद न हों जैसा कि सहाबा के अन्दर मौजूद थे अर्थात् मसीह मौऊद के माध्यम से, क्योंकि वह नबी करीम का द्योतक या उनके के लिए लिबास के समान है। अतः इस स्पष्ट आदेश से प्रकट हुआ कि हमारे नबी का मे'राज स्थान एवं समय दोनों प्रकार से था और इस रहस्य का अन्धे के अतिरिक्त और कोई इन्कार नहीं करता और सन्देह नहीं कि इस

مظهرٌ للحقيقة المحمدية، ونازل في الحُلل الجلالية، فلذلك  
 عُذَّ ظهوره عند الله ظهورَ نبيِّه المصطفى، وعُدَّ زمانه منتهى  
 المعراج الزماني للرسول المجتبي، ومنتهى تجلّي روحانية  
 سيّدنا خير الوري، وكان هذا وعدًا مؤكّدًا من رب العالمين -  
 ولما كان المسيح الموعود لوجود نبينا كالمراة ومُتمّم أمره  
 بإشاعة البركات وإظهار الإسلام على الإديان كلها بالآيات،  
 شكر النبيُّ صلى الله عليه وسلم سعيه كشكر الآباء للإبناء  
 ، وأوصى ليُقَرَأَ سلامُه عليه إشارةً إلى السلامة والعلاء - ولو  
 كان المراد من المسيح عيسى ابن مريم الذي أنزل عليه  
 الإنجيل لفسُد وصيّةُ تبليغ السلام وما كان إليها السبيل،  
 فإن عيسى عليه السلام اذا نزل بقولكم من السماء فلا شك

आयत का अर्थ अनिवार्यतः सामयिक मे'राज को चाहता था। और यदि वह  
 निश्चित न होता तो इस आयत का अर्थ असत्य हो जाता। अतः इस रहस्य  
 को सोच-विचार करने वाले समझते हैं। यहाँ से सिद्ध हुआ कि मसीह मौऊद  
 मुहम्मदी वास्तविकता का द्योतक है और प्रतापी लिबासों में अवतरित हुआ है  
 इसीलिए खुदा के नजदीक उस का प्रादुर्भाव नबी-ए-मुस्तफ़ा का प्रादुर्भाव माना  
 गया है। और उस का युग रसूले करीम के सामयिक मे'राज का अन्त और  
 सृष्टि में सर्वोत्तम की रूहानी आभा (तजल्ली) का अन्तिम सिरा समझा गया है।  
 और संसार के प्रतिपालक का यह अटल वादा था और चूंकि मसीह मौऊद नबी  
 करीम के अस्तित्व का दर्पण और बरकतों का प्रसारण और समस्त धर्मों पर  
 इस्लाम की विजय से आंहज़रत के आदेश को सम्पन्न करने वाला था। इसलिए  
 नबी करीम ने उसके प्रयास को पसन्द किया जैसा कि बाप-बेटों के प्रयास का  
 धन्यवाद करते हैं। और वसीयत की कि आंजनाब का सलाम उसको पहुँचाया  
 जाए और इस सलाम में यह संकेत है कि सलामती और बुलन्दी मसीह के  
 साथ होगी और यदि मसीह मौऊद से इंजील वाला ईसा इब्ने मरयम अभिप्राय

أنه كان يعرفه رسولنا كالأحباء، بل كان يسلم بعضهم على البعض عند اللقاء، فيكون عند ذلك إيداعاً أمانة السلام لغواً وعبثاً كالأستهزاء لما هو وقع في السماء مراراً وكان معلوماً قبل الإعلام والإدراء - ثم من المعلوم أنه عليه السلام قد لقى عيسى ليلة المعراج وسلم عليه، فلا شك إليه - وما معنى وصية السلام لرجل رآه رسول الله صلى الله عليه وسلم غير مرة قبل الوفاة وبعد الوفاة - وسلم عليه ليلة المعراج وما فارقه بعد الموت في وقت من الأوقات - أكان هذا الأمر غير ممكن إلا بواسطة بعض أفراد الأمة؟ ففكر إن كنت ما مسك طائف من الجنة - أما ترى أن النبي ما مسك طائف من الجنة - أما ترى أن النبي صلى الله عليه وسلم لما مات تيسر له لقاء

हो तो सलाम पहुँचाने की वसीयत बेकार हो जाती है और उस तक कोई मार्ग नहीं रहता क्योंकि जब तुम्हारे कहने के अनुसार ईसा आकाश से उतरा तो इसमें सन्देह नहीं कि रसूले करीम और वह दोनों आपस में दोस्तों की तरह जान-पहचान रखते होंगे तथा मुलाक्रात (भेंट) के समय एक-दूसरे को सलाम करते होंगे। अतः इस स्थिति में सलाम को अमानत की भांति रखना एक व्यर्थ कार्य होगा, क्योंकि सलाम अनेक बार आकाश में हुआ और सतर्क करने से पहले मालूम था। इसके अतिरिक्त स्पष्ट है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने मे'राज की रात हज़रत ईसा को देखा और उस पर सलाम कहा। अतः कोई सन्देह नहीं कि आंजनाब ने सलाम की वसीयत ऐसे व्यक्ति के लिए की है कि उसको नहीं देखा है और उसके इच्छुक रहे। और उस व्यक्ति के लिए सलाम की वसीयत के क्या मायने हैं जिस को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कई बार स्वर्गवासी होने से पूर्व और स्वर्गवास के पश्चात् देखा और मे'राज की रात उस पर सलाम कहा और मृत्यु के पश्चात् किसी समय उस से अलग न हुए? क्या यह बात बिना किसी उम्मीती मनुष्य के माध्यम के संभव न थी।

عیسیٰ فی کلّ حین من الاحیان، وقد رأى عیسیٰ لیلة الإسراء،  
فكانت أبواب السلام مفتوحةً من غیر توسُّطِ أبناء السلام  
مفتوحةً من غیر توسُّطِ أبناء هذا الزمان، فلا تجعلْ سلامَ  
رسول الله لغوّاً، وأمعِنْ حقَّ الإمعان - ربِّ بَلِّغْهُ سلامًا مِنَّا، وإنَّ  
هذا خاتمة البيان-

## تَمَّتْ

अतः विचार कर यदि पागल नहीं। क्या तू विचार नहीं करता कि जब नबी करीम  
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस संसार से चले गए तो आंजनाब को हज़रत  
ईसा की मुलाक्रात का अवसर हर समय मिलता था इस से पहले 'अस्त्रा' की  
रात में आपस में मुलाक्रात हुई थी और इस कारण से सलाम का दरवाज़ा इस  
युग के लोगों के माध्यम के बिना खोला गया था। अतः रसूलुल्लाह के सलाम  
को व्यर्थ एवं निरर्थक न समझ और उसके अर्थों में पूर्णतया ध्यानपूर्वक विचार  
कर। हे हमारे प्रतिपालक! हमारा सलाम उस पर भेज।

## समाप्तम

## القصيدہ لکل قریحہ سعیدہ

(प्रत्येक सत्प्रकृति के लिए एक क़सीदा)

أرى سَيْلَ آفَاتٍ قضاها المَقْدَرُ      وفي الخَلْقِ سَيَاتٍ تُذاع وتُنشَرُ

मैं उन आपदाओं के सैलाब (बाढ़) को देख रहा हूँ जिन को तक्रदीर बनाने वाले खुदा ने मुक़द्दर किया है और सृष्टि में ऐसी बुराइयां (विद्यमान) हैं जो फैलाई और प्रसारित की जा रही हैं।

وفي كلِّ طرفٍ نازٍ شَرٌّ تَأَجَّجَتْ      وفي كلِّ قلبٍ قد تَرَأَى التَّحَجُّرُ

और हर ओर फ़साद तथा उपद्रव की अग्नि भड़क उठी है और प्रत्येक हृदय में कठोरता प्रकट हो गई है।

وقد زُلزِلَتْ مِنْ هذِهِ الرِّيحِ دَوْحَةٌ      تُظَلُّ بِظُلِّ ذِي شَفَائٍ وَتُثْمِرُ

और उस वायु से वह वृक्ष हिल गया है जो रोग से मुक्ति देने वाला और छाया देने वाला तथा फ़लदार था।

أرى كلَّ مَحْجُوبٍ لَدُنِيَاہِ بَاكِيًا      فَمَنْ ذَا الَّذِي يَبْكِي لَدَيْنِي يَحْقَرُ

मैं देखता हूँ कि प्रत्येक लापरवाह अपनी दुनिया के लिए रो रहा है। फिर कौन है जो धर्म के लिए रोए, जिसका तिरस्कार किया जा रहा है।

وللَّذِينَ أَطْلَلُوا أَرَاهَا كَلَاهِفٍ      وَدَمْعِي بِذِكْرِ قُصُورِهِ يَتَحَدَّرُ

और धर्म के खंडरात हो चुके हैं जिन्हें मैं शोकग्रस्त के समान देख रहा हूँ और मेरे आंसू उस के महलों की याद में बह रहे हैं।

تَرَاءَتْ غَوَايِثَ كَرِيحٍ مُجِيحَةٍ      وَأَرْخَى سَدِيلَ الْغَيِّ لَيْلٍ مُكْدَرُ

उन्मूलन करने वाली वायु के समान गुमराहियां प्रकट हो गई हैं और अंधकारमय रात ने गुमराही का पर्दा लटका दिया है।

أرى ظلماتٍ لیتی من قبلها وذقتُ كؤوسَ الموتِ أو كنتُ أنصُرُ

मैं अंधकारों को देखता हूँ। काश मैं उन से पहले ही मर जाता और मौत के प्याले चख लेता या फिर मेरी सहायता की जाती।

تهبُ رياحُ عاصفاتٍ كأنها سباعُ بأرضِ الهندِ تعوی وتزأُرُ

तेज हवाएं इस प्रकार चल रही हैं जैसे कि वे हिन्द की सरजमीन में दरिन्दे हैं जो चीख रहे और दहाड़ रहे हैं।

أرى الفاسقين المفسدين وزمّهم وقلّ صلاحُ الناسِ والغیُّ یكثرُ

मैं दुराचारी उपद्रवियों और उनके गिरोहों को ही देख रहा हूँ और लोगों की नेकी कम हो गई और गुमराही बढ़ गई है।

أرى عينَ دینِ اللهِ منهم تكدّرتُ بها العينُ والآرامُ تمشى وتعبُرُ

मैं देखता हूँ कि खुदा के धर्म का चश्मा (स्रोत) उनके कारण गन्दा हो गया है और उसमें नील गाय तथा मृग चल रहे हैं और उसे पार कर रहे हैं। (अर्थात् उस का मालिक एवं वारिस कोई नहीं रहा)

أرى الدینَ كالمرضى على الأرضِ راغماً وكلّ جهولٍ فی الهوی یبتخِرُ

मैं धर्म को रोगियों के समान पृथ्वी पर मिट्टी में सना हुआ पाता हूँ और प्रत्येक अज्ञानी अपनी तामसिक इच्छा में मटक-मटक कर चल रहा है।

وما همّهم إلا لحظّ نفوسهم وما جهدهم إلا لعیش یوفّرُ

और उनकी सम्पूर्ण चिन्ता उन के अपने आनन्द के लिए ही है और उनका समस्त प्रयास ऐसे ऐश्वर्य के लिए ही है जिसे बढ़ाया जाए।

نسوا نهجَ دینِ اللهِ حُبّاً وغفلةً وقد سرّهم بغیّ وفسق ومیسرُ

वे अपवित्रता और लापरवाही से अल्लाह के धर्म का मार्ग भूल गए हैं और उन्हें उद्दण्डता, दुराचार और जूआ खेलना पसन्द आ गया है।

فَلَمَّا طَغَى الْفَسْقُ الْمَيْدُ بِسِيلِهِ تَمَيَّثٌ لَوْ كَانَ الْوَبَاءُ الْمَتَمِّزُ

जब विनाशकारी बुराई के सैलाब में उफ़ान आ गया तो मैंने चाहा कि घातक महामारी आ जाए।

فَإِنَّ هَلَاكَ النَّاسِ عِنْدَ أَوْلَىٰ التُّهَىٰ أَحَبُّ وَ أَوْلَىٰ مِنْ ضَلَالٍ يَدْمُرُ

क्योंकि बुद्धिमानों के निकट लोगों का मर जाना विनाशकारी गुमराही से अधिक रुचिकर और उत्तम है।

صَبَرْنَا عَلَىٰ ظَلْمِ الْخَلَائِقِ كُلِّهِمْ وَلَكِنْ عَلَىٰ سَيْلِ الشَّقَا لَا نَصِيرُ

हमने सब लोगों के अत्याचार पर सब्र किया है परन्तु हम दुर्भाग्य के सैलाब पर सब्र नहीं कर सकते।

وَقَدْ ذَابَ قَلْبِي مِنْ مِصَائِبِ دِينِنَا وَأَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ وَأَبْصُرُ

और अपने धर्म के संकटों से मेरा दिल पिघल गया है और मैं वह कुछ जानता और देखता हूँ जो तुम नहीं जानते।

وَيَسَّىٰ وَخَزْنَىٰ قَدْ تَجَاوَزَ حَدَّهُ وَلَوْلَا مِنَ الرَّحْمَنِ فَضْلٌ أَتَبَّرُ

और मेरा रंज-व-गम अपनी सीमा से बढ़ गया है और यदि रहमान खुदा की कृपा न होती तो मैं मर जाता।

وَعِنْدِي دَمُوعٌ قَدْ طَلَعْنَ الْمَآقِيَا وَعِنْدِي صُرَاخٌ لَا يَرَاهُ الْمُكَفِّرُ

और मेरे आंसू आंख के कोने से बाहर निकल आए हैं और मैं ऐसी चीख-व-पुकार करता हूँ जिसे काफ़िर ठहराने वाला नहीं देखता।

وَلِي دَعْوَاتٌ يَضَعَدْنَ إِلَى السَّمَاءِ وَلِي كَلِمَاتٌ فِي الصَّلَاةِ تَفْعُرُ

और मेरी दुआएं ऐसी हैं जो आकाश पर जाती हैं और मेरे वाक्य पत्थर पर प्रभाव करते हैं।

وَأَعْطَيْتُ تَأْثِيرًا مِنْ اللَّهِ خَالِقِي فَتَأْوَى إِلَيَّ قَوْلِي جَنَانٌ مُطَهَّرٌ

और मुझे अपने स्रष्टा ख़ुदा की ओर से तासीर (प्रभाव) प्रदान की गई है। अतः पवित्र हृदय मेरे कथन की ओर शरण लेता है।

وَإِنَّ جَنَانِي جَاذِبٌ بِصِفَائِهِ وَإِنْ بَيَانِي فِي الصُّخُورِ يُؤْتَرُ

और निस्सन्देह मेरा हृदय साफ़ होने के कारण आकृष्ट करने वाला है और निस्सन्देह मेरा ईमान चट्टानों पर भी प्रभावकारी है।

حَفَرْتُ جِبَالَ النَّفْسِ مِنْ قُوَّةِ الْعُلَى فَصَارَ فُؤَادِي مِثْلَ نَهْرٍ تَفَجَّرُ

मैंने ख़ुदाई सामर्थ्य से नफ़्स के पहाड़ों को खोदा है जिससे मेरा दिल नहर की तरह हो गया जो जारी की जाती है।

وَأَعْطَيْتُ رِعْبًا عِنْدَ صَمْتِي مِنَ السَّمَاءِ وَقَوْلِي سِنَانٌ أَوْ حُسَامٌ مُشَهَّرٌ

और अपनी ख़ामोशी के समय मुझे आकाश से रोब दिया गया है और मेरा कथन भाला या नंगी तलवार है।

فَهَذَا هُوَ الْأَمْرُ الَّذِي سَرَّ مَالِكِي وَأَرْسَلَنِي صَدَقًا وَحَقًّا فَأَنْذِرُ

अतः यह वह बात है जिसने मेरे मालिक को प्रसन्न किया और उसने मुझे हक़ एवं सच्चाई देकर भेजा ताकि मैं सचेत करूं।

إِذَا كَذَّبْتَنِي زُمِرُ أَعْدَائِي مِلَّتِي فَقُلْتُ أَحْسَأُوا إِنَّ الْخَفَايَا سَتَّظَهُرُ

जब मेरे धर्म के शत्रुओं के गिरोह ने मुझे झुठलाया तो मैंने कह दिया "दूर हो जाओ" गुप्त बातें शीघ्र ही प्रकट हो जाएंगी।

فَرِيْقٌ مِنَ الْأَحْرَارِ لَا يُنْكِرُونَنِي وَحِزْبٌ مِنَ الْأَشْرَارِ آذُوا وَأَنْكَرُوا

सुशील लोगों का गिरोह मेरा इन्कार नहीं करता और दुष्ट लोगों के गिरोह ने मुझे कष्ट दिया है और मेरा इन्कार किया है।



وقد زاحموا في كل أمرٍ أردته فأيدنى ربى ففزوا وأدبروا

और उन्होंने प्रत्येक कार्य में हस्तक्षेप किया जिसका भी मैंने इरादा किया इस पर मेरे रब ने मेरा समर्थन किया तो वे भाग गए और पीठ फेर ली।

وكيف عصوا والله لم يذر سزها وكان سنا صدقى من الشمس أظهر

अल्लाह की क्रसम! इस का भेद समझ नहीं आया कि उन्होंने कैसे अवज्ञा की। हालांकि मेरी सच्चाई का प्रकाश सूर्य से भी अधिक स्पष्ट था।

لزمث اصطبازًا عند جورٍ لئامهم وكان الأقارب كالعقارب تأبز

इन में से नीच लोगों के अत्याचार के समय मैंने सब्र कर लिया और मेरे निकट संबंधी भी बिच्छुओं के समान डंक मार रहे थे।

وهذا على الإسلام إحدى المصائب يكذب مثلى بالهوى ويكفر

और इस्लाम पर समस्त संकटों में से यह भी एक संकट है जो मेरे जैसे व्यक्ति को तामसिक इच्छाओं के कारण झुठलाया और काफिर ठहराया जा रहा है।

فأقسمت بالله الذى جل شأنه على أنه يخزى العدا وأعزز

और मैंने अल्लाह की क्रसम खाई है जिसकी शान बुलन्द है, इस बात पर कि वह शत्रुओं को बदनाम करेगा और मुझे श्रेष्ठता दी जाएगी।

وللغى آتاز وللرشد مثلها فقوموا لتفتيش العلامات وانظروا

और गुमराही की कुछ निशानियां हैं और हिदायत की भी उसी की तरह कुछ निशानियां हैं। तो तुम निशानियों की खोज के लिए उठो और विचार करो।

تظنون أنى قد تقولت عامدًا بمكرٍ وبعض الظنّ إثمٌ ومنكر

तुम यह समझ रहे हो कि मैंने षड्यंत्र करके जान बूझ कर झूठा कथन गढ़ लिया है। हालांकि कुछ अवधारणाएं पाप और घृणित होती हैं।

وَكَيْفَ وَإِنَّ اللَّهَ أَبَدَىٰ بَرَاءً تَبَىٰ وَجَاءَ بآيَاتٍ تُلُوحٌ وَتُظْهِرُ

और यह क्योंकर हो सकता है जबकि खुदा ने मेरा बरी होना प्रकट कर दिया है और वह ऐसे निशान ले आया है जो स्पष्ट तथा प्रकट हो रहे हैं।

وَيَأْتِيكَ وَعَدُّ اللَّهِ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَىٰ فَتَعْرِفُهُ عَيْنٌ تُحَدُّ وَتُبْصِرُ

और तेरे पास खुदा का वादा इस प्रकार आ जाएगा कि तू देख नहीं रहा होगा। तो उसको वही आँख पहचानी है जो तेज़ होती है और खूब देखती है।

وَلَيْسَ لِعَضْبِ الْحَقِّ فِي الدَّهْرِ كَاسِرًا وَمَنْ قَامَ لِلتَّكْسِيرِ بَخْلًا فَيَكْسِرُ

और सच की तलवार को युग में कोई तोड़ने वाला नहीं और जो कृपणता से तोड़ने के लिए खड़ा होगा वह स्वयं तोड़ दिया जाएगा।

وَمَنْ ذَا يَعَادِينِي وَرَبِّي يَحِبُّنِي وَمَنْ ذَا يُرَادِينِي إِذَا اللَّهُ يَنْصُرُ

और कौन है जो मुझे से शत्रुता करे जबकि मेरा रब मुझे से प्रेम करता है और कौन मुझे मार सकता है जबकि अल्लाह मुझे सहायता दे रहा है।

وَيَعْلَمُ رَبِّي سِرَّ قَلْبِي وَسِرَّهُمْ وَكُلَّ خَفِيٍّ عِنْدَهُ مُتَحَضِّرُ

और मेरा रब मेरे दिल के भेद और उनके भेद को जानता है और प्रत्येक गुप्त चीज़ उसके पास उपस्थित है।

وَلَوْ كُنْتُ مُرَدُّدًا الْمَلِيكَ لَصَرَّيْتُ عِدَاوَةً قَوْمٍ كَذَّبُونِي وَحَقَّرُوا

और यदि मैं खुदा की ओर से जो मेरा मालिक है, धिक्कृत होता तो झूठा कहने वाली और अपमानित करने वाली क्रौम की शत्रुता मुझे अवश्य हानि पहुंचाती।

وَلَكِنِّي صَافِيَةٌ رَبِّي فَجَاءَ نِي مِنْ اللَّهِ آيَاتٍ كَمَا أَنْتَ تَنْظُرُ

परन्तु मैंने अपने रब से निष्कपट दोस्ती की तो अल्लाह की ओर से निशान जैसा कि तू देख रहा है, मेरे पास आ गए।

وَمَا كَانَ جَوْرُ الْخَلْقِ مُسْتَحَدًّا لَنَا فَإِنْ أَذَاهُمْ سَنَةٌ لَا تُغَيِّرُ

और सृष्टि का अत्याचार हमारे लिए कोई नई बात नहीं थी क्योंकि उन का दुख देना एक अपरिवर्तनीय सुन्नत है।

إِذَا قِيلَ إِنَّكَ مَرْسَلٌ خَلْتُ أَنْتَى دُعَيْتُ إِلَى أَمْرِ عَلَى الْخَلْقِ يَعْسِرُ

जब मुझे कहा गया कि तू रसूल है तो मैंने सोचा कि मैं एक ऐसी बात की ओर बुलाया गया हूँ जो सृष्टि पर कठिन गुज़रेगी।

أَمْكْفِرٍ مَهْلًا بَعْضَ هَذَا التَّحْكُمِ وَخَفَّ قَهْرَ رَبِّ قَالَ لَا تَقْفُ فَاحْذَرُ

हे मुझे काफ़िर कहने वाले! इस ज़बरदस्ती करने से कुछ रुक जा और खुदा के प्रकोप से डर जिसने कहा है «لَا تَقْفُ» अतः सावधानी से काम ले।

وَإِذْ قُلْتُ إِنِّي مُسْلِمٌ قُلْتُ كَافِرٌ فَأَيْنَ التَّقَى يَا أَيُّهَا الْمُتَهَوِّرُ

जब मैंने कहा कि मैं मुसलमान हूँ तूने कहा कि काफ़िर है। तो तक्वा (संयम) कहां गया? हे अनुचित दिलेरी करने वाले!

وَإِنْ كُنْتَ لَا تَخْشَى فُقُلْ لَسْتُ مُؤْمِنًا وَيَأْتِي زَمَانَ نَسَأَلَنَّ وَتُحْبِرُ

और यदि तू डरता नहीं तो तू कहता रह कि तू मोमिन नहीं और वह समय आ रहा है कि तू पूछा जाएगा और तुझे सूचित किया जाएगा।

وَإِنِّي تَرَكْتُ النَّفْسَ وَالْخَلْقَ وَالْهَوَىٰ فَلَا السَّبَّ يُؤْذِنِي وَلَا الْمَدْحَ يُبْطِرُ

और मैंने नफ़्स, सृष्टि और नफ़्स की इच्छा को त्याग दिया है इसलिए अब न गाली मुझे कष्ट देती है और न प्रशंसा गर्व दिलाती है।

وَكَمْ مِنْ عَدُوٍّ بَعْدَمَا أَكْمَلَ الْأَذَىٰ أَتَانِي فَلَمْ أَضْعُرْ وَمَا كُنْتُ أَصْعُرُ

और बहुत से शत्रु हैं जो कष्ट को चरम सीमा तक पहुंचाने के पश्चात् मेरे पास आए तो मैंने न विमुखता का व्यवहार किया और न ही विमुखता मेरा आचरण था।

أرى الظلم يبقى فى الخراطيم وسمه وأما علامات الأذى فتغيز

मैं देखता हूँ कि अत्याचार का निशान नाकों पर शेष रह जाता है परन्तु कष्ट उठाने की निशानियों का जहाँ तक सम्बन्ध है तो वे तो परिवर्तित हो जाया करती हैं।

وَاللهِ إِنى قَدْ تَبِعْتُ مُحَمَّدًا وَفى كُلِّ آيٍ مِنْ سَنَاهُ أَنْوَرُ

और खुदा की क्रसम! मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुसरण किया है और मैं प्रतिपल उन्हीं के प्रकाश से प्रकाशित किया जाता हूँ।

عَجِبْتُ لِأَعْمَى لَا يَدَاوَى عَيُونَهُ وَمِنَّا بِجُورِ الْجَهْلِ يَلْوَى وَيَسْخَرُ

मुझे उस अंधे पर आश्चर्य है जो अपनी आंखों का इलाज नहीं करता और जहालत से पैदा हुए अत्याचार के कारण वह हम से झगड़ता और उपहास करता है।

أَتَنَسَى نَجَاسَاتِ رَضِيَتْ بِأَكْلِهَا وَتَهَمَزُ بِهَتَائِنَا بَرِيًّا وَتَذَكُرُ

क्या तू उन मलिनताओं को भूल रहा है जिन के खाने को तू पसन्द कर चुका है और तू एक निष्पाप व्यक्ति पर इल्जाम लगाता है और उसकी चर्चा करता रहता है।

إِذَا قَلَّ عِلْمُ الْمَرْءِ قَلَّ اتِّقَاؤُهُ فَيَسْعَى إِلَى طَرَقِ الشَّقَا وَيُزَوِّرُ

जब मनुष्य का ज्ञान कम हो जाता है तो उसका संयम भी कम हो जाता है। अतः वह दुर्भाग्य के मार्गों पर दौड़ता और छल से काम लेता है।

وَمَا أَنَا مِمَّنْ يَمْنَعُ السَّيْفُ قَصْدَهُ فَكَيْفَ يَخَوْفُنِى بِشْتِمِ مَكْفُرِ

और मैं उन लोगों में से नहीं हूँ कि तलवार उनके इरादे को रोक सके। तो एक काफ़िर कहने वाला मुझे गालियों से कैसे भयभीत कर सकता है।

لَنَا كُلُّ يَوْمٍ نَصْرَةٌ بَعْدَ نَصْرَةٍ فَمَثُ أَيُّهَا النَّارِى بِنَارِ تُسْعَرِ

हमें प्रतिदिन सहायता पर सहायता मिल रही है। तो हे ईर्ष्या की अग्नि में जलने वाले! उस अग्नि के द्वारा नष्ट हो जा जिसे तू स्वयं ही भड़क रहा है।

وَعَدْنَا مِنَ الرَّحْمَنِ عِزًّا وَسُوْدَدًا      فَقُمْ وَامْحُ هَذَا النَّقْشَ إِنْ كُنْتَ تَقْدِرُ

हमें रहमान खुदा की ओर से सम्मान एवं सरदारी का वादा दिया गया है। अतः  
उठ यदि तू सामर्थ्य रखता है तो उस नक्श को मिटा दे।

أَلَا إِنَّمَا الْأَيَّامُ رَجَعَتْ إِلَى الْهَدْيِ      هَنِيئًا لَكُمْ بَعَثِي فَبَشُّوا وَأَبْشُرُوا

सुन लो ज़माना हिदायत की ओर लौट पड़ा है। तुम्हारे लिए मेरा अवतरण  
मुबारक हो। अतः प्रसन्न हो जाओ और खुशी मनाओ।

دَعُوا غَيْرَ أَمْرِ اللَّهِ وَاسْعَوْا لِأَمْرِهِ      هُوَ اللَّهُ مَوْلَانَا أَطِيعُوهُ وَاحْضُرُوا

खुदा के अतिरिक्त जो भी है उसके आदेश को त्याग दो और खुदा के आदेश  
(के आज्ञापालन) का प्रयास करो। अल्लाह ही हमारा मौला है उस का आज्ञापालन  
करो और उपस्थित हो जाओ।

أَلَا لَيْسَ غَيْرُ اللَّهِ فِي الدَّهْرِ بَاقِيًا      وَكُلُّ جَلِيْسٍ مَا خَلَا اللَّهَ يَهْجُرُ

सुनो! खुदा के अतिरिक्त ज़माने में कोई शेष रहने वाला नहीं और अल्लाह के  
अतिरिक्त प्रत्येक साथ बैठने वाला जुदा कर दिया जाएगा।

تَمَّتْ  
समाप्तम  
☆

### حاشية متعلقة بالخطبة الإلهامية

#### ما الفرق بين آدم والمسيح الموعود

إن الله خلق آدم لينقل الناس من العدم إلى الوجود، ومن الوحدة إلى الكثرة، وجعلهم شعوبا وقبائل وفرقا وطوائف ليُرى ألوان القدرة، وليبلو أيُّهم أحسنُ عملا ومن السابقين وجعل آدم مظهرًا لاسمه الذي هو مبدئ للعالم. أعنى الأوّل كما جاء قوله "هُوَ الأوّل" في الكتاب المبين ولاجل أن الأوّلية تقتضى ما بعدها اقتضت نفس آدم رجالا كثيرا ونسائاً، فنزل الأمر وأضنّت النسائُ وكثرت الناس ومُلئت الأرض من المخلوقين ثم طال عليهم الإمدد وكثرت فرقهم وآراؤهم، وتخالفت أمانيتهم وأهوائهم، وكان أكثرهم

### खुत्बा इल्हामिया के बारे में हाशिया

#### आदम और मसीह मौऊद में क्या अन्तर है

अल्लाह तआला ने आदम को पैदा किया ताकि मनुष्यों को अनस्तित्व से अस्तित्व की ओर तथा एकत्व से अधिकता की ओर ले आए। उसने उन्हें विभिन्न खानदानों, कबीलों, गिरोहों और जमाअतों के रूप में बनाया ताकि कुदरत के रंग दिखाए और परखे कि उनमें से कौन कर्म की दृष्टि से अच्छा और आगे बढ़ने वालों में से है। अल्लाह ने आदम को अपनी उस पहली विशेषता का द्योतक बनाया, जो संसार का स्रोत है जैसा कि पवित्र कुर्आन में उसका कथन "हुवल अब्वल" (वही सबका आदि है) वर्णित है। और इस कारण से कि प्राथमिकता अपने बाद कुछ और की मांग करती है स्वयं आदम ने भी पुरुषों और स्त्रियों की मांग की। तो आदेश उतरा और स्त्रियों की बहुत सन्तान हुई तथा लोगों की प्रचुरता हो गई और पृथ्वी मख्लूक से भर गई। फिर उन पर समय लम्बा हो गया और उन के गिरोह तथा उनकी रायें बहुत अधिक हो गईं और उनकी तमन्नाएं एवं इच्छाएं परस्पर विरोधी हो गईं और उन में से अधिकतर पापी हो गए। परिणाम स्वरूप उन में से कुछ अन्य पर आक्रमण करने लगे और वे पाप

فاسقين فطفقوا يصول بعضهم على بعض، وزادوا فسقًا وطغوى،  
 وأرادوا أن يأكل قويهم ضعيفهم كدودة تأكل دودة أخرى و كانوا  
 غافلين حتى إذا اجتمعت فيهم كل ضلالة كانت من لوازم زمن  
 المسيح الموعود، وُصِّبَتْ على الإسلام كل مصيبة، وصار كالحَيِّ  
 الموءُود، وبلغت الأيامُ منتهاها وصارت كالليالي في الظلمات،  
 واقتضى الزمان حربًا هي آخر المحاربات ★ - فهناك أرسل الله  
 مسيحه لهذه الحرب، ليجلو غياهب الكفر ويدمر الظالمين بالحُجَّة

एवं उद्दण्डता में बढ़ गए। उन्होंने चाहा कि उन में से शक्तिशाली कमजोर को  
 खा जाए जैसे कि एक कीड़ा दूसरे कीड़े को खा जाता है और वे लापरवाह थे।  
 यहाँ तक कि जब उनमें हर वह गुमराही इकट्ठी हो गई जो मसीह मौऊद के  
 युग के लिए अनिवार्य थी और इस्लाम पर हर प्रकार की मुसीबत टूट पड़ी और  
 वह ज़िन्दा दफन कर दिए गए के समान हो गया और ज़माना अपनी पराकाष्ठा  
 को पहुंच गया और अंधेरो में रातों के समान हो गया और ज़माने ने इस जंग की  
 मांग की जो जंगों में से अंतिम है, तब उस समय अल्लाह ने अपने मसीह को  
 उस जंग के लिए भेजा ताकि कुफ्र के अंधेरो को दूर कर दे और अत्याचारियों

★ الحاشية كان الله قد قدر من الازل ان تقع الحرب الشديد مرتين بين  
 الشيطان والانسان- مرة في اول الزمن ومرة في آخر الزمان- فلما جاء  
 وعد اولهما اغوى الشيطان الذي هو ثعبان قديم حواء- واخرج ادم من الجنة  
 ونال ابليس مراد اشاء- وكان من الغالبين- ولما جاء وعد الاخرة اراد الله ان  
 يرد لادم الكرة على ابليس وفوجه ويقتل هذا الدجال بحربة منه فخلق

अल्लाह ने अनादिकाल से ही यह निर्धारित कर रखा था कि शैतान और मनुष्य के  
 मध्य दो बार भयानक जंग होगी एक बार प्रारंभिक ज़माने में और दूसरी बार अंतिम ज़माने में.  
 अतः जब इन दोनों जंगों में से पहली का समय आया तो शैतान ने जो पुराना सांप है, हव्वा  
 को गुमराह कर दिया और आदम को जन्नत से निकलवा दिया और इब्लीस ने अपनी मनचाही  
 मुराद को पा लिया और विजेताओं में से हो गया. और जब अंतिम वादे का समय आया तो  
 अल्लाह ने चाहा कि फिर आदम को इब्लीस और उसकी सेना पर विजय प्रदान करे और  
 अपनी ओर से प्रदान किए हुए हथियार से उस दज्जाल को क्रल्ल करे, तो उसने मसीह मौऊद

لا بالطعن والضرب، ويقطع دابر الكافرين، وليرجع الناس إلى الاتحاد والمحوية بعدما كانوا متخالفين. فثبت من هذا المقام أن المسيح الموعود قد قابل آدم في هذه الصفات كضدٍ تقابلٍ ضدًا آخر في الخواص والتأثيرات، وإن في ذلك لآية للمتقين ثم اعلم أن هذا التضاد بين آدم والمسيح الموعود ليس مخفيا ومن النظريات، بل هو أظهرُ الأشياء ومن أجل البديهيات. فإن آدم أتى ليخرج النفوس إلى هذه الحياة الدنيا وليوقد بينهم نارَ الاختلاف

को भाले और तलवार के वार से नहीं बल्कि दलील के दृष्टिकोण से समाप्त कर दे। और ताकि काफिरों की जड़ काट दे और ताकि लोग परस्पर विरोधी हो जाने के बाद फिर एकता और फना की तरफ लौट आएँ। अतः इस मुकाम से सिद्ध हुआ के मसीह मौऊद इन विशेषताओं में उसी प्रकार आदम के सामने है जैसा कि विशेषताओं और प्रभावों में एक विरोधी चीज़ दूसरी के सामने होती है। निस्संदेह इसमें संयमियों के लिए एक निशान है। फिर स्पष्ट हो कि आदम और मसीह के मध्य यह विरोधाभास छुपा हुआ या केवल दृष्टिकोण नहीं है बल्कि

المسيح الموعود الذي هو آدم بمعنى ليدمر هذا الثعبان ويُتبر ما علا تتبيرا. فكان مجيء المسيح واجبا ليكون الفتح لآدم في آخر الامر وكان وعدمفعولا. وقد اشار الله سبحانه الى هذا الفتح العظيم وقتل الدجال القديم الذي هو الشيطان في قوله قال. يعني لا يقع امر استيصالك التام. وتتبر ما علوت من انواع الشرك والكفر والفسق الا في آخر الزمن وقت المسيح الامام. فافهم ان كنت من العاقلين منه.

को जो एक अर्थों में आदम है, पैदा किया ताकि वह उस सांप को और उसकी उद्दंडता को नष्ट और बर्बाद कर दे। अतः मसीह का आगमन अनिवार्य था ताकि अंतिम विजय आदम की हो और यह पूरा होकर रहने वाला वादा था। अल्लाह तआला अपने कथन में उस महान विजय और उस प्राचीन दज्जाल अर्थात शैतान के क्रत्ल की ओर संकेत कर चुका है अर्थात तेरी पूर्णता पराजय का और जो तू भिन्न-भिन्न प्रकार के शिर्क, कुफ्र, दुराचार के द्वारा विजय प्राप्त कर चुका है उसको तबाह करने का काम केवल अंतिम ज़माने में और ज़माने के इमाम मसीह के समय में ही होगा। अगर तू अकलमंदों में से है तो समझ ले। इसी से।



والمعاداة، وأتى مسيحُ الأمم ليرُدَّهُم إلى دار الفناء، ويرفع من بينهم الاختلاف والتشاجر والشحناء، وأصل التفرقة والشتات، ويجرهم إلى الاتحاد والمحوية ونفي الغير والمصافاة. وإن المسيح.. مظهرٌ لاسم الله الذي هو خاتم سلسلة المخلوقات، أعنى "الآخر" الذي أُشير إليه في قوله تعالى "هُوَ الْآخِرُ" لما هو علامة لمنتهى الكائنات، فلاجل ذلك اقتضت نفس المسيح ختم سلسلة الكثرة بالممات، أو برّد المذاهب إلى دين فيه موت النفوس من الأهواء والإرادات والاسلاك على الشريعة الفطرية التي تجرى تحت المصالح الإلهية وتخليصُ الناس من ميل النفس بهواها إلى العفو والانتقام والمحبة والمعاداة. فإن الشريعة الفطرية التي تستخدم قوى الإنسان كلها لا ترضى بأن تكون خادمةً لقوة واحدة، ولا تقيد أخلاق الإنسان في

यह एक स्पष्ट बात है और रोशन सच्चाइयों में से है। आदम इसलिए आया था ताकि लोगों को इस सांसारिक जीवन की ओर निकाल लाए और उनके मध्य मतभेदों और शत्रुता की आग भड़काए जबकि तमाम उम्मतों का मसीह इसलिए आया है ताकि उन्हें फिर से फना के घर की तरफ लौटा दे और उनके मध्य से मतभेद, परस्पर झगड़े और शत्रुता तथा आपसी फूट की जड़ को समाप्त कर दे और उन्हें एकता, फना, अन्य उपास्यों के इन्कार और शुद्ध मित्रता की ओर ले आए। मसीह मौऊद अल्लाह के नाम "अलआखिर" का द्योतक है जो कि सृष्टि के सिलसिला का अंतिम है जिसकी ओर खुदा तआला के कथन "हुवल आखिर" में इशारा किया गया है। क्योंकि यह नाम ब्रह्मांड के अंत की निशानी है इसलिए मसीह के नप्स ने मौत के द्वारा अक्सरियत के सिलसिले के अंत की मांग की या बहुत से धर्मों को एक ऐसे धर्म की ओर ले आने की मांग की जिस में लोगों की ताम्सिकी इच्छाओं की मौत हो और जिसमें स्वाभाविक शरीयत पर चलाना हो जो खुदाई हितों के अंतर्गत जारी है। और जिस में नप्स की इच्छाओं के मैलान के परिणामस्वरूप क्षमा और बदला तथा मुहब्बत और शत्रुता से लोगों

دائرة العفو فقط، ولا في دائرة الانتقام فقط، بل تحسبه سجيّة غير مرضية، وتؤتى كلّ قوة حقّها عند مصلحة داعية وضرورة مقتضية، وتغيّر حكم العفو والانتقام والمصافاة والمعاداة بحسب تغيّرات المصالح الوقتية.

وهذا هو الموت من النفس والهوى والجذبات النفسانية ودخولُ في الفانين. فحاصل الكلام إن المسيح الموعود ينقل الناس من الوجود إلى العدم، ويذكّرهم أيّامَ البيت المنهدم، وينقلهم إلى مثوى الميّتين.. إمّا بالإماتة الجسمانية بأنواع الأسباب من الحوادث السماوية والأرضية، وإمّا بإماتة النفس الإمارة والموت الذي يرُدُّ على أهل النشأة الثانية بإخراج بقايا الغيرية وغياب النفسانية وتكميل مراتب المحويّة، وإن فيه لهدي للمتفكرين.

को मुक्ति दिलाना हो क्योंकि फ़ितरती शरीयत जो समस्त मानवीय अंगों को प्रयोग में लाती है वह इस बात पर राज़ी नहीं होती कि केवल किसी एक शक्ति की सेवक बने और न ही मानवीय व्यवहार को केवल क्षमा करने या केवल बदला लेने के दायरे में सीमित करती है बल्कि उसे एक अप्रिय व्यवहार समझती है। और हर शक्ति को यथाअवसर, परिस्थिति और आवश्यकता के अनुसार उसका पूर्ण अधिकार देती है। और समय की परिस्थितियों के परिवर्तनों के अनुसार क्षमा एवं बदला और सच्ची दोस्ती एवं शत्रुता का आदेश बदलती रहती है।

यह है नफ़्स और इच्छाओं और आंतरिक भावनाओं की मृत्यु और फ़ना हो चुके लोगों में सम्मिलित हो जाना। अतः कहने का अर्थ यह है कि मसीह मौऊद लोगों को हस्त से नेस्त की ओर ले जाएगा और उन्हें गिरे हुए घर के दिन याद दिलाएगा और उन्हें मुर्दों के ठिकाने की ओर ले जाएगा, चाहे आसमानी और सांसारिक घटनाओं के विभिन्न प्रकार के संसाधनों से शारीरिक तौर पर मारने से संबंध हो या नफ़से अम्मर: (तामसिक वृत्ति) को मारने से और उस मौत से जो नया जीवन पाने वालों पर अन्य के शेष प्रभावों को स्वयं से निकाल देने, भौतिकता

ثم اعلم أن المسيح الموعود في كتاب الله ليس هو عيسى ابن مريم صاحب الإنجيل وخادم الشريعة الموسوية، كما ظنَّ بعض الجهلاء من الفئج الاعوج والفئة الخاطئة، بل هو خاتم الخلفاء من هذه الائمة، كما كان عيسى خاتم خلفاء السلسلة الكليمية، وكان لها كآخر اللبنة وخاتم المرسلين. وإنَّ هذا هو الحق، فويل للذين يقرءون القرآن ثم يمرّون منكرين. وإن الفرقان قد حكم بين المتنازعين في هذه المسألة، فإنه صرّح في سورة النور بقوله "مِنْكُمْ" بأن خاتم الائمة من هذه الملة، وكذلك صرّح هذا الامر في سورة التحريم والبقرة والفاحة، فأين تفرّون من النصوص القطعية البيّنة؟ وهل بعد القرآن حاجة إلى دليل لذوى

के अंधेरो को चीरने और फ़ना के मर्तबों को पूर्ण करने से आती हो। निस्संदेह इसमें विचार करने वालों के लिए मार्गदर्शन है। साथ ही स्पष्ट हो कि अल्लाह की पुस्तक (क़ुर्आन) में मसीह मौऊद से अभिप्राय वह ईसा इब्न मरयम नहीं जिस पर इन्जील उतरी थी और जो मूसा अलैहिस्सलाम की शरीयत का सेवक है जैसा कि फैज ए आवज़ (गुमराही का दौर) और गुनाहगार गिरोह के कुछ मुख़ों ने समझ लिया है बल्कि वह इस उम्मत में से ख़ातमुल ख़ुलफ़ा है जैसा कि ईसा अलैहिस्सलाम मूसवी सिलसिला के ख़ातमुल ख़ुलफ़ा, ख़ातमुल मुरसलीन और उसकी अंतिम ईट के समान था। निस्संदेह यही सच है। अतः तबाही है उन लोगों के लिए जो क़ुर्आन पढ़ते हैं फिर भी इन्कार करते जाते हैं। निस्संदेह क़ुर्आन इस विषय में दोनों झगड़ने वालों के मध्य निर्णय कर चुका है। उसने सूः अन्नूर में अपने कथन "मिन्कुम" से स्पष्ट कर दिया कि 'ख़ातमुल इमाम' इसी उम्मत में से होगा। इसी प्रकार क़ुर्आन ने इस विषय को सूः अत्तहरीम, सूः अल बक्रर: और सूः फातिहा में भी विस्तार से वर्णन किया है। अतः तुम स्पष्ट अटल क़ुर्आनी आयत से कहाँ भाग रहे हो? और क्या बुद्धिमानों के लिए क़ुर्आन

الفطنة؟ فبأى حديث تؤمنون بعد هذه الصحف المطهرة؟ وقد وعد الله المؤمنين في سورة التحريم في قوله "فَنَفَخْنَا فِيهِ مِنْ رُوحِنَا" أن يخلق ابنَ مريمَ منهم، وهو يرث هذا الاسم ويكون عيسى من غير فرقٍ في الماهية، فقد تقررَ في هذه الآية وعدًا من الله أن فردًا من هذه الأمة يسمّى ابنَ مريمَ ويُنفَخ فيه روحه بعد التقاة التامة . فأنا ذلك المسيح الذي لُمْتُموني فيه، ولا مبدّل لكلمات الله ذى الجبروت والعزّة. أتجعلون رزقكم من وعد الله أن تكونوا يهودا كيهود أمة موسى في الخبث والتمرّد العظيم، ولا تريدون أن يكون المسيح منكم كمسيح سلسلة الكليم؟ وَيَحْكُمُ! إنكم

के बाद भी किसी दलील की आवश्यकता है! इन पवित्र पुस्तकों को छोड़ कर तुम किस बात पर ईमान लाओगे? अल्लाह तआला सूर: अत्तहरीम की आयत- (सूर: अत्तहरीम - 13) में मोमिनों से यह वादा कर चुका है कि उनमें से इब्न मरयम पैदा करेगा। वह उस नाम का वारिस होगा और माहियत में किसी अंतर के बिना ईसा होगा। अतः इस आयत में अल्लाह तआला की ओर से वादा के तौर पर यह तय पा चुका है कि इस उम्मत में से एक व्यक्ति को इब्न मरयम का नाम दिया जाएगा और पूर्ण संयम के बाद उसमें उस (ईसा अलैहिस्सलाम) की रूह फूँकी जाएगी। अतः मैं ही वह मसीह हूँ जिसके कारण तुम ने मुझे बुरा-भला कहा और सम्मान एवं प्रतिष्ठा वाले खुदा की बातों को परिवर्तित करने वाला कोई नहीं। क्या तुम अल्लाह के वादे में से अपना भाग्य यह बनाते हो कि तुम दुष्टता और बड़ी निरंकुशता में मूसा अलैहिस्सलाम की उम्मत के यहूद के समान यहूद बन जाओ और तुम नहीं चाहते कि कलीमुल्लाह (अर्थात मूसा<sup>अ०</sup>) के सिलसिले के मसीह के समान तुम में से भी मसीह हो। तुम पर खेद! तुम बुराई और नुकसान में समानता पर तो सहमत हो परन्तु तुम भलाई में समानता पर सहमत नहीं। अल्लाह की क्रसम

رضيتم بمماثلة الشر والضير، ولا ترضون أن تكون لكم مماثلة في الخير. فوالله لا يفعل عدو بعدو ما تفعلون بأنفسكم، وقد نبذتم كلام الله وراء ظهوركم، وذكّرنا فتناسيتم، وأرينا فتعامتكم، ودعونا فأبيتكم، وتبعتم أمّارتكم في كل ما ماريتكم يا حزب العدا. أتتركون سُدى؟ أو يُغفّر لكم كلُّ ما اجترحتم من الهوى؟ مالكم لا تفكّرون في القرآن ولا ترون ما قال ربكم بأحسن البيان؟ ألم يكف لكم آية سورة التحريم، أو أعرضتم عن كلام الله الكريم؟ انظروا كيف ضرب الله مثل مريم لهذه الامة في هذه السورة، ووعد في هذه الحلة أن ابن مريم منكم عند التقاة الكاملة. وكان من الواجب لتحقيق هذا المثل المذكور في

शत्रु अपने शत्रु से वह व्यवहार नहीं करता जो तुम ने स्वयं से किया है, तुम ने अल्लाह के कलाम (क़ुरआन) को अपनी पीठों के पीछे फेंक रखा है, हम ने तुम्हें याद दिलाया परन्तु तुम जान-बूझ कर भूल गए और हमने तुम्हें दिखाया परन्तु तुम अंधे बन बैठे और हमने तुम्हें बुलाया परन्तु तुमने इन्कार कर दिया। हे शत्रुओं के समूह! तुमने प्रत्येक उस विषय में जिस में तुमने विरोध किया, अपनी तामसिक वृत्ति का अनुसरण किया, क्या तुम बेलगाम छोड़ दिए जाओगे या तुमने स्वेच्छा से जो गुनाह कमाए हैं वे क्षमा कर दिए जाएंगे? तुम्हें क्या हो गया है कि तुम क़ुरआन पर चिन्तन-मनन नहीं करते और तुम्हारे रब ने जो कुछ अत्यंत सरस रूप से वर्णन किया है तुम उस पर नज़र नहीं डालते। क्या तुम्हारे लिए सूर: अत्तहरीम की आयत पर्याप्त नहीं है या तुम दयालु खुदा के कलाम से मुंह फेरते हो। देखो कि किस प्रकार अल्लाह ने इस सूर: में इस उम्मत के लिए मरयम का उदाहरण प्रस्तुत किया है और इस सन्दर्भ में यह वादा किया है कि पूर्ण संयम से युक्त तुम लोगों में से ही इब्न मरयम होगा। इस आयत में वर्णित इस उदाहरण के सिद्ध करने के लिए आवश्यक था कि इस उम्मत में से एक व्यक्ति ईसा पुत्र मरयम हो, ताकि यह उदाहरण बिना

هذه الآية بأن يكون فرد من هذه الأمة عيسى ابن مريم ليتحقق المثل في الخارج من غير الشك والشبهة، وإلا فيكون هذا المثل عبثاً وكذباً ليس بمصداقه فرد من أفراد هذه الملة، وذلك مما لا يليق بشأن حضرة التقديس والعزة. هذا هو الحق الذي قال الله ذو الجلال، فماذا بعد الحق إلا الضلال؟ وأما عيسى الذي هو صاحب الإنجيل فقد مات وشهد عليه ربنا في كتابه الجليل، وما كان له أن يعود إلى الدنيا ويكون خاتم الأنبياء، وقد ختمت النبوة على نبينا صلى الله عليه وسلم، فلانبي بعده إلا الذي نُور بنوره و جعل وارثه من حضرة الكبرياء - اعلّموا أن الختمية أُعطيت من الأزل لمحمد صلى الله عليه وسلم، ثم أُعطيت لمن علّمه روحه

किसी संदेह के ज़ाहिरी रूप से भी पूरा हो जाए अन्यथा यह उदाहरण बेकार और झूठ होता और इस उम्मत के लोगों में से कोई व्यक्ति भी इसका पात्र न होता। और यह बात तो ऐसी है जो प्रतिष्ठावान ख़ुदा की शान के अनुकूल नहीं और यही सत्य है जो प्रतापवान ख़ुदा ने कहा है। अतः सत्य को छोड़ कर गुमराही के अतिरिक्त और क्या है और जहाँ तक उस ईसा अलैहिस्सलाम का संबंध है जिसको इंजील मिली थी तो वह मृत्यु पा चुका और हमारा रबब अपनी प्रतापी किताब (क़ुर्आन) में इस की गवाही दे चुका है। उस ईसा के लिए यह संभव नहीं कि संसार में वापस आए और ख़ातमुल अम्बिया बन जाए जबकि नुबुव्वत हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर समाप्त कर दी गई है। अतः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी नहीं सिवाए इसके जो आपके प्रकाश से प्रकाशित हो और अल्लाह तआला की ओर से आपका वारिस बनाया जाए। जान लो कि ख़ातमीयत का मक़ाम (पद) अनादिकाल से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रदान किया गया है फिर उसे दिया गया जिसे आप की रूह ने शिक्षा दी और उसे अपना प्रतिरूप बना लिया। अतः बहुत ही सौभाग्यशाली है वह जिसने शिक्षा दी और जिसने शिक्षा पाई। अतः

وَجَعَلَهُ ظِلًّا، فَتَبَارَكَ مَنْ عَلَّمَ وَتَعَلَّمَ ★. فَإِنَّ الْخْتِمِيَّةَ الْحَقِيقِيَّةَ كَانَتْ مَقْدَّرَةً فِي الْإِلْفِ السَّادِسِ الَّذِي هُوَ يَوْمُ سَادِسٍ مِنْ أَيَّامِ الرَّحْمَنِ، لِيَشَابِهَ أَبَا الْبَشَرِ هُوَ خَاتَمَ نَوْعِ الْإِنْسَانِ. وَاقْتَضَتْ مَصَالِحَ أُخْرَى أَنْ يُبْعَثَ رَسُولُنَا فِي الْيَوْمِ الْخَامِسِ. أَعْنَى فِي الْإِلْفِ الْخَامِسِ بَعْدَ آدَمَ، لِأَنَّ كَانَ الْيَوْمِ الْخَامِسِ يَوْمَ اجْتِمَاعِ الْعَالَمِ الْكَبِيرِ، وَهُوَ

निस्संदेह वास्तविक ख़ातमीयत छठे हज़ार में मुकद्दर थी जो कि ख़ुदा-ए-रहमान के दिनों में से छठा दिन है ताकि जो मानवजाति का ख़ातम है वह अबुल बशर (आदम) के समरूप हो जाए। साथ ही कुछ अन्य हितों ने चाहा कि हमारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पांचवें दिन में अर्थात आदम के बाद पांचवें हज़ार में अवतरित किए जाएँ क्योंकि पांचवां दिन आलमे कबीर (संसार) के इकठ्ठे होने

★ الْحَاشِيَّةُ هَذِهِ إِشَارَةٌ إِلَى وَحْيٍ مِنْ اللَّهِ كُتِبَ فِي الْبَرَاهِينِ الْإِحْمَدِيَّةِ وَقَدَمَضِي عَلَيْهِ أَزِيدٌ مِنْ عَشْرِينَ سَنَةً مِنَ الْمُدَّةِ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ أَوْحَى إِلَيَّ وَقَالَ: كُلُّ بَرَكَةٍ مِنْ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَبَارَكَ مَنْ عَلَّمَ وَتَعَلَّمَ. يَعْنِي أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَأْثِيرٌ وَرُوحَانِيَّةٌ وَأَفَاضَ إِذَا لَبَّكَ بِفَيْضِ رَحْمَتِهِ لِيَدْخُلَكَ فِي صَحَابَتِهِ وَيُشْرِكَ فِي بَرَكَتِهِ وَلِيَتِمَّ نَبَأُ اللَّهِ وَآخِرِينَ مِنْهُمْ بِفَضْلِهِ وَمَتَّعَهُ. وَلَمَّا كَانَ هَذَا النَّبَأُ الْأَصْلَ الْمَحْكَمَ وَالرَّهَانَ الْإِعْظَمَ عَلَى دَعْوَى فِي الْقُرْآنِ إِشَارَةَ اللَّهِ سُبْحَانَهُ إِلَيْهِ فِي الْبَرَاهِينِ لِيَكُونَ ذِكْرُهُ هَذَا حَاجَةً عَلَى الْإِعْدَاءِ مِنْ جِهَةِ طَوْلِ الزَّمَانِ مِنْهُ.

अनुवाद- यह अल्लाह की उस वह्यी की ओर संकेत है जो बराहीन अहमदिया में लिखी गई है और उस पर बीस वर्ष से अधिक समय बीत चुका है। अल्लाह ने मेरी ओर वह्यी की थी और फ़रमाया था कि प्रत्येक बरकत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से है। अतः बड़ा मुबारक है वह जिसने शिक्षा दी और जिसने शिक्षा ग्रहण की। अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी आध्यात्मिकता से तेरा शिक्षण किया है और तेरे दिल का जाम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी रहमत के फैज़ (वरदान) से भर दिया है ताकि तुझे अपने सहाबा में सम्मिलित कर लें और तुझे अपनी बरकत में सम्मिलित कर लें और ताकि अल्लाह की "व आखरीना मिन्हुम" वाली भविष्यवाणी उसकी कृपा और उपकार से पूरी हो जाए। और चूंकि यह भविष्यवाणी कुर्आन में वर्णित दावे का दृढ़ आधार और उस पर सबसे बड़ी दलील थी इसलिए अल्लाह तआला ने उसकी ओर बराहीन अहमदिया में संकेत कर दिया ताकि उसका यह वर्णन लम्बा समय बीत जाने की दृष्टि से शत्रुओं पर दलील हो। इसी से।

ظِلُّ لآدم الذي أعزّه الله وأكرمه، فإن آدم جمع في نفسه كل ما تفرّق فيه ووصل كلما تجدّم، فلا شك أن العالم الكبير قد نزل بمنزلة خَلْقِ أُولَى لآدم في صُورٍ متنوّعة، فقد خُلِقَ آدم بهذا المعنى في اليوم الخامس من غير شك وشبهة، ثم أراد الله أن يُنشأ نبينا الذي هو آدم خلقاً آخر في الالف السادس بعد خَلْقِته الأولى، كما أنشأ من قبل صفية آدم في آخر اليوم السادس من أيام بدو الفطرة ليتمّ المشابهة في الأولى والأخرى، وهو يوم الجمعة الحقيقية، وكان جمعة آدم ظلّ له عند أُولَى النُهَى، فاتخذ على طريق البروز مظهرًا له من أمته، وهو له كالعين في اسمه وماهيته، وخلق الله في اليوم السادس بحساب أيام بدو نشأة الدنيا لتكميل

का दिन है और वह आदम का प्रतिरूप है जिसे अल्लाह ने सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान की क्योंकि आदम ने अपने अंदर वह सब कुछ जमा कर रखा है जो इस लोक में विभिन्न रूप में मौजूद है और उसे जोड़ कर समेट लिया है जो अलग होकर बिखरा हुआ है। अतः इसमें कोई संदेह नहीं कि आलमे कबीर (अर्थात् संसार) विभिन्न सूरतों में आदम की पहली पैदाइश के तौर पर है। अतः आदम निस्संदेह इन अर्थों के अनुसार पांचवें दिन पैदा किया गया। फिर अल्लाह ने चाहा कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को, जो आदम हैं, छठे हज़ार में आपकी पहली पैदाइश के पश्चात एक नए रंग में पैदा करे जैसा कि पहले उसने अपने चयनित मनुष्य आदम को सृष्टि के प्रारंभिक दिनों में से छठे दिन के अन्त पर पैदा किया था ताकि पहली और अंतिम पैदाइश में समानता पूर्ण हो जाए और यही वास्तविक जुमा का दिन है। जबकि आदम का जुमा बुद्धिमानों के निकट इसका प्रतिरूप था। फिर अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत में से बुरूजी रूप में आप का एक मज़हर\* बनाया जो नाम और माहीयत (गुण) में असल के समान ही है और अल्लाह ने समरूपता की पूर्णतः

\* मज़हर - द्योतक (अनुवादक)



मماثلته-أعنى في آخر الإلف السادس ليشابه آدم في يوم خلقته، وهو الجمعة حقيقةً، لأن الله قدّر أنه يجمع الفرق المتفرقة في هذا اليوم جمعاً برحمةٍ كاملةٍ، وينفخ في الصور-يعنى يتجلى الله لجمعهم فإذا هم مجتمعون على ملّةٍ واحدةٍ إلا الذين شقّوا بمشيئةٍ وحبسهم سجنُ شقوةٍ، وإليه أشار سبحانه في قوله ”وَأَخْرَيْنَ مِنْهُمْ“ في سورة الجمعة، إيمائاً إلى يوم الجمعة الحقيقية- وأراد من هذا القول أن المسيح الموعود الذي يأتي من بعد خاتم الأنبياء هو محمد صلى الله عليه وسلم من حيث المضاهاة التامة، ورفقاءه كالصحاباء، وأنه هو عيسى الموعود لهذه الأمة، وعداً من الله ذى العزّة في سورة التحريم والنور والفاتحة- قول الحق الذي فيه

के लिए उसे सृष्टि के प्रारंभिक दिनों के हिसाब से छठे दिन में पैदा किया अर्थात छठे हज़ार के अंत में ताकि वह अपनी पैदाइश के दिन के हिसाब से आदम के समरूप हो और यही वास्तव में जुमे का दिन है क्योंकि अल्लाह ने मुक़द्दर कर रखा है कि वह उस दिन में अपनी पूर्ण रहमत से समस्त विभिन्न समूहों को इकट्ठा करेगा और बिगुल फूँका जाएगा। अर्थात अल्लाह उनको इकट्ठा करने के लिए चमकार दिखाएगा तो तुरंत ही वे मिल्लत-ए-वाहिदा (एक धर्म) पर इकट्ठे हो जाएँगे सिवाए उनके जो खुदा की नज़र में दुर्भाग्यशाली ठहरे और दुर्भाग्य की क़ैद ने उन्हें रोके रखा। इसी की ओर अल्लाह तआला ने सूर: जुमा में वास्तविक जुमा की ओर ध्यानाकर्षित कराते हुए अपने आदेश 'व आखरीन मिन्हम' में संकेत किया है। इस कथन से अल्लाह की इच्छा यह है कि वह मसीह मौऊद जो ख़ातमुल अम्बिया के पश्चात् आएगा वह पूर्ण समरूपता की दृष्टि से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही होगा और उसके साथी सहाबा के समान होंगे और वही इस उम्मत के लिए कथित ईसा होगा। यह अल्लाह तआला की ओर से सूर: अत्तहरीम, सूर: अन्नूर और सूर: फ़ातिहा में वादा है, यह वह सच्ची बात है जिसमें लोग संदेह कर रहे हैं। किसी नबी के लिए ख़ातमुल अम्बिया के

يَمْتَرُونَ- مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَأْتِيَ بَعْدَ خَاتَمِ الْإِنْبِيَاءِ إِلَّا الَّذِي جُعِلَ وَارِثَهُ مِنْ أُمَّتِهِ، وَأُعْطِيَ مِنْ اسْمِهِ وَهُوَ يَتَّه، وَيَعْلَمُهُ الْعَالَمُونَ- فَذَلِكَ مَسِيحُكُمْ الَّذِي تَنْظُرُونَ إِلَيْهِ وَلَا تَعْرِفُونَهُ، وَإِلَى السَّمَاءِ أَعْيُنَكُمْ تَرْفَعُونَ- أَتَظُنُّونَ أَنْ يَرُدَّ اللَّهُ عَيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ إِلَى الدُّنْيَا بَعْدَ مَوْتِهِ وَبَعْدَ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ؟ هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تَظُنُّونَ- وَقَدْ وَعَدَ اللَّهُ أَنَّهُ يُمَسِّكُ النَّفْسَ الَّتِي قَضَى عَلَيْهَا الْمَوْتَ، وَاللَّهُ لَا يَخْلِفُ وَعْدَهُ وَلَكِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ. أَتَزْعَمُونَ أَنَّهُ يُرْسِلُ عَيْسَى إِلَى الدُّنْيَا، وَيُوحِي إِلَيْهِ إِلَى أَرْبَعِينَ سَنَةً، وَيَجْعَلُهُ خَاتَمَ الْإِنْبِيَاءِ وَيُنْسِي قَوْلَهُ "وَلَكِنْ رَسُولاَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ" سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى عَمَّا تَصِفُونَ! إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا الْفَاطَا لَا تَعْلَمُونَ حَقِيقَتَهَا، وَلَوْ رَدَدْتُمُوهَا إِلَى حَكْمِ

बाद आना संभव नहीं सिवाए उसके जो आपकी उम्मत में से आपका वारिस बनाया गया हो और उसे आपके नाम और जौहर से हिस्सा दिया गया हो। और ज्ञान रखने वाले इस बात को जानते हैं। अतः यह है तुम्हारा मसीह जिसे तुम देख तो रहे हो परन्तु पहचान नहीं रहे और आकाश की ओर नज़रें उठाए हुए हो। क्या तुम सोचते हो कि अल्लाह ईसा पुत्र मरयम को उसकी मृत्यु के पश्चात और ख़ातमुन्नबिय्यीन के पश्चात् संसार में लौटा देगा। दूर की बात है बहुत दूर की बात है जो तुम सोचे बैठे हो। अल्लाह वादा कर चुका है कि जिस जान के लिए वह मौत का फैसला कर देता है वह उसे रोक कर रखता है और अल्लाह अपने वादे के विरुद्ध नहीं करता परन्तु तुम एक मूर्ख क्रौम हो। क्या तुम समझते हो कि वह ईसा को संसार में भेजेगा और चालीस वर्ष उसकी ओर वह्यी करता रहेगा और उसे ख़ातमुल अम्बिया बना देगा और अपने कथन-

وَ لَكِنْ رَسُولاَ اللَّهِ وَ خَاتَمَ النَّبِيِّينَ ط (सूर: अहज़ाब- 41)

को भूल जाएगा। वह पवित्र है और उससे बहुत बुलंद है जो तुम वर्णन करते हो। तुम केवल इन शब्दों का अनुसरण कर रहे हो जिनकी वास्तविकता तुम्हें ज्ञात नहीं अगर तुम उनको अल्लाह की ओर से आने वाले निर्णायक के समक्ष,

من الله الذى أرسل إليكم لكان خيرا لكم إن كنتم تعلمون. يا حسرة عليكم! إنكم جعلتم علم الدين سُمراً، وتجادلون عليه بُخلاً وحَسَداً، وطبع الله على قلوبكم فلا تبصرون. ألا ترون إلى السلسلتين المتقابلتين، أو غلبتكم شقوتكم فلا توائسون؟ وتقولون ليس ذكر المسيح الموعود في القرآن، وقد مُلئ القرآن من ذكره ولكن لا يراه العمون. ألا إن لعنة الله على الكاذبين الذين يكذبون كتاب الله ويحرّفونه ولا يخافون. وإذا قيل لهم تعالوا نبين لكم حُجج الله قالوا إنا نحن المهتدون. وما في أيديهم إلا قصص باطلة ولا يتّقون. ويسخرون من الذين آمنوا وهم يعلمون. وما كان مجيئى في آخر السلسلة المحمدية إلا كمال المماثلة

जो तुम्हारी ओर भेजा गया है, प्रस्तुत कर देते तो यह तुम्हारे लिए बेहतर होता अगर तुम जानते हो। खेद है तुम पर तुमने किस्से कहानियों को ही धर्म का ज्ञान बना लिया और तुम लालच और ईर्ष्या के कारण उनकी बुनियाद पर झगड़ते हो। अल्लाह ने तुम्हारे दिलों पर मुहर कर दी है इसलिए तुम देख नहीं सकते। क्या तुम उन दो परस्पर सिलसिलों (अर्थात मुहम्मदी सिलसिला और मूसवी सिलसिला) की ओर नहीं देखते या तुम पर तुम्हारा दुर्भाग्य हावी हो गया है और तुम महसूस नहीं करते और तुम कहते हो कि मसीह मौऊद का वर्णन कुर्आन में नहीं है हालांकि कुर्आन उसके वर्णन से भरा हुआ है परन्तु अंधे उसे नहीं देख सकते। सावधान! उन झूठों पर अल्लाह की लानत है जो अल्लाह की किताब को झुठलाते और उसमें तहरीफ़ (शाब्दिक या आर्थिक परिवर्तन) करते हैं और डरते नहीं। और जब उनसे कहा जाता है कि आओ हम तुम्हारे लिए अल्लाह के तर्क स्पष्ट रूप से वर्णन करें तो कह देते हैं कि हम तो हैं ही सन्मार्गप्राप्त, हालांकि उनके हाथों में झूठे किस्सों के अतिरिक्त कुछ नहीं और वे संयम से युक्त नहीं हैं। और वे जानते बूझते हुए ईमान लाने वालों से उपहास करते हैं। मेरा मुहम्मदी सिलसिले के अंत में आना केवल समानता को पूर्ण करने और मुकाबले के वज़न को पूर्ण

★ ولتوفية وزن المقابلة، وليرد الكرة لآدم بعد الكرة الشيطانية،  
فما لهم لا يتفكرون! أكان عسيرا على الله أن يخلق كعيسى ابن  
مريم عيسى آخر، سبحانه، إذا قضى أمرا فإنما يقول له كن  
فيكون. هو الله الذي بعث مثيل موسى في أول السلسلة المحمدية،  
فظهر منه أنه كان يريد أن يخلق مثل عيسى في آخرها ليتشابه  
السلسلتان بالمشابهة التامة، فما لكم لا تؤمنون؟ أيها

करने के लिए है। और इसलिए है ताकि शैतान के प्रभुत्व के पश्चात आदम को  
फिर प्रभुत्व प्रदान किया जाए। अतः उन्हें क्या हो गया है कि वे विचार नहीं  
करते। क्या अल्लाह के लिए ईसा पुत्र मरयम जैसा कोई अन्य ईसा पैदा करना  
कठिन है? वह पवित्र है जब वह किसी बात का निर्णय कर ले तो उसे केवल  
इतना कहता है कि हो जा तो वह होने लगता है और होकर रहता है। वह अल्लाह  
ही है जिसने मुहम्मदी सिलसिला के आरम्भ पर मूसा के समरूप को अवतरित  
किया। अतः इस से प्रकट हुआ कि वह चाहता है कि इस सिलसिला के अंत में

★ الحاشية ان الله خلق آدم وجعله سيدا وحاكما واميرا على كل ذي روح من  
الانس والجان. كما يفهم من آية "اسجدوا لآدم" ثم ازاله الشيطان وأخرجه  
من الجنان. وردا للحكومة الى هذا الشعبان. ومس آدم ذلة وخزي في هذه الحرب  
والهوان. وان الحرب سجال. وللا تقياء مال عند الرحمن. فخلق الله المسيح  
الموعود ليجعل الهزيمة على الشيطان في آخر الزمان. وكان وعدا مكتوبا في  
القرآن-منه.

★ अल्लाह ने आदम को पैदा किया और उसे मनुष्यों तथा जिनों में से प्रत्येक जीवित का सरदार,  
निर्णायक और अमीर बनाया जैसा कि आयत اسجدوا لآدم (अलबक्रर: - 35 अर्थात आदम को  
सजदा करो) से समझ आता है। फिर शैतान ने उसे बहका दिया और उसे जन्नतों से निकलवा दिया  
और साम्राज्य उस अजगर को दे दिया गया और इस लड़ाई में आदम अपमानित, तिरस्कृत और  
लज्जित हुआ। लड़ाई में विजय कभी एक की होती है कभी दूसरे की और रहमान खुदा के निकट  
अच्छा परिणाम मुत्तकियों का ही है। अतः अल्लाह ने मसीह मौऊद को पैदा किया ताकि युग के  
अंत में शैतान को पराजित करे। यह वह वादा है जो कुरआन में लिखा हुआ है। इसी से।

الناس! آمنوا أو لا تؤمنوا إن الله لن يترك هذه السلسلة حتى يُتمّها ولن يترك حيّة آدم حتى يقتلها، فرُدُّوا ما أراد الله إن كنتم تقدرّون. أترُدُّون نعمة الله بعد نزولها أيها المحرومون؟ وقد تم وعد الله صدقا وحقا، فلا تشتروا الضلالة أيها الخاسرون. أتبخلون بما أنعم الله على عبد من عباده؟ أتعجزون الله بألسنكم وحيلكم ومكائدكم؟ فاجمعوا كلّ مكركم، وادعوا الذين سبقوكم مكرًا و زورًا، واقعدوا في كل طريق ولا تُمهّلون. وستنظرون أن الله يخزيكم ويردّ عليكم كيدكم ولا تضرّونه شيئًا ولا تُنصّرون؟ أحسبتم أن إنسانا فعل فعلاً من تلقاء نفسه؟

ईसा का समरूप पैदा करे ताकि दोनों सिलसिलों में पूर्ण समानता हो जाए। अतः तुम्हें क्या हो गया है कि तुम ईमान नहीं लाते। हे लोगो! तुम ईमान लाओ या ईमान न लाओ अल्लाह इस सिलसिला को कदापि नहीं छोड़ेगा यहाँ तक कि इसे पूरा कर ले और आदम के सांप को मारे बिना कदापि न छोड़ेगा। अतः यदि तुम सामर्थ्य रखते हो तो अल्लाह के इरादे को टाल कर दिखाओ। हे वंचितो! क्या तुम अल्लाह की नेमत को उसके उतरने के बाद रद्द करते हो जबकि अल्लाह का वादा सच्चाई से पूरा हो चुका है। हे नुक्सान उठाने वालो गुमराही न खरीदो। क्या अल्लाह ने अपने बन्दों में से एक बन्दे पर जो नेमत उतारी है तुम उस पर ईर्ष्या करते हो। क्या तुम अपनी ज़बानों, बहानों और चालाकियों से अल्लाह को लाचार कर सकते हो? अतः तुम अपनी समस्त चालाकियां एकत्र कर लो और उन लोगों को बुला लो जो धोखा देने और झूठ बोलने में तुम से भी आगे बढ़ गए हों और हर मार्ग पर बैठ जाओ और मुझे मोहलत न दो। तुम अवश्य देखोगे कि अल्लाह तुम्हें अपमानित करेगा और तुम्हारे धोखे तुम पर उल्टा देगा और तुम उसे कोई हानि न पहुंचा सकोगे और न तुम्हारी सहायता की जाएगी। क्या तुम यह विचार करते हो कि एक इंसान ने अपनी ओर से यह काम कर लिया है, कदापि नहीं। बल्कि यह अल्लाह ही है जो धरती का उसके बिगड़ने

كلا بل هو الله الذي يُصلِح الارض بعد فسادها، أليست الارض مُنجَّسة من فساد، فما لكم لا تنظرون؟ إنكم تركتم الصراط، فترككم الله وذهب بنور قلوبكم، وكذلك يُجزى المجرمون- أعجبتكم أن جاءكم إمام من أنفسكم في آخر الازمنة ليتساوى السلسلتان ككفّي الميزان، ما لكم كيف تعجبون؟ كذلك لیتّم وعدُ الله في التحريم والنور والفاحة والبقرة، ما لكم لا تفكّرون؟ وقد نزلت الآيات وحصحص الحق وظهرت البيّنات ثم أنتم تُعرضون- وما طلبتم من حُجة إلا أعطى لكم فوج منها ثم لا تنتهون ألا ترون إلى أرضكم كيف ينقُصها الله من أطرافها،

के बाद सुधार करता है। क्या धरती उपद्रव से अपवित्र नहीं हो गई थी। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम देखते नहीं। निस्संदेह तुमने सही मार्ग को छोड़ दिया है तो अल्लाह ने भी तुम्हें छोड़ दिया और तुम्हारे दिलों का नूर ले गया है और मुजरिमों को इसी तरह बदला दिया जाता है। क्या तुम आश्चर्य करते हो कि अंतिम युग में तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक इमाम आ गया है ताकि दोनों सिलसिले तराजू के दो पलड़ों की तरह परस्पर बराबर हो जाएं। तुम्हें क्या हो गया है, तुम किस तरह आश्चर्य कर सकते हो? इसी तरह हुआ ताकि सूरह तहरीम, सूरह नूर, सूरह फ़ातिहा और सूरह बक्रर: में वर्णित अल्लाह का वादा पूरा हो जाए। तुम्हें क्या हुआ है कि तुम विचार नहीं करते? निशानियां उतर रही हैं और सच्चाई खुल चुकी है और रोशन दलीलें प्रकट हो चुकी हैं फिर भी तुम मुंह फेर रहे हो। तुमने जो दलील भी मांगी तुम्हें उसकी फौज प्रदान की गई फिर भी तुम बाज़ नहीं आते, क्या तुम अपनी धरती की ओर नहीं देखते कि अल्लाह कैसे उसे उसके किनारों से कम करता चला जा रहा है और गर्दन में मेरे इस क़दम के नीचे झुकी हुई हैं और हर एक रास्ते से लोग मेरे पास इकट्ठे हो रहे हैं। अगर यह मामला अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की ओर से होता है तो मैं अपने दावे के बाद तुम्हारे बीच 30 वर्ष तक जीवित रहा हूँ जैसा कि तुम देख रहे हो और जिस प्रकार

والرقاب تحت قدمي هذه تتدلل، والناس من كل فجٍّ يجتمعون؟ ولو كان هذا الأمر من عند غير الله لما لبثت فيكم إلى ثلاثين سنة بعد دعوتي كما أنتم تشاهدون- ولأهلك كما يهلك المفترون أجنثُ شيئاً فرئياً وكنتم من قبل تنتظرون؟ وقد ابتهلتم كل الابتهاال، ليهلكني ربِّي كأهل الضلال، فأعطيت لي بركةً على بركة، ولُعنَّتْ كلماتكم، وضربت على وجوهكم دعواتكم، فأصبحتم مُحَقَّرِينَ مُهَانِينَ بما كنتم تُهينون ما كان الله ليهلكني قبل أن يتم أمري، ولي سرُّ بربي لا يعلمه الملائكة، فكيف تعرفونني أيها الجاهلون الحاسدون؟ وليس لي مقامى عنده بظاهر الأعمال ولا بأقوال، ولا بعلم واستدلال، بل بسرِّ في قلبي

मुफ्तरी (झूठ गढ़ने वाले) तबाह किए जाते हैं अवश्य मैं भी तबाह किया जाता। क्या मैंने कोई झूठ गढ़ा है हालांकि तुम तो पहले ही प्रतीक्षा कर रहे थे। तुमने हर प्रकार से गिड़गिड़ा कर दुआ की कि मेरा रब मुझे गुमराहों के समान तबाह कर दे परंतु मुझे बरकत पर बरकत दी गई और तुम्हारे शब्दों पर लानत की गई और तुम्हारी दुआएं तुम्हारे मुंह पर मारी गई। अतः तुम अपमानित और तिरस्कृत हो गए क्योंकि तुम उपहास करते थे। अल्लाह मेरा मिशन पूरा करने से पहले मुझे तबाह नहीं करेगा। मेरा अपने रब के साथ वह राज (भेद) है जिसे फरिश्ते भी नहीं जानते। अतः हे मूर्खों, ईर्ष्यालुओ! तुम मुझे कैसे पहचान सकते हो। उसके निकट मेरा मुक़ाम न जाहिरी कर्मों और न कथनों और न किसी ज्ञान और दलील के कारण है बल्कि मेरे दिल में मौजूद उस भेद के कारण है जो उसके निकट पहाड़ों से भी अधिक भारी है। निस्संदेह मेरा भेद मुर्दों को ज़िन्दा करता है और वीरान बंजर भूमि में वनस्पति उगाता है और निशान दिखाता है। अतः क्या बुद्धिमानों में से कोई इच्छुक है और क्या कोई क्रौम खोज करने वाली है। मैं निस्संदेह अपने रब की ओर से इस्लाम के लिए एक निशान और सर्वज्ञानी खुदा की ओर से एक दलील बनाया गया हूँ। अतः इंकार करने वाले शीघ्र जान लेंगे।

هو أثقل عنده من جبال- وإن سرى يُحيى الأموات، ويُنبت الموات، ويُرى الآيات، فهل من طالب من ذوى الحصات، وهل من قوم يطلبون؟ وإني جعلتُ من ربّي آيةً للإسلام، وحُجّةً من الله العلام، فسوف يعلم المنكرون- أسمع بهم وأبصر يومَ يأتونه، وقد أنفدوا الأعمار في هذه عمياً، ويذكرون فلا يزالون- وإني جئتُ لأنقل الناس من الوجود إلى العدم بحكم ربّ العزّة ★، وأرى الساعة قبل الساعة، وترون أن الأمراض تُشاع والنفوس تُضاع، وسيذوق الناس موتاً هو موت من أهواء الغيريّة وجئتُ لأنقل الناس من الكثرة إلى الوحدة، وإلى الاتفاق من المخالفة،

जिस दिन वे उसके पास आएंगे उस दिन वे क्या ख़ूब सुनने वाले और क्या ख़ूब देखने वाले होंगे। उन्होंने इस संसार में अन्धों के समान उम्रें समाप्त कर दीं और उन्हें स्मरण कराया जाता रहा लेकिन वे परवाह नहीं करते। मैं इसलिए आया हूँ ताकि ख़ुदा तआला के आदेश से लोगों को वजूद से फ़ना की ओर ले जाऊँ और क्रयामत से पहले क्रयामत दिखाऊँ। तुम देख रहे हो कि बीमारियाँ फैल रही हैं और जानें व्यर्थ जा रही हैं और निकट ही लोग उस मौत का मज़ा चखेंगे जो

★ الحاشية- قد قلنا غيره مرّة ان النقل من الوجود الى العدم- ليس بالسيف و السنان- بل بامر من الله الديان- فان الله كتب في كتبه ان علامة ظهور المسيح الموعود ان تسمعوا اخبار المحاربات في الافاق والاقطار- واخبار شيوع الوباء في الديار- ثم من علامة المسيح انه يجذب الناس الى كمال نقطة التقاة- وان هو الا نوع من الممات- منه

★ हमने बहुत बार यह कहा है कि वजूद से फ़ना की ओर परिवर्तन तलवार और तीर से न होगा बल्कि प्रतिफल के मालिक ख़ुदा के आदेश से होगा अल्लाह तआला ने अपनी किताबों में लिखा है कि मसीह मौरूद के प्रकटन की निशानी यह है कि तुम कई दिशाओं और कई क्षेत्रों में जंगों की ख़बरें और कई शहरों में वबा फैलने की ख़बरें सुनोगे। फिर मसीह की एक निशानी यह है कि वह लोगों को तक्वा की पराकाष्ठा की ओर खींच लाएगा और यह मौत की ही एक ख़बर है। इसी से।



وإلى الاجتماع من التفرقة، ولذلك خُلِقَ أسبابُها، وفتِحَ أبوابُها-  
 ألا ترون إلى الطُّرق كيف كُشِفَتْ؟ وإلى الوابورة كيف أُجريت؟  
 وإلى العِشار كيف عُطِّلَتْ؟ وإلى الإخبار كيف يُسَّرَ إيصالُها،  
 والخيالات تبادلت؟ وإلى النفوس كيف زُوِّجت؟ وترون أن الناس  
 يُنقلون من هذه الدنيا إلى دار الفناء بمحاربات أوقدت نارها بين  
 الملوك وبأنواع الوباء ثم بإشاعة لُبِّ تعليم القرآن، وحقيقة  
 كتاب الله الرحمن، الذي أرسلتُ له في هذا الزمان، فإن هذا التعليم  
 يدعو إلى الموت- أعنى إلى موتٍ يردُّ على النفس بترك الغيريَّة  
 والهوى، ويدعو إلى محويَّةٍ في الشريعة الفطريَّة وحالةٍ كحالة مَنْ  
 مات وفنى، ويجرُّ إلى تعطلِّ تامٍّ من حركات الاختيار، وموافقةٍ

अल्लाह के अतिरिक्त (समस्त चीजों) की इच्छाओं की मौत है। मैं इसलिए आया हूँ ताकि लोगों को अनेकत्व से एकत्व की ओर लाऊँ और विरोध से सहमति की ओर तथा विभिन्नता से एकता की ओर ले आऊँ। और इसी के लिए साधन उत्पन्न कर दिए हैं और उनके द्वार खोल दिए गए हैं। क्या तुम मार्गों की ओर नहीं देखते कि वे कैसे स्पष्ट कर दिए गए हैं और धुँएँ वाले जहाजों को नहीं देखते कि वे कैसे चलाए गए हैं और दस महीने की गर्भवती ऊँटनियाँ कैसे बेकार छोड़ दी गईं। और विचार नहीं करते कि खबरों को पहुंचाना कैसे सरल बना दिया गया है और किस प्रकार विचारों का आदान-प्रदान हो रहा है और लोगों को कैसे मिला दिया गया है। तुम देखते हो कि लोग इन जंगों के कारण जिनकी अग्नि बादशाहों के मध्य भड़काई गई है और विभिन्न प्रकार की बीमारियों के कारण इस संसार से परलोक की ओर भेजे जा रहे हैं, फिर कुर्आन की शिक्षा के मज़ और रहमान खुदा की किताब की हकीकत के प्रचार से भी जिसके लिए मैं इस युग में भेजा गया हूँ। क्योंकि यह शिक्षा मौत की ओर बुलाती है अर्थात उस मौत की ओर जो शिर्क और तामसिक इच्छाओं को छोड़ने से इंसान पर आती है और फ़ितरती शरीयत में खो जाने की ओर तथा उस व्यक्ति की हालत

بافتاوى التى تحصل للقلب فى كل حين من الله مُنزَّلِ الاقدار- وفى هذه الحالة يكون الإنسان مستهلكة الذات غير تابعٍ لامر النفس والجذبات، حتى لا يُنسب إليه سكون ولا حركة ولا ترك ولا بطش ويتعالى شأنه عن التغيرات، ولا يوجد فيه من القصد والإرادة أثر، ولا من المدح والمذمة خبر، ويصير كالأموات. فهذا نوع من الموت، فإنه لا يملك أهل هذا الموت حركةً ولا سُكونًا، ولا أَلْمًا ولا لَذَّةً، لا راحةً ولا تعبًا، ولا محبةً ولا عداوةً، ولا عفوًا ولا انتقامًا، ولا بُخلاً ولا سخاوةً، ولا جُبْنًا ولا شجاعةً، ولا غضبًا ولا تحنُّنًا، بل هو ميّتٌ فى أيدي الحى القيوم، ما بقى فيه حركةٌ ولا هوى، ولا يُنسب إليه شيء من هذه العوارض كما لا يُنسب إلى

के समान हालत की ओर बुलाती है जो मर गया और फ़ना हो गया। और आत्मनिर्भरता की क्रियाओं से पूर्णतः वान्चित्य की ओर तथा उन फत्त्वों से समानता की ओर खींचती है जो भाग्य के रचयिता अल्लाह की ओर से दिल को हर पल प्राप्त होते हैं। इस हालत में इन्सान अपने वजूद को मार कर आत्मा और भावनाओं के अधीन नहीं रहता यहाँ तक कि उसकी ओर न कोई ठहराव सम्बद्ध हो सकता है और न कोई क्रिया और न छोड़ना और न पकड़ना। उसकी शान परिवर्तनों से मुक्त हो जाती है और उसमें अपने संकल्प तथा इच्छा का कोई निशान तक नहीं रहता और न किसी प्रशंसा और निंदा की खबर होती है और वह मुर्दों के समान हो जाता है। अतः यह मौत की एक प्रकार है उस मौत का मर्तबा पाने वाला न किसी प्रतिक्रिया की शक्ति रखता है और न किसी दुःख तथा आनंद की, न किसी आराम और थकावट की तथा न किसी प्रेम और शत्रुता की, न क्षमा की, न प्रतिशोध की और न किसी कंजूसी तथा दान की, न किसी बुज़दिली और न बहादुरी की और न क्रोध की और न करुणा की बल्कि वह हय्यो क्रय्यूम (खुदा) के हाथ में एक मुर्दा होता है जिसमें न कोई प्रतिक्रिया शेष रही होती है और न कोई इच्छा और न ही उन अवस्थाओं में से कोई उसकी ओर सम्बद्ध की जाती

الموتى- ولا شك أن هذه الحالة موت وإنها منتهى مراتب العبودية، والخروج من العيشة النفسانية، وإليها تنتهى سير الأولياء الذاهبين إلى الحضرة الإحدية- هذا تعليم القرآن، وكلُّ تعليم دون ذلك في الجذب إلى الرحمن، وليس بعده مرتبة من مراتب السلوك والعرفان عند ذوى العقل والفكر والإيمان- وإن التوراة آمال الناس إلى الانتقام، وعنده لا مفرّ للظالم ولا خلاص، وإن عيسى شرّع لأمته أن أحدهم إذا طُعم في خدّه ووضّع الخدّ الآخر لمن لطمه ولا يطلب القصاص- فلا شك أن هذين الحزبين لا يشاورون الشريعة الفطرية، ولا يتبعون إلا الأوامر القانونية وأما الرجل المحمّدى فقد أمر له أن يتبع الشريعة الفطرية كما

है जैसा कि वह मुर्दों की ओर सम्बद्ध नहीं की जाती। और निस्संदेह यह अवस्था एक मौत है और मरातिब-ए-अबूदियत (बंदगी के मरतबों) की पराकाष्ठा और सांसारिक मोह-माया से निकल जाना है और इसी पर खुदा-ए-वाहद की ओर जाने वाले औलिया की यात्रा पूर्णता को पहुँचती है। यही कुर्आन की शिक्षा है और शेष हर शिक्षा रहमान खुदा की ओर ले जाने में इससे निम्नतर है। बुद्धिमानों और चिन्तन-मनन करने वालों के निकट साधना और अध्यात्मज्ञान के मरतबों में से उसके बाद अन्य कोई मरतबा नहीं। तौरात ने लोगों को प्रतिशोध की ओर प्रेरित कर दिया। उसके निकट अत्याचारी के लिए बच निकलने का और मुक्ति का अब कोई मार्ग नहीं और ईसा अलैहिस्सलाम ने अपनी उम्मत के लिए आदेश दिया कि उन में से किसी के एक गाल पर यदि थप्पड़ मारा जाए तो वह अपना दूसरा गाल भी थप्पड़ मारने वाले के आगे रख दे और बदला न मांगे। निस्संदेह ये दोनों समूह फ़ितरती शरीयत के अनुकूल नहीं और केवल क़ानूनी आदेशों का अनुसरण करते हैं जबकि मुहम्मदी व्यक्ति (मुसलमान) को यह आदेश दिया गया है कि वह जैसे क़ानूनी शरीयत (अर्थात् कुर्आन) का अनुसरण करता है ऐसा ही वह फ़ितरती शरीयत का भी अनुसरण करे और किसी भी मामले का अंतिम

يتبع الشريعة القانونية، ولا يقطع أمرًا إلا بعد شهادة الشريعة الفطرية، ولذلك سُمِّيَ الإسلام دينَ الفطرة للزوم الفطرة لهذه الملة، وإليه أشار نبينا صلى الله عليه وسلم استفتت قلبك ولو أفتاك المفتون- فانظر كيف رغب في الشريعة الفطرية ولم يقنع على ما قال العالمون- فالمسلم الكامل من يتبع الشريعتين، وينظر بالعينين، فيُهدى إلى الصراط ولا يخدعه الخادعون- ولذلك ذكر الله في محامد الإسلام أنه شريعة فطرية، حيث قال ”فَطَّرَتِ اللَّهُ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا“ وهذا من أعظم فضائل هذه الملة ومناقب تلك الشريعة فإنه يوجد في هذا التعليم مدار الامر على القوة القدسية القاضية الموجودة في النشأة الإنسانية الموصلة إلى

निर्णय फ़ितरती शरीयत की गवाही के पश्चात ही किया जाए। इस उम्मत की फ़ितरत से वाबस्तगी के कारण इस्लाम को दीन-ए-फ़ितरत (फ़ितरत पर आधारित धर्म) का नाम दिया गया है। इसी की ओर इशारा करते हुए हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि चाहे फ़त्वा देने वाले तुझे फ़त्वा देते रहें तब भी अस्तफ़ित क़ल्बक (इस्तफ़ित क़ल्बक) तू अपने दिल से पूछ। अतः तू देख कि आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किस प्रकार फ़ितरत शरीयत की ओर प्रेरणा दिलाई है और उलमा के कथनों पर ही अंत नहीं किया। अतः पक्का मुसलमान वह है जो दोनों शरीयतों का अनुसरण करता है और दोनों आँखों से देखता है अतः उसका सही मार्ग की ओर मार्गदर्शन किया जाता है और धोखेबाज़ उसे धोखा नहीं दे सकते। इसीलिए अल्लाह ने इस्लाम की विशेषताएँ वर्णन करते हुए फ़रमाया कि वह दीन-ए-फ़ितरत है जैसा कि फ़रमाया-

فَطَّرَتِ اللَّهُ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا \*

यह बात इस उम्मत की विशेषताओं और इस शरीयत की उत्तम खूबियों में से

\* अनुवाद - अल्लाह की फ़ितरत को अपनाओ (वह फ़ितरत) जिस पर अल्लाह ने लोगों को पैदा किया। (अरूँम - 31)

कमाल ताम في مراتب المحويّة، فلا يبقى معها منقذ للتصرّفات النفسانية، لما فيه عملٌ على الشهادة الفطرية وأما التوراة والإنجيل فيتركان الإنسان إلى حدّ هو أبعد من الشهادة الفطرية القدسية، وأقربُ إلى دخل إفراط القوة الغضبيّة، أو تفريط القوة الواهمة، حتى يمكن أن يُسمّى المنتقم في بعض المواضع ذئبًا مؤذيًا عند العقلاء، أو يُسمّى الذي عفا في غير محله وأغضى مثلاً عند رؤية فسقِ أهله ديوثًا وقيحًا عند أهل الغيرة والحياء. ولذلك ترى في بعض المواضع رجلاً سرّه تعليمُ العفو يترك حقيقة العفو والرحمة، ويجاوز حدود الغيرة الإنسانية. فإن العفو في كل محلّ ليس بمحمود عند العاقلين، وكذلك الانتقام في كل مقام ليس

महानतम है क्योंकि इस (कुर्आन की) शिक्षा में हर मामले का आधार इस निर्णय करने वाली कुव्वत-ए-कुदसिया (पवित्र शक्ति) पर है जो मनुष्य की बनावट में ही मौजूद है और फ़ना के मर्तबों में पराकाष्ठा तक पहुंचाती है। इसकी उपस्थिति में तामसिक इच्छाओं के हस्तक्षेप की कोई गुन्जाइश नहीं रह जाती क्योंकि इस में फ़ितरत की गवाही के अनुसार काम किया जाता है। जबकि तौरात और इंजील मनुष्य को उस सीमा पर छोड़ जाती हैं जो पवित्र फ़ितरत की गवाही से बहुत दूर है और क्रोध शक्ति की अधिकता या भ्रम शक्ति की न्यूनता के हस्तक्षेप के बहुत निकट है यहाँ तक कि बुद्धिमानों के निकट कुछ अवस्थाओं में प्रतिशोध लेने वाले को कष्टदायक भेड़िया कहना भी संभव होगा, या अवसर के विपरीत उदाहरणस्वरूप पत्नी के कुकर्म को देख कर क्षमा और अनदेखा करने वाले को भी अधम और निर्लज कहना, स्वाभिमानी और लज्जावान व्यक्ति के निकट उचित होगा। इसलिए कुछ अवसरों पर तू उस व्यक्ति को जिसे क्षमा की शिक्षा बहुत पसंद है, देखता है कि वह क्षमा और दया की वास्तविकता को छोड़ बैठा है और मानवीय स्वाभिमान की सीमाओं से बाहर निकल जाता है क्योंकि बुद्धिमानों के निकट हर अवसर पर क्षमा कर देना प्रशंसनीय नहीं है। इसी प्रकार

بخير عند المتدبرين- فلا شك أنه من أوجب العفو على نفسه في كل مقام بمتابعة الإنجيل فقد وُضِعَ الإحسان في غير محله في بعض الحالات، ومن أوجب الانتقام على نفسه في كل مقام بمتابعة التوراة فقد وُضِعَ القصاص في غير محله وانحط من مدارج الحسنات- وأما القرآن فقد رَغِبَ في مثل هذه المواضع إلى شهادة الشريعة الفطرية التي تنبع من عين القوة القدسية، وتنزل من روح الامين في جَدْرِ القلوب الصافية، وقال ”جَزَاؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا<sup>ع</sup> فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ“ فانظر إلى هذه الدقيقة الروحانية، فإنه أمر بالعفو عن الجريمة بشرط أن يتحقق فيه إصلاحٌ لنفسٍ، وإلا فجزاء السيئة بالسيئة- ولما كان القرآن خاتم

चिंतन-मनन करने वालों के निकट हर अवसर पर प्रतिशोध लेना भी अच्छा नहीं। अतः निस्संदेह जिसने भी इंजील का अनुसरण करते हुए हर अवसर पर क्षमा करना अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया हो तो कुछ अवस्थाओं में उसने अवसर के प्रतिकूल उपकार किया और जो तौरात के अनुसरण में हर स्थान पर प्रतिशोध लेना ही अपने ऊपर अनिवार्य कर ले तो उसने अवसर के प्रतिकूल प्रतिशोध लिया और नेकियों के मर्तबों से नीचे गिर गया। जबकि कुर्आन ने इस प्रकार के अवसरों पर इस फ़ितरती शरीयत की गवाही की ओर प्रेरणा दिलाई है जो अध्यात्म शक्ति के स्रोत से फूटती है और फ़रिश्ते की ओर से पवित्र दिलों की गहराई में उतरती है। कुर्आन कहता है-

جَزَاؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا<sup>ع</sup> فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ\*

अतः तू इस रूहानी सूक्ष्म विषय पर विचार कर कि उसने किसी जुर्म पर क्षमा का आदेश इस शर्त के साथ दिया है कि उसमें व्यक्ति का सुधार होता हो वरना बुराई का बदला की गई बुराई के बराबर है क्योंकि कुर्आन समस्त किताबों का

\*अनुवाद - बुराई का बदला उतनी ही बुराई होती है और जो क्षमा करे और सुधार को दृष्टिगत रखे तो उसको बदला देना अल्लाह के ज़िम्मे होता है। (अश्शूरा-41)

الكتبِ وأكملها وأحسن الصحف وأجملها، وَضَع أساس التعليم على منتهى معراج الكمال، وجعل الشريعة الفطرية زوجًا للشريعة القانونية في كل الاحوال، ليعصم الناس من الضلال، وأراد أن يجعل الإنسان كالميت لا يتحرك إلى اليمين ولا إلى الشمال، ولا يقدر على عفو ولا على انتقام إلا بحُكم المصلحة من الله ذي الجلال. فهذا هو الموت الذي أُرسِلَ له المسيح الموعود ليُكمِّله بإذن الربِّ الفعّال، ولاجل ذلك قلتُ إن المسيح الموعود ينقل الناس من الوجود إلى العدم، فهذا نوع من النقل وقد سبق قليل من هذا المقال. وشتان بين هذا التعليم الجليل وتعليم التوراة والإنجيل، فاسأل الذين قبلوا وساوس الدجال. إن هذا التعليم يهدى للتي هي أقوم، ليس فيه إفراط ولا تفريط ولا ترك مصلحة

खातम और अकमल (पूर्ण) है और समस्त पुस्तकों से बेहतरीन और अत्यंत सुंदर है। इसलिए उसने अपनी शिक्षा का आधार मेराजे कमाल की पराकाष्ठा पर रखा है और समस्त परिस्थितियों में फितरती शरीयत को कानून-ए-शरीयत का साथी बनाया ताकि लोगों को गुमराही से बचाए। और चाहा कि इंसान को उस मुर्दा की तरह बना दे जो न दाएं ओर हरकत करता है और न बाएं ओर तथा प्रतापवान खुदा के हितकारी आदेश के बिना न क्षमा करने का अधिकार रखता है और न बदला लेने का। अतः यही वह मौत है जिसके लिए मसीह मौऊद को भेजा गया है ताकि फ़आ'ल (सर्वदा सक्रीय) खुदा के आदेश से उसको पूरा करें और इसीलिए मैंने कहा है कि मसीह लोगों को अस्तित्व से अनस्तित्व की ओर परिवर्तित करेगा तथा यह परिवर्तन की एक प्रकार है और इस वार्तालाप का थोड़ा सा भाग बीत चुका है। इस महान शिक्षा तथा तौरात और इंजील की शिक्षा के मध्य बहुत अन्तर है। अतः तू उन लोगों से पूछ ले जिन्होंने दज्जाल के भ्रमों को स्वीकार कर लिया है। निस्संदेह यह शिक्षा उस मार्ग की ओर मार्गदर्शन करती है जो सबसे अधिक न्याययुक्त है न उसमें अधिकता है और न न्यूनता, न हित और विवेक को छोड़ना

وحكمة، ولا ترك مقتضى الوقت والحال بل هو يجرى تحت مجارى الاوامر الشرعية الفطرية وفتاوى القوة القدسية ولا يميل عن الاعتدال- وقد قُدِّر من الازل أن المسيح الموعود يُشيع هذا التعليم المحمود حق الإشاعة، ليُميت السعداء قبل موت الساعة، فهناك يموت الصالحون من كمال الإطاعة، وهذا الموت يُعطى للقلوب السليمة الصافية، ويشربون كأس المحويّة، ويغيبون في بحر الوحدة بعد نضو لباس الغيريّة. وأمّا الذين شقُّوا فيرد عليهم في آخر الامر رجس من السماء بأنواع الوباء، أو بالمحاربات وسفك الدماء، فيسرى بينهم الإقعاض والقُعص كقُعاص الغنم تقديراً من حضرة الكبرياء، ويكثر المحاربات على الأرض فتختتم حرب وتبدو أخرى، وتسمعون من كل طرف

है और न समय और वर्तमान की मांग को नज़रअंदाज़ करना है बल्कि वह स्वाभाविक शरीयत के आदेशों और सात्विक शक्ति की मांग के अंतर्गत चलती है और न्याय से नहीं हटती। और आदिकाल से यह निर्धारित किया जा चुका है कि मसीह मौरूद इस प्रशंसा योग्य शिक्षा का वैसा प्रचार करे जैसा कि होना चाहिए ताकि सौभाग्यशालियों को क्रयामत वाली मौत से पहले ही मौत दे दे। अतः इस अवसर पर नेक लोग पूर्ण आज्ञापालन के द्वारा (मानो) मर जाएंगे और यह मौत स्वच्छ और पवित्र दिलों को ही नसीब होती है। वे फ़ना का जाम पीते हैं और दोगलेपन के वस्त्र उतार फैंकने के बाद एकेश्वरवाद के समुद्र में खो जाते हैं। और वे लोग जो दुर्भाग्यशाली हुए अंततः उन पर विभिन्न प्रकार की आपदाओं के द्वारा या जंगों तथा रक्तपात के द्वारा आसमान से अज़ाब आएगा। और खुदा तआला की तक्रदीर के तौर पर उन में यकायक मौत और ऐसी बीमारी का सिलसिला जारी हो जाएगा जो भेड़ों में फैल कर उनको तुरंत मार देती है। धरती पर जंगें बहुत होंगी और एक जंग समाप्त होगी तो दूसरी का आरंभ हो जाएगा और तुम हर ओर से मरने वालों के समाचार सुनोगे। यह सब कुछ मसीह के अस्तित्व की विशेषता के



أخبار الموتى- وذلك كله لخاصية وجود المسيح، فإن الله نزله كالمُجِيع، وهذا من أكبر علاماته وخواص ذاته، فإنه قابل آدم في هذه الصفات، مع بعض أمور المضاهات، أما المضاهاة فتوجد في نوع الخَلْقَة، فإن آدم خُلِقَ منه حَوَّاءُ كالتَّوَيُّ مِ يَدِ القَدْرَةِ، وكذلك خُلِقَ المسيح الموعود تَوَيُّ مَّأ وتولدت معه صبيَّةٌ مسَمَّاةً بِالجَنَّةِ، وماتت إلى ستة أشهر من يوم الولادة وذهبت إلى الجَنَّةِ، وماتت حَوَّاءُ لتكون سببًا للكثرة، فإن آدم قد ظهر لينقل الناس من العدم إلى الوجود، فكان حَقُّ تَوَيُّ مِ أَن يَبْقَى لينصره على تكميل المقصود، وأمَّا المسيح الموعود فقد ظهر لينقل الناس من الحيوة إلى المَنِيَّةِ، فكان حَقُّ تَوَيُّ مِ أَن يَنْقَلِ مِنْ

कारण होगा। निस्संदेह अल्लाह ने उसे एक संहारक के समान उतारा है और यह उसकी बड़ी निशानियों में से और उसके अस्तित्व की विशेषताओं में से है। अतः वह उन विशेषताओं में समानता के कुछ पहलुओं के साथ आदम के मुकाबले पर भी है। जहां तक समानता का संबंध है तो वह जन्म में पाई जाती है जैसा कि खुदा के हाथ से आदम से हव्वा एक जुड़वां की तरह पैदा की गई, इसी प्रकार मसीह मौऊद भी जुड़वां पैदा हुए और उसके साथ एक लड़की 'जन्नत' नामक भी जन्मी जो जन्म के दिन से 6 महीने बाद मृत्यु को प्राप्त हो गई और जन्नत में चली गई जबकि हव्वा की मृत्यु न हुई ताकि वह जनसंख्या वृद्धि का कारण बने क्योंकि आदम इसलिए प्रकट हुआ था ताकि लोगों को अनस्तित्व से अस्तित्व की ओर ले आए इसलिए उसकी जुड़वां के लिए आवश्यक था कि वह जीवित रहे ताकि उद्देश्य की पूर्ति में आदम की सहायता करे और जहां तक मसीह मौऊद का संबंध है तो वह लोगों को जीवन से (सांसारिक मोह माया की) मृत्यु की ओर ले जाने के लिए प्रकट हुआ। इसलिए उसकी जुड़वा का यह अधिकार था कि उसे इस लोक से स्थानांतरित कर दिया जाए ताकि वांछित उद्देश्य के लिए इरहास (मार्ग प्रशस्त कर्ता) हो। फिर आदम जुमा के दिन पैदा हुआ और इसी

هذه الدار ليكون إرهاباً للإرادة المنويّة. ثم إنَّ آدم خُلِقَ في يوم الجمعة، وكذلك وُلِدَ المسيح الموعود في هذا اليوم في الساعة المباركة. ثم إنَّ آدم خُلِقَ في اليوم السادس، وكذلك المسيح الموعود خُلِقَ في الألف السادس. وأما الآفات التي قُدِّرَ ظهورها في وقت المسيح. فمن أعظمها خروج يأجوج ومأجوج، وخروج الدجال الوقيح، وهم فتنة للمسلمين عند عصيانهم وفرارهم من الله الودود، وبلاء عظيم سُلِّطَ عليهم كما سُلِّطَ على اليهود واعلم أن يأجوج ومأجوج قومان يستعملون النار وأجيجه في المحاربات وغيرها من المصنوعات، ولذلك سُمِّوا بهذين الاسمين، فإنَّ الأَجِيجَ صفة النار وكذلك يكون حربهم بالموادَّ الناريات،

तरह मसीह मौऊद भी उसी (जुमा के) दिन की एक पवित्र घड़ी में पैदा हुआ। फिर आदम छठे दिन में पैदा हुआ और इसी तरह मसीह मौऊद छठे हजार में पैदा हुआ और वे आपदाएं जिनका प्रकटन मसीह के समय में निर्धारित किया गया था उनमें से बड़ी-बड़ी आपदाएं याजूज-माजूज का निकलना और निर्लज्ज दज्जाल का प्रकटन है। ये लोग, मुसलमानों की अवज्ञाओं और खुदा तआला से दूरी के समय फ़िल्ता (परीक्षा) के तौर पर और एक बड़ी बला के तौर पर हैं जो उन (मुसलमानों) पर हावी कर दी गई है जैसा कि यहूदियों पर हावी कर दी गई थी। स्पष्ट हो कि याजूज-माजूज दो क्रौमें हैं जो जंगों और अन्य उपकरणों में अग्नि और उसके शोलों का प्रयोग करती हैं। इसी कारण उन को यह दो नाम दिए गए हैं। الأَجِيج (अल-अजीज) अग्नि की विशेषता है। इसी प्रकार उनकी जंग अग्नि आधारित उपकरणों से होती है और जंग के इस तरीके से वे समस्त संसार पर विजयी होते जाते हैं और वे हर ऊंचाई से दौड़ते चले आते हैं। न समुद्र उनके मार्ग में रोक बनता है और न कोई पहाड़। बादशाह भय के मारे उनके आगे गिरे जाते हैं, किसी में उनका सामना करने की शक्ति बाकी नहीं रही और वे सब उन (अर्थात याजूज-माजूज) के नीचे निर्धारित अवधि तक

ويفوقون كلَّ من في الأرض بهذا الطريق من القتال، ومن كل حدبٍ ينسلون، ولا يمنعهم بحر ولا جبل من الجبال، ويخرّ الملوك أمامهم خائفين، ولا تبقى لأحد يد المقاومة، ويدأسون تحتهم إلى الساعة الموعودة. ومن دخل في هاتين الحجارتين ولو كان له مملكة عظمتي، فطحن كما يطحن الحَبُّ في الرّحى، وتزلزل بهما الأرض زلزالها، وتحرّك جبالها، ويُشاع ضلالها، ولا يُسمَع دعاء ولا يصل إلى العرش بكاء، ويصيب المسلمين مصيبة تأكل أموالهم وإقبالهم وأعراضهم، وتهتك أسرار ملوك الإسلام، ويظهر على الناس أنهم كانوا مَورِدَ غَضَبِ اللَّهِ من العصيان والإجرام. ويُنزَعُ منهم رعبهم وإقبالهم وشوكتهم وجلالهم بما كانوا لا يتّقون. وبارون الأعداء من طريق وينهزمون من سبعة

कुचले जाते रहेंगे। जो कोई भी उन दो पत्थरों के बीच में आएगा चाहे उसका महान साम्राज्य ही क्यों न हो तो वह इस प्रकार पीस दिया जाएगा जिस प्रकार दाना चक्की में पीसा जाता है। और धरती उन दोनों के कारण भयंकर कम्पन में डाली गई है, उसके पहाड़ों को हिला दिया गया है और उसकी गुमराही फैला दी गई है, न कोई दुआ सुनी जाती है और न कोई रोना-धोना आसमान तक पहुंचता है। मुसलमानों को वह मुसीबत पहुंच रही है जो उनके मालों और शानो-शौकत और सम्मान को खाती जाती है। मुसलमान बादशाहों का तिरस्कार किया जा रहा है और लोगों पर प्रकट हो रहा है कि वह अपनी अवज्ञा और जुर्म करने के कारण अल्लाह के क्रोध के भागी बन रहे हैं। उनसे उनका रोब, प्रभुत्व और शानो-शौकत और प्रताप इसी कारण छीन लिया गया है कि वे संयम धारण नहीं करते। वे एक प्रकार से शत्रुओं से मुकाबला करते हैं और सात प्रकारों से पराजय का सामना करते हैं क्योंकि वे नेक लोग नहीं हैं। वे लोगों के सामने दिखावा करते हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी सुन्नत का अनुसरण नहीं करते और न ही धर्म को सही रूप से अपनाते हैं। वे केवल सूरतें

طُرُقَ بِمَا كَانُوا لَا يَحْسِنُونَ- يِرَاءَ وَنَ النَّاسِ وَلَا يَتَّبِعُونَ رَسُولَ اللَّهِ  
 وَسُنَّتَهُ وَلَا يَتَدَيَّنُونَ- وَإِنَّ هُمْ إِلَّا كَالصُّورِ لَيْسَ الرُّوحُ فِيهِمْ، فَلَا  
 يَنْظُرُ إِلَيْهِمُ اللَّهُ بِالرَّحْمَةِ وَلَا هُمْ يُنصَّرُونَ- وَكَانَ اللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يَتُوبَ  
 عَلَيْهِمْ إِنْ كَانُوا يَتَضَرَّعُونَ، فَمَا تَابُوا وَمَا تَضَرَّعُوا فَانزَلَ عَلَى  
 الْمَجْرِمِينَ وَبِالْهَمِّ إِلَّا الَّذِينَ يَخْشَعُونَ- وَيُرُونَ أَيَّامَ الْمَصَائِبِ  
 وَلِيَالِهَا كَمَا رَأَى الْمَلْعُونُونَ- فَعِنْدَ ذَلِكَ يَقُومُ الْمَسِيحُ أَمَامَ رَبِّهِ  
 الْجَلِيلِ، وَيَدْعُوهُ فِي اللَّيْلِ الطَّوِيلِ، بِالصَّرَاخِ وَالْعَوِيلِ، وَيَذُوبُ  
 ذُوبَانِ الثَّلْجِ عَلَى النَّارِ، وَيَبْتَهَلُ لِمَصِيبَةٍ نَزَلَتْ عَلَى الدِّيَارِ، وَيَذْكُرُ  
 اللَّهَ بَدْمُوعَ جَارِيَةٍ وَعِبْرَاتِ مَتَحَدَّرَةٍ، فَيُسَمِّعُ دَعَاؤَهُ لِمَقَامِهِ لَهْ عِنْدَ  
 رَبِّهِ، وَتَنْزِلُ مَلَائِكَةُ الْإِيوَاءِ، فَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَفْعَلُ، وَيُنَجِّي النَّاسَ  
 مِنَ الْوَبَاءِ- فَهَنَّاكَ يُعْرِفُ الْمَسِيحَ فِي الْأَرْضِ كَمَا عُرِفَ فِي السَّمَاءِ،

हैं जिनमें आत्मा कोई नहीं इसलिए अल्लाह उन पर कृपादृष्टि नहीं करता और न उनकी सहायता की जाती है। यदि वे विलाप करते तो अल्लाह उनकी तौबा (पश्चात्ताप) स्वीकार करना चाहता है परंतु न उन्होंने तौबा की और न विलाप से काम किया। अतः मुजरिमों पर उनका वबाल उतरा है सिवाय उनके जो विनम्रता धारण करते हैं। वे कठिनाई के दिन और रात देखेंगे जैसा कि लानती लोगों ने देखा तब ऐसी अवस्था में मसीह अपने प्रतापी रब्ब के समक्ष खड़ा होगा और लम्बी रात में उसे रोते-गिड़गिड़ते हुए पुकारेगा और अग्नि पर बर्फ के पिघलने के समान पिघलेगा और इस मुसीबत पर जो देशों पर आई है गिड़गिड़ा कर दुआ करेगा और बहते आंसुओं और टिप-टिप गिरते अशकों से अल्लाह को याद करेगा तो उसके इस मुक्राम के कारण जो उसे उसके रब के समक्ष प्राप्त है, उसकी दुआ सुनी जाएगी और शरण देने वाले फरिश्ते उतरेंगे और अल्लाह वह काम करेगा जो वह करेगा और लोगों को इस आपदा से मुक्ति देगा। तब मसीह धरती पर भी वैसे ही पहचाना जाएगा जैसा कि वह आसमान पर पहचाना गया है और समाज के सामान्य तथा विशेष वर्ग के दिलों में उसकी स्वीकार्यता बिठा

ويوضع له القبول في قلوب العامة والامراء، حتى يتبرك الملوك  
 بثيابه. وهذا كله من الله ومن جنابه وفي أعين الناس عجيب.  
 ففكر في القرآن والاحاديث إن كنت تريب. وما قلت من عندي  
 بل هو عقيدة الجمهور من الصالحاء المسلمين، ومكتوب في  
 كتاب رب العالمين.



दी जाएगी यहां तक कि बादशाह उसके कपड़ों से बरकत ढूँढेंगे। यह सब कुछ  
 अल्लाह की ओर से और उसकी तरफ से होगा और लोगों की नज़र में विचित्र  
 होगा। अतः अगर तुझे संदेह है तो क़ुर्आन और हदीस पर विचार कर। मैंने यह  
 बातें अपनी ओर से नहीं कहीं बल्कि यह मुसलमान सुलहा में से सब की आस्था  
 है और रब्बुलआलमीन (ब्रह्माण्ड के पालनहार) की पुस्तक में लिखा हुआ है।



## وَ الْحَالَةُ الْمَوْجُودَةُ تَدْعُو الْمَسِيحَ الْمَوْعُودَ وَ الْمَهْدَى الْمَعْهُودَ

إن الأرض مُلِئَتْ ظُلْمًا وَ جَوْرًا، وَ أَحَاطَ الْفَسَادُ نَجْدًا وَ غَوْرًا،  
وَ الْحَقَائِقُ زَالَتْ عَنِ أَمَاكِنِهَا، وَ الدَّقَائِقُ تَحَوَّلَتْ عَنِ مَرَكَزِهَا  
وَ نَضَّتْ الْمَلَّةَ لِبَاسِ زِينَتِهَا، وَ أَغْمَدَتْ الشَّرِيعَةَ سَيْفِ شَوْكَتِهَا،  
وَ أُضْيِعَ أَسْرَارَ بَطْنِهَا وَ رَمَوْزَ هَوِيَّتِهَا، وَ أُرِيقَ دِمَاءَ أِبْنَائِهَا  
وَ حَفَدَتْهَا، حَتَّى إِنْ السَّمَاءُ بَكَتْ عَلَى ثُكْلِهَا وَ غَرِبَتْهَا، وَ مَا بَقِيَ  
جَارِحَةٌ مِنْ جَوَارِحِهَا إِلَّا سَقَمَتْ، وَ مَا مُضِنَّةٌ مِنْ مُضِنَّاتِهَا إِلَّا  
عَقَمَتْ، فَالآنَ هِيَ عَجُوزٌ فَقدت قَوَاهَا، وَ شَيْخَةٌ غَيَّرَتْ صَوْرَتِهَا  
وَ سَنَاهَا، وَ فِي لِسَانِهَا لُكْنَةٌ أَظْهَرَتْهَا، وَ فِي أَسْنَانِهَا قَلْوْحَةٌ عَلَتْهَا

## वर्तमान अवस्था मसीह मौऊद और महदी माहूद को पुकार रही है

निस्संदेह धरती अत्याचार से भर गई है और उपद्रव ने हर स्थान को घेर लिया है वास्तविकताएं अपने स्थान से हट गईं और सूक्ष्म ज्ञान अपने केंद्र से जुदा हो गए हैं। उम्मत ने अपने सौन्दर्य की वेशभूषा उतार दी है और शरीयत ने अपनी शानो-शौकत की तलवार मियान में रख ली है। उसके आंतरिक भेद और गोपनीय रहस्य नष्ट हो गए हैं। उसके पुत्रों और पौत्रों का वध किया गया है यहाँ तक कि आसमान भी उसके पुत्रों के मर जाने और उसके परदेसी होने पर रो रहा है। उसका हर अंग बीमार हो चुका है और उसकी हर स्त्री बाँझ हो चुकी है। अतः अब वह एक बुढ़िया है जो अपनी समस्त शक्तियाँ खो बैठी है और एक अत्यंत वृद्ध स्त्री है जिसकी शक्ल व सूरत और चमक-दमक फीकी पड़ चुकी है और उसकी जीभ में तोतलापन है जिसका बार-बार इज़हार होता है और उसके दांतों पर पीलापन छाया हुआ है। क्या यह धर्म वही धर्म है जो

أهذه الملة هي الملة التي أتى بها خاتم النبيين وأكملها رب العالمين؟ كلا بل هي فسدت كل الفساد من أيدي المبتدعين الذين جعلوا القرآن عِضِينَ، وضلّوا وأضلّوا وما كانوا متفقهين إنهم قوم لا يملكون غير القشرة، ولا يدرون ما لبّ الحقيقة، ثم يزعمون أنهم من العالمين، بل من مشايخ الدين ولا تجرى على ألسنتهم إلا قصص نحتت آباءهم، وما بقى عندهم إلا أمانيتهم وأهواءهم، واحتفلت جوامعهم من قوم لا يعلمون سرّ العبودية، ويجادلون بألفاظ سمعوها من الفئة الخاطئة، وما وطئت قدمهم سكك الروحانية يصلّون ولا يدرون حقيقة الصلوة، ويقراءون القرآن ولا يفهمون كلام ربّ الكائنات، وظهر الحق فلا

हजरत ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लाए थे और जिसे रब्बुल आलमीन ने पूर्ण किया था? कदापि नहीं, बल्कि यह उन बिदअतों के हाथों हर प्रकार से बिगड़ चुका है जिन्होंने क़ुर्आन को टुकड़े-टुकड़े बना रखा है। वे स्वयं भी गुमराह हुए और दूसरों को भी गुमराह किया और वे समझ-बूझ रखने वाले नहीं। ये वे लोग हैं जिनके पास सिवाए छिलके के कुछ नहीं और वे वास्तविकता से अनभिज्ञ हैं फिर भी दावा करते हैं कि वे उलमा में से अपितु धर्म के मशाइख (पीर लोगों) में से हैं। उनकी ज़बानों पर केवल वे किस्से हैं जो उनके बाप-दादा ने गढ़ लिए थे उनके पास सिवाए आशाओं और इच्छाओं के और कुछ नहीं रहा। उनकी जामा मस्जिदें ऐसे लोगों से भरी हुई हैं जो उपासना के तरीक़ों से अनभिज्ञ हैं। वे उन शब्दों को लेकर झगड़ते हैं जो उन्होंने ग़लती करने वालों से सुने हैं और उनके क़दम आध्यात्मिकता के घर में नहीं पड़े। वे क़ुर्आन पढ़ते हैं लेकिन ब्रह्माण्ड के पालनहार के उपदेश को नहीं समझते। सत्य प्रकट हो गया लेकिन वे उसे नहीं पहचानते। अल्लाह ने अपने मसीह को अवतरित कर दिया है परन्तु वे उसे स्वीकार नहीं करते और उसका तिरस्कार करते हैं और सम्मान नहीं करते और न मोमिन होकर उसकी सेवा में आते हैं। जब सत्य उनके पास

يعرفونه، وبعث الله مسيحه فلا يقبلونه، ويحقرونه ولا يوقرونه، ولا يأتونه مؤمنين وجحدوا بالحق لما جاءهم وكانوا من قبل منتظرين وإذا قيل لهم باءروا الخيرا أيها الناس ولا تتبعوا خطوات الخناس، قالوا إنكم من الضالين وكذبوني وما فتشوا حق التفتيش، ولا يمرّون على إلا مستكبرين ونسوا كل ما ذكّرهم القرآن، ولا يعلمون ما أنزل الرحمن، ويؤفدون الأعمار غافلين ولو عرفوا القرآن لعرفوني، ولكنهم نبذوا كتاب الله وراء ظهورهم وكانوا مجترئين ويقولون لست مرسلا، وكفى بالله وآياته شهيدا لو كانوا طالبين ووقفوا ألسنهم على السب والتوهين، واستظهروا على مخالفة القرآن بأخبار ضعيفة ما

आया तो उन्होंने हठपूर्वक उसका इंकार किया जबकि इससे पहले वे इसकी प्रतीक्षा में थे। जब उनसे कहा जाता है कि हे लोगो! भलाई की ओर दौड़ो और भ्रम उत्पन्न करके पीछे हट जाने वाले शैतान के कदमों पर न चलो तो कहते हैं कि तुम गुमराहों में से हो। उन्होंने मुझे झुठलाया और जैसा चाहिए था छानबीन न की और मेरे पास से इन्कार करते हुए ही गुज़रते हैं और जो भी कुर्आन ने उन्हें उपदेश किया था उसे भूल गए हैं और नहीं जानते कि रहमान खुदा ने क्या उतारा है और अपनी आयु व्यर्थ की बातों में गंवा रहे हैं। अगर वे कुर्आन का विवेक रखते तो अवश्य मुझे भी पहचान लेते लेकिन उन्होंने अल्लाह की किताब को अपनी पीठों के पीछे बड़ी दिलेरी से फेंक रखा है। वे कहते हैं कि तू अवतार नहीं है यदि वे सच्चाई के इच्छुक होते तो अल्लाह और उसके निशान गवाह होने के दृष्टिकोण से पर्याप्त हैं। उन्होंने अपनी ज़बानें गाली-गलौज और अपमान करने के लिए वक्रफ़ कर रखे हैं। उन्होंने कुर्आन के विरुद्ध उन कमज़ोर रिवायतों से सहायता चाही है जिन्हें विश्वास का कोई झोंका नहीं छुआ। अल्लाह ने सत्य को प्रकट कर दिया है परंतु वे नहीं सुनते हैं, भेद के ऊपर से पर्दा हटा दिया है परंतु वे नहीं लौटते। उन्होंने कुर्आन को पढ़ा परंतु उसके छुपे हुए ख़जाने के



مَسَّهَا نَفْحَةُ الْيَقِينِ وَإِنَّ اللَّهَ قَدْ جَلَّى الْحَقَّ فَلَا يَسْمَعُونَ، وَكَشَفَ السِّرَّ فَلَا يَلْتَفِتُونَ قَرَاءَ وَالْفَرْقَانَ وَمَا أَطْلَعُوا عَلَى أَسْرَارِ دِفَائِنِهِ، وَصُقِّدُوا فِي أَلْفَاظِ الْقُرْآنِ وَمَا أُعْطُوا أَغْلَاقَ خَزَائِنِهِ فَكَيْفَ كَانَ مِنَ الْمُمْكِنِ أَنْ يَرْجِعُوا سَالِمِينَ مِنْ هَذَا الطَّرِيقِ؟ فَلَا جَلَ ذَاكَ زَاغُوا مِنْ مَحَجَّةِ التَّحْقِيقِ، وَمَا ذَاقُوا جَرْعَةَ مِنْ هَذَا الرَّحِيقِ، وَمَا كَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ ثُمَّ لَمَّا جَعَلَنِي اللَّهُ مَسِيحًا مَوْعُودًا وَبَعَثَنِي صَدَقًا وَحَقًّا عِنْدَ وَقْتِ الضَّرُورَةِ، طَفَقُوا يَكْذِّبُونَنِي وَيَكْفُرُونَنِي وَيَذْكُرُونَنِي بِأَقْبَحِ الصُّورَةِ، وَمَا كَانُوا مُنْتَهِينَ وَقَدْ وَافَتِ شَمْسُ الزَّمَانِ غُرُوبَهَا، وَحَيَّةُ الْحَيَاتِ قَصَدَتْ دُرُوبَهَا، وَمَا بَقِيَ مِنَ الدُّنْيَا إِلَّا قَلِيلٌ مِنْ حِينٍ أَيْرِيدُونَ أَنْ يَطُولَ أَجَلُ الشَّيْطَانِ؟ وَإِنْ

भेद पर सूचना नहीं पाई। वे कुर्आन के शब्दों में जकड़े गए हैं और कुर्आन के बंद खज़ानों की चाबियां उनको नहीं दी गईं तो फिर किस प्रकार संभव है कि वे उस मार्ग से सही सलामत वापस आ सकें। इसलिए वे टेढ़े हो कर छानबीन के मार्ग से हट गए हैं और उस उत्तम शराब से एक घूंट भी नहीं चखा और न वे आध्यात्मिक दृष्टि रखने वाले हैं। फिर जब अल्लाह ने मुझे मसीह मौऊद बनाया और आवश्यकता के समय मुझे सच्चाई और इन्साफ के साथ भेजा तो वे मुझे झुठलाने और काफिर ठहराने और सबसे बुरे रंग में मेरा वर्णन करने लग गए और वे उससे रुकने वाले नहीं। ज़माने का सूर्य अस्त होने को है और जीवन का सांप अपने मार्गों का इरादा कर चुका और दुनिया का केवल थोड़ा सा समय ही शेष रह गया है। क्या वे चाहते हैं कि शैतान की निर्धारित अवधि और लंबी कर दी जाए। निस्संदेह हमारा यह ज़माना ही अन्तिम ज़माना है और उसने इस समय तक बहुत से लोग नष्ट कर दिए हैं। इससे पूर्व आदम जंग के मैदान में गिर गया था और शैतान ने उसे पराजित कर दिया था और छः हज़ार साल तक उसने प्रभुत्व न देखा। उस की औलाद तहस-नहस कर दी गई और विभिन्न दिशाओं में बिखर गई तो फिर कब तक शैतान को मोहलत दी जाएगी?

زماننا هذا هو آخر الزمان، وقد أهلك كثيرًا من الناس إلى هذا الاوان وإن آدم هوى من قبل في مَصاف، وهزمه الشيطان فما رأى الغلبة إلى ستة آلاف، ومُزقت دُرَيْتَه وفُرقت في أطراف، فإلى كم يكون الشيطان من المنظرين؟ ألم يُعو الناس أجمعين إلا قليلاً من عباد الله الصالحين؟ فقد أتم أمره وكمّل فعله وحن أن يُعان آدم من رب العالمين ولا شك ولا شبهة أن إنظار الشيطان كان إلى آخر الزمان، كما يُفهم من القرآن، أعنى لفظ الإنظار الذي جاء في الفرقان، فإن الله خاطبه وقال "فَأِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ-إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ"، يعنى يوم البعث الذى يُبعث الناس فيه بعد موت الضلالة بإذن الحى القيوم ولا شك أن هذا اليوم يوم

क्या उसने अल्लाह के थोड़े से नेक बंदों (सदात्माओं) के सिवा शेष सब लोगों को गुमराह नहीं कर दिया? अतः वह अपना मामला पूरा कर चुका और अपना काम पूरा कर दिया और अब समय आ गया है कि समस्त ब्रह्मांड के पालनहार की ओर से आदम की सहायता की जाए। इसमें कोई संदेह नहीं कि शैतान को दी गई मोहलत अंतिम ज़माने तक थी जैसा कि कुर्आन में वर्णित शब्द इन्ज़ार (मोहलत दिए जाने) से समझा जा सकता है। अल्लाह तआला ने शैतान को संबोधित करके फरमाया -

فَأِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ-إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ \*

अर्थात् पुनः उठाए जाने के दिन तक जिसमें हय्यो क्रय्यूम खुदा के आदेश से लोग गुमराही की मौत के बाद दोबारा उठाए जाएंगे। निस्संदेह यह दिन ऐसा दिन है जो आदम के जन्म दिवस के समान है क्योंकि उसमें अल्लाह ने इरादा किया है कि आदम के समरूप पैदा करे और फिर धरती में उसकी आध्यात्मिक संतान फैला दे और उन्हें हर उस व्यक्ति पर प्रभुत्व प्रदान करे जिसने अल्लाह से संबंध तोड़ लिया और उससे कटकर अलग हो गया। अंतिम ज़माने में द्वितीय आदम

\*अनुवाद - निस्संदेह तुझे मोहलत दी गई है एक निर्धारित समय के दिन तक। (साद- 81, 82)

يشابه يومَ خلقِ آدمَ بما أراد اللهُ فيه أن يخلقَ مثيلَ آدمَ، ثم يبيتُ في الأرضِ ذرِّيَةَ الروحانية ويجعلهم فوق كل من قطعَ من اللهُ وتجدّمَ واشتدّت الحاجةُ إلى آدمَ الثاني في آخر الزمان، ليتدارك مافات في أوّل الاوان، وليتمّ وعيد اللهُ في الشيطان، فإن اللهُ جعله من المنظرين إلى آخر الدنيا وأشار فيه إلى إهلاكه، وإخراجه من أملاكه، وما معنى الإنظار من غير وعيد القتل بعد أيام الإمهال وعيئه في الديار؟ وكان الإهلاك جزاءه بما أهلك الناس بالفتن الكبار وكان الإلف السابع لقتله أجلاً مسمّى، فإنه أدخل الناس في جهنّم من سبعة أبوابها ووفّى حق العمى، فالسابع لهذه السبعة أنسب وأوفى وكتب اللهُ أنه يُقتل في آخر حصّة الدنيا، ويُحيى

(के आगमन) की आवश्यकता बहुत बढ़ गई है ताकि जो आरम्भ में खो गया था वो उसकी भरपाई करे और ताकि शैतान के बारे में अल्लाह की भविष्यवाणी पूरी हो जाए क्योंकि अल्लाह ने उसे दुनिया के अंत तक छूट दी है और उसमें उसे नष्ट करने और अपने साम्राज्य से निकाल बाहर करने की ओर इशारा किया था। उसे छूट दिए जाने के दिनों के बाद और संसार में उसके चीर-फाड़ करने के बाद उसके वध की भविष्यवाणी के बिना उसे ढील देने का अर्थ ही क्या है? नष्ट होना ही उसका दण्ड है क्योंकि उसने बड़े बड़े फ़िल्नों से लोगों को नष्ट किया है। सातवां हजार उसका वध किए जाने के लिए एक निर्धारित अवधि थी क्योंकि उसने लोगों को सात द्वारों से नर्क में प्रविष्ट कराया था और अंधेपन का अधिकार पूर्णतः अदा किया था। अतः इन सात (द्वारों) के दृष्टिकोण से सातवां (हज़ार) अधिक उचित और अधिक सच्चा है। अल्लाह ने निर्णय कर रखा है कि वह (शैतान) दुनिया के अंतिम भाग में क्रल्ल किया जाएगा और महान खुदा की ओर से रहमत के तौर पर उस समय मनुष्यों को जीवन दिया जाएगा और बहुत बड़ी पराजय शैतान पर मुसल्लत (आच्छादित) कर दी जाएगी जैसे आरम्भ में आदम पर डाली गई थी। अतः उस समय जान के बदले जान और सम्मान के बदले सम्मान का प्रतिशोध

هناك أبناء آدم رحمةً من حضرة الكبرياء، ويجعل عليه هزيمة عظمتى كما جعل على آدم في الابتداء فهناك تُجزى النفس بالعرض والعرض بالعرض، وتُشرق الأرض بنور ربّها، وتهوى عدوُّ صفى الله، وكذلك جزاء عداوة الأصفياء و كان هذا الفتح حقًا واجبا لآدم بما أذله الشيطان، في حلية الثعبان، وألقاه في مغارة الهوان وهدم بعدما أعزه الله وأكرم وما قصد إبليس إيا قتله وإهلاكه واستيصاله، وأراد أن يعدمه وذريته وآله، فكُتب عليه حكم القتل من ديوان قضاء الحضرة بعد أيام المهلة، وإليه أشار سبحانه في قوله إِلَى يَوْمٍ يُبْعَثُونَ كما يعلمه المتدبرون وما عني بهذا القول بعث الاموات، بل أريد فيه بعث الضالين بعد الضلالات ويؤيده

लिया जाएगा, धरती अपने रब के नूर से चमक उठेगी। आदम सफिउल्लाह का शत्रु नष्ट हो जाएगा, प्रतिष्ठित बन्दों से शत्रुता का दण्ड ऐसा ही होता है। यह विजय आदम का स्वयं सिद्ध अधिकार था क्योंकि जब अल्लाह ने उसे मान-सम्मान प्रदान किया था तो शैतान ने सांप के रूप में आकर उसे बहका दिया, बहुत अपमानित किया और उसकी कमर तोड़ दी थी। इब्लीस ने आदम का वध करने, नष्ट करने और उसको बर्बाद करने का ही इरादा किया था और चाहा था कि उसे और उसकी औलाद और उसके खानदान को नष्ट कर दे। अतः अल्लाह तआला के दरबार से उसके विरुद्ध मोहलत के दिन बीत जाने पर क़त्ल किए जाने का आदेश हुआ। इसी की ओर अल्लाह तआला ने अपने कथन - 'इला यौमे युब'असून'★ में इशारा किया है जैसा कि विचार करने वाले जानते हैं। इस कथन से वास्तविक मुर्दों को जीवित करना अभिप्राय नहीं बल्कि इससे पथभ्रष्टों को गुमराही के बाद पुनः जीवन दिए जाना अभिप्राय है। इसका समर्थन कुर्आन करीम में अल्लाह का कथन- \* لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ \* करता है जैसा कि बुद्धिमान और विवेकी

☆ इला यौमे युब'असून- उस दिन तक जिस दिन वे फिर से उठाए जाएंगे- (अनुवादक)

\* ताकि वह इस धर्म को समस्त धर्मों पर विजयी करे (अस्सफ़-10)

قوله تعالى في القرآن "لِيُظْهِرَ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ"، كما لا يخفى على أهل العقل والعرفان فإن إظهار الدين على أديان أخرى، لا يتحقق إلا بالبينّة الكبرى، والحجج القاطعة العظمى، وكثرة أهل الصلاح والتقوى ولا شك أن الدين الذي يعطى الدلائل الموصلة إلى اليقين، ويزكّي النفوس حق التزكية وينجيهم من أيدي الشيطان اللعين هو الدين الظاهر الغالب على الأديان، وهو الذي يبعث الأموات من قبور الشك والعصيان، ويحييهم علماً وعملاً بفضل الله المتّان وكان الله قد قدر أن دينه لا يظهر بظهور تام على الأديان كلها ولا يرزق أكثر القلوب دلائل الحق، ولا يعطى تقوى الباطن لأكثرها إلا في زمان المسيح الموعود والمهدى المعهود وأمّا الأزمنة التي هي قبله فلا تعمّ فيها التقوى ولا الدراية، بل يكثّر الفسق

लोगों पर गोपनीय नहीं। निस्संदेह किसी धर्म की अन्य धर्मों पर विजय बहुत बड़े रौशन चमत्कार और बड़े अकाट्य तर्कों और नेक तथा संयमी लोगों की अधिकता से ही सिद्ध होती है। वह धर्म जो विश्वास तक पहुंचाने वाले तर्क उपलब्ध करता है और लोगों को यथायोग्य पवित्र करता है और उन्हें धुत्कारे हुए शैतान के पंजों से मुक्ति दिलाता है निस्संदेह वही धर्म सब धर्मों से श्रेष्ठ और विजेता धर्म है और वही मुर्दों को संदेह और अवज्ञा की क्रब्रों से उठाता है और अनन्त उपकार करने वाले खुदा के फज़ल से ज्ञान एवं कर्म के तौर पर जीवन प्रदान करता है। अल्लाह तआला ने यह निर्धारित कर रखा था कि उसके धर्म को समस्त धर्मों पर पूर्ण आधिपत्य न होगा और न अधिकतर दिलों को सच्ची दलीलें दी जाएंगीं और न अधिकतर लोगों को आंतरिक संयम प्रदान किया जाएगा जब तक कि मसीह मौऊद और महदी माहूद का समय न आ जाए, जहाँ तक मसीह मौऊद से पहले युगों का संबंध है तो उनमें संयम और समझ-बूझ सामान्य न होगी बल्कि दुराचार और गुमराही बहुत हो जाएगी। अतः सारांश यह है कि व्यापक मार्गदर्शन और पूर्ण अकाट्य तर्क अल्लाह तआला

والغواية فالحاصل أن الهداية الوسيعة العامّة، والحجج القاطعة التامة، تختص بزمان المسيح الموعود من الحضرة، وعند ذلك الزمان تنكشف الحقائق المستترة، وتُكشَف عن ساق الحقيقة، وتهلك الملل الباطلة والمذاهب الكاذبة، ويملك الإسلام الشرق والغرب، ويدخل الحقُّ كل دارٍ إلا قليلاً من المجرمين، ويتمّ الأمر، ويضع الله الحرب، وتقع الأمانةُ على الأرض، وتنزل السكينة والصلح في جذور القلوب، وتترك السباع سبعيتها والإفاعي سُميتها، وتبين الرشد وتهلك الغي، ولا يبقى من الكفر والشرك إلا رسم قليل، ولا يلتزم الفسق والفاحشة إلا قلبٌ عليل، ويهدى الضالون، ويُبعث المقبورون فهذا هو معنى قوله إلی يَوْمٍ يُبْعَثُونَ فإن هذا البعث بعث ما رآه الأوّلون ولا المرسلون السابقون ولا

की ओर से मसीह मौऊद के समय से विशेष संबंध रखते हैं। उस समय में गोपनीय वास्तविकताएं खुल जाएंगी और सच्चाई से पर्दा उठा दिया जाएगा। झूठे धर्म नष्ट हो जाएंगे और इस्लाम का पूर्व एवं पश्चिम में आधिपत्य स्थापित हो जाएगा और कुछ मुजरिमों को छोड़ कर सत्य हर घर में प्रवेश कर जाएगा और समस्त कार्य पूर्ण हो जाएगा और अल्लाह जंगों को स्थगित कर देगा, धरती पर शान्ति की स्थापना होगी और दिलों की गहराइयों में संतोष तथा संधि का आगमन होगा। हिंसक पशु अपनी हिंसा और सांप अपने विषैलेपन को छोड़ देंगे। सन्मार्ग स्पष्ट हो जाएगा और गुमराही नष्ट हो जाएगी। कुक्र और शिर्क का केवल मामूली सा निशान रह जाएगा और केवल बीमार दिल ही दुराचार और कुकर्म से चिपका रह जाएगा। गुमराहों को सन्मार्ग प्रदान किया जाएगा और जो क्रत्रों में पड़े हैं उठाए जाएंगे। अल्लाह के कथन- 'इला यौमे युबअसून' का यही अर्थ है। यह 'बअस' (अर्थात् उठाया जाना) वह 'बअस' है जिसे न पहले लोगों ने देखा और न ही समस्त गुजरे हुए रसूलों और नबियों (अवतारों) ने। और जो अल्लाह का धर्म है यद्यपि उसका मामला आरम्भ से

النبيون أجمعون وإن دين الله وإن كان غالباً من بدو أمره على كل دين من حيث القوة والاستعداد، ولكن لم يتفق له من قبل أن يبارى الأديان كلها بالحجة والإسناد، ويهزمها كل الهزم ويثبت أنها مملوءة من الفساد، ويخرج كالأبطال بأسلحة الاستدلال، حتى يعم في جميع الديار والبلاد و كان ذلك تقديراً من الله الودود، بما سبق منه أن الغلبة التامة والصلاح الأكبر الإعم يختص بزمان المسيح الموعود ولذلك استمهل الشيطان إلى هذا الزمان المسعود، فمهله الله ليتم كل ما أراد للعالمين فأغوى الشيطان من تبعه أجمعين، فتقطّعوا بينهم أمرهم، وكان كل حزب بما لديهم فرحين وما بقي على الصراط إلا عباد الله الصالحين۔  
والسرّ فيه أن الزمان قُسم على ستة أقسام، من الله الذي خلق

ही शक्ति और सामर्थ्य की दृष्टि से समस्त धर्मों पर विजयी था परन्तु इससे पूर्व उसके लिए यह संयोग न हुआ था कि वह दलील और प्रमाणों की दृष्टि से समस्त धर्मों से मुकाबला करे और उन्हें पूर्णतः पराजित कर दे और सिद्ध कर दे कि वे सब बुराइयों से भरे हुए हैं और यह (सच्चा धर्म) तर्क के हथियारों से लेस होकर पहलवानों की भान्ति निकले यहाँ तक कि समस्त शहरों और देशों में फ़ैल जाए। यह अत्यंत प्रेम करने वाले ख़ुदा की ओर से निर्धारित था क्योंकि उसकी ओर से पहले से ही यह फरमान जारी हो चुका था कि पूण आधिपत्य, व्यापक और सबसे बड़ी भलाई मसीह मौऊद के समय के लिए ही विशिष्ट है। इसी कारण शैतान ने इस बाबरकत समय तक छूट मांगी थी। अतः अल्लाह ने उसे छूट दे दी ताकि वह सब कुछ पूरा हो जाए जिसका उसने समस्त ब्रह्माण्ड के लिए इरादा किया है। अतः शैतान ने अपने समस्त अनुयायियों को गुमराह कर दिया और उन्होंने अपने मामले को आपस में टुकड़े-टुकड़े करके बाँट लिया और समस्त गिरोह, उस पर जो उनके पास था, इतराने लगे और सही रास्ते पर केवल अल्लाह के नेक बन्दे ही रह गए।

इसमें भेद यह है कि उस ख़ुदा की ओर से जिसने संसार को 6 समयों

العالم في ستة أيام فهو زمان الابتداء، و زمان التزايد والنماء، و زمان الكمال والانتها، و زمان الانحطاط وقلّة التعلّق بالله وقلّة الارتباط، و زمان الموت بأنواع الضلالات و زمان البعث بعد الممات فإنّ مثل الناس عند الله من وقت آدم إلى آخر الزمان كزرعٍ أُخرج شَطْأه فأزره فاستغلظ فاستوى على سوقه، ثم اصفرّ فطفق تتساقط بإذن الله، ثم حُصِدَ فبقيت الأرض خاوية، ثم أحيها الله بعد موتها فإذا هي راوية، وأنبت فيها نباتاً مترعاً مخضراً، و عيون الزُّراع أقرّ، كذلك ضرب الله مثلاً للعالمين فثبت من هذا المقام أن زمان الموت الروحاني كان مقدراً من رب العالمين و كان قُدراً أن الناس يضلّون كلهم في الالف السادس إلا قليل من الصالحين، فلاجل ذلك قال الشيطان لأغويهم أجمعين، ولو لم يكن هذا

में पैदा किया है, ज़माने को 6 भागों में विभाजित किया है जो ये हैं- आरम्भ का ज़माना, बढ़ने और उन्नति करने का ज़माना, पूर्णता और पराकाष्ठा का ज़माना, अवनति और अल्लाह से संबंध और लगाव में कमी का ज़माना, विभिन्न प्रकार की गुमराहियों के कारण मौत का ज़माना और मौत के बाद उठाए जाने का ज़माना। निस्संदेह अल्लाह के निकट आदम के समय से अंतिम ज़माने तक लोगों का उदाहरण उस खेती के सामान है जो अपनी कोंपल निकाले फिर उसे सुदृढ़ करे फिर वह मोटी हो जाए और अपने तना पर खड़ी हो जाए फिर सुख हो जाए और फिर अल्लाह के आदेश से झड़ने लग जाए और फिर फसल काटी जाए और धरती खाली हो जाए। फिर अल्लाह उसे उसकी मौत के बाद जीवित करे तो वह हरी-भरी हो जाए और वह उसमें लहलहाती हरियाली उगाए और किसानों की आँखों को ठंडा कर दे। इसी प्रकार अल्लाह ने समस्त ब्रह्माण्ड के लिए उदाहरण वर्णन किए हैं। यहाँ से सिद्ध हुआ कि रूहानी मौत का ज़माना रब्बुल आलमीन की ओर से निर्धारित था और यह भी निर्धारित था कि थोड़े से नेक बन्दों के अतिरिक्त शेष सब लोग छठे हज़ार में गुमराह हो जाएँगे। इसीलिए शैतान



التقدير لما اجترأ على هذا القول ذلك اللعين ولما كان يعلم أن الله قفى هذه الازمنة بزمان البعث والهداية والفهم والدراية، قال إلى يَوْمٍ يُبْعَثُونَ فالحاصل أن آخر الازمنة زمان البعث كما يعلمه العالمون فكان الله قسّم الالف الستة على الازمنة الستة، وأودع بعض حصص السابغ للقيامة ولما جاء الالف السادس الذى هو زمان البعث من الله الكريم، تمّ أمرُ الإضلال وصار الناس فرقا كثيرة من الشيطان اللئيم، وزاد الطغيان وتموّج الفرق كتموّج الأمواج الثقال، وشمخ الضلالة كالجبال، ومات الناس بموت الجهل والفسق والفواحش وعدم المبالاة، وعمّ الموتُ في جميع الاقوام والديار والجهات فهناك رأى الله أن وقت البعث قد أتى،

ने कहा था कि मैं अवश्य उन सबको गुमराह करूँगा। अगर यह तकदीर न होती तो वह लानती कभी यह बात करने की हिम्मत न करता और क्योंकि वह जानता था कि अल्लाह ने उन ज़मानों के बाद उठाए जाने व हिदायत और दिरायत का ज़माना रखा हुआ है। इसलिए उसने 'इला यौमे युबअसून' कहा था। अतः सारांश यह है कि ज़मानों में से अंतिम ज़माना 'बअस' (उठाए जाने) का ज़माना है जैसा कि ज्ञानी लोग जानते हैं। मानो कि अल्लाह ने छः हजार वर्षों को छः ज़मानों में विभाजित किया था और सातवें (हज़ार) के एक भाग में क्रयामत को रख दिया। जब छठा हज़ार आया जो कि रहीम खुदा की ओर से बअस का ज़माना है तो गुमराह करने का काम पूर्ण हो गया और दुष्ट शैतान के कारण लोग कई फ़िक्रों में बट गए। उद्दंडता बढ़ गई और विभिन्न समूह इस प्रकार ठाठें मारने लगे जैसे भारी लहरें ठाठें मारती हैं और गुमराही पहाड़ों के समान बढ़ गई और लोग अज्ञानता, दुराचार, निर्लज्जता और लापरवाही की मौत मर गए और मौत हर क्रौम, क्षेत्र और दिशा में सामान्यता फ़ैल गई। तब अल्लाह ने देखा कि बअस का समय आ पहुंचा है और मौत का समय अपनी पूर्णता को पहुंच चुका है तो उसने अपना रसूल भेजा ताकि मुर्दों को जीवित करे जैसा कि पहली सदियों में

ووقت الموت بلغ إلى المنتهى، فأرسل رسوله كما جرت سنته في قرون أولى، ليحي الموتى، وكان وعداً مفعولاً من ربّ الورى فذلك هو المسيح خاتم الخلفاء، ووارث الأنبياء، والإمام المنتظر من حضرة الكبرياء، وآدم الذي بدأ الله منه مرةً ثانية سلسلة الأحياء وإن الله سمّاه أحمد بما يُحمد به الربّ الجليل في الأرض كما يُحمد في السماء وسمّاه عيسى ابن مريم بما خلق روحانيته من لدنه، وما كان على الأرض شيخاً له كالأبَاء وأعطى له لقب عيسى الذي هو المسيح بما ختم عليه خلافة نبيّ الأمم خير الأصفياء، كما ختم على عيسى خلافة سلسلة موسى من حضرة الكبرياء، وبما قُدّر أن اسمه يمسح الأرض ويُذكَر في كل قوم بالعزّة والعلاء

उसकी सुन्नत जारी रही है और यह सृष्टि के पालनहार की ओर से एक पूरा होकर रहने वाला वादा था। अतः यह मसीह ही खुदा तआला की ओर से खातमुल खुलाफ़ा, वारिस-ए-अम्बिया और इमामुल मुन्तज़र है साथ ही वह आदम भी है जिससे अल्लाह ने (आध्यात्मिक) जीवन प्रदान करने का सिलसिला दोबारा आरम्भ किया और अल्लाह ने उसका नाम अहमद रखा क्योंकि उसके कारण महाप्रतापी खुदा की संसार में इसी प्रकार प्रशंसा की जाएगी जैसा कि आसमान में उसकी प्रशंसा की जा रही है। और अल्लाह ने उसका नाम ईसा इब्न मरयम इसलिए रखा है कि उसकी रूहानियत को अल्लाह ने अपनी ओर से पैदा किया था और संसार में बाप-दादाओं के समान उसका कोई रूहानी शिक्षक न था। खुदा तआला की ओर से जो मसीह है उसे ईसा की उपाधि इसलिए दी गई कि उस पर समस्त उम्मतों के नबी 'खैरुल अस्फिया' सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिलाफ़त समाप्त हुई जैसा कि ईसा अलैहिस्सलाम पर मूसा अलैहिस्सलाम की खिलाफ़त समाप्त हुई। और इसलिए भी उसका नाम मसीह है क्योंकि मुक़द्दर था कि उसका नाम धरती में फ़ैल जाएगा और हर क़ौम में सम्मान और प्रतिष्ठा के साथ उसका वर्णन किया जाएगा। वह एक दिशा में बिजली के समान प्रकट

، ويبدو كالبرق من جهة ثم يبرق في جهات أخرى وينير كل فضاء السماء، وبما كتب من الأزل أنه يمسح السماء بكشف الحقائق فلا تبقى في زمنه نكتة في حيز الاختفاء فهذه ثلاثة أوجه لتسمية المسيح الذي هو خاتم الخلفاء، ففكر فيه إن كنت من أهل الدهاء وإنه مستفيض من نبيّه الذي ملك هذه الصفات الثلاث بالاستيفاء، فاترك ذكر عيسى وآمن بظل خير الرسل وخاتم الأنبياء وكان من أهم الأمور عند الله أن يجعل آخر الأزمنة زمان البعث أعني زمان تجديد سلسلة الأحياء، وإنه الحق فلا تجادل كالجاهل وكذا كان من أعظم مقاصد الله أن يهلك الشيطان كل الإهلاك، ويرد الكفرة لآدم ويملا الأرض قسطاً وعدلاً ومن أنواع البركات والآلاء

होगा और फिर दूसरी दिशाओं में भी चमकेगा और समस्त वायुमंडल को प्रकाशमान कर देगा और इसलिए भी कि अनादिकाल से यह लिख दिया गया था कि वह वास्तविकताओं से पूर्णतः पर्दा उठा देगा और उसके समय में कोई विषय परदे में छुपा नहीं रहेगा। अतः वह जो खातमुल खुलफ़ा है उसका नाम मसीह रखे जाने के ये तीन कारण हैं। यदि तू बुद्धिमान है तो इस पर विचार कर। और निस्संदेह वह अपने उस नबी से वरदान प्राप्त है जो कि उन तीनों विशेषताओं का पूर्णतः मालिक है। अतः तू ईसा अलैहिस्सलाम के वर्णन को छोड़ और खैरुसुल एवं खातमुल अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रतिरूप पर ईमान ला। अल्लाह के निकट महत्त्वपूर्ण विषयों में से एक यह था कि वह ज़मानों में से अंतिम को ज़माना-ए-बअस अर्थात् जीवन प्रदान करने के सिलसिला के नवीनीकरण का ज़माना बनाएगा। यह निश्चित रूप से सत्य है अतः तू मूर्खों के समान न झगड़। और इसी प्रकार अल्लाह के बड़े बड़े उद्देश्यों में से यह भी था कि वह शैतान को पूर्णतः नष्ट कर देगा और आदम को पुनः प्रभुत्व प्रदान करेगा और संसार को न्याय और विभिन्न प्रकार की बरकतों और नेमतों से भर देगा और समस्त वास्तविकताओं से पर्दा हटा देगा।

، ويكشف الحقائق كلها ويُشيع الأمر والمأمور في جميع الإنحاء،  
ويُظهر في الأرض جلاله وجماله ولا يغادر في هذا الباب شيئاً من  
الإشياء فأقام عبداً من عنده لهذا الغرض ولتجديد الشريعة  
الغراء، وجعله من حيث الآباء من أبناء فارس ومن حيث الأمهات  
من بنى فاطمة، ليجمع فيه الجلال والجمال، ويجعل فيه نصيباً من  
أحسن سجايا الرجال، ونصيباً من أجمل شمائل النساء، فإن في بنى  
فارس شجعاناً يردون الإيمان من السماء، ولذلك سمّاني الله آدمَ  
والمسيحَ الذي أرى خَلَقَ مريمَ، وأحمدَ الذي في الفضل تقدّمَ، ليُظهر  
أنه جمع في نفسه كل شأن النبيين على سبيل الموهبة والعطاء،  
فهذا هو الحق الذي فيه يختلفون لا يعود إلى الدنيا آدمَ، ولا نبينا

अपने आदेश और आदेशित को समस्त संसार में शोहरत देगा, धरती पर अपना तेज और सौन्दर्य प्रकट करेगा और इस बारे में किसी पहलू से कोई कमी न करेगा। अतः उसने इस उद्देश्य के लिए और उज्ज्वल शरीयत के नवीनीकरण के लिए अपनी ओर से एक बन्दा खड़ा किया और बाप-दादा की ओर से उसे फारसियों में से और ननिहाल की ओर से बनी-फ़ातिमा (हज़रत फ़ातिमा<sup>रज़ि०</sup> की सन्तान) में से बनाया ताकि उसमें तेज और सौन्दर्य जमा कर दे तथा उसमें एक भाग बेहतरीन मर्दाना स्वभाव का और एक भाग बेहतरीन औरतों के स्वभाव का रख दे क्योंकि फारसियों में वह बहादुर होंगे जो ईमान को आसमान से वापस ले आयेंगे इसीलिए अल्लाह ने मेरा नाम आदम रखा जिसने मरयम वाली सृष्टि का उदाहरण दिखाया। साथ ही मेरा नाम अहमद रखा जो प्रतिष्ठा में अधिकता रखता है ताकि प्रकट करे कि उसने अनुदान के तौर पर मेरे अस्तित्व में नबियों की हर शान इकट्ठी कर दी है। अतः यह है वह सच्चाई जिसके बारे में वे परस्पर मतभेद रखते हैं। इस संसार में न आदम वापस आएगा न हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और न मृत्यु प्राप्त ईसा अलैहिस्सलाम जिस पर आरोप लगाया गया था। अल्लाह उससे पवित्र और बुलंद है जो वे झूठ

الإكْرَمِ، وَلَا عَيْسَى الْمَتَوَفَى الْمَتَّهِمِ سُبْحَانَ اللَّهِ وَتَعَالَى عَمَّا  
يُفْتَرُونَ أَلَيْسَ هَذَا الزَّمَانُ آخِرَ الْإِزْمِنَةِ مَا لَكُمْ لَا تَفْكُرُونَ؟ أَمَا  
اقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ بظهور نبينا وجاءت أشراطها فأيّن تفرون؟ ما  
لكم تُدْعُونَ الْإِخْبَارَ مِنْ مَقَرِّ أَوْقَاتِهَا وَتَوَخَّرُونَهَا وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ؟  
أَنْسَيْتُمْ حَدِيثَ بُعِثْتُ أَنَا وَالسَّاعَةَ كَهَاتَيْنِ، فَمَا لَكُمْ لِمَ تَكْفُرُونَ؟  
فَامْسَحُوا السَّبَابَةَ وَمَا لِحِقِّهَا، وَتَذَكَّرُوا وَعَدَّ اللَّهُ، وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا  
الَّذِينَ يُنْبِئُونَ وَمَا جِئْتُ إِلَّا فِي الْإِلْفِ السَّادِسِ الَّذِي هُوَ يَوْمُ خَلْقِ  
آدَمَ، وَإِنْ فِيهَا لَهْدَى لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ أَلَا تَقْرءُونَ سُورَةَ الْعَصْرِ وَقَدْ  
بَيَّنَّ فِي أَعْدَادِهَا عَمَرَ الدُّنْيَا مِنْ آدَمَ إِلَى نَبِيِّنَا لِقَوْمٍ يَتَفَقَّهُونَ وَهَذَا  
هُوَ الْعَمْرُ الَّذِي يَعْلَمُهُ أَهْلُ الْكِتَابِ، فَاسْأَلُوهُمْ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ

गढ़ते हैं। क्या यह ज़माना अंतिम ज़माना नहीं? तुम्हें क्या हो गया है कि तुम सोचते नहीं? क्या हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रादुर्भाव के द्वारा क्रयामत निकट नहीं आ गई और उसकी निशानियाँ प्रकट नहीं हो गई? अतः तुम कहाँ भागोगे। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम ख़बरों को उनके निर्धारित समय से परे धकेलते हो और जानते-बूझते हुए उन्हें पीछे करते हो। क्या तुम हदीस-  
بُعِثْتُ أَنَا وَالسَّاعَةَ كَهَاتَيْنِ (अर्थात् मैं और क्रयामत इन दो उँगलियों के समान इकट्ठे हैं) भूल गए हो? तुम्हें क्या हुआ है तुम क्यों इंकार करते हो? अतः तुम तर्जनी उँगली और उसके साथ वाली उँगली को छू कर देखो और अल्लाह के वादे को याद करो और शिक्षा केवल वे लोग ग्रहण करते हैं जो विनम्र हैं। मैं उस छठे हज़ार में ही आया हूँ जो कि आदम की पैदाइश का दिन है। निस्संदेह इनमें विचार करने वाली क्रौम के लिए अवश्य मार्गदर्शन है। क्या तुम सूरः अस्र नहीं पढ़ते कि उसके आदाद (संख्या) में धर्म की समझ रखने वालों के लिए आदम से लेकर हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अवतरण के समय तक संसार की आयु वर्णन की गई है और यह वह आयु है जिसको अहले-किताब (अर्थात् यहूदी और ईसाई) भी जानते हैं। यदि तुम

ولا فرق بين عِدَّةِ سورة العصر وعِدَّتِهِمْ إِلَّا الفرق بين أيام الشمس وأيام القمر، فَعُدَّوْهَا إِنْ كُنْتُمْ تَشْكُونَ وَإِذَا تَقَرَّرَ هَذَا فَاعْلَمُوا أَنِّي وُلِدْتُ فِي آخِرِ الْآلِفِ السَّادِسِ بِهَذَا الْحِسَابِ، وَإِنَّهُ يَوْمُ خَلْقِ آدَمَ، وَإِنْ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّنَا كَأَلْفِ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِمَّا كَتَبْنَا مِنْ أَنَّهُ مِنْ أَيَّامِ سَلْسَلَةِ آدَمَ مَا بَقِيَ إِلَى يَوْمِنَا هَذَا إِلَّا أَلْفُ سَنَةٍ أَوْ مَعَهُ قَلِيلٌ مِنْ سَنِينَ، فَتَعَالَوْا نُثَبِّتْهُ لَكُمْ مِنْ كِتَابِ اللَّهِ وَمِنْ الْحَدِيثِ وَمِنْ كِتَابِ النَّبِيِّينَ السَّابِقِينَ فَإِنَّ أَعْدَادَ سُورَةِ الْعَصْرِ بِحِسَابِ الْجُمْلِ، كَمَا كُشِفَ عَلَيَّ مِنَ اللَّهِ الْوَهَّابِ وَكَمَا هُوَ مُتَوَاتِرٌ عِنْدَ أَهْلِ الْكِتَابِ، يَهْدِي إِلَى أَنْ الزَّمَانَ إِلَى عَهْدِ خَاتَمِ الْأَنْبِيَاءِ كَانَ مُنْقَضِيًّا إِلَى خَمْسَةِ آلَافٍ مِنْ آدَمَ أَوَّلِ النَّبِيِّينَ وَمَا كَانَ بَاقِيًّا مِنْ

नहीं जानते तो तुम उनसे पूछ लो और सूर: अस्र की वर्णित गिनती और अहले किताब की गिनती में कोई अंतर नहीं सिवाए उसके जो सूर्य के दिनों के हिसाब और चन्द्रमा के दिनों के हिसाब में होता है। अगर तुम्हें कुछ सन्देह हो तो तुम गिनती करके देख लो और जब यह बात सिद्ध हो गई तो तुम्हें ज्ञात होना चाहिए कि इस हिसाब से मैं छोटे हज़ार के अंत में पैदा किया गया हुआ और यह हज़रत आदम की पैदाइश का दिन है और हमारे रब्ब का एक दिन तुम्हारी गिनती के हिसाब से एक हज़ार साल के बराबर होता है। जो कुछ हमने लिखा है इसके बारे में अगर तुम्हें कोई शक हो कि आदम अलैहिस्सलाम के सिलसिला के समय से लेकर हमारे आज के दिन तक केवल एक हज़ार वर्ष या उसके साथ कुछ और वर्ष संसार की आयु में से शेष रह गए हैं तो आओ हम तुम्हें यह बात खुदा की पुस्तक (पवित्र कुर्आन) और हदीस और पहले अवतारों की पुस्तकों से सिद्ध कर देते हैं जैसा कि वहहाब खुदा ने मुझ पर प्रकट किया है कि जुमल (अब्जद के अक्षरों) के हिसाब से सूर: अस्र की गिनती, साथ ही अहले किताब के निकट जो रिवायत निरंतर चलती आ रही हैं, वे इस ओर मार्गदर्शन करती हैं कि सबसे प्रथम नबी हज़रत आदम

الخامس إاقليل من مئين ★ و كمثلہ يُفہم من حدیث منبر ذی سبع درجات بمعنی بیّنہ فی موضعه للناظرین ولما ثبت أن هذا القدر من عمر الدنيا كان مُنقضية إلى عهد رسول الله خير الوزی، ثبت معه أن القدر الباقي ما كان إلا أقلّ مقداراً نسبةً إلى ما مضى فإن القرآن الكريم صرّح مراراً بأن الساعة قريبة لا ريب فيها وقال اقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَقَالَ اقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَقَالَ فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا و كذلك توجد فيه في هذا الباب آيات أخرى، فعُلمَ منها بالقطع واليقين يا أولى النهی، أن الحصّة الباقيّة من الدنيا أقلّ من زمان

अलैहिस्सलाम से लेकर खातमुल अम्बिया के ज़माने तक सिवाए कुछ शताब्दियों के, पाँच हजार साल बीत चुके हैं और इसी प्रकार का भाव सात दर्जों वाले मिम्बर (मंच) वाली हदीस का है। जिसके अर्थ हमने उस के स्थान पर पाठकों के लिए वर्णन किए हैं। और जब यह सिद्ध हो गया कि खैरुल वरा (सृष्टि में से श्रेष्ठतम) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने तक संसार की आयु का इतना समय बीत चुका था तो उसके साथ यह बात भी सिद्ध हो गई कि संसार की आयु में से बचा हुआ समय, बीते हुए समय की अपेक्षा बहुत कम रह गया है। अतः पवित्र क़ुर्आन ने कई बार इस बात को सविस्तार वर्णन किया है कि क्रयामत निस्संदेह बहुत निकट है जैसा कि फ़रमाया - اقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ (अर्थात् लोगों के हिसाब किताब का समय निकट है। सूर: अम्बिया-2)

★ الحاشية ان الاقوال التي تخالف هذه العدة وذكرها المتقدمون فهي كلمات تكذب بعضها بعضاً وما اتفقوا على كلمة واحدة بل انهم في كل وإدبهمون فليس بحري ان يتمسك بها بعد ما اتفق على هذه العدة القرآن و النبيون الأوّلون منه

★ वे कथन जो इस गिनती के विपरीत हैं और पूर्व लोगों ने जिनका वर्णन किया है वे केवल ऐसी बातें हैं जिन में से कुछ, कुछ अन्य बातों को नकारती हैं। वे लोग किसी एक बात पर सहमत नहीं बल्कि वे हर ओर हाथ पैर मारते हैं। इसलिए जबकि क़ुर्आन और पूर्व अवतार इस गिनती पर सहमत हैं तो फिर वे कथन इस योग्य नहीं कि उन्हें अवश्य अपनाया जाए।

انقضی، حتیٰ ان اشراط الساعة ظهرت و یوم الوعد ذی، وقرُب  
 الآتی وبعُد ما مضی، فارجع البصر هل تری من کذب فیہ،  
 والسّلام علی من اتّبع الهدی وقد علمت ان المدّة المنقضیة من  
 وقت آدم إلی عهد نبینا المصطفی، كانت قریبة من خمسة آلاف،  
 وقد شهد علیه القرآن واتفق علیه أهل الكتاب من غیر خلاف،  
 فما المقدار الذی هو أقلّ من هذا المقدار؟ ألیس هو آخر وقت  
 العصر، أجینا بالإنصاف؟ ولو تعسّفت کلّ التعسّفات ثم مع ذلك لا  
 بُدّ لك ان تُقرّ بأنه أقلّ من النصف بغير الاختلاف فقد اعترفت  
 بدعوانا بقولك هذا مع هذا الاعتساف فلزم لك ان تُقرّ ان من

फिर एक स्थान पर फ़रमाया- اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ - क्रयामत की घड़ी अब निकट है  
 (अल क्रमर-2) और उसके साथ ही कहा- فَكَدْ جَاءَ اَشْرَاطُهَا - अतः उसकी  
 निशानियाँ तो आ चुकी हैं (मुहम्मद-19)। इस विषय से संबंधित पवित्र कुर्आन  
 में कई और आयतें भी पाई जाती हैं। हे बुद्धिमानो! इन आयतों से यह बात निश्चित  
 रूप से ज्ञात होती है कि संसार की आयु का शेष भाग उस समय से बहुत कम  
 है जो बीत चुका है, यहाँ तक कि क्रयामत की निशानियाँ प्रकट हो गईं और वादे  
 का दिन निकट आ गया तथा आने वाला समय समीप आ गया और बीता हुआ  
 समय दूर चला गया। अतः तू अपनी नज़र इस पर बार-बार डाल। क्या तू इस  
 मामले में कोई बात सत्य के विपरीत देखता है? और उस व्यक्ति को अल्लाह  
 सलामत रखे जो सत्य का अनुसरण करे और तुम यह जान चुके हो कि आदम  
 अलैहिस्सलाम के ज़माने से हमारे नबी मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के  
 ज़माने तक बीती हुई अवधि लगभग पाँच हज़ार वर्ष है और इस पर पवित्र कुर्आन  
 ने गवाही दी है और अहले किताब (यहूदी और ईसाई) भी बिना किसी मतभेद  
 के इस बात पर सहमत हैं। अतः वह समयसीमा कौन सी है जो इस समयसीमा  
 से कम हो। तुम न्यायपूर्वक हमें बताओ कि क्या यह अस्त्र का अंतिम समय  
 (सूर्यास्त से थोड़ा पहले) नहीं है। यदि तुम इस बात को स्वीकार करने में आना-



مُدَّة عَهْدِ آدَمَ مَا كَانَتْ بَاقِيَةً إِلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ إِلَّا أَلْفِينَ وَعِدَّةً مِنْ مِائِينَ، وَهَذَا هُوَ دَعْوَانَا فَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ فَإِنَّا نَقُولُ إِنَّا بُعِثْنَا عَلَى رَأْسِ أَلْفٍ آخِرٍ مِنْ أَلْفٍ مِنْ سُلْسُلَةِ أَبِي الْبَشَرِ ★ وَخَاتِمَةَ الْإِلْفِ السَّادِسِ بِإِذْنِ اللَّهِ أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ وَهَذَا هُوَ زَمَانُ الْمَسِيحِ الَّذِي هُوَ آدَمُ آخِرِ الزَّمَانِ، وَهَذِهِ هِيَ حُجَّتِي الَّتِي أَقْرَرْتُ بِهَا يَا أَبَا الْعَدْوَانِ فَانظُرْ أَنْكَ صُقِّدْتَ حَقَّ التَّصْفِيدِ وَكَذَلِكَ يَصُقِّدُ كُلَّ مَنْ أَعْرَضَ عَنِ أَهْلِ الْعِرْفَانِ وَاللَّهُ مَا نَبَّأْنَا بِالسَّاعَةِ، وَنَبَّأْنَا بِالْإِلْفِ الَّذِي تَقَعُ

कानी करो तो इसके बावजूद तुम्हें इस इक्रार से कोई चारा नहीं कि शेष रहने वाली अवधि बिना मतभेद के आधी से भी कम है। तो सही तरीके से हट जाने के बावजूद तुमने अपनी इस बात के साथ हमारे दावे को स्वीकार कर लिया इस बात से तुम पर अनिवार्य है कि तुम इस बात का भी इक्रार करो कि आदम अलैहिस्सलाम के ज़माने में से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने तक संसार की आयु केवल दो हजार और कुछ सौ वर्ष शेष रह गई थी और यही हमारा दावा है। समस्त प्रशंसा अल्लाह तआला के लिए हैं, हम कहते हैं कि मनुष्य के पिता आदम अलैहिस्सलाम के सिलसिला के हजारों वर्षों के अंतिम हजार वर्ष के आरंभ पर हम अवतरित किए गए हैं अर्थात् अरहमुर राहिमीन खुदा

★ الحاشية- انا انتقلنا في بعض عبارات كتابنا هذا من تصريح لفظ خاتمة الدنيا الى لفظ انقلاب عظيم او انقطاع سلسلة آدم او عبارة اخرى- فان امر الساعة خفي لا يعلم تفصيله الا الله فالكناية اقرب الى التقوى- ونؤمن بانقلاب عظيم بعد هذه المدة ونفوض التفاصيل الى ربنا الاعلى- منه

★ हमने अपनी इस पुस्तक की कुछ इबारतों में संसार के समापन शब्द की व्याख्या छोड़ कर उसकी बजाए महान परिवर्तन या आदम के सिलसिला की समाप्ति या कोई और इबारत प्रयोग की है। क्योंकि उस घड़ी का मामला तो रहस्य है उसका विवरण अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता इसलिए इशारों में वर्णन करना तक्वा (संयम) के अधिक निकटतम है। हम इस अवधि के बाद एक महान परिवर्तन के आने पर ईमान रखते हैं और विवरण अपने सर्वश्रेष्ठ पालनहार के सुपुर्द करते हैं।

الساعة فيها، وعرف بعض الحالات وأعرض عن بعض فلا نعلم وقت الساعة ولا ملك في السماء، وما نعلم حقيقة الساعة، ونعلم أنها انقلاب عظيم ويوم الجزاء، ونفوض تفاصيلها إلى عليم يعلم حقيقة الابتداء والانتها ثم نعيد الكلام ونقول إن الله شبه زمان رسول الله صلى الله عليه وسلم بوقت العصر، وإن شئت فاقراً في القرآن سورة العصر، وكذلك جاء ذكر العصر في الأحاديث الصحيحة والأخبار الموثقة المتواترة، حتى إنه توجد في البخاري والموطأ وغيرهما من الكتب المعتبرة والسر في هذا التشبيه أن الله بعث موسى بعد إهلاك القرون الأولى، وجعله آدم للامة الجديدة

के आदेश से छठे हजार साल के अंत पर, ओर यह उस मसीह के जमाना है जो अंतिम युग का आदम है। हे अत्याचार करने वाले यही वह मेरी दलील है जिस के सही होने का तुमने इक्रार कर लिया है। अतः देखो की तुम किस प्रकार पूर्णतः जकड़ दिए गए हो और हर वह व्यक्ति जो अध्यात्मज्ञानियों से विमुख हो उसे इसी प्रकार जकड़ दिया जाता है। और अल्लाह ने हमें क्रयामत की घड़ी के बारे में कुछ नहीं बताया, हाँ हमें इस हजार वर्ष की खबर दी है जिसमें क्रयामत घटित होगी। ओर उसने हमें कुछ अवस्थाओं का ज्ञान दिया है और कुछ का नहीं दिया। अतः न तो हम क्रयामत के समय का ज्ञान रखते हैं ओर न आसमान में कोई फ़रिश्ता, ओर न हम उस घड़ी की वास्तविकता से परिचित हैं। हाँ हमें इतना ज्ञान है कि वह एक महान परिवर्तन और प्रतिफल का दिन होगा ओर उसके विवरण हम सर्वज्ञानी खुदा के हवाले करते हैं जो आदि ओर अंत की वास्तविकता को जानता है। फिर हम बात को दोहराते हुए कहते हैं कि अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह के जमाने की असर के समय के साथ समानता वर्णन की है और यदि आप चाहें तो पवित्र कुर्आन में सूरः असर पढ़ लें। और इसी प्रकार सही हदीसों और निरन्तर ठोस खबरों में असर का वर्णन आया है, यहां तक कि यह वर्णन बुखारी, मौता ओर अन्य विश्वसनीय पुस्तकों में पाया जाता है। और इस

وأوحى إليه ما أوحى، وانقطع سلسلة دينه إلى ثلاث مائة بعد الإلف ونيفٍ وكذلك أراد الله وقضى ثم بعث عيسى ليذكّر بني إسرائيل ما نسوه من التوراة ويرغبهم في أخلاق عظمى، وانقطعت سلسلة دينه إلى مائة هي قريب من نصف مائة سلسلة موسى ثم بعث نبيّه محمّدًا خير الوزى ورسوله المصطفى، عليه صلوات الله وسلامه وبركاته الكبرى، وجعل سلسلة الإخيار الذين اتبعوه إلى مائة هي نصف النصف الذي أعطى لعيسى، أعني القرون الثلاثة التي انقضت إلى ثلاث مائة من سيدنا المجتبي فكان عهد أمة موسى يضاهي نهارًا كاملًا تمامًا، ويضاهي عدد مئاته عدد ساعاته، وعهد أمة عيسى يضاهي نصف النهار في حد ذاته، وأمّا عهد

समानता में यह भेद है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को पहली क्रौमों के नष्ट करने के बाद अवतरित किया और उन्हें नई उम्मत का आदम बनाया और उनकी ओर वह्यी (ईशवाणी) की जो भी वह्यी की, और उनके धर्म का सिलसिला तेरह सौ वर्ष से कुछ अधिक चल कर समाप्त हो गया और अल्लाह तआला ने ऐसा ही इरादा और निर्णय किया था। फिर अल्लाह तआला ने ईसा अलैहिस्सलाम को अवतरित किया ताकि वह बनी इस्राईल को तौरात की उस शिक्षा को स्मरण कराएँ जिसे वे भूल चुके थे और उन्हें उच्च शिष्टाचार पर स्थापित होने की प्रेरणा दिलाएँ। उनके धर्म का सिलसिला एक ऐसे ज़माने तक पहुंच कर समाप्त हो गया जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के सिलसिले के ज़माने का लगभग आधा था। फिर अल्लाह तआला ने अपने नबी और रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अवतरित किया जो सृष्टि में सबसे श्रेष्ठ हैं (आप पर अल्लाह तआला की रहमतें, उसकी सलामती और बड़ी बरकतें हों) और आप के बेहतरीन अनुयायियों के सिलसिला को उस अवधि तक ले गया जो उस आधी अवधि का आधा है जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को दी गई अर्थात् तीन शताब्दियों तक, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

أخيارِ أُمَّةٍ خَيْرِ الرِّسْلِ الَّذِينَ كَانُوا إِلَى الْقُرُونِ الثَّلَاثَةِ فَهُوَ يَضَاهِي نَصْفَ نَصْفِ النَّهَارِ أَعْنَى وَقْتِ الْعَصْرِ الَّذِي هُوَ ثَلَاثُ سَاعَةٍ مِنْ الْإِيَّامِ الْمَتَوَسِّطَةِ ثُمَّ بَعْدَ ذَلِكَ لَيْلَةٌ لَيْلَاءٌ بِقَدْرِ مَنْ اللَّهِ وَحِكْمَةٍ، وَهِيَ مَمْلُوءَةٌ مِنَ الظُّلْمِ وَالْجُورِ إِلَى أَلْفِ سَنَةٍ ثُمَّ بَعْدَ ذَلِكَ تَطَّلَعَ شَمْسُ الْمَسِيحِ الْمَوْعُودِ مِنْ فَضْلِ الرَّحْمَنِ، فَهَذَا مَعْنَى الْعَصْرِ الَّذِي جَاءَ فِي الْقُرْآنِ هَذَا مَا ظَهَرَ عَلَيْنَا مِنْ حَقِيقَةِ وَقْتِ الْعَصْرِ، وَلَكِنْ مَعَ ذَلِكَ قُرْبُ الْقِيَامَةِ حَقٌّ صَحِيحٌ ثَابِتٌ مِنَ الْفَرْقَانِ وَلِلْقُرْآنِ وَجْوهٌ عِنْدَ أَهْلِ الْعِرْفَانِ، فَهَذَا وَجْهٌ وَذَلِكَ وَجْهٌ وَكِلَاهُمَا صَادِقَانِ عِنْدَ الْإِمْعَانِ، وَلَا يَنْكُرُهُ إِلَّا جَاهِلٌ ضَرِيرٌ أَوْ مَتَعَصِّبٌ أُسِيرٌ فِي حُجْبِ الْعَدْوَانِ، لِأَنَّ الْمَعْنَى الَّتِي قَدَّمْنَاهُ فِي الْبَيَانِ يَحْصُلُ بِهِ التَّفْصِيْلُ مِنَ

वसल्लम के अवतरण के पश्चात तीन सौ वर्ष व्यतीत हुए। अतः मूसा की उम्मत का ज़माना पूर्ण तथा प्रकाशमान दिन के समान है और उसकी शताब्दियों की संख्या दिन की घड़ियों की संख्या के बराबर है। ईसा अलैहिस्सलाम की उम्मत का ज़माना अपने अस्तित्व में उस दिन के आधे के बराबर है परन्तु खैरुसुल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत के नेक लोगों का ज़माना जो तीन शताब्दियों तक थे, आधे दिन के आधे के समान है अर्थात् अस्त्र का समय जो सामान्य दिनों में तीन घंटे का होता है। फिर उसके बाद अल्लाह की तक्रदीर और उसकी हिकमत के अनुसार अँधेरी रात आ गई जो अत्याचार और अनीति से भरी हुई थी और वह एक हजार वर्ष तक चलती चली गई। फिर उसके बाद रहमान ख़ुदा की कृपा से मसीह मौऊद का सूर्य चढ़ना मुकद्दर था। अतः ये अर्थ उस अस्त्र के हैं जो पवित्र कुर्आन में वर्णित है और यही अस्त्र के समय की वास्तविकता है जो हम पर प्रकट हुई। लेकिन उसके साथ ही क्रयामत का निकट होना बिल्कुल सही बात है जो पवित्र कुर्आन से सिद्ध है और अध्यात्मज्ञानियों के निकट पवित्र कुर्आन की विभिन्न व्याख्याएँ हो सकती हैं तो एक दृष्टिकोण से यह है और दूसरे दृष्टिकोण से वह है और विचार करने पर दोनों सही हैं। और उसका इन्कार

بعض الاشكال التي تختلج في جنان بعض عطاشى العرفان، من تتابع وساوس الشيطان ثم إن هذا المعنى ينحى حديث البخارى والموطأ من طعن الطعان، ومن اعتراض معترض يتقلد أسلحة للطعان وتقرير الاعتراض أنه كيف يمكن أن يشبه زمان الإسلام بوقت العصر وقد ساوى زمان هذا الدين زمان موسى، وزاد على زمان دين عيسى، بل جاوز ضعفه إلى هذا العصر، فما معنى العصر نسبة إلى الزمان المذكور؟ بل ليس هذا البيان إلا كذبا فاحشا ومن أشنع أنواع الزور، بل ذيل الاعتراض أطول من هذا المحذور فإن نبال نزول عيسى وخروج الدجال ويأجوج وماجوج الذى ينتظره كثير من العامة قد ثبت كذبه بهذا الإيراد بالبداهة وبالضرورة، فإن وقت

मूर्ख, अंधे तथा उद्दंडता के पर्दों में क्रैद पक्षपाती के अतिरिक्त कोई नहीं कर सकता। क्योंकि जो अर्थ अपने बयान में हमने पहले वर्णन किए हैं उनसे उन कुछ संदेहों से मुक्ति मिलती है जो अध्यात्मज्ञान के कुछ प्यासे दिलों में शैतान के बार-बार के भ्रमों से दुविधा उत्पन्न करते हैं। इसके अतिरिक्त यह अर्थ बुखारी और मोता की हदीस को आरोपक के आरोप से बचाते हैं और उस आरोप लगाने वाले के आरोप से भी बचाते हैं जो नुक्ता-चीनी के लिए हर समय हथियार लटकाए फिरता है। आरोप लगाने वाले का आरोप यह है कि यह कैसे सम्भव है कि इस्लाम के ज़माने को अस्त्र के समय से समानता दी जाए जबकि इस धर्म का ज़माना मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने के बराबर है और ईसा अलैहिस्सलाम के धर्म के ज़माने से अधिक है बल्कि इस अस्त्र के समय तक उसके दोगुने ज़माने से भी अधिक हो गया है। अतः इस वर्णित ज़माने के बारे में अस्त्र के वर्णित अर्थ कैसे सही होंगे? बल्कि यह बयान खुला खुला वास्तविकता के विरुद्ध और घिनौना झूठ है और ऐतराज का दामन तो इस वर्जित सीमा से भी आगे बढ़ गया है क्योंकि ईसा अलैहिस्सलाम का अवतरण, दज्जाल का निकलना और याजूज-माजूज के निकलने की खबर जिसकी अधिकतर लोग प्रतीक्षा कर रहे हैं,

العصر قد مضى بل انقضى ضعفاه من غير الشك والشبهة نظراً إلى زمان الملة الموسوية، فما بقى لظهور هذه الإنباء وقت، واضطر المنتظرون إلى أن يقولوا إنها باطلة في الحقيقة وما بقى سبيل لتصديقها إلا أن يقال إن هذه الأخبار قد وقعت، وقد نزل عيسى النازل، وخرج الدجال الخارج، وظهر يأجوج ومأجوج، وتحقق النسل والعروج، وتمت الأخبار التي قدرتها الرسل أقتت فلما قلنا إن زمان أمة موسى كان بين هذه الأمم الثلاث أطول الإزمنا، وكان زمان أمة عيسى نصفه، وكان نصف هذا النصف زمان أخيار هذه الأمة نظراً إلى تحديد القرون الثلاثة، بطل هذا الاعتراض، وانكشف الأمر على الذي يطلب الحق بسلامة الطوية

उसका झूठ इस वर्णन से स्पष्ट एवं निश्चित रूप से सिद्ध हो जाता है क्योंकि अस्त्र का समय बीत चुका बल्कि मूसा की उम्मत के ज़माने को देखते हुए बिना किसी संदेह के उससे चार गुना समय बीत चुका है। अतः इन भविष्यवाणियों के प्रकटन में अब कोई समय शेष नहीं रह गया है और इन खबरों की प्रतीक्षा करने वाले यह कहने पर विवश हो गए हैं कि यह सब खबरें वास्तव में बिल्कुल झूठ हैं और उनके सत्यापन का कोई मार्ग शेष नहीं रहा सिवाए इसके कि यह कहा जाए कि ये भविष्यवाणियाँ पूरी हो चुकी हैं और अवतरित होने वाला ईसा अवतरित हो चुका। साथ ही दज्जाल भी प्रकट हो चुका और याजूज माजूज भी प्रकट हो गए और उनका संसार में फैल जाना और उनका फलांगना और उनका विकास एवं उन्नति पूर्ण हो गई और वे समस्त खबरें पूरी हो गईं जो निर्धारित थीं और रसूल निर्धारित समय पर लाए जा चुके। और जब हम कुरूने सलासा (प्रथम तीन शताब्दियों) की हदबंदी को दृष्टिगत रखते हुए कहते हैं कि मूसा की उम्मत का ज़माना इन तीनों ज़मानों में से सबसे लम्बा ज़माना था और ईसा अलैहिस्सलाम की उम्मत का ज़माना उससे आधा था और इस उम्मत के बेहतरीन लोगों का ज़माना वर्णित आधे का आधा था तो ऊपर किया गया ऐतराज़ झूठा सिद्ध हो

وصحة النيّة، وثبت بالقطع واليقين أن زمان الإّمة المرحومة  
المحمدية قليل في الحقيقة من زمان الإّمة الموسوية والعيسوية ★  
وهذه منّةٌ منّا على المخالفين من الفرق الإسلامية، ولم يبق لعاقل

जाता है और उस व्यक्ति पर वास्तविकता स्पष्ट हो जाती है जो नेक फितरत और साफ़ नीयत से सच्चाई को मालूम करना चाहे। और निश्चित रूप से यह सिद्ध हो जाता है कि उम्मत-ए-मुहम्मदिया का ज़माना उम्मत-ए-मूसा<sup>अ०</sup> और उम्मत-ए-ईसा<sup>अ०</sup> के ज़माना से वास्तव में कम है। और इस्लामी फ़िक्रों में से विरोधियों

★ الحاشية قد صرح رسول الله صلى الله عليه وسلم بان المراد من الامم الذين خلوا من قبلهم اليهود والنصارى فلا سبيل لمن مازيا ما سمعت قول رسول الله "فمن" ففكر و امعن ثم نقول على سبيل التنزل ان وقت بعث نبينا المصطفى ما كان الا كالعصر نسبة الى امم اخرى فان نسبة الالف الخامس الى عمر الدنيا اعنى سبعة الاف تضاهى نسبة توجد لوقت العصر بما مضى بغير خلافٍ و ذلك اذا اخذ مقدار النهار سبع ساعات نظراً الى اقل مقدار طلوع الشمس وغروبها في بعض معمرات و انت تعلم ان النهار يوجد بهذا القدر في بعض بلاد القصوى كما لا يخفى على اولى النهى و انا اخذنا النهار في صورة اولى بلحاظ ازيد ساعاتها و في الاخرى بلحاظ اقلها و لنا الخيرة كما ترى منه۔

★ हाशिया :- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्पष्ट कर दिया है कि उन उम्मतों से अभिप्राय जो पहले गुज़र चुकी हैं यहूद और ईसाई हैं। अतः झगड़ने वाले के लिए कोई मार्ग शेष नहीं। क्या तूने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कथन 'فَمَنْ' (कि जाल्लीन यहूद और ईसाइयों के अतिरिक्त और कौन हैं) नहीं सुना? अतः विचार कर, फिर हम तनज्जुल के तौर पर कहते हैं कि हमारे नबी मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अवतरण का समय दूसरी उम्मतों के देखते हुए अस्त्र का ही समय था क्योंकि पांचवे हज़ार की तुलना जो संसार की आयु अर्थात सात हज़ार से है, उस तुलना के समान है जो अस्त्र के समय से पाई जाती है जो बिना मतभेद के पहले वर्णन किया गया है और यह इस प्रकार है कि जब कुछ इलाकों में सूर्य के उदय और अस्त को देख कर दिन की कम से कम अवधि सात घंटे ली जाए और आप को ज्ञात है कि कुछ दूर के इलाकों में दिन इतना ही होता है जैसा कि बुद्धिमान जानते हैं। पहली अवस्था में हम ने दिन की अधिक घंटों के हिसाब से गणना की और दूसरी अवस्था में कम से कम घंटों के हिसाब से और हमें अधिकार है जैसा कि तू देख रहा है।

ارتياب في هذا البيان، بل هو موجب لثلج الصدر والاطمئنان، وبطل معه اعتراض يرد على حديث عمر الانبياء، فإن عمر عيسى من جهة بقاي دينه نصف عمر موسى كما ظهر من غير الخفاء، وعمر سيدنا خير الرسل بالنظر إلى القرون الثلاثة نصف عمر عيسى ابن مريم بالبداهة ثم بعد ذلك أيام موت الإسلام إلى ألف سنة ثم بعد موت رسول الله صلى الله عليه وسلم بهذا المعنى زمان المسيح الموعود، الذي يشابه أبا بكر في قتل الشيطان المردود، فإن المسيح الموعود قد استُخلف بعد موت النبي الكريم من حيث دينه، من غير فاصلة بل قبل تدفينه، وأشركه ربُّه في نبأ خلافة أبي بكر أعني النبأ الذي ذكر في صحف

पर यह हमारा एहसान है और किसी बुद्धिमान के लिए इस बयान के बाद संदेह का स्थान नहीं रहता बल्कि यह हृदय की संतुष्टि एवं तसल्ली का कारण है और उसके साथ वह आरोप भी झूठा हो जाता है जो नबियों की हदीस पर पड़ता है क्योंकि स्पष्ट रूप से हजरत ईसा की आयु आपके धर्म के शेष रहने की दृष्टि से हजरत मूसा अलैहिस्सलाम की आयु की आधी बनती है और सय्यदना खैरुसुल (अवतारों में श्रेष्ठ) की आयु आपकी पहली तीन शताब्दियों को देखते हुए स्पष्ट रूप से ईसा इब्न मरयम की आयु की आधी बनती है। फिर इसके बाद एक हजार वर्ष तक इस्लाम की मौत का ज़माना है। फिर इन अर्थों की दृष्टि से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के देहांत के बाद उस मसीह मौऊद का ज़माना है जो धुत्कारे हुए शैतान के क़त्ल करने के सिलसिले में हजरत अबू बक्र रज़ि के समान है। क्योंकि मसीह मौऊद को धर्म की दृष्टि से रसूल करीम के देहांत के बाद अविलंब बल्कि तदफ़ीन से भी पहले ख़लीफ़ा बनाया गया है और अल्लाह ने उसे हजरत अबू बक्र रज़ि० की ख़िलाफ़त की ख़बर में सम्मिलित कर दिया है अर्थात वह ख़बर जो पवित्र कुर्आन में वर्णित है और उसको भी हजरत अबू बक्र रज़ि के समान तौफ़ीक़



مطهّرة، ووُفّق كما وُفّق أبو بكر، وأُعطي له العزمُ كمثله لمنع سيل ضلالة مهلكة وإليه أشار سبحانه تعالى في قوله لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ يعني من ألف سنة، وكثرت الاستعارات كمثله في كتب سابقة ثم بعد ذلك الالف زمانُ البعث بعد الموت وزمان المسيح الموعود، فقد تمّ اليوم ألف الضلالة والموت، وجاء وقت بعد الإسلام الموءود وتمت حجّة الله عليكم أيها المنكرون، فلا تكونوا من الظالمين بالله ظنّ السوء، وعُدّوا أيّام الله أيها العادون وإنّ وعد الله حق، فلا تغرّنكم الحياة الدنيا، ولا يغرّنكم الشيطان الملعون وإن هذه الأيّام أيّام ملحمة عظمت أيها المجاهدون الخاطئون، وأيّام نزول المسيح وخروج الشيطان بغضب ما رآه السابقون فإن الشيطان

दी गई और विनाशकारी गुमराही के सैलाब को रोकने के लिए उन जैसा दृढ़ संकल्प दिया गया। इसी की ओर अल्लाह तआला ने अपने कथन-**لَيْلَةُ\*** में इशारा फ़रमाया है। हजार महीनों से अभिप्राय यहां एक हजार वर्ष है और इस जैसे इस्तेआरात (रूपक) पहली पुस्तकों में बहुत हैं। इस हजार वर्ष के पश्चात 'बअस बअदल मौत' (मरने के बाद पुनः उठाया जाना) और मसीह मौऊद का ज़माना है। अतः आज गुमराही और मौत का हजार साल पूरा हो गया और ज़िंदा दफन इस्लाम के बाद (उसकी दोबारा उन्नति) का समय आ गया। और हे इन्कार करने वालो! तुम पर अल्लाह की हुज्जत पूरी हो गई। अतः तुम अल्लाह पर कुधारणा करने वालों के समान न बनो। और हे गणना करने वालो! अल्लाह के दिनों की गणना करो और अल्लाह का वादा निस्संदेह सच्चा है। अतः तुम्हें न यह सांसारिक जीवन धोखा दे और न शैतान धोखा दे। हे गलती करने वाले मुजाहिदो! यह ज़माना बड़ी जंग का ज़माना है और मसीह के अवतरण और शैतान के ऐसे भयानक क्रोध के साथ

\*अनुवाद- अर्थात लैलतुल क्रद्र की रात हजार महीनों से बेहतर है। अनुवादक

رأى الزمان قد انقضى، وإن وقت المهلة مضى، ويوم البعث أتى،  
 وما كانت المهلة إلا إلى يوم يُبعثون هذا ما وعد الرحمن  
 وصدق المرسلون وإن الذين يجادلون فيه بعدما أتتهم شهادة  
 من الفرقان إن في صدورهم إلا كبراً، وما بقى لهم حق ليكفروا  
 بسُلطان نزل من الرحمن، وتمت عليهم حجة الله الديان لا  
 يريدون الحق ولا الهدى، وينفدون الأعمار فرحين مستبشرين  
 بهذه الدنيا ألم يأتهم ما أتى الأمم الأولى؟ ألم يروا آيات كبرى؟  
 أما جاء رأس المائة وفساد الأمة، والفتن العظمى من أعداء  
 الملّة، والكسوف والخسوف في رمضان ومعالم أخرى؟ فإن كنتم  
 صالحين فأين التقوى؟

प्रकट होने का ज़माना है जिसे पहलों ने नहीं देखा। शैतान ने देख लिया है कि  
 उसका ज़माना समाप्त हो गया और उसको दी गई मोहलत की मीआद पूरी हो  
 गई और उठाए जाने का दिन आ गया और उसको दी गई मोहलत केवल इस  
 उठाए जाने के दिन तक थी। यही तो है जिसका रहमान ख़ुदा ने वादा किया  
 था और अवतार सही ही कहते थे। और वे लोग जो कुर्आन की गवाही आ  
 जाने के बाद भी इसके बारे में झगड़ा करते हैं उनके दिलों में अहंकार है और  
 उनके लिए इस दलील से इन्कार करने का कोई अधिकार शेष नहीं जो रहमान  
 ख़ुदा की ओर से आई है। उन पर निर्णय करने वाले ख़ुदा की हुज्जत पूरी हो  
 गई। वे सत्य और सन्मार्ग नहीं चाहते और वे अपनी आयु इस संसार की नेमतों  
 पर प्रसन्न हो कर समाप्त कर रहे हैं। क्या उनके पास वह मामला नहीं आया  
 जो पहली उम्मतों के पास आया था? क्या उन्होंने महान निशान नहीं देखे? क्या  
 शताब्दी का आरम्भ और उम्मत का फ़साद और उम्मत के दुश्मनों की ओर  
 से बड़े बड़े उपद्रव और रमज़ान के महीने में कसूफ़ व खसूफ़ (सूर्य और चन्द्र  
 ग्रहण) तथा अन्य निशानियाँ प्रकट नहीं हो गईं? अगर तुम नेक हो तो तक्वा  
 कहाँ गया?

أيها الناس قد علمتم مما ذكرنا من قبل أن أعداد سورة العصر بحساب الجُمَّلِ تدلّ على أن الزمان الماضي من وقت آدم إلى نزول هذه السورة كان سبع مائة سنة بعد أربع آلاف هذا ما كشف على ربي فعلمتُ بعد انكشاف، وشهد عليه تاريخ اتفق عليه جمهور أهل الكتاب من غير خلاف، وقد زاد على تلك المدّة إلى يومنا هذا ثلاث مائة بعد الالف، وإذا جَمَعناهُمَا فهو ستة آلاف كما هو مذهب المحقّقين من السلف ومن ههنا ثبت أن تولّد في آخر الالف السادس يضاهاى خلقة آدم في اليوم السادس ولا شك أن المبعوث في آخر ألف الموت سُمّي بآدم عند الرحمن،

हे लोगो! तुम मालूम कर चुके हो जो हमने पहले वर्णन किया है कि जुमल (अब्जद के अक्षरों) के हिसाब से सूर: अस्र का जोड़ इस बात पर दलालत करता है कि आदम अलैहिस्सलाम के ज़माने से इस सूर: के उतरने तक का समय चार हज़ार सात सौ वर्ष के लगभग बनता है। यह वह बात है जिसका मेरे रब्ब ने मुझे पर रहस्योद्घाटन किया। अतः इस रहस्योद्घाटन के बाद मैंने वास्तविकता को जान लिया और उस इतिहास ने भी इसके सही होने की गवाही दे दी जिस पर बिना मतभेद के समस्त अहले किताब (यहूदी और ईसाई) भी सहमत हैं और इस अवधि पर, हमारे इस दिन तक तेरह सौ वर्ष गुज़र चुके हैं और जब हम इन दोनों अवधियों को जमा करें तो यह छः हज़ार वर्ष बन जाते हैं जैसा कि पूर्व अन्वेषकों का मत है। यहाँ से सिद्ध हुआ कि मेरा छठे हज़ार के अंत पर जन्म होना आदम के छठे दिन में जन्म के समान है और कोई संदेह नहीं कि मौत के हज़ार (वर्ष) के अंत पर अवतरित किए जाने वाले का नाम रहमान खुदा के निकट आदम रखा गया है। अतः यह अल्लाह की हिकमत के भेदों में से है कि उसने मुझे छठे हज़ार के अंत में पैदा किया ताकि मेरा जन्म इस दृष्टिकोण से आदम के जन्म के समान हो जाए और यह हिकमतों वाले तथा

فكان من أسرار حكمة الله أنه خلقني في آخر الالف السادس  
 ليشابه خلقي خلق آدم بهذا العنوان و كان هذا وعدًا مقدّرًا  
 من الله ذي الحكم والفنون، وإليه أشار في قوله وَإِنَّ يَوْمًا عِنْدَ  
 رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ وَإِنْ زَمَانَ خَلَقِي أَلْفُ سَادِسَ لَا  
 رَيْبَ فِيهِ، فاسأل الذين يعلمون ونطق به التوراة التي يؤمن  
 بها المسلمون، ولم يثبت بنصوص صريحة ما يخالف هذه  
 العِدَّةَ ويعلمه العالمون فما كان لهم أن يكفروا بعِدَّةِ التوراة  
 وما قال النبيون وكيف وما خالفه القرآن بل صدقه سورة  
 العصر فأين يفرون؟ بل إليه يشير قوله تعالى "يُدْبِرُ الْأَمْرَ"

विभिन्न विशेषताओं वाले अल्लाह की ओर से एक निर्धारित वादा था। इसी की  
 ओर उसने अपने कथन- **وَإِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ**

(अनुवाद- खुदा का एक दिन ऐसा है जैसे तुम्हारे हजार वर्ष, अल्हज्ज- 48) में  
 इशारा किया है। निस्संदेह मेरे जन्म का समय छठा हजार है, इसमें कोई संदेह नहीं  
 जानकरों से पूछो। यह बात तौरात ने भी वर्णन की है जिसे मुसलमान भी मानते हैं,  
 जो कुछ इस गणना के विरुद्ध है कदापि 'नुसूसे सरीहा' (क़ुर्आनी आयत) से सिद्ध  
 नहीं है और उसे ज्ञानी लोग जानते हैं। अतः उनके लिए उचित नहीं कि वे तौरात की  
 वर्णित गिनती का और अवतारों के कथन का इन्कार करें। और वे इसका इन्कार कर  
 भी कैसे सकते हैं जबकि क़ुर्आन ने इसका विरोध नहीं किया बल्कि सूर: अलअस्र  
 ने इसका सत्यापन किया है। अतः वे कहाँ भागेंगे? बल्कि खुदा का यह आदेश-

**يُدْبِرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ  
 أَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ \*** (अस्सज्द: 6)

भी इसी ओर इशारा करता है और उसके साथ आयत- **إِلَى يَوْمٍ يُبْعَثُونَ**

\* अनुवाद- वह आदेश को युक्ति के साथ आसमान से धरती की ओर उतारता है फिर वह  
 एक ऐसे दिन में उसकी ओर चढ़ता है जो तुम्हारी गिनती के हिसाब से एक हजार वर्ष के बराबर  
 होता है। (अस्सज्द: 6)

مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ" ★ واقرأوا معها آية إلى يَوْمٍ يُبْعَثُونَ هذه آية كتبناها من سورة السجدة، ومن السنة أنها تُقرأ في صلوة الفجر من الجمعة، وإن الله تبارك وتعالى يقول في هذه السورة

कर पढ़ो। यह आयत हमने सूः अस्सज्दः से लिखी है और यह सुन्नत है कि यह सूः जुमा के दिन फजर की नमाज़ में पढ़ी जाती है। अल्लाह तआला इस सूः में फरमाता है कि उसने पवित्र कुर्आन उतार कर शरीयत के मामलों की योजना बनाई और पवित्र कुर्आन के द्वारा लोगों के लिए उनका धर्म पूर्ण कर दिया। फिर उसके

★ الحاشية- قد صرح الله تعالى في هذه الآية- وبين حق التبيين ان ايام الضلالة بعد ايام دعوة القران هي الف سنة- وبعدها يبعث مسيح الرحمن فانقطعت الخصومة بهذا التعيين المبين لاسيما اذا الحق به ما جاء ذكر الف سنة في كتب النبيين السابقين- ففكر ثم فكر حتى يأتيك اليقين الا ترى الذين فتنوا المؤمنين والمؤمنات- الحقوا بجماعتهم كثيرا من الحشرات- وقلبوا العالم بالبدعات- واراوا ان يستأصلوا الحق بالخز عبيلات- وانفقوا جبال الطلاء كاجراء نهر الماء- لهدم الشريعة الغراء- ايو جدمثلهم في الاولين من الاعداء- او ضُبت على الاسلام مصيبة من قبل كمثل هذا البلاء- لن تجد من ادم الى اخر الوقت فتنا كفتن هولاء- منه

★ हाशिया :- अल्लाह तआला ने इस आयत में व्याख्या वर्णन की है और भली-भांति स्पष्ट किया है कि कुर्आन के प्रचार प्रसार के दिनों के बाद गुमराही का जमाना है जो हजार साल है और उसके बाद रहमान खुदा का मसीह अवतरित होगा। इस स्पष्ट निश्चय के पश्चात झगड़ा समाप्त हो गया। विशेषकर जब उसके साथ इस हजार साल की चर्चा को मिलाया जाए जो पूर्व अवतारों की पुस्तकों में आया है। विचार कर और फिर विचार कर, यहाँ तक कि तुझे विश्वास हो जाए। क्या तू उनको नहीं देखता जिन्होंने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को मुसीबत में डाला और उन्होंने अपनी जमाअत के साथ बहुत से कीड़े मकोड़े मिला लिए और संसार को बिदअतों (धर्म में नई बात पैदा करने) से तहस-नहस कर दिया और उन्होंने चाहा कि झूठी बातों से सत्य को मिटा दें और उन्होंने प्रकाशमान शरीयत को बर्बाद करने के लिए पानी की नदी बहाने के समान सोने के पहाड़ खर्च कर दिए। क्या पहले शत्रुओं में उनका उदाहरण पाया जाता है या इस्लाम पर उस जैसी मुसीबत पहले कभी आई। आदम से लेकर अंतिम समय तक उनके फित्नों जैसे फित्ने तुम कदापि नहीं पाओगे। इसी से।

إنه دَبَّرَ أمر الشريعة بإنزال الفرقان الحميد، وأكمل للناس دينهم بالكلام المجيد، ثم يأتي بعد ذلك زمان تمتدّ ضلالته إلى ألف سنة، ويُرفَعُ كتاب الله إليه ويعرُج إلى الله أمره بِشَقِيهِ، يعنى يُضَاعَفُ فيه حقُّ الله وحق العباد، وتهبّ صراصر الفساد على قِسمِيهِ، ويفشو الكذب والفرية، يعنى الفتن الدجالية، ويظهر الفسق والكفر والشرك، وترى المجرمين معرضين عن ربهم وظهيرين عليه ثم يأتي بعد ذلك ألف آخر يُغاث فيه الناس من رب العالمين، ويُرسَلُ آدمُ آخر الزمان ليجدد الدين، وإليه أشار في آية هي بعد هذه الآية أعنى قوله وَبَدَأَ خَلْقَ الْإِنْسَانِ مِنْ طِينٍ وَإِنَّ هَذَا الْإِنْسَانَ هُوَ الْمَسِيحُ الْمَوْعُودُ وَقَدَّرَ بَعَثَهُ بَعْدَ

पश्चात वह ज़माना आएगा जिस की गुमराही एक हजार वर्ष तक फैली होगी और अल्लाह की किताब उस (अल्लाह) की ओर उठा ली जाएगी और अल्लाह का आदेश अपने दोनों पहलुओं के हिसाब से उस (अल्लाह) की ओर उठा लिया जाएगा अर्थात उस (गुमराही के ज़माना) में अल्लाह का हक़ भी व्यर्थ किया जाएगा और बन्दों का हक़ भी और फसाद की आंधियां उसकी दोनों प्रकारों पर चलेंगी। झूठ और मनगढ़त बातें अर्थात दज्जाली फ़िल्ने फ़ैल जाएँगे। वादा ख़िलाफ़ी, कुफ़्र और शिर्क का प्रभुत्व हो जाएगा और तू मुजरिमों को अपने रब से विमुख होते हुए और उसके ख़िलाफ़ हिमायत करते हुए देखेगा। फिर उसके बाद एक और हजार आएगा जिसमें रब्बुल आलमीन (ब्रह्माण्ड के पालनहार) की ओर से लोगों की दुआएँ सुनी जाएँगी और अंतिम ज़माने के आदम को भेजा जाएगा ताकि धर्म का नवीनीकरण करे। इसी की ओर उस आयत में इशारा किया है जो इस आयत के बाद है अर्थात अल्लाह फरमाता है-

وَ بَدَأَ خَلْقَ الْإِنْسَانِ مِنْ طِينٍ

अनुवाद - और उसने मनुष्य की सृष्टि का आरम्भ गीली मिट्टी से किया। (अस्सज्द: 8) यह मनुष्य ही मसीह मौऊद है इसका अवतरण उन शताब्दियों से जो बेहतरीन शताब्दियाँ हैं, एक हजार वर्ष गुज़रने के पश्चात निर्धारित किया गया था

انقضاء ألف سنة من القرون التي هي خير القرون، واتفق عليه معشر النبيين وقد جاء في الصحيحين عن عمران بن حصين قال قال رسول صلى الله عليه وسلم خير أمتي قرني ثم الذين يلونهم، ثم الذين يلونهم، ثم إن بعدهم قوم يشهدون ولا يستشهدون، ويخونون ولا يؤتمنون، وينذرون ولا يؤفون، ويظهرون فيهم السمن وفي رواية ويحلفون ولا يستحلفون فظهر من هذا الحديث الذي هو المتفق عليه أن الزمان المحفوظ من غلبة الكذب الذي هو من الصفات الدجالية وزمان الصدق والصلاح والعفة لا يجاوز ثلاث مائة من قرن سيدنا خير البرية، ثم بعد ذلك يأتي زمان كليل سجي عند غيبة بدرٍ اختفى، وفيه يفسو الكذب ويهوى من الأهواء من هوى،

और इस पर अवतारों के समूह की सहमति है। सहीहैन\* में इमरान बिन हसीन से रिवायत आई है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरी उम्मत का बेहतरीन भाग मेरी शताब्दी है फिर वे लोग जो उनके निकट हैं फिर वे जो उनके निकट हैं फिर उनके बाद वे लोग होंगे जो गवाही देंगे हालांकि उनसे गवाही नहीं मांगी गई होगी। वे ख़यानत करेंगे और उन्हें अमीन न समझा जाएगा, मन्नत मानेंगे परन्तु पूरी न होगी उनमें स्थूलता आ जाएगी और एक रिवायत में इस प्रकार है कि वे क्रसम खाएँगे हालांकि उनसे क्रसम की मांग न की गई होगी। अतः इस हदीस से जो कि 'मुत्तफ़ि़क़ अलैहि' (बुखारी और मुस्लिम दोनों जिसमें सहमत हों) है, स्पष्ट है कि झूठ के प्रभुत्व से जो कि दज्जाल की विशेषताओं में से है, सुरक्षित ज़माना तथा सच्चाई, नेकी और सच्चरित्रता का ज़माना सय्यदना खैरुल बरिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शताब्दी से तीन शताब्दी आगे न जाएगा। फिर उसके बाद ऐसा ज़माना आएगा जैसे चन्द्रमा के छुप जाने पर रात अंधकारमय हो जाती है, उसमें झूठ फैल जाएगा और तामसिक इच्छाओं के कारण नष्ट होने वाला नष्ट हो जाएगा। प्रति दिन

\* सहीहैन- अर्थात् हदीस की दो प्रसिद्ध पुस्तकें बुखारी और मुस्लिम - अनुवादक

ويزيد كل يوم زوراً وأحاديث تُفترى فإذا بلغ الكذب إلى حد الكمال فينتهى يوماً إلى ظهور الدجال، وهو آخر أيام هذا الالف كما يقتضيه سلسلة الترقى في الزور والافتعال، وكما هو مفهوم حديث رسول الله ذى الجلال وذلك الزمان هو الزمان الذى يعرج أمر الله إليه والهدى، ويرفع القرآن إلى السماوات العلى، وقد شهدت الواقعات الخارجية أن هذا الزمان الفاسد امتد إلى ألف سنة أعنى إلى هذا الزمان، حتى صار الصل كالأفعوان ففهمنا من هذا باليقين التام والعرفان، أن قوله تعالى يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ، يتعلّق بهذه المدة التى مرّت فى الضلالة والفسق والطغيان، وكثُر فيه المشركون، إلا قليل من الذين كانوا يتّقون وإنه

झूठ और मनगढ़त बातें बढ़ती जाएंगी फिर जब झूठ चरम सीमा तक पहुँच जाएगा तो एक दिन यह दज्जाल के प्रकटन का आधार होगा और वे उस हजार (वर्ष) के अंतिम दिन होंगे जैसा कि झूठ और आत्मनिर्मित बातों की उन्नति की श्रंखला उसकी मांग करती है और जैसा कि प्रतापी खुदा के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस का भाव है। यह ज़माना वही ज़माना होगा जिसमें अल्लाह का आदेश और हिदायत उसकी ओर लौट जाएँगे और कुर्आन बुलंद आसमानों पर उठा लिया जाएगा। घटनाएं घटित होकर गवाही दे चुकी हैं कि यह बिगड़ा हुआ ज़माना एक हजार वर्ष तक अर्थात् इस ज़माने तक फैला हुआ था। यहाँ तक कि छोटा विषैला सांप बड़े विषैले सांप के समान हो गया। अतः इस विवरण से हमने पूर्ण विश्वास तथा विवेक से समझ लिया है कि खुदा का आदेश -

يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ (6 - अस्सज्द: -)

(अनुवाद - वह एक ऐसे दिन में अल्लाह की ओर चढ़ता है जो तुम्हारी गिनती के हिसाब से एक हजार वर्ष के समान होता है) उस अवधि के बारे में है जो गुमराही, दुराचार और उद्दंडता में व्यतीत हुई है। उस में मुश्रिकों की



ألف سنة ما زاد عليه وما نقص، فأى دليل أكبر من هذا لو كنتم تفكرون وإن لم تقبلوا فبينوا لنا معنى هذه الآية من دون هذا المعنى إن كنتم تعلمون أتظنون أن القيامة هي ألف سنة كسنوات مُدَّة الدنيا أو تصعد الأعمال إلى الله في يوم القيامة في مُدَّةٍ كمثلها، ولا يعلمها الله قبلها؟ اتقوا الله أيها المسرفون وأى شهادة أكبر مما ظهر في الخارج أعنى مقدار مُدَّةٍ غلبت الضلالة فيها، فإنكم رأيتم بأعينكم أن مُدَّةَ زمان الضلالة وشِدَّتْها وتزايدها بعد قرون الخير قد امتدَّتْ إلى ألف سنة حقا وصدقا أتذكرون وأنتم تشاهدون؟ وبدأ الكذب كزرع، ثم صار كشجرة، حتى ظهرت هيكل

अधिकता हो गई थी सिवाए कुछ लोगों के जो संयमी थे। यह पूरे एक हजार वर्ष हैं न उससे अधिक न कम। अतः यदि तुम विचारपूर्वक काम लो तो इससे बड़ी दलील और क्या होगी और यदि तुम स्वीकार न करो तो हमें खोल कर बताओ कि इस अर्थ के अतिरिक्त इस आयत का और क्या भाव है अगर तुम ज्ञान रखते हो। क्या तुम यह समझते हो कि क्रयामत भी सांसारिक वर्षों के समान हजार वर्ष की है या क्रयामत के दिन इसी के समान अवधि में कर्म अल्लाह की ओर जाएंगे और इससे पूर्व अल्लाह को उन कर्मों का ज्ञान नहीं होगा। हे सीमा का उल्लंघन करने वालो! अल्लाह से डरो, उससे बड़ी कौन सी गवाही है जो वास्तव में प्रकट हो चुकी। मेरा अभिप्राय इस अवधि से है जिसमें गुमराही का प्रभुत्व रहा। तुम निस्संदेह अपनी आंखों से देख चुके हो कि अच्छाई की शताब्दियों के पश्चात गुमराही के जमाना की अवधि और उसकी वृद्धि और उसमें बढ़ोतरी होना वास्तव में 1000 वर्ष तक रहा है। क्या तुम स्वयं देख लेने के बावजूद इंकार करते हो। झूठ खेती की कोंपल के समान शुरू हुआ फिर एक वृक्ष के समान हो गया यहां तक कि दज्जाल की ऊंची इमारत प्रकट हो गई और तुम देखते रहे। गुमराही यद्यपि पहले भी थी लेकिन उसके सींग इन तीन शताब्दियों के पश्चात

الدِّجَالِ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ وَإِنَّ الضَّلَالََةَ وَإِنْ كَانَتْ مِنْ قَبْلِ وَلَكِنْ مَا حَدَّثَتْ قُرُونُهَا إِلَّا بَعْدَ هَذِهِ الْقُرُونِ الثَّلَاثَةِ أَلَا تَقْرءُونَ حَدِيثَ الْقُرُونِ؟ وَقَدْ جَمَعَ هَذَا الْإِلْفَ كُلَّ ضَلَالَةٍ، وَأَنْوَاعِ شَرِكٍ وَبِدْعَةٍ، وَأَقْسَامِ فَسْقٍ وَمَعْصِيَةٍ، وَأُضْيَعٍ فِيهِ حَقُوقُ اللَّهِ وَحَقُوقُ الْعِبَادِ وَحَقُوقُ الْمَخْلُوقِ، وَانْفَتْحَتْ أَبْوَابُ الْإِرْتِدَادِ، فَبَأَى دَلِيلٌ بَعْدَ ذَلِكَ تَوْمَنُونَ؟ وَفُتِحَتْ يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ، وَتَرُونَ أَنَّهُمْ مِنْ كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلُونَ وَمَا خَرَجَا إِلَّا بَعْدَ الْقُرُونِ الثَّلَاثَةِ، وَمَا كُمُلُ إِقْبَالَهُمَا إِلَّا عِنْدَ آخِرِ حَصَّةِ هَذَا الْإِلْفِ، وَكُمُلَ الْإِلْفُ مَعَ تَكْمِيلِ سَطَوْتَهُمَا، وَإِنْ فِيهَا آيَةٌ لِقَوْمٍ يَتَدَبَّرُونَ، وَإِنَّ الْقُرْآنَ يَهْدِي لِهَذَا السِّرِّ الْمَكْتُومِ وَيَقُولُ إِنَّ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ

ही तेज़ हुए हैं। क्या तुम शताब्दियों वाली हदीस नहीं पढ़ते? इस हज़ार वर्ष ने हर प्रकार की गुमराही और शिर्क और बिदअत की समस्त किस्में और दुराचार तथा अवज्ञा की समस्त किस्में अपने अंदर जमा कर ली हैं। इसमें अल्लाह के अधिकार, बन्दों के अधिकार और सृष्टि के अधिकार नष्ट कर दिए गए हैं। धर्म से विमुखता के द्वार खोल दिए गए हैं फिर उसके बाद तुम किस दलील पर ईमान लाओगे? याजूज और माजूज खोल दिए गए हैं और तुम देखते हो कि वे हर ऊंचाई से दौड़ते चले आ रहे हैं। यह दोनों उन तीन शताब्दियों के पश्चात ही निकले हैं और इन दोनों का प्रभुत्व उस हज़ार के अंतिम भाग में ही पूर्ण हुआ है और उनके दबदबे की पूर्णता के साथ इस हज़ार की पूर्णता हुई है। निस्संदेह इसमें विचार करने वाली क्रौम के लिए अवश्य एक निशान है। कुर्आन इस गोपनीय भेद की ओर मार्गदर्शन करता है और कहता है कि याजूज माजूज एक निर्धारित समय तक रोके गए और जकड़े गए हैं फिर नेकी (अच्छाई) के सूर्य के अस्त होने के दिन और गुमराहियों के ज़माना में वे दोनों खोल दिए जाएंगे जैसा कि इन दिनों में तुम देखते हो। सत्य के अभिलाषियों के लिए इतना ही वर्णन करना पर्याप्त है। मेरा विचार है कि मैं जो चाहता था वह मैंने पूर्ण कर दिया है और

قد حُسِّبَ وصُفِّدَا إلى يوم الوقت المعلوم، ثم يُفْتَحَان في أيام  
 غروب شمس الصلاح و زمان الضلالت، كما أنتم ترون في  
 هذه الأيام وتشاهدون و كفى الطالبين هذا القدر من البيان،  
 وأرى أنّي أكملتُ ما أردت وأتممت الحجّة على أهل العدوان  
 وهذا آخر ما أردنا، فالحمد لله على إتمامه لطلباء الزمان-

تمت

المؤلف

میرزا غلام احمد

۱۷ اکتوبر سنه ۱۹۰۲ء

अत्याचारियों पर हुज्जत पूरी कर दी है। यह वह अंतिम बात है जिसका हमने  
 इरादा किया, इस ज़माने के सत्याभिलाषियों के लिए इस बात को पूरा करने पर  
 हम अल्लाह की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हैं।

समाप्त

लेखक मिर्जा गुलाम अहमद

17 अक्टूबर 1902 ई०